वयं जयेम्

...न्ती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

जनवरी] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, पौष शुक्ल ३ संवत् २०२४ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ } वर्ष ६८ अंक १ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
(यजु: अ. १३। मंत्र ४॥)

चौपाई

जो प्रकाश हैं आप निरंतर । जिसने जाए रवि, शशि द्युति कर ॥४॥
तेज प्रसारे जो नभ, भू पर । उन्हें धारता है जगदीश्वर ॥५॥
जाए जग का जो है स्वामी । जो प्रसिद्ध सब अन्तर्यामी ॥६॥
चेतन रूप सदा जो स्थित था । सृष्टि-सृजन पहिले जो नित था ॥७॥
वह इस भू, रवि को है धारे । वह ही पूजा योग्य हमारे ॥८॥

दोहा

सुख स्वरूप उस ईश को, नम कर भक्ति सप्रेम ।
योग साथ हम सब गहें, शान्ति, स्वर्ग, सुख क्षेम ॥२॥

– श्रीकृष्ण गुप्त, सिध्दान्त रत्न

वार्षिक मूल्य { सम्मानित – ५) साधारण – २) }
सम्पादक – दिव्यानन्द सरस्वती
एक अंक पचीस पैसे

शाकाहार की उपयोगिता

— श्री रतनलाल जोशी

पिछले महीने दिल्ली में जो शाकाहारी सम्मेलन हुआ उसमें अठारह देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। अन्य देशों में जहां निरामिषाहार के प्रति अधिकाधिक रुचि विस्तार पा रही है, वहां अपने देश में उसके प्रति बढ़ता उपेक्षा भाव देख कर आश्चर्य होता है। आजकल मद्यपान की तरह मांसाहार भी जीवन स्तर के उन्नत होने की निशानी माना जाने लगा है। निरामिष आहार या निरामिष आहार के पक्ष-विपक्ष में हम किसी धार्मिक दृष्टिकोण से न भी सोचें, केवल मानवीय दृष्टिकोण से ही सोचें, तब भी मानव के प्रति दिखाई जाने वाली करुणा का हम पशु-पक्षियों तक विस्तार क्यों न करें, यह समझ में नहीं आता। दया, पर-पीड़ा की अनुभूति और दूसरे के सुख में अपना सुख समझने की वृत्ति ही तो मानवता है, इसी आधार पर मानव जाति का अस्तित्व टिका है, यह ठीक है कि कभी-कभी मानव-समुदाय में भी मत्स्य-न्याय प्रबल हो उठता है, परन्तु कभी कोई समझदार व्यक्ति उसका समर्थन नहीं करेगा। संसार के अभाव, अन्याय और अज्ञान को मिटाना यदि मानव जीवन का उद्देश्य न माना जाए तो उसकी उपयोगिता ही क्या रह जायगी।

जैसा कि उप-प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा है—मांसाहार जंगली आदत है। ज्यों-ज्यों मनुष्य सभ्य बनता गया, वह जंगली आदतें छोड़ता गया। बहुत प्राचीन कालमें मनुष्य कभी नरभक्षी भी था, किन्तु अब उसे चरम असभ्यता माना जाता है। निर्यात किये जाने वाले हड्डियों के चूर्ण में कहीं मनुष्य की हड्डियां तो शामिल नहीं हैं, इस बात की भी जांच की जाती है। विभिन्न मांसाहारी लोगों में भी कुछ विशिष्ट वस्तुओं का मांस खाना वर्जित माना जाता है। कुछ अघोरी टाइप के लोग सर्वभक्षी भी होते हैं। परन्तु सामान्यतः मांसाहार मानव की पुरानी जंगली आदत का ही अवशेष है।

पहले कभी खेती का नुकसान पहुंचाने वाले और मानव के लिये आतंक और संकट पैदा करनेवाले जानवरों के शिकार का रिवाज चला, फिर धीरे-धीरे हिंसक और अहिंसक सभी प्रकार के प्राणियों का शिकार आधुनिक फैशन बन गया। हमारी सरकार भी एक ओर तो पशु-पक्षियों की रक्षा के लिए अभयारण्य बनाती है, परन्तु दूसरी ओर विशिष्ट विदेशी अतिथियों के आगमन पर उसके लिये शिकार का कार्यक्रम तैयार करती है। विशिष्ट व्यक्तियों के आगमन के उपलक्ष्य में किये जाने वाले शिकार आयोजन उस सामन्ती प्रथा के अवशेष हैं जिसे आजकल सर्वत्र हिकारत की नजर से देखा जाता है। सामन्तवाद से घृणा और सामन्ती प्रथा का अनुसरण! हिंसक जानवरों को आत्मरक्षा के लिये मारना तो समझ में आ सकता है, किन्तु मानव स्वयं भी मांसाहारी बनकर हिंसक वृत्ति धारण कर ले तो उनमें और हिंसक जानवर में क्या अन्तर रह गया?

फिर एक बात और भी है। मनुष्य जैसा भोजन करता है, वैसा ही उसका मन बनता है। मानव की उत्कृष्टता की जो कल्पना सर्वत्र मान्य है उसमें मनुष्य की सात्विकता का ही प्रधान स्थान है। धृति, क्षमा, अहिंसा, इन्द्रिय निग्रह, अक्रोध—ये सब गुण जो मानव को पशुत्व से हटा कर देवत्व की ओर ले जाते हैं, उसी सात्विकता की उपज है। मांसाहार का बड़े से बड़ा समर्थक व्यक्ति भी मांसाहार को सात्विक भोजन में शामिल करने का साहस नहीं करेगा। यदि जीवन में सात्विकता अभीष्ट है, तो उसके लिए सात्विक भोजन पर जोर देना ही होगा और सात्विक भोजन का निरपवाद रूप से अर्थ है—शाकाहार। शाकाहारी सम्मेलन से यदि देश में और विदेश में शाकाहार के प्रति रुचि का विस्तार हो तो उसे किसी हद तक सफल समझा जा सकता है।

ओ३म्
जनवरी **आर्य-सेवक** १९६८

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, पौष शुक्ल ३, संवत् २०२४ दयानन्दाब्द १४३ | वर्ष–६८ अंक–१

आर्य ऋषियों की दिव्य दृष्टि

श्री घनश्यामसिंह गुप्त, भूतपूर्व प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई-दिल्ली ।

(१) में बहुत लंबा चौड़ा लेख नहीं लिखना चाहता, परन्तु मुझे अपने ऋषियों की दिव्य दृष्टि पर अटल विश्वास है। "ऋषिर्द्रष्टा" कहा गया है। इसका अर्थ स्पष्ट है। ऋषि देखने वाले होते हैं। वे न केवल आत्मिक या आध्यात्मिक घटनाओं के द्रष्टा होते हैं अपितु आधिभौतिक घटनाओं के भी द्रष्टा होते हैं (अंग्रेजी में मैटीरियल एवेण्टस कहते हैं) उन घटनाओं के भी द्रष्टा होते हैं। यहां "द्रष्टा" शब्द विशेष महत्व का है। द्रष्टा शब्द का अर्थ देखने वाला ही है। सुनने वाला या पढ़ने वाला, या परीक्षण करके किसी परिणाम पर पहुंचने वाला कदापि नहीं है। यह उसी प्रकार देखने वाला है जैसे कि कोई मनुष्य किसी पहाड़, नदी, जंगल, हाथी, घोड़ा, या मनुष्य समुदाय को अपनी आंखों से देखे।

(क) ऋषियों के द्रष्टा होने का एक और भी मंत्र है जो निम्न है :–

"यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यम् सामगाः॥
ध्यानावस्थित् तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनः।
यस्यान्तम्न विदुः सुरासुर गणा देवाय तस्मै नमः॥

अनन्त अनादि रूप परब्रह्म परमात्मा का ब्रह्मा, वरुण आदि स्तवन करते है, सामगाः उस का गायन करते हैं, सुरासुर गण उसका अन्त नहीं जानते, किन्तु ध्यानावस्थित योगी (ऋषित्व को प्राप्त व्यक्ति) उसे "पश्यन्ति" साक्षात् देखते हैं।

(२) हमारे आर्य ऋषियों की भौतिक जगत संबंधी दिव्य दृष्टि के कई उदाहरण हैं। मैं यहां केवल एक उदाहरण ही देना चाहता हूं और वह भी भौतिक जगत संबंधी।

सृष्टि की उत्पत्ति काल के बारे में, अन्य धर्मावलम्बियों की जो धारणा रही है, यथा ईसाई, यहूदी अथवा इस्लाम की; उसे छोड़ भी देवें और केवल यूरोपीय विज्ञान वेत्ताओं की ही धारणा को लें तो भी यह स्पष्ट होगा कि उनकी धारणा भी अशुद्ध रही है। आरंभ में यूरोपीय विज्ञान वेत्ताओं (साइंटिस्ट) की यह धारणा थी कि सृष्टि की उत्पत्ति काल को केवल पांच दस हजार वर्ष ही हुये हैं। विज्ञान वेत्ता समय समय पर सृष्टि की उत्पत्ति काल को बढ़ाते गये और अंतिम विज्ञान वेत्ता सर जेम्स जीन्स, जो अभी हाल ही में हुआ है, वह संसार का इस विषय का सबसे बड़ा विज्ञान वेत्ता माना जाता है। उसने भौतिक वैज्ञानिक अन्वेषणों द्वारा, यथा होलियम धातु का सीसा (लेड) में परिवर्तित होना, पर्वतों के चट्टानों की दृढ़ता आदि का विचार करते हुये, सर जेम्स जीन्स

इस परिणाम पर पहुंचे कि सृष्टि की उत्पत्ति का काल लगभग दो अरब वर्ष है।

(३) अब हमारे आर्य ऋषियों द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में जो काल निर्धारित किया हुआ है, उसे देखिये। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में दिया है उसे देखिये। वेद और सृष्टि की उत्पत्ति साथ साथ ऋषि ने मानी है ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का पृष्ठ २२ और २३, (संवत १९५९ वाली प्रति का) संक्षिप्त उद्धरण :—

"एक अरब, छानबे करोड़, आठ लाख, बावन हजार, नव सौ छहत्तर अर्थात (१,९६,०८,५२,९७६) वर्ष वेदों की और जगत की उत्पत्ति में हो गये हैं और यह सन् ७७ सतहत्तरवां वर्त रहा है"।

इस विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक सज्जन उक्त "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" पुस्तक के उक्त प्रकरण का ध्यान से अध्ययन करें। मैं अपने लेख को तनिक भी लंबा नहीं करना चाहता इसलिये अति संक्षेप से ही लिख रहा हूं।

(४) यह भी सर्व विदित है कि प्रत्येक हिन्दू जब किसी ब्राह्मण को किसी उचित अवसर पर दान देने का संकल्प करता है तो निम्न संकल्प मंत्र को पढ़कर उस ब्राह्मण के हाथ में अक्षत छोड़ता है। यदि मैं करता तो मंत्र निम्न प्रकार होता :—

"ओ३म् अद्य ब्रह्मणे अह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति कलियुगे, प्रथम चरणे, जम्बू द्वीपे, भरत खंडे, आर्यावर्तान्तर्गत् दुर्ग नगरे, गयन्द गृहे, गोदावर्या उत्तर कूले, नर्मदाया दक्षिणे भागे। प्रमाथी नाम संवत्सरे मार्गशीर्ष मासोत्तमेमासे श्री सूर्यदक्षिणायने, शुक्ले पक्षे दशम्यांतिथौ, सोमवासरे, मम स्वर्गीयमातायाः—"

इसमें जो पारिभाषिक शब्द परार्ध, मन्वन्तर आदि दिये हुये हैं उसकी संपूर्ण काल गणना ऋषि दयानंद सरस्वती ने उक्त ग्रन्थ में दी हुई है। जो सज्जन देखना चाहें वहां देख सकते हैं। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दों की गणना के अनुसार उस समय सृष्टि उत्पत्ति काल १,९६,०८,५२,९७६ वर्ष हुये थे। अब विक्रमी संवत् २०२४ है, उस समय विक्रमी संवत् १९५९ थी और अब विक्रमी संवत् २०२४ है इन दोनों का अन्तर ६५ है अतः उक्त सृष्टि संवत् में भी ६५ जोड़ना होगा। उसे जोड़ने से अब सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०४१ हुआ अर्थात एक अरब, छयानवे करोड़, आठ लाख, तिरपन हजार, इकतालीस वर्ष हुआ।

(५) अब देखिये कहां संसार का सर्वश्रेष्ठ इस विषय का विख्यात पाश्चात्य विज्ञान वेत्ता सर जेम्स जीन्स ने सृष्टि की उत्पत्ति काल को उक्त वैज्ञानिक गणना के आधार पर लगभग दो अरब वर्ष कहा है, वहां हमारे पुर्वज महर्षियों ने उसकी गणना साक्षात् देखकर उक्त गणना की है। इसमें संदेह नहीं "ऋषिद्रष्टा" सर्वथा सत्य है।

(६) अब मैं अगले अंक में पाश्चात्य वैज्ञानिक "ऐन्स्टीन" और रामायण में "कागभुषुण्ड" की कथा का विवरण लिखने का यत्न करूंगा।

समाचार संसार

संकलनकर्ता-श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

दुर्ग—

राष्ट्र के नवनिर्माण में श्री घनश्यामसिंह गुप्त का महत्वपूर्ण योगदान

८३ वीं वर्षगांठ के अवसर पर श्री गुप्तजी का अभिनंदन

आर्य समाज के मान्य नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, के भूतपूर्व प्रधान तथा मध्यप्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष माननीय श्री. घनश्यामसिंह जी गुप्त की ८३ वीं वर्षगांठ दि. १७ दिसम्बर ६७ को आर्य कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में बड़े समारोह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित अभिनंदन समारोह के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने बताया कि राष्ट्र के नवनिर्माण की ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं है जिसमें श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त का महत्वपूर्ण योगदान न रहा हो। विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में माननीय गुप्तजी ने सदा हिन्दी के गौरव की वृद्धि की और राष्ट्र तथा सांस्कृतिक कल्याण के लिये अनेक स्वस्थ परम्पराएं कायम की। यह आर्य कन्या विद्यालय श्री गुप्तजी की सजगता का ही फल है। आप ही की प्रेरणा से स्व. दानवीर तुलाराम जी ने एक विशाल भूसंपत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दी। सभा ने माननीय गुप्तजी की सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए दुर्ग में दाऊ घनश्यामसिंह गुप्त आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना की है। सभा को विश्वास है कि तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की भांति यह महाविद्यालय पूर्ण रूप से विकसित होकर शिक्षा के प्रसार तथा आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार में सहायक होगा।

माननीय श्री गुप्तजी का अनेक संस्थाओं की ओर से पुष्पहार पहनाकर अभिनंदन किया गया तथा कन्या विद्यालय की बालिकाओं ने स्वागत गान गाया और तिलक लगाकर उनके ऊपर पुष्प-वर्षा की। श्री व्ही. वाय. तामस्कर, संसदसदस्य, तथा अन्य सज्जनों ने श्री गुप्तजी की सेवाओं की प्रशंसा करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। इस समारोह में दुर्ग तथा बाहर के गणमान्य विद्वान, आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान स्वामी दिव्यानंदजी, तथा सभा के मंत्री श्री श्रीकृष्णजी गुप्त उपस्थित थे। स्वामी दिव्यानंदजी ने सभा की ओर से माननीय गुप्तजी का अभिनंदन करते हुए अपने भाषण में गुप्तजी की आर्य जगत के लिये की गई दीर्घकालीन सेवाओं की प्रशंसा की और बताया कि गुप्तजी अपने पिता स्वर्गीय दाऊ गेंदसिंहजी की भांति महर्षि स्वामी दयानंदजी के अनन्य भक्त हैं और आपके कारण आर्य समाज का सदा गौरव बढ़ता रहा है।

नागपुर—

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस संपन्न

आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभा, नागपूर की ओर से इस वर्ष अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस दि. २३ दिसम्बर ६७ को दयानंद भवन में श्रीमती सरोजनी श्रीवास्तव एम. ए. मुख्याध्यापिका, आर्य कन्या विद्यालय, जरीपटका, नागपूर, की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें आर्य कुमार सभा, आर्य कन्या पाठशाला

जरीपटका, तथा दयानंद बाल विद्या मंदिर के बच्चों के शानदार विविध कार्यक्रम हुए जो सभी के लिए प्रेरणादायक थे। कार्यक्रम में श्री श्रीकृष्णजी गुप्त, मंत्री, सभा, विशेष रूप से उपस्थित थे। आर्यवीर दल के प्रधान श्री प्रेमचंदजी अग्रवाल तथा सदस्य श्री नरेन्द्रमोहनजी अग्रवाल, संपादक, 'अग्रसेन संदेश', श्रीमती चंद्रकांताजी विद्यालंकृता, मंत्राणी महिला समाज, श्री गंगारामजी आर्य, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, प. ज्ञानेन्द्रदेवजी सूफी तथा अध्यक्ष महोदय के प्रेरणादायक, प्रभावशाली व्याख्यान हुए जिसका उपस्थित जनता पर काफी प्रभाव हुआ। अन्त में पुरस्कार वितरण के पश्चात् आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभा के मंत्री श्री मधुकर सदार ने सबका आभार प्रदर्शन करते हुए संक्षेप में बताया कि जिस देश और जाति में शहीदों का आदर एवं सम्मान होता है वही देश और जाति संसार में जीवित रह सकती है। अतः इस पावन अवसर पर हम आर्य जन स्वामी श्रद्धानंदजी से प्रेरणा लेकर उनके आदर्शों को अपनायें। शांतिपाठ तथा प्रसाद वितरण के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

गोंदिया—

गोंदिया, दि. २२ से २६-१२-६७ तक आर्य समाज, का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस उत्सव पर माता विद्योत्तमावती, हरिद्वार, स्वामी दिव्यानंदजी सरस्वती, नागपुर, पं. रामनारायणजी शास्त्री, पटना, पं. ज्ञानेन्द्रदेवजी सूफी, नागपुर, श्री पन्नालालजी पीयूष, मेरठ, डा. यशपालजी पटना, आदि, विद्वान, साधु महात्माओं के देश की वर्तमान परिस्थिति, धार्मिक शिक्षा, भारतीय संस्कृति, वेद विद्या, आदि, विषयों पर महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए।

आधुनिक वीर अर्जुन प्रोफेसर सुरेन्द्र शुक्ल' सीतापुर के शारीरिक शक्ति एवं धनुर्विद्या के अद्भुत प्रदर्शन कार्यक्रम की एक विशेषता थी जिसमें धनुर्विद्या में शब्दवेधी बाण चलाना, अदृश्य लक्षवेध, सांकेतिक शब्द वेध, मत्स्य वेध, अग्निबाण, जलबाण आदि और शारीरिक योगिक क्रियायें जैसे सीने पर हाथी खड़ा करना, दो चालु मोटरों को एक साथ रोकना, गले में फांसी लगवाना आदि अनेक आश्चर्यजनक कार्यक्रम हुए जिसका जनता पर काफी प्रभाव पड़ा और जनताने अखाड़े की आवश्यकता को अनुभव किया। इस प्रकार के आयोजन के लिए आर्य समाज, गोंदिया, के पदाधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री सत्यदेवजी वानप्रस्थी का प्रचार कार्य

दि. ७ से १६-१२-६७ तक श्री सत्यदेवजी ने दमोह और छत्तरपुर जिलों में और बाद में नरसिंगपुर और सुरगुजा जिलों में श्री रामआश्रयजी को साथ लेकर श्री स्वामी दिव्यानंदजी के संचालन में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य बड़े ही सुचारु रूप से किया जिसका जनता पर काफी प्रभाव हो रहा है।

श्री शंकरलालजी आर्योपदेशक का प्रचार कार्य

ग्राम गोलहाघाट के ११ ईसाइयों को दि. १०-१२-६७ को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रवेश दिलवाया, और भी शुद्धियां होने की संभावना है। श्री शंकरलालजी ने ईसाई निरोध साहित्य बिना मूल्य बांटने की आवश्यकता बताई है जिससे अशिक्षितों और निर्धनों को ईसाइयों के चंगूल से बचाया जा सके। शीघ्र ही वहां ईसाई निरोध साहित्य भेजने की व्यवस्था आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश कर रही है।

महिला सम्मेलन, गोरखपुर, जबलपुर

आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर, के २८ वें वार्षिकोत्सव के अंतर्गत जो महिला सम्मेलन २५ नवम्बर १९६७ को हुआ उसमें निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए जो वहां की महिलाओं के सजगता को दर्शाते हैं :— शहर में प्रातः और मध्यान्हकालीन चल-चित्रों का जो प्रदर्शन होता है उसपर रोक लगाने की मांग म. प्र. शासन तथा जिला प्रशासन से की गई। प्रदेश शासन से आग्रह किया गया कि संपूर्ण मध्यप्रदेश में मद्य निषेध घोषित किया जावे। शहरों में चौराहों पर सीनेमाओं के अभद्र एवं अश्लील चित्र तथा विज्ञापन पर रोक लगाने हेतु शासन से अनुरोध किया गया कि शीघ्र ही आवश्यक नियंत्रण लगाये जावें। इसी प्रकार गोवंश के वध पर अविलंब

(शेष पृष्ठ कव्हर ३ पर)

ओ३म्

परिशिष्ठ

आर्य सेवक–जनवरी, १९६८

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज के

सामवेद के ऐन्द्र काण्ड का पद्यानुवाद

पद्यकर्ता :––श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य–प्रदेश व विदर्भ

महर्षि दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, सदर, नागपुर–१ (महाराष्ट्र)

●

अन्यायी अरि को जो हनता । भक्त–प्रार्थनाएँ जो सुनता ॥
शौर्य–कर्म–कौशल दिखलाता । वन पर, अरि पर जो जय पाता ॥

दोहा– परम वीर उस इन्द्र को, निज के रक्षण अर्थ ।
आज बुलाएँ जोड़ कर, सभी भक्त असमर्थ ॥

३३० ज्ञान प्राप्ति हित हे प्रिय साधक !। श्रुतिगा; प्रभुका बन आराधक ॥
करो पाठ तत ऊँचे स्वर में । जला होम की ज्वाला घर में ॥
भौतिक उन्नति हित स्मर ईश्वर । सफलतया जीवन की तरि तर ॥
वह प्रभु सब विश्वों का जाता । उपासना मम सुन अपनाता ॥
मैं तत सेवक उसको स्मरता । तत प्रकाश निज हृद में लखता ॥
३३१ इन्द्र–वज्र सह तेज चमकता । अन्तरिक्ष में, देख, दमकता ॥
उपासकों हित मृदु जल स्रवता । पृथिवी पर जो सरि बन बहता ॥
धेनु–स्तनों में पय बन जाता । औषधि में रस रूप धराता ॥

दोहा– दया, कृपा कर इन्द्र नित, बरसाता पय–मेह ।
उपजें ओषधि, अन्न, धन, करें पुष्ट जन–देह ॥

कर्म रूप अश्वों से खींचित । ज्ञान-तेज से सदा प्रकाशित ॥
हल चल में जो दृढ़ता धारक । सभी वाहनों में वर तारक ॥
टूट फूट में जो विश्वासी । अग्रिम गामी, दृढ़, अविनाशी ॥
वेगवान अतिशय जो रण में । पूज्य, स्तुत्य जो सुर, नर गण में ॥
ऐसे इन्द्रेश्वर को स्मरते । आह्‌वान करें हम सब नमते ॥
३३३ इन्द्र भयों को दूर भगाता । वीर, सुगम, श्रुति-प्रिय अपनाता ॥
वह है रक्षक शरणागत हित । उसे वरूँ मैं हो दत हृदचित ॥
समर्थ है वह, अरु है आहुत । वह अच्युत, अद्‌भुत, तत गति द्रुत ॥

दोहा— ऐश्वर्यी इस इन्द्र का, मैं करता आह्‌वान ।
तत पद में, मैं जा गिरूँ, होगा मम कल्याण ॥

३३४ विघ्न-निवारण में चतुराई । इन्द्रिय-निग्रह में कुशलाई ॥
देव इन्द्र जो है नित बरते । उपासना हम उसकी करते ॥
निज के उर के बल के द्वारा । इन्द्र तोड़ता पाप पिटारा ॥
सत्य वृत्तियो के सेना सँग । अनघ-अङ्‌ग वह चट करता भँग ॥
विशिष्ट सङ्‌कल्पों को उर धर । इन्द्र दिखाता पापों को डर ॥
इस विधि उन्नति करता जाता । ईश-निकटता आत्मा पाता ॥
आत्मे ! ऐसे इन्द्रेश्वर को । ज्ञाता, त्राता, लक्ष्मी धर को ॥
श्रुति को गाकर हृद में धारो । यज्ञ रचाओ, निज को तारो ॥

दोहा— इन्द्र विघ्न राक्षस हने, कर्म-शक्ति दे दान ।
सँग दे ज्ञानैश्वर्य को, ऐसा वह भगवान ॥

३३५ वह प्रभु है सन्मार्ग दिखाता । भक्त गणों को विजय दिलाता ॥
अरि का नाशक, पूर्ण नियामक । इन्द्र देव है सुख का दायक ॥
वह समर्थ, साधन-भण्डारी । तत स्तुति करते हम संसारी ॥
३३६ अपनी मृत्यु बुलाने वाला । खल रिपु जो हो हृद का काला ॥
समझे निजको अति बलशाली । तत सँग हो अरि घोर कुचाली ॥
करे आक्रमण यदि क्षयकारी । अस्त्र, शस्त्र हो उस ढिग भारी ॥

इन्द्र प्रभो ! हम बल को धारें। तुझे स्तुतें अरु श्रुति उच्चारें ॥
प्रबल, सुदृढ़ सेना हम रचकर। शत्रु हनें, जय, रिपु–भू, घन धर ॥

दोहा– ऐसे सङ्कट काल में, रहो हमारे साथ।
. इन्द्र ! विनय सुन भक्त की, हम जोड़े निज हाथ ॥

३३७ रिपु के संग में रण को करतीं। जिसे प्रजाएँ प्रतिक्षण स्मरतीं ॥
सहायता हित जिसे बुलातीं। सभी युवक कर शस्त्र धराती ॥
समर–मार में साहस देता। वीरों के हृद का जो नेता ॥
वर्षा हित हम जिसे पुकारें। ज्ञानी हवि दें, ओंम उचारें ॥
ऐसा सुर वर इन्द्र कहाता। जल, धन, सुख ऐश्वर्य दिलाता ॥
३३८ हे विद्युत ! हे मेघों ! देवों। वर पथ से आ हम को सेवो ॥
तेज, श्रेष्ठता सँग में लाओ। वीर, अन्न, धन, प्राप्त कराओ ॥
यज्ञो में आ हवि को खाओ। श्रुति सुन, हवि ले, पुनि पुनि आओ ॥

दोहा– विद्युत ! बल की दायिनी !, मेघ ! जनक ऐश्वर्य !।
निज उदारता से हमें, सदा करो नर नर्य ॥

३३९ इन्द्र हेतु हम श्रुति–स्तुति गाएँ। जो नभ से जल को बरसाए ॥
यथा धुरी है चक्र उठाए। स्वर्ग, धरा को इन्द्र धराए ॥
बुद्धि, कर्म वह निज प्रकटाता। कर्म भोग हित सृष्टि रचाता ॥
३४० इन्द्र ! आप नभ में हो बसते। उसे लाँघ अन स्थल जा रमते ॥
अदृश्य, व्यापक रूप तुम्हारा। जगत उपासक हो तव सारा ॥
मित्र तुल्य हम सब जन बरतें। प्रभु ! यह वर दो हम नित स्तुतते ॥
तुम्हीं तेज युत हो इस जग में। दो प्रकाश मम जीवन–मग में ॥
भक्तों की सन्तान बढ़ाओ। उन पर धन, सुख, यश वर्षाओ ॥

दोहा– इन्द्र ! दया के रूप तुम, करुणा के आगार।
हमें ज्ञान, सत बुद्धि का, भगवन ! दो उपहार ॥

३४१ सत्य–प्राप्ति हित जो जन जुटते। सत् पथ के वे यात्री बनते ॥
इन्द्रिय लोलुपता वे तजते। कामुकता को मन से हनते ॥

आवेश नहीं उनमें आता । क्रोध मोह भी ना फटकाता ॥
दृढ़ कर्मोन्मुख वे हो जाते । पावनता से सिद्धि मिलाते ॥
सात्विक होता उनका जीवन । ऐसे नर ही होते धन धन ॥
३४२ विविध ज्ञान, कर्मों का प्रेरक । ईश इन्द्र है सब में व्यापक ॥
उसे पूजते हम श्रद्धा सह । स्तोता स्तुतते, मन विकार दह ॥
पापों से छुटकारा पाएँ । प्रभु–प्रकाश हृदमें प्रकटाएँ ॥

दोहा– ज्ञानी निज परिवार की, ज्ञान–ध्वजा को धार ।
पहुँचाता आकाश तक, देखे सब संसार ॥

३४३ श्रुति के सब ही गान हमारे । इन्द्र ईश की स्तुति उच्चारें ॥
जो विशाल सागर के सम है । जिसको भजते भक्त व हम हैं ॥
ब्रह्माण्ड सुरथ में वह शोभित । महावीर; तत शक्ति अपरिमित ॥
अन्न व बल का वह अधिपति । सज्जन–पालक, दाता, शुभ मति ॥
उसकी महिमा को हम गाएँ । जीवन में पावनता लाएँ ॥
३४४ सर्वोत्कृष्ट सु दिव्यानँद रस । अमरत्व–प्रदाता को हँस हँस ॥
हे आत्मे ! तुम उपभोग करो । पाप, ताप, दुख की नाव तरो ॥
परम सत्य को पाने के हित । ज्ञान–सुधारा द्वारा निर्मित ॥

दोहा– इस रस का पान कर, कर अपना कल्याण ।
मोक्ष सङ्ग तुझ को मिलें, समीपता भगवान ॥

३४५ इन्द्र ! वज्र को तुम कर धारो । कञ्चन दे निर्धनी उबारो ॥
धन जो पास नहीं हो मेरे । वही मिले प्रभु ! द्वारा तेरे ॥
तब द्वि करों से पूरे भर कर । स्वर्ण, धान्य से मम घर दे भर ॥
विनय, भक्त मैं यह ही करता । दान तुम्हारे हेतु तरसता ॥
३४६ महान तुम हैं हे इन्द्रेश्वर ! । तव भक्तों पर दया, कृपा कर ॥
तव पूजा जो करते प्राणी । सुन उनकी स्तुति श्रुति मय वाणी ॥
वीर्यवान व जितेंद्रिय नर को । सुख दे; धन से भर तत घर को ॥
३४७ इन्द्र ! वासनाओं के नाशक । तुम बलशाली, बल के दायक ॥

दोहा– ज्ञानानँद रस सिद्ध कर, रखा इन्द्र ! तव हेतु ।
उसे पान कर तू हमें, उतार दुख के सेतु ।।

अन्तरिक्ष में ज्यों रवि भरता । स्वतेज जब वह गगन पसरता ।।
तृप्त करे त्यों यह आनँद रस । हमें मिलें संतोष व सुख, यश ।।
३४८ इन्द्र ! ज्ञानदा धी है तेरी । तव स्तुति गाती रसना मेरी ।।
आत्मे ! तू है प्रकाश धारी । प्रकाशपति प्रभु गगन बिहारी ।।
पावन होकर उसके पद धर । ओम नाम तू प्रति पल रह स्मर ।।
३४९ प्रार्थना गम्य !, प्रभो !, इन्द्रेश्वर ! । तव हित करते, तुझको उर धर ।।
अध्यात्म मखों में हम स्तुतियां । कर्म काण्ड की पूजा–विधियाँ ।।
पयदा गौएँ वत्स बुलाएँ । दया हेतु हम त्यों श्रुति गाएँ ।।

दोहा– अथर्व, ऋक्, यजु, सामका, सुन कर सस्वर गान ।
आशीषेंगे जगतपति, इन्द्र देव भगवान ।।

मख–मण्डप में ज्ञानी आओ । तेज पूर्ण प्रभु की स्तुति गाओ ।।
पावन वाणी हृद की सुन कर । हो प्रभाव उस दयावन्त पर ।।
संगीत–मधुर, श्रुति रस पीकर । वह बरसेगा धन, सुख हम पर ।।
३५१ स्वधापते ! सर्वोत्तम धन । कान्ति–दृष्टि से जो हरता मन ।।
सर्वाधिक सुकान्ति का धारक । प्रकाशयुत, अति आकर्षक ।।
साधित परमानँद प्यारा । हर्ष सु साधन नित्य तुम्हारा ।।
हमने तैयार किया, आओ । हृद बिराज प्रभु ! उसको पाओ ।।
तव प्रकाश–द्युति हम में प्रकटे । लोभ, मोह, सङ्कट, दुःख कटे ।।

दोहा– विचरो तुम ब्रह्माण्ड में, इन्द्रेश्वर ! स्वच्छन्द ।
गति–सञ्चालक जगत के, धारक पूर्णानन्द ।।

३५२ जीवन–यात्रा में नित आगे । नेता बन कर आगे भागे ।।
ज्ञान, कीर्ति जो सञ्चय करता । लक्ष्य–सिद्धि को श्रम कर धरता ।।
जो पिपासु हो आनँद धन का । जो हो पावन तन का, मन का ।।
उसे दान दो परमानँद का । इन्द्र ! बने पति वह सुख धन का ।।

३५३ विश्व–व्यवस्था करने वाला । जिसने भू का बोझ सँभाला ॥
ऐसा न्यायी ईश्वर बसता । प्राणी गण के हृद में रमता ॥
कठोर वाणी कभी न बोलें । कथन पूर्व शब्दों को तोलें ॥
जिससे प्राणी मध्य निवासी । अप्रसन्न ना हो अविनाशी ॥

दोहा– मानव–मन को ना दुखा, घृणित शब्द उच्चार ।
परम हितैषी रिपु बने, धिक्कारे संसार ॥

३५४ ज्ञान रूप वर धन को पाने । तू ही साधन वेद बखाने ॥
तू निष्कामी, विविध सु कर्मा । नियमपाल अरु धर्मात्मा ॥
हेय वासनाओं का जेता । सत का रक्षक, उत्तम नेता ॥
प्रगति, विजय हित इस जीवन में । तुझे स्मरें हम, बलवन् ! मन में ॥
व्यवहार रखें हम तुझ से ही । इन्द्र ईश ! हों हम तव स्नेही ॥
३५५ पूज्य जनों में है प्रभु नेता । ज्ञान रूप अरु विश्व–विजेता ॥
ज्ञान, कर्म में सभी जनाता । सकल सिद्धियाँ हैं यति पाता ॥
विज्ञों को वह प्रेरित करता । ज्ञानी उसको प्रति पल भजता ॥

दोहा– योग, तपस्या सिद्धि से, मिलता है भगवान ।
सुगुरु सिखाता योग को, मानव ! यह सत मान ॥

३५६ आनंद का उपभोग कराती । योगावस्था में ले जाती ॥
प्रकाश युत अरु अति त्वर गति की । मनन शक्तियाँ पावन मन की ॥
पहुँचा देती जहाँ कहीं है । ज्ञान–लक्ष्य, हे मनुज ! वही है ॥
३५७ इन्द्र देव है मुझ को भाता । जिसका मैं उपदेश सुनाता ॥
महा बली व अभेद्य व न्यायी । तेज–पुञ्ज, सर्वज्ञ व ध्यायी ॥
हर खल अरि का वह है नाशक । विज्ञों में सर्वोत्तम व्यापक ॥
३५८ हम उस विजयी, व्यापक, ईश्वर । की स्तुति करते श्रुति को गा कर ॥
वह हम को सन्मार्ग दिखाता । वही हमारी आयु बढ़ाता ॥

दोहा– तरुण व ज्ञानी इन्द्र है, अपरिमित व बलवान ।
रिपु–नगरों को नाशता, जगत–नाथ भगवान ॥

३५९ सब शुभ कर्मों का वह धारक । पतित, हेय का प्रिय उद्धारक ॥
वह स्वयँ भू, जग उसको नमता । ओम ओम रट श्रुति गा स्मरता ॥
३६० परमानँद को वित ही सेते । आत्म वीरगण; निज को खेते ॥
स्वप्न, सुषुप्ति व जाग्रति–अनुभव– । –हित मैं प्रेरण करता हूँ तव ॥
प्राप्ति हेतु उस पावन धन की । दशा सुधारो तुम निज मन की ॥
धारणावती बुद्धि तुम्हारी । हो तव, अन की मङ्गलकारी ॥
राष्ट्र, जाति का तू कर नित हित । दे प्रकाश ज्यों प्रमुदित आदित ॥
५६१ परमानँद के होते भोगी । समाधिस्थ जो ध्यानी, योगी ॥

दोहा– कहते प्राण अपान को, आत्मा के नित मित्र ।
तजें कभी ना साथ ज्यों, पदार्थ–छाया–चित्र ॥

सभी कर्म इन योगी गण के । बनें सहायक सिद्धि–यजन के ॥
ऐसा कहते थे यति गुरुजन । कर्म करो शुभ, साधो तन, मन ॥
३६२ करो इन्द्र का सत्कार नरों । मानव ! विशेष सत्कार करो ॥
इन्द्र देव को पूजो मख–प्रिय !। उसकी स्तुति कर, उसको धर हिय ॥
दया करे जो निज भक्तों पर । यज्ञी को जो सुख दे, दुख हर ॥
सत्कार करो हे सब लोगों !। इन्द्रेश्वर का; फिर सुख भोगो ॥
सुरेन्द्र पूजो पुत्रों ! वर । रिपु–हन्ता प्रभु को उर धर ॥
सत्कार महा का अधिकारी । है इन्द्र, वज्र का जो धारी ॥

दोहा– जो पूजे प्रभु इन्द्र को, वह पाता है स्वर्ग ।
जनता उसको पूजती, उसे धरे सुर–वर्ग ॥

३६३ प्रबल इन्द्र है रिपुगण–नाशक । सज्जन, यज्ञी, यति का पालक ॥
उसकी स्तुति में स्तोत्र सुनाओ । तत यश, तत प्रति स्नेह बढ़ाओ ॥
पुत्रों में हम प्रेम बढ़ाएँ । जन जन को हम मित्र बनाएँ ॥
स्नेहलता के बीज लगाएँ । सख्यभावजल उसे पिलाएँ ॥
ऐसे स्तोस्त्रों को हम गाएँ । इन्द्र देव को जो प्रिय भाएँ ॥
३६४ वाहन–साधन का जो अधिपति । देता जन को जो है शुभ मति ॥

ज्ञानकर्मेंद्रियों की उन्नति । को देने प्रेरण अरु त्वर गति ॥
मैं ऐसा प्रभु इन्द्र बुलाता । जिसकी जीत न कोई पाता ॥

दोहा– निश्चय है मानव–मरण, सके न कोई टाल ।
धन वे नर जो कर मरें, जगत व आप निहाल ॥

ज्ञान–दान पा इन्द्रेश्वर का । पालन धर्म करे वर नर का ॥
महा दान वह निज चित्त धरे । उसे बुद्धि सह उपयोग करे ॥
तो सह अधिगत रक्षण द्वारा । पापों से ले वह छुटकारा ॥
३६६ विविध ज्ञान कर्मा हे जगपति !। तू है व्यापक, दाता, शुभ मति ॥
ज्ञान–दान–गुण भी तव व्यापक । तू है न्यायी, जगहित चिंतक ॥
हे सब दृष्टा, विमल, सुदानी !। धनपति, ज्ञानी, अरु निर अभिमानी ॥
वही ज्ञान–धन कुछ दो हम को । जिससे काटें हम अघ तम को ॥
हो यह जीवन जन हित, पावन । अरु हों निर्मल हृद सँग तन–मन ॥

दोहा– पढ़ूँ वेद सतसङ्ग कर, नित उच्चारूँ ओम ।
करूँ यज्ञ स्मर इन्द्र को, हो सुगन्धमय व्योम ॥

३६७ हे विविध कान्ति सम्पन्न उषे ! । ज्ञान–किरण तव मम हृदय बसे ॥
अन्त छोर से प्रकाश–धारा । सदा भरे मस्तिष्क हमारा ॥
३६८ जब है होता दिवस प्रकाशित । देवों ! बसते नभ में तुम विकसित ॥
वहाँ यज्ञ क्या तुम हो पाते ? । आहुतियाँ क्या तुम हो खाते ? ॥
पूर्व समान हवन क्या होता ? । क्या हवि देता कोई स्तोता ॥
३६९ साम व ऋक की सहायता से । सभी कर्म कर नर अघ नाशे ॥
तस्य अध्ययन नित आर्य करे । तस्य ज्ञान से अघ–सिन्धु तरे ॥
श्रुति–महत्व यज्ञों में रहता । हर समाज यज्ञों को करता ॥

दोहा– देवों तक ब्रह्माण्ड में, यज्ञ भेजता हव्य ।
वेद–पठन नित यज्ञ सह, आर्य परम कर्तव्य ॥

(क्रमशः)

(पृष्ठ ६ का शेष)
कानूनी प्रतिबंध लगाना तथा गोसंवर्धन की योजनाओं पर शीघ्र ही अनुशीलन प्रारम्भ हेतु मांग की गई।

देशीय समाचार–

महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह

दि. २, ३, ४ फरवरी १९६८ को वसंत पंचमी के अवसर पर गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में महात्मा नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह गुरुकुल भूमि में आयोजित किया जा रहा है।

जस्टिस मेहरचंदजी महाजन का निधन

देश और आर्य समाज की महती क्षति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री, संसद-सदस्य, श्री रामगोपालजी शालवाले ने श्री जस्टिस मेहरचंदजी महाजन के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए समस्त आर्य जनता की ओर से उनके परिजनों के प्रति समवेदना का प्रकाश किया है।

समाचार पढते ही श्री शालवाले दाह संस्कार के लिए चण्डीगढ़ रवाना हुये थे, साथ में ओमप्रकाशजी शास्त्री भी थे। श्री शालवाले ने प्रेस वक्तव्य में कहा है कि श्री महाजनजी पंजाब और देश की एक बड़ी हस्ती थे। लाहोर काईकोर्ट के जज, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और काश्मीर के भारत में विलानीकरण के प्रमुख सुत्रधार के रूप में उन्होंने जो ऐतिकासिक सेवायें कीं वे भुलाई न जा सकेंगी।

"आर्य सेवक" परिवार महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति निष्ठावान श्री जस्टिस मेहरचंदजी महाजन के प्रति हार्दिक शोक प्रकट करते हुए प्रभु से स्वर्गीय आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना करते हुए उनके परिवार जनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

सभा की सूचना

संख्या २६५–अकोला में अंतरंग सभा की बैठक

मध्यप्रदेश व विदर्भ की अंतरंग सभा के समस्त पदाधिकारियों और सदस्यों को सूचित किया जाता है कि अंतरंग सभा की एक बैठक शनिवार, दिनांक १०–२–१९६८, को प्रातः ८ बजे से आर्य समाज मंदिर अकोला में किया जाना निश्चित हुआ है। इस अंतरंग सभा मे सभा के गत दो वर्षों के वार्षिक वृत्तान्त व आगामी वर्ष के लिए प्रतिनिधि स्वीकार करना होगा। इन्हीं दिनो में आर्य समाज, अकोला का उत्सव भी मनाया जायेगा। पदाधिकारियों एवं सदस्यों से प्रार्थना है कि वे निश्चित दिवस और समय पर पधारने की कृपा करें। विधिवत् सूचना और विषय सूची शीघ्र ही पृथक पोस्ट से भेजी जावेगी।

संख्या २६६–सभा का बृहदधिवेशन, अकोला में

इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, का बृहदधिवेशन अकोला में रविवार दि. ११, और आवश्यक हुआ तो सोमवार दिनांक १२ फरवरी १९६८ को भी होगा।

२. आर्य समाजों के प्रधान व मंत्रीगण से निवेदन है कि वे अपने अपने प्रतिनिधियों को इस बृहदधिवेशन में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें और अधिवेशन को सफल बनावें।

३. जिन आर्य समाजों ने अब तक अपना सन् १९६६ और १९६७ का वार्षिक वृत्तान्त, हिसाब, दशांश, आर्य सेवक का चन्दा नहीं भेजें हैं वे कृपा कर उन्हें शीघ्र भेजें, अन्यथा उनके प्रतिनिधि सभा की कार्यवाही में भाग न ले सकेंगे।

४. सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार प्रत्येक आर्य समाज, प्रथम ९ आर्य सभासदों पर एक प्रतिनिधि, २६ सभासदों पर दो प्रतिनिधि और इसी प्रकार प्रत्येक २० पर एक प्रतिनिधि भेज सकता है। परंतु २० सभासदों से कम पर कोई प्रतिनिधि स्वीकार करने का नियम नहीं है। अतः वह स्वीकार नहीं किया जा सकेगा।

५. आर्य समाज के उपनियम ४ (क) से (च) तक में आर्य सभासद की जो व्याख्या की गई है अर्थात् जिसका नाम आर्य समाज में सदाचार से एक वर्ष अंकित रहा हो और जो अपनी आय का शतांश मासिक व वार्षिक देता हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संग में कम से कम १३ हो वही आर्य सभासद माना जावेगा और वही प्रतिनिधि स्वीकार किया जायेगा।

संख्या २६७-आर्य समाजों से वार्षिक वृत्तान्त

सभा कार्यालय द्वारा आर्य समाजों के वार्षिक वृत्तान्त के फार्म पृथक पोस्ट से दिनांक ६ जनवरी १९६८ को सब समाजों को भेज दिये गए हैं। आर्य समाज के अधिकारियों ने अपना आडिट किया हिसाब तथा वार्षिक वृत्तान्त के तीनों फार्म भरकर, आर्य सेवक वार्षिक मुल्य रु. ५) और सन् १९६७ की समस्त आय का दशांश दिनांक ३० जनवरी के पूर्व सभा कार्यालय को भेज देना चाहिये, जिससे कि स्वीकृत प्रतिनिधि वृहदधिवेशन की बैठक में मताधिकारी हो सकें। इसी प्रकार जिन आर्य समाजों ने सन् १९६६ के वार्षिक विवरण के विवरण के चित्र दशांश और आर्य सेवक का चन्दा अबतक न भेजा हो वे इसे भी दिनांक ३० जनवरी १९६८ के पूर्व सभा कार्यालय को अवश्य भेजदें।

२. जो समाज वृहदधिवेशन के दिन वार्षिक चित्रादि प्रस्तुत करेंगे उनकी पूरी जांच तत्काल करना असंभव है और यह भी खतरा है कि ऐसी दशा में उनके प्रतिनिधि स्वीकार न किये जाएं जिससे मार्ग व्यय और यात्रा का खर्च निष्फल जाए।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. ७-१-१९६८	श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/ 28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

श्री संस्थापक जी
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला,
जि. रोहतक

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक-घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम. कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक-वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन-प्रत्येक अंग्रेजी मास की २ री तिथिको।

वयं जयेम्
श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

जून] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, जेष्ठ शुक्ल १ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ { वर्ष ६८ अंक ६ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।

यजु. ३२।१०

वह प्रभु हम हित है प्रिय भ्राता। सुख का दाता; जग का जाता ।।
सब कामों को करता पूरा । रखे न कोई काम अधूरा ।।
नाम, स्थान, जन्मों का ज्ञाता । करुणा कर अरु सौख्य प्रदाता ।।
विहीन जो सांसारिक दुख से । मोक्ष रूप बन रहता सुख से ।।
उस प्रभु नित्यानंन्द के अंग में । विज्ञ मोक्ष गह विचरें संग में ।।

दोहा

ऐसे प्रभु आचार्य की, जो नृप, न्यायाधीश ।
करें भक्ति, स्तुति आर्य हम, उसे नमा निज शीश ।।

— श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्त रत्न

वार्षिक मूल्य { सम्मानित – ५) साधारण – २) }
सम्पादक – दिव्यानन्द सरस्वती
एक अंक पचीस पैसे

उज्जैन कुंभ मेले में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रचार कार्य

इस वर्ष वैशाख मास में उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ था। चैत्र पूर्णिमा, वैशाख अमावस्या, अक्षय तृतीया और वैशाख पूर्णिमा इन चार स्नानों में तो लाखों लोगों ने क्षिप्रा में स्नान किया। यद्यपि इस बार नागा साधुओं की अनुपस्थिति रही परन्तु फिर भी लाखों व्यक्ति इस अवसर पर उज्जैन आते रहे। राजमाता महारानी श्रीमती विजय राजे सिंधिया की अध्यक्षता में गठित सिंहस्थ कमेटी ने कुंभ मेले की समुचित व्यवस्था की। रामानंद संप्रदाय, पुष्टिमार्ग संप्रदाय, रामानुज संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय और कबीर पंथ संप्रदाय के प्राय: सभी प्रसिद्ध महन्त, संत और आचार्य पधारे थे। सन्यासियों में बद्रिका आश्रम ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज, गोवर्धन मठ पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज, स्वामी करपात्री जी महाराज, स्वामी परमानंद जी सरस्वती, स्वामी स्वरुपानंद जी सरस्वती आदि आचार्य पधारे थे। अन्य धार्मिक संस्थाओं में कुंभ में आर्य समाज का सर्वाधिक प्रभावशाली प्रचार था।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत द्वारा कुंभ में चारों वेदों के यज्ञ के अतिरिक्त वैदिक धर्म के प्रचार का विशेष आयोजन किया गया था। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत के सुयोग्य प्रधान श्री बाबूलाल जी गुप्त के नेतृत्व में यह प्रचार कार्य काफी सफल रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की ओर से भी कुंभ मेले में प्रचार शिविर लगाया गया था। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं. विश्वम्भरप्रसाद शर्मा ने लगभग १५-२० दिन रहकर सिंहस्थ मेले में आर्य साहित्य के वितरण का विशेष कार्य किया। आ. प्र. सभा म. प्र. व विदर्भ द्वारा इस अवसर पर प्रकाशित "भारत को ईसाई बनाने का स्वप्न" तथा "हिन्दू समाज को चेतावनी" शीर्षक ट्रैक्ट बहुत बड़ी संख्या में सारे मेले में और विशेषत: सिंहस्थ कुंभ पर आये साधु संतों के शिविरों में वितरित किया गया। इस पुस्तिका में भारत में ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र तथा हिन्दू धर्म विरोधी प्रवृत्तियों की समीक्षा करते हुए हिन्दू समाज को उन्हें विफल बनाने तथा ईसाई बनाये गये लोगों को शुद्ध करके पुन: हिन्दू समाज में दीक्षित करने की प्रेरणा दी गई है। मेले में आगत सभी संतों, आचार्यों एवं विद्वानों ने इस पुस्तिका का स्वागत किया और आर्य प्रतिनिधि सभा के इस प्रकार के रचनात्मक कार्य की प्रशंसा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के प्रधान श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा ने विविध साम्प्रदायिक शिविरों में जाकर व्याख्यान दिये और ईसाई पादरियों की राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों को रोकने के लिये हिन्दु समाज का संगठित मोर्चा बनाने की प्रेरणा दी। प्रधान जी के प्रयत्न से कुंभ मेला उज्जैन में चार दिन तक अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन की विविध शिविरों में योजना की गई। निम्बार्क नगर में आपने विशाल जन समूह के समक्ष ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों की कटु आलोचना की और ईसाई धर्म के प्रसार के लिये सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति को दोषी बताया। इसी प्रकार अंकपात स्थित डाकोर खालसा शिविर में आपका प्रभावशाली भाषण हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के वैदिक धर्म प्रचार शिविर में श्री शर्मा जी के दो दिन गोरक्षा और वैदिक संस्कृति पर व्याख्यान हुये।

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और प्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी दिव्यानंदजी भी प्रचारार्थ सिंहस्थ कुंभ में पधारे। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के शिविर में तीन दिन लगातार वैदिक धर्म और आर्यसमाज के व्यापक राष्ट्र सेवा कार्य पर व्याख्यान दिये जिनका बड़ा प्रभाव पड़ा।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शर्मा ने इस अवसर पर एक प्रेस वक्तव्य प्रसारित कर भारत में ईसाई पादरियों की राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों से जनता को सावधान किया और संगठित रूप से उसका मुकाबला करने की प्रेरणा दी। यह वक्तव्य भारत के सभी प्रमुख पत्रों में प्रकाशित हुआ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा, अकोला में सिंहस्थ कुंभ उज्जैन में वैदिक धर्म के प्रचार की योजना स्वीकृत की थी, तदनुसार उक्त प्रचार का आयोजन किया गया। ❋

ओ३म्
जून **आर्य-सेवक** १९६८

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, जेष्ठ शुक्ल १, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४३ | वर्ष-६८ अंक- ६

वेदमूर्ति पं० सातवलेकर जी से एक भेंट--

क्या शहरी भी शतायु हो सकते है ?

(श्री जगन्नाथ शास्त्री, एम. ए.)

"क्या हम शहरी नागरिक भी प्राकृतिक जीवन बिताते हुये शतायु हो सकते हैं ?" यह प्रश्न जब १०२ वर्षीय पं. सातवलेकर जी से किया गया तो वे किंचित मुसकराये और बड़े विश्वास पूर्वक कहने लगे, प्रत्येक वह व्यक्ति जिसमें दृढ संकल्प शक्ति है शतायु तो हो ही सकता है, इससे भी कहीं अधिक आयु वाला हो सकता है, अब तक हुये हैं और होंगे भी ।

पंडित जी से जब दीर्घ जीवन के रहस्य के विषय में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि :--

ब्राह्म मुहूर्त में उठना । प्रतिदिन दोनों संध्या समय प्राणायाम, ध्यान तथा गायत्री का जाप करना । अवस्थानुसार सूर्य नमस्कार करना । शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आसन, प्राणायाम और सूर्य नमस्कार का दिनचर्या के अंग हो जाना आवश्यक है । नियमित और समय पर भोजन । मन स्वस्थ रहे । "मन स्वस्थ कैसे रहे" ?

उसके लिये भी बड़ा आसान तरीका है । १- सुख-दुख, हानि-लाभ, शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों को सहन करने का अभ्यास । २- चिन्ता मुक्त रहना । ३- निराशावादी विचार जैसे यह संसार क्षणभंगुर है या दुखपूर्ण है, मन से निकाल देना । ४- जीवेम: शरदः शतं के विचार को स्मरण रखना । ५- ईश्वर में विश्वास रखकर उसके सच्चिदानन्द स्वरूप का ध्यान करना । ६- अपना पृष्ठवंश (पीठ, रीढ़ की हड्डी) सीधा रखना । और ७- अपने जीवन के उद्देश्य को महायश मानकर उसकी पूर्ति के लिये निरन्तर प्रयत्न करते रहना ।

आहार- इतने सूर्य नमस्कार करने के लिये क्या कोई विशेष आहार चाहिये ?

जी नहीं । एक दम सादा भोजन । प्रातः नित्य कार्य से निवृत्त हो कर आधा सेर दूध (गाय का) और चाहे तो गाय का आधी छटांक घी पर्याप्त है ।

गौ हत्या- जब पंडित जी ने गौ दूध और गौ घृत की चर्चा की तो अनेक प्रश्न उठ खड़े हुये । क्या भारत में गौ दूध-घी आज सम्भव है और क्या विदेशों में गौ दूध-घी मिलता है । पं. जी ने कहा-भारत को छोड़ कर सर्वत्र गौ दूध-घी मिलता है ।

क्या प्राचीन भारत में गौ मांस का प्रयोग होता था ।

गौ मांस हो नहीं किसी भी प्रकार मांस प्राचीन भारत में प्रयोग नहीं होता था । भारत के प्राचीनतम ग्रन्थों में मांसाहार का कहीं भी प्रमाण नहीं है । एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें मांसाहार की अनुमति हो । गाय को तो वैसे भी वेदों ने "अघन्या कहा है अर्थात् वह जो मारा न जावे ।"

गौमेध- क्या प्राचीन समय में यज्ञों में पशु बलि की प्रथा नहीं थी । "कभी नहीं । क्या नरमेध का अर्थ मानव हत्या करने से है । और क्या पितृमेध का अर्थ पिता की हत्या करना है यदि हो तो कोई उदाहरण दें कि किसी ने अपने पिता की हत्या करके यज्ञ में बलि दी हो । यह सब केवल पराधीन इतिहास का ही दुष्परिणाम है जो इस प्रकार के उदाहरण दिये जाते हैं ।

ईसाइयों की राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों को रोका जाय

(आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान श्री शर्मा जी का वक्तव्य)

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान श्री विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा ने एक वक्तव्य में इस बात पर खेद प्रकट किया है कि भारत सरकार की ओर से देश में चल रही ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र तथा हिन्दू धर्म विरोधी प्रवृत्तियों को रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा है। ईसाई मिशनरियों का प्रकोप भारत में बढ़ता जा रहा है और जिस तरह नागालेण्ड में ईसाई बने नागा भारतीय गणतंत्र की प्रभुसत्ता को सशस्त्र चुनौती दे रहे हैं और भारत से प्रथक अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने के लिये युद्ध के रूप में संघर्ष कर रहे हैं, यदि इसी तरह अन्य प्रदेशों में भी ईसाइयों का प्रकोप बढ़ता रहा और हिंदुओं को प्रति वर्ष लाखों की संख्या में ईसाई बनाया जाता रहा तो मध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र और केरल आदि प्रदेशों में इसी प्रकार भारत की प्रभुसत्ता को चुनौती देकर स्वतंत्र ईसाई राज्यों की स्थापना की मांग की जायेगी।

विदेशी धन और ईसाई धर्म प्रचारक

श्री शर्मा ने सिंहस्थ कुंभ मेला उज्जैन में उपस्थित जनता के पूज्यनीय जगतगुरु शंकराचार्य, संत, महन्तों और महामंडलेश्वरों तथा आर्य समाज सनातन धर्मी संस्थाओं से अनुरोध किया है कि वे संगठित होकर योजनाबद्ध रूप से देश में बढ़ते हुए ईसाइयों की राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों को निष्फल बनावें। गत २० वर्षों में भारत में ईसाइयों की संख्या दो करोड़ से अधिक हो गई है जबकि स्वराज्य प्राप्ति से पहले उनकी संख्या २५० वर्षों में ७० लाख से अधिक नहीं बढ़ पाई थी। यह सब कांग्रेस शासन की धर्म निरपेक्ष नीति का ही परिणाम है कि जिसके कारण ईसाई मिशनरियों को विदेशों से हिन्दुओं को धर्मान्तरित करने के लिये करोड़ों रुपया प्राप्त हुआ और आज भी विदेशों से ईसाई पादरियों को ४०-५० करोड़ रुपया प्राप्त होता है।

श्री शर्मा ने हिन्दू जनता से अनुरोध किया है कि वे अपने बच्चों को ईसाई मिशनरियों के स्कूलों में पढ़ने के लिये न भेजें। यह ठीक है कि वहां उन्हें अच्छी अंग्रेजी और पाश्चात्य शिष्टाचार सिखाया जाता है परन्तु इसके साथ ही उनमें भारतीय संस्कृति विरोधी भावना और हिन्दू धर्म के प्रति उपेक्षा उत्पन्न की जाती है और यह हमारे लिए कभी मंगलकारी नहीं हो सकता। आपने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि मध्यप्रदेश सरकार ईसाइयों की इस प्रकार की प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने के लिये कानून बनाने चली है और उड़ीसा सरकार ने इस प्रकार का कानून बना दिया है। वस्तुतः भारत में इस प्रकार का बलात् या किसी प्रकार के प्रलोभन द्वारा किये जाना वाला धर्म परिवर्तन सर्वथा गैर कानूनी कर देना चाहिये।

आपने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की ओर से उज्जैन कुंभ में बहुत बड़ी संख्या में साहित्य वितरित किया जा रहा है जिसमें हिन्दू जनता को चेतावनी दी गई है कि वह भारत को ईसाई बनाने के ईसाई मिशनरियों के कुचक्र को सफल न होने दें और संगठित रूप से हर प्रदेश में ईसाई मिशनरियों के विरोध में लोगों को सचेत किया जाय तथा जिन हिन्दुओं को ईसाई बना लिया गया है उन्हें फिर से शुद्ध करके हिन्दू धर्म में पुनः प्रतिष्ठित किया जाय।

गोहत्या बंद हुए बिना देश सुखी समृद्ध न होगा
गोरक्षा सम्मेलन उज्जैन में संतों की गर्जना।

अ. भा. गोरक्षण-गोसंवर्धन सम्मेलन का चार दिवसीय अधिवेशन दि. ४ मई ६८ को जगत्गुरु श्री निम्बार्काचार्य जी महाराज की अध्यक्षता में निम्बार्क नगर सिंहस्थ कुंभ मेला, उज्जैन में समाप्त हो गया। जगत्गुरु निम्बार्काचार्य जी महाराज ने अपने भाषण में गोहत्या बंद न करने की भारत सरकार की घातक नीति का विरोध करते हुए कहा कि गोहत्या जारी रख के सरकार देश के भविष्य को अंधकारमय बना रही है। उसका यह कार्य प्रजातंत्र की भावना के सर्वथा विरुद्ध है। आपने कहा कि सरकार ने ७ नवंबर १९६६ को १० लाख गोभक्तों के शांत और अनुशासित प्रदर्शन पर गोली चलवाकर और सैकड़ों गोभक्तों का खून बहाकर जो अत्याचार किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। इसी अत्याचार का परिणाम है कि कांग्रेस को पिछले आम चुनाव में कई राज्यों में अपदस्थ होना पड़ा और यदि भविष्य में भी उसने गोहत्या जारी रखके जनता के धर्म और संस्कृति के प्रति उपेक्षा बनाई रखी तो आगे भी उसे इसी प्रकार पराजित होना पड़ेगा। सम्मेलन के इस समारोह अधिवेशन में करीब १० हजार व्यक्ति उपस्थित थे।

गोहत्या के पक्षपातियों को मत न दें

सम्मेलन का उद्‌घाटन दि. १ मई को डाकोर अखाड़ा के वयोवृद्ध महन्त श्री रामनारायणदास जी ने अंकपात क्षेत्र में किया जिसकी अध्यक्षता दतिया के के राष्ट्र सेवी और परम गोभक्त सेवी और परम गोभक्त महामंडलेश्वर महन्त श्री दासरथीदास जी ने की थी। आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जब तक संपूर्ण गोवंश की हत्या बंद नहीं होगी तब तक देश सुखी और समृद्ध नहीं बन सकेगा ओर न हमारी स्वतंत्रता ही सुरक्षित रह सकेगी भारत में गोहत्या जारी रहना प्रजातंत्र का अपघात है। जो लोग गोहत्या के पक्षपाती हैं ऐसे लोगों को जनता द्वारा चुनाव में अपना मत नहीं देना चाहिये। आपने भारत गो सेवक समाज की सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि उसके द्वारा सिंहस्थ कुंभ मेले में विविध क्षेत्रों में अ. भा. गोरक्षण गोसंवर्धन सम्मेलन का जो आयोजन किया गया है वह स्तुत्य है। उससे जनता में गोहत्या के कलंक के निवारणार्थ उत्सर्ग करने की भावना के साथ गोसंवर्धन की भावना भी जागृत होगी।

देश की आत्मा और गोहत्या

भारत गोसेवक समाज के मंत्री श्री विश्वंभर प्रसाद जी शर्मा ने कहा कि भारत गोसेवक समाज पिछले २० वर्षों से जहां संपूर्ण गोवंश की हत्या को बंद करवाने के लिये विविध राज्यों में कानून बनवाने का प्रयत्न कर रहा है वहां उसने गोवंश की नस्ल को उन्नत बनाने और उसकी दुग्ध उत्पादन की क्षमता को बढ़ाने के लिये भी प्रयत्न किया है ओर गोशालाओं को उन्नत तथा संगठित किया है। आपने कहा कि देश की आत्मा को तब तक संतोष नहीं होगा जब तक संपूर्ण गोवंश की हत्या बंद नहीं होगी।

साधु संत रहेंगे या गोहत्या रहेगी

सम्मेलन में मानस मार्तण्ड श्री प्रेमदास जी रामायणी, आचार्य महन्त श्री सीताराम शरणदास जी, योगीराज डाक्टर गोवत्स जी, महन्त श्री सर्वेश्वरदास जी त्यागी, महन्त श्री हरिदास जो रतलाम आदि सन्तों के भाषण हुए। सभी वक्ताओं ने गोहत्या जारी रखने के लिए सरकार की निंदा की और यह घोषणा की कि इस देश में या तो गोहत्या ही रहेगी या साधू सन्त रहेंगे। दिल्ली में १९६६-१९६७ में जो गोरक्षा आन्दोलन हुआ उसमें रामानंदी सम्प्रदाय के संतों ने बहुत बड़ा योग दिया और अब भी वे आंदोलन का शखनाद होते ही उसी उत्सर्ग भावना के

मनमाड का ईसाई पादरी भारत से निर्वासित

महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री श्री वी. पी. नाइक ने पत्रकारों को बताया कि सरकार ने नासिक जिले में मनमाड में एक ईसाई मिशनरी फादर फ़ेररको उसकी सरगर्मियों की गहराई से जांच-पड़ताल के बाद भारत से निर्वासित करने का फैसला किया है।

आपने तत्सम्बन्धी विवरण बताने से इन्कार करते हुए कहा कि जब केन्द्र ने राज्य के इस फैसले को मान लिया तो उदारता वश दो बार ईसाई पादरी की अवधि बढ़ाई गई। उसकी गतिविधियों की जांच वरिष्ठ अधिकारियों ने की।

विसेन्ट फ़ेरर ने अपने ११ वर्ष के दौरान किये हुए कार्यों की निष्पक्ष जांच की मांग की है। पादरी ने पत्रकारों को बताया कि उसके निर्वासन के आदेश का कोई कारण या आधार नहीं बताया गया है।

यह पादरी स्पेन का है जिसने शेतकारी सेवा मण्डल के नाम से किसानों का एक संगठन भी बना रखा है तथा भारी पैमाने पर भारत और विदेशों से एकत्र किया धन किसानों में बांटा है। उसका कहना है कि इस दौरान उसने एक भी हिन्दू या मुसलमान को ईसाई नहीं बनाया।

फादर फ़ेरर ने कुछ समय पूर्व भारतीय नागरिकता के लिए भी आवेदन किया था।

साथ योग देने के लिए उद्यत हैं। सम्मेलन का एक अधिवेशन सिंहस्थ मेला स्थित आर्य समाज के वैदिक प्रचार शिविर में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत के प्रधान श्री बाबूलाल जी गुप्त की अध्यक्षता में हुआ जिसमें अध्यक्ष महोदय के अतिरिक्त श्री अमरस्वामी जी, गोशाला संघ के मंत्री श्री शिवशंकर जी रावल, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान श्री विश्वंभरप्रसाद जी शर्मा के भाषण हुये।

गोवंश हत्या पर कानूनन प्रतिबंध

सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव स्वीकृत हुए जिनमें सरकार से तत्काल केन्द्रीय कानून द्वारा संपूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध लगाने, पशु खाद्य का निर्यात रोकने, गोचर भूमि को मुक्त करने, साबुन चर्बी की मिलावट से मुक्त करने तथा जिला स्तर पर गोसदन और गोसंवर्धन केन्द्र स्थापित करने की मांग की ताकि गोरक्षण और गोसंवर्धन का उद्देश्य सफल हो। एक प्रस्ताव द्वारा सम्मेलन ने जनता से गोपालन करने और प्रत्येक घर में गाय के दूध का ही उपयोग किये जाने तथा कतल किये पशुओं के चमड़े की वस्तुओं का बहिष्कार करने का अनुरोध किया। सम्मेलन के सभी अधिवेशनों में जनता की प्रचंड उपस्थिति रही और सिंहस्थ मेले में आने वाले लाखों नर-नारियों के हृदय में गोरक्षा की भावना गूंजती रही।

मैं नशाबंदी के हित में उन राज्यों के कानून को भग करने के लिये तैयार हूं। यदि उस क्षेत्र में हमें जेल भेज दिया जाय तो यह बात नशाबंदी के शानदार सघर्ष का अंतिम ज्वलंत अध्याय होगा जो राष्ट्रपिता गांधी जी द्वारा छोड़ी हुई प्राचीन विरासत है।

—अन्नादुराई, मुख्यमंत्री, मद्रास

भगवान बुध्द और वैदिक धर्म

(प्रिन्सिपल अविनाशचन्द्र जी बोस, एम. ए पी. एच. डी.,)

भारत के लिए महात्मा बुद्ध की २५०० वीं जयन्ती का मनाना एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस भारत के महान् मुनी ने जिसे पौराणिक हिंदुओं ने भी नवम् अवतार के रूप में सम्मानित किया और जिस का समस्त सुधारवादी हिन्दुओं ने उसके महान् आदर्शवाद और श्रेष्ठ व्यक्तित्व के लिए आदर किया युग निर्माता के रूप में उन्होंने जो कार्य किया था उसे प्रमुखता दिखाई। ऐतिहासिक दृष्टि से भगवान बुद्ध के विषय में एक बहुमूल्य साहित्य लिखा गया है जिस में स्व० श्री आनन्दकुमार स्वामी, श्री और श्रीमती राइसडेविडस और डा० राधाकृष्णन् जी द्वारा लिखित पुस्तकों का समावेश है और बर्तमानकाल में भी इस विषय पर कई लेख लिखे गये हैं किन्तु अधिक साहित्य की आवश्यकता और आशा की जाती है विशेषत: वेदों के साथ महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की श्रृङ्खला के विषय में।

गत कई वर्षों से हमारे विद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों के द्वारा यह पढ़ाया जाता रहा है कि बौद्ध मत में ब्राह्मणवाद का विरोध था और यह बैदिक धर्म के विरुद्ध एक क्रान्ति थी। साथ ही वैदिक धर्म के विषय में जो सूचना हमारे युवक गत शताब्दी से अधिक काल से प्रतिवर्ष प्राप्त करते रहे हैं वह यह है कि इसमें पशुओं की बली दी जाती थी और भगवान बुद्ध ने गरीब पशुओं को वैदिक पुरोहितों से बचाने का यत्न किया। इस वर्णन ने वेद और वैदिक धर्म के विषय में वास्तविक तथ्यों पर आवरण डाल दिया है। हमारे विद्यार्थियों को यह नहीं बतलाया जाता कि महात्मा बुद्ध के मन में वैदिक ब्राह्मणों के चरित्र के लिए इतने आदर का भाव था कि वे सब वर्गों में से लोगों को ब्राह्मण बनाना चाहते थे जो ब्राह्मणों के गौरव में भाग ले सकें (देखो धम्मपद ब्राह्मणवग्ग) और यह बात कम महत्व की नहीं कि महान अशोक ने अपने शिला-लेखों के द्वारा जनता को शिक्षा देते हुए बौद्ध भिक्षु प्रचारक श्रमणों से पूर्व सर्वत्र ब्राह्मणों का नाम लिया है। अब तक हमारे विद्वानों ने भारत में बौद्ध मत के इतिहास को शुद्ध दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयत्न नहीं किया। बहुत से विदेशी विद्वानों की कठिनाई यह है कि वे यह कल्पना नहीं कर सकते कि एक नवीन मत को जिसने पुराने धर्म की आलोचना की और लोगों को परम्परागत मार्ग से हटाया, पुराने धर्म के मानने वाले उसे किस आदर से देख सकते हैं और नवीन मार्गदर्शक जो कई अंश में क्रान्तिकारी हैं प्राचीन परम्परागत धर्म के नेताओं में आदर युक्त स्थान प्राप्त कर सकता है।

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की Mahatma Buddha an Arya Reformer (महात्मा बुद्ध एक आर्य सुधारक) यह पुस्तक एक अत्यन्त अभिनन्दनीय प्रकाशन है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का वेद के साथ सम्बन्ध की दृष्टि से अनुशीलन किया गया है और इस विषय पर नवीन प्रकाश डाला गया है। उदाहरणार्थ पण्डित जी ने बताया है कि ललित विस्तर में बुद्ध के विषय में स्पष्ट लिखा है कि--

स ब्रह्मचारी गुरु गेहवासी,
तत्कार्यकारी विहितान्नसेवी।
सायं प्रभातं च हुताशसेवी,
व्रतेन वेदांश्च समध्यगोष्ट॥

अर्थात् सिद्धार्थ ने ब्रह्मचारी बन कर गुरुकुल में निवास किया गुरुओंकी सेवा की, शास्त्रविहित आहार का सेवन, प्रातःसायम् अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्य के व्रत का पालन करते हुऐ वेदों का अध्ययन किया।

इस पुस्तक का सप्तम अध्याय उन लोगों की आँखें खोल देगा जो समझते रहे हैं कि बुद्ध वेदों का विरोधी था। बुद्ध की वेदगू अथवा वेदज्ञ की परिभाषा

जैसे कि सुत्तनिपात श्लोक ५२९ में बतायी गई है वह है कि--

वेदानि विचेय्य केवलानि,
समणानं यनि प अत्थि ब्रह्मणानम् ।
सब्बा वेदनासु वीतरागो,
सब्बं वेदमनिच्च वेदगूसो ॥

अर्थात् जिसने वेदों का अध्ययन किया है और जो सारे संसार को अनित्य समझते हुए सब वासनाओं, आसक्ति और राग से रहित हो गया है वह वेदज्ञ है।

पं० धर्मदेव जी ने बताया है कि महात्मा बुद्ध का वेद विषयक यह विचार अङ्गरेजी में बौद्ध ग्रन्थों के अनुवाद का अध्ययन करने वालों से इसलिए अज्ञात रहा कि उन अनुवादों में वेदगू का अर्थ, वेदज्ञ के स्थान में केवल ज्ञानी (Lores adept) या सिद्ध (Accomplished) इत्यादि कर दिया गया है और जहाँ सुत्तनिपात श्लो. ७९२ आदि मे विद्वां च वेदेहि समेच्च धम्मं न उच्चावचं गच्छति भूरपञ्जो। यह कहा गया है कि बुद्धिमान वेदों के द्वारा धर्म का ज्ञान प्राप्त करके डांवाडोल नहीं होता वहाँ अंगरेजो अनुवादों में केवल Wisdom वा ज्ञान ऐसा अर्थ कर दिया है जो यथार्थ नहीं। उन्होंने सुत्तनिपात श्लो. ५६८ को भी इस वेद विषयक प्रकरण में उद्धृत किया है कि--

अग्गिहुत्तमुखा यञ्ना, सावित्ती छंदसो मुखम् ।

अर्थात् यज्ञों में प्रधान अग्निहोत्र है और वेद का मुख सावित्री वा गायत्री मन्त्र है। इस प्रकार के वचनों से महात्मा बुद्ध का वेद और सच्चे वैदिक विद्वानों के लिए आदर का भाव सूचित होता है। पण्डित जी ने बुद्ध की पँचशील अष्टाङ्ग मार्ग आदि विषयक शिक्षाओं की वेदों और वैदिक साहित्य में दिये वचनों से समानता को भी दिखाया और इस सामान्य विश्वास का खण्डन किया है कि महात्मा बुद्ध नास्तिक थे। महात्मा बुद्ध ने वैदिक शब्द आर्य का जो बार-बार प्रयोग किया है इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्हें इससे कितना प्रेम था। वे भी वेदों के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् इस आदेश के अनुसार सब को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धर्मात्मा अहिंसादि व्रत पालक बनाना चाहते थे।

श्री आनन्दकुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक Buddha and the Gospel of Buddhism में एक स्थान पर कहा है कि बुद्ध का विशाल वैदिक विचार जगत में एक अल्प स्थान है। विज्ञान भिक्षु के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने बौद्ध दर्शन की सप्तम वैदिक दर्शन के रूप में गणना की थी। संयुक्त निकाय में गौतम ने एक प्राचीन नगर का वर्णन किया जो चारों ओर घने जंगल से घिर गया था और एक राजा ने उस घने जंगल को साफ करा दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि उस नगरी की शोभा द्विगुणित हो गई। इस वर्णन के पश्चात् भगवान् बुद्ध ने कहा कि मैंने भी इसी प्रकार एक पुराने मार्ग को जीवन के प्राचीन मार्ग को खोज निकाला है। प्राचीन काल के बुद्धिमान लोग इस मार्ग पर चला करते थे। (संयुक्त निकाय १२, ६५, १९, २१) मैं भी इसी मार्ग पर आगे बढ़ता जा रहा हूँ। (१२, ६५, २२)

पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि महात्मा बुद्ध सचमुच ऐसा ही कर रहे थे और उन्होंने प्राचीन वैदिक ऋषियों और ज्ञानियों के मार्ग के विषय में प्रामाणिक सूचना देने का प्रयास किया है। उन्होंने जो आवश्यक महत्वपूर्ण कार्य इस सम्बन्ध में किया है इसके लिये मैं उन्हें बधाई देता हूँ। पर मैं यह भी आशा करता हूँ कि विशाल वैदिक साहित्य और साथ ही बौद्ध साहित्य में जो विशालता उन्हें प्राप्त है वे अपने इस विषय का और भी अधिक विस्तृत विवेचन करके वैदिक धर्म और बौद्ध मत के सम्बन्ध के विषय में जो बहुत काल से भ्रान्तियां चली आ रही हैं उनके निवारण में सहायक होंगे।

(वेद प्रकाश से साभार)

जीवन सुखी बना लो !

लेखक – विनयकुमार पाठक, पत्रकार, बिलासपुर (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ, पंचम और छठे समुल्लास में गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम एवं कुशल राजनीति की तरह से राजधर्म का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है। विवाह और गृहस्थाश्रम के विशुद्ध परम्परा का अन्वेषण करने का सुझाव, ब्रम्हचारी व्यक्ति ही पठन-पाठन को पूर्ण करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश पा सकता है । उसी तरह समस्त व्यवहारिक कला में निपुण, धार्मिक ग्रंथों में विशेष रुचि से युक्त, नृत्य, संगीत, पाक कला, समाज शास्त्र, विज्ञान शास्त्र पर समुचित ज्ञान रखने वाली सुशील कन्या से जहां तक हो सके संबंध करना चाहिए ।

नारी मानवता की देवी, सहचरिणी, रथ के दो चक्रों में से एक समानाकार चक्र, लक्ष्मी अवतार, प्रेम वात्सल्य की मूर्ति, अर्धांगिनी और न जाने क्या २ नर के साथ कई प्रकार से संबंधित गाठों से बंधी हुई है जिसके कि न होने से पुरूष का कोई अस्तित्व नहीं अर्थात् नर नारी अन्योन्याश्रित हैं, परस्पर पूरक हैं। ठीक ही कहा है-

नारी निंदा मत करो, नारी नर की खान ।
नारी से नर होत हैं, ध्रुव, प्रहलाद समान ।।

तो गेटे महोदय के अनुसार-

"Wife is gift, bestowed upon man to reconcile him to the loss of paradise."

हमें मानना ही पड़ेगा कि नारी ईश्वरीय देन है। १६ वें वर्ष से २४ वें वर्ष तक की कन्या व २५ वर्ष से ४८ वर्ष के पुरूषों का विवाह उत्तम माना गया है। विवाहादि के दौरान कन्या व वर दोनों पक्षों को चयन करने की पूरी स्वतंत्रता देनी चाहिए जो भी धार्मिक संस्कार विधि के अनुसार पवित्र बेला अर्धरात्रि के कुछ पहले सोत्साह पाणिग्रहण समेत भरी समाज के मध्य सम्पन्न हो । जाति के अनुसार ही अपने २ कर्मों में अड़िग रह मोक्ष के हेतु धार्मिक चीजों को मान्यता देवें । स्वामी जी ने गृहस्थाश्रम के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा भी है-

जो गृहस्थाश्रम न होता तो संतानोत्पत्ति के न होने से ब्रम्हचर्य, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कहां से हो सकते । जो कोई गृहस्थाश्रम की निंदा करता है, वही निंदनीय है और जो प्रसंशा करता है, वही प्रशंसनीय है । परंतु तभी गृहस्थाश्रम में सुख होता है जब स्त्री और पुरूष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान, पुरूषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों का ज्ञाता हो । इसीलिये गृहस्थाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रम्हचर्य और पूर्वोक्त स्वयंवर विवाह है ।

गृहस्थाश्रम के पश्चात् वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए । सत्संग, योगाभ्यास युक्त, सुविचार से सुपवित्र ज्ञान संचित करना, मोहादि को जहां तक होवे परित्याग करना, परोपकार में संलग्न, इंद्रियों को दमन करने वाले दयालु सज्जन ही वानप्रस्थाश्रम में रहने के पश्चात् (७५ वर्ष की आयु के पश्चात्) मोहादि से पूर्ण निवृत्त हो, ममता एवं अहंकार से से पूर्णतया विरक्त, इष्ट ब्रम्ह की शरण में पड़ा 'तत्वमसि', 'अहं ब्रम्हास्मि', आदि महावाक्यों के अर्थ का अनुभव कर निर्विकल्प समाधि के द्वारा सुनिश्चित, पूर्णतया मुक्त योगी ही सन्यासी है और वही पूज्य है । जिस तरह जप, तप, व्रत, उपवासादि से चरित्र निर्माण होता है उसी तरह त्याग की मात्रा को अधिकता देने से मानव धार्मिक बनने लगता है । माया भक्त का बाल बांका भी नहीं कर सकती । उस पर शिकारी जाल नहीं फैला सकती क्यों कि दोनों स्त्री लिंग किंतु माया से आक्रांतों की मुक्ति कभी नहीं होती ।

तभी तो किसी ने कहा है--

चिंतामणि को त्याग, नेह लगाया कांच से ।
पुन्य छोड़, जलता निशि दिन है पापों की आंच से ॥
पूर्व जन्म सत्कर्म से पाया ऐसे नर तन को ।
खाना पड़े न यम के डंडे वश में रख सतत मन को ॥
विषयों में मन को न फंसाना साथी ।
माया के मेले में न खो जाना साथी ॥

सन्यासियों का प्रमुख धर्म है--

दृष्टि पूतं न्यसेत्पादं वस्त्र पूतं जलं पिबेत ।
सत्यपूतां वेद द्वाच मनः पूतं समाचरेत ॥
कुद्धयंतं च प्रति कृद्धं येदा कुष्टः कुशलं वदेत ।
सप्त द्वारा वाकीर्णो च न वाचममृतां वदेत ॥

यह सब विशुद्ध मन से हो क्यों कि तुलसीदास जी ने भी लिखा है--

निर्मल मन सो मोहि पावा ।
मोह, कपट, छल, छिद्र न भावा ॥

इन आश्रमों पर गुजरता हुआ इसी मार्ग पर अग्रसित मानव सुख और शांति प्राप्त करता हुआ मोक्ष के द्वार खटखटाता है ।

कुशल राजनीति की तरह से राज धर्म में प्रजा और राजा में परस्पर अन्योन्योश्रित होना । प्रेम बीज का बोना अत्यंतावश्यक है क्योंकि कहा भी गया है-

'यथा राजा तथा प्रजा" राजा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए वेद में कहा गया है कि--

सः समेयो विदश्वः सुत्वा यज्वा अथ पुरूषः ।
सूर्यं चामुं रिचा दशे तद देवाः प्राग कल्पयन ॥
ये च देवान अय जन्तो थो ये च परादद्: ।
सूर्योदिवमिव गत्वा य मघवानो विरदशन्ते ॥

अर्थात्- जो सभ्य, ज्ञानवान, युद्ध में कुशल सोम करने वाले एवं शांति प्रिय यज्ञशील, दानशील एवं सूर्य सम तेजस्वी, बलशाली, हिंसक प्राणिओं के नाशक को देव ने पहले बनाया है एवं जिन्होंने विद्वानों का योग सत्कार किया, दूसरे को दान दिया, सुखों की वृष्टि किया वह आकाश स्थित सूर्य के समान उच्च पद प्राप्त करके सुशोभित है। उसी तरह पराक्रमी, शूरवीर, वेदादि शास्त्रों को जानने वाला कुलीन राजा को अच्छी सलाह देने वाला, राजनीति में निपुण अत्यंत चतुर पवित्रात्मा से विभूषित मंत्री हो ।

इसी तरह सबको पृथक उचित कार्य सौंपकर, धार्मिकता से राजनीति को परख कर, न्याय को साथ लेकर प्रजा के कष्टों को दूरदर्शिता के साथ देख उसका निवारण कर विद्वानों का सम्मान कर प्रेम का संचार करने वाला राजा ही कुशल होता है एवं उसके पास राजधर्म की व्यवस्था अति सुंदर रहती है ।

वैदिक काल में गोमांस नहीं खाया जाता था !

केन्द्रीय खाद्य मंत्री, श्री जगजीवनराम के वक्तव्य का कि वैदिक युग में गोमांस खाया जाता था, डट कर विरोध करिये ।

— संसद सदस्य, रामगोपाल शालवाले

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

आर्य समाज दयानन्द भवन

पथरोट से श्री सत्यव्रत जी शास्त्री दिनांक ११ अप्रील को नागपुर पधारे और आर्य समाज, दयानंद भवन में दूसरे दिन रविवार को आपका सत्संग में प्रवचन हुआ। आपने एक वेद मंत्र की बडी ही सुन्दर और प्रभावशाली भाषा में व्याख्या की। यहां से आप भंडारा जिले के एक ग्राम में प्रचारार्थ चले गए। समाज की ओर से आपका स्वागत और समाज की उन्नति पर परामर्श किया गया।

आर्य वीर दल मध्यप्रदेश का शिविर

आर्य वीर दल मध्यप्रदेश का १० दिवसीय प्रान्तीय शिविर मई मास में ग्राम पो. वर्धा, जिला विदिशा में ३० मई से ७ जून ६८ तक लगाने का निश्चय किया गया है।

प्रत्येक मण्डलपति तथा प्रान्तीय अधिकारियों की अंतिम तीन दिन के लिये गणवेश में उपस्थिति अनिवार्य है। विश्वास है कि मण्डलपति तथा प्रान्तीय अधिकारीगण अपने केन्द्र के इस आदेश की अवहेलना नहीं करेंगे तथा अपने नैतिक कर्तव्य के प्रति दृढ़ रहेंगे। शिविर शुल्क १०) है।

बाल आर्य वीरों का शुल्क ८) रु. होगा और ११ वर्ष से कम आयु के आर्य वीर शिविर में प्रविष्ट नहीं हो सकेंगे।

सुखरामजी आर्य द्वारा वैदिक प्रचार

आर्य समाज खंडवा के स्थाई प्रचारक श्री सुखराम जी आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने अप्रैल और मई मास में ग्राम कोलाडित, आवलिया, सिरसोद, आसापुर, छनेरा, बरुड़, खालवा में वैदिक धर्म का प्रचार किया। ईसाई मिशनरियों द्वारा बलाही जाति एवं आदिवासियों को धर्म और सेवा की आड़ में धर्म परिवर्तन कर उनसे देवी देवताओं की पूजा छुड़ाने की घटनाओं से ग्रामीण जनता का सावधान किया गया। आपके उपदेशों का ग्रामीण जनता पर काफी प्रभाव पड़ा।

श्री रामाश्रम आर्योपदेशक द्वारा प्रचार

सभा के उपदेशक श्री रामाश्रम जी ने अप्रैल मास में सरगुजा जिले के सुमेरपुर, अंबिकापुर, सलका, जेजगी, उदयपुर, रामगढ़, चोड़िया, केड़दा, अंधला, लटोरी, गणेशपुर, कालामीटी, बरढोढी, मेंड्रा बकालो, सोहगा, कुबेरपुर, पोड़िया, रेवापुर, लवईडीह, तिपटरा, कालीपुर, गंगापुर, लभगांव में धार्मिक उपदेश, व ईसाइयत को रोकने संबंधी प्रचार किया।

श्री शंकरलाल आर्य द्वारा वैदिक प्रचार

आ. प्र. सभा के उपदेशक श्री शंकरलाल जी आर्य ने मध्यप्रदेश के पिछड़े इलाके में घूम घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। आपके प्रचार से क्रुद्ध होकर ईसाई प्रचारकों ने आपके साथ दुर्व्यवहार किया तथा यज्ञोपवीत तोड़ दिया। पुलिस कार्यवाही हो रही है। फूलपुर में, ७ व्यक्तियों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रवेश किया गया। आपने मनेन्द्रगढ़, सलना, भांड़ी, बडगांव, वैकुण्ठपुर, फूलपुर, अमगांव, आनी, सेमरपारा, बरतरिहापारा, सरईगहना, परसाबहरी, अम्बिकापुर, नरकेली आदि स्थानों में प्रचारार्थ दौरा किया।

शास्त्रार्थ केसरी अमरसिंहजी का चतुर्थाश्रम में प्रवेश

संस्कृत, अरबी और फारसी के विद्वान शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. अमरसिंह जी "आर्य पथिक" ने आर्य समाज स्थापना दिवस, दिनांक २० मार्च १९६८ को

वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर जि. सहारनपुर में संन्यास धर्म ग्रहण किया। आपका नाम अमरस्वामी सरस्वती रखा गया है। आपने सैंकड़ों शास्त्रार्थ करके सनातनी, जैनी, ईसाई और मुसलमान आदि धर्मावलंबियों पर विजय प्राप्त कर आर्य समाज के गौरव को बढाया है।

श्री नन्दलाल वैदिक मिशनरी का वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश

प्रसिद्ध प्रचारक श्री नन्दलाल जी वानप्रस्थी ने ३ फरवरी ६८ को भारत के प्रसिद्ध महात्मा भक्त खेमचन्द जी चांदपुरा वाले तथा हरिद्वार वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर की सन्यासी आनन्द रीति द्वारा विधिपूर्वक दीक्षा लेकर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। श्री नन्दलाल जी दयानन्द सालवेशन मिशन होशयारपुर के सफल प्रचारक रहे हैं। कश्मीर की १९३० की गडबड में मुस्लिम वेश तथा मुसलिम नाम से अपने को संकट में डाल कर राष्ट्र सेवा की। हैदराबाद सत्याग्रह, पंजाब हिन्दी आंदोलन तथा गोरक्षा सत्याग्रह आंदोलन में आपने पूर्ण योग दिया तथा जेल गये। आप अपना कार्य क्षेत्र आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में बनाएंगे।

पुनर्जन्म अनुसंधान हेतु २० लाख डालर की वसीयत

राजस्थान विश्व विद्यालय पुनर्जन्म के वैदिक सिद्धान्त पर अनुसधान कर रहा है और इसके लिए श्री डॉ. आर. एन. बनर्जी की अध्यक्षता में प्रथक विभाग खोला गया है। श्री बनर्जी ने विश्व का भ्रमण करके अपने अनुसंधान सिद्धान्तों परिणामों को प्रचारित किया है। पूर्व जन्म का वृतान्त बताने वाले बच्चों का बिवरण तैयार किया गया है। भारत के इस सिद्धान्त को विदेशों में मान्यता प्राप्त करने के लिए खोज हो रही है।

अमेरिका के एक उद्योगपति ने राजस्थान विश्व विद्यालय को उस कार्य के लिए २० लाख डालर दान रूप में दिये जाने की वसीयत की है। यह अनुसंधान कार्य को बढावा देने में मूल्यवान सिद्ध होगी।

नि:शुल्क उपदेशक विद्यालय

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरयाणा) में १ जुलाई ६८ से नया प्रवेश आरम्भ हो रहा है। यह विद्यालय सर्वथा निःशुल्क है। उपदेशक बनने के उत्सुक छात्र जो अविवाहित हैं तथा जिनकी शिक्षा मैट्रिक एवं तत्सबंधी योग्यता वाले हों आचार्य जी से सम्पर्क स्थापित करें।

१९ ईसाइयों द्वारा हिन्दू धर्म प्रवेश

गत ९ माह पहले, प्रलोभन वश ईसाई धर्म स्वीकार करने वाले समैलाल जगला उरांव, फूलपुर जिला बैकुण्ठपुर ने पुनः २३ अप्रैल को सपरिवार शुद्धि कराकर हिन्दू धर्म प्रवेश किया। इसी प्रकार सुकालूराम आ. गेंदा, ग्राम कुशमहा तहसील बैकुण्ठपुर ने अपने ६ व्यक्तियों के परिवार सहित तथा लुन्दरा आ. सीताराम उरांव ग्राम कुशमहा तहसील बैकुण्ठपुर ने अपने परिवार सहित ईसाई धर्म को तिलांजलि देकर अपने पूर्व हिन्दू धर्म में प्रवेश किया। उक्त तीनों शुद्धि संस्कार सभा के सरगुजा के उपदेशक श्री शंकरलाल जी आर्य ने कराया।

बिलासपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बिलासपुर का २४ वां वार्षिकोत्सव २१ से २६ मई १९६८ तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह को सफल बनाने के लिये महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज, तपोवन देहरादून, पं. शिवकुमार जी शास्त्री, संसद सदस्य, स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती तथा पंजाब की चिमटा भजन मंडली बुलाई गई थी।

इस अवसर पर यजुर्वेद ब्रम्ह परायण महायज्ञ भी हुआ। जिसकी पूर्णाहुति २६ मई को हुई। प्रतिदिन प्रातः सायं भजन तथा उपदेश होते रहे।

म. प्र. में बलात् धर्म परिवर्तन अवैध घोषित होगा

मध्यप्रदेश राज्य के गृह मंत्री मा. श्री वीरेन्द्र कुमार सखलेचा ने पिछले दिनों घोषणा की है कि राज्य सरकार विधान सभा के अगले सत्र से कानून बनाकर ईसाई मिशनरियों द्वारा बलात् धर्म परिवर्तन को अवैध घोषित कर देगी। आर्य समाज खंडवा ने इस सबंध में शासन को प्रस्ताव तथा पात्रादि भेजकर कानून बनाने की मांग की थी।

सत्यदेव आर्य द्वारा प्रचार कार्य

सभा के वैतनिक आर्योपदेशक श्री सत्यदेव जी आर्य ने अप्रैल मास में मध्यप्रदेश के अतिरिक्त उड़ीसा

प्रान्त में वैदिक प्रचार का कार्य किया। आप अप्रैल के द्वितीय सप्ताह में नागपुर पधारे थे तथा प्रचार कार्य विवरण प्रस्तुत किया था।

स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने मई मास में ४ दिन तक बालाघाट जिले में प्रचार किया वहां से सागर तथा जबें में ३ दिन तक वैदिक धर्म का प्रचार कार्य किया।

आर्य समाज जयपुर का निर्वाचन

आर्य समाज किसनगोपाल बाजार, जयपुर का वार्षिक निर्वाचन ५ मई ६८ को निम्न प्रकार हुआ–

श्री उग्रसेन लेखी	–	प्रधान
श्री प्यारेलाल चोपड़ा	–	उपप्रधान
श्री लाला जगन्नाथ जी	–	"
श्री लाला शान्तिनाथ जी	–	"
श्री दामोदरलाल जी गुप्त	–	मंत्री
श्री शम्भुलाल जी गुप्त	–	संयुक्त मंत्री
श्री रामपाल जी गुप्त	–	"
श्री वैद्य मुनिदेव उपाध्याय	–	"
श्री सूर्यनारायण गुहार	–	कोषाध्यक्ष

मंगलमय हो मिलन

डाखोले–ढवंगाडे शुभ संबंध

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ के लेखापाल श्री सुखदेव आनन्दराव डाखोले का शुभ विवाह, तेलगांव, त. सावनेर निवासी स्व. देवराव जी ढवंगाड़े की सुपुत्री सौ. कां. वेणु के साथ १३ मई १९६८ को तेलगांव में सम्पन्न हुआ। नव-दम्पत्ति के सुख-सौभाग्य तथा चिरस्थायी जीवन के लिए सभा की ओर से बधाई।

नागेश–यशोदा संबंध

आर्य समाज अकोला में, श्री नागेश नरसैया अमरावती का शुभ विवाह अकोला निवासी यशोदा बाई शिवराम के साथ १० मई ६८ को, वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ। समाज को ११) दान स्वरूप प्राप्त हुए।

सभा की सूचना

संख्या २७९ – छात्रवृत्तियों व शिक्षा-दान हेतु अपील

दि. २६ नवंबर १९६७ को प्रदेश की आर्य समाजों के प्रधान एवं मंत्रियों का सम्मेलन हुआ था। उसमें निम्न लिखित प्रस्ताव पारित हुआ है :–

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विभिन्न क्षेत्रों में जो अद्वितीय विचार दिये गये हैं उन पर शोध करने वाले इच्छुक विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिये एक निधि का गठन किया जाना आवश्यक है। इसलिये दानदाताओं का ध्यान आकर्षित करते हुए अपील की जानी चाहिये।

इस निधि की स्थापना के बारे में दो मत नहीं हो सकते। निधि के द्वारा हम किसी विश्वविद्यालय में एक चेयर की स्थापना कर सकते हैं या स्वतंत्र रूप से शोध छात्रों को छात्रवृत्तियां दे सकते हैं।

देश और विशेष करके प्रदेश के दानप्रिय महानुभावों व महिलाओं से निवेदन है कि इस संबंध में अपना दान सभा को इस निधि के लिये भेजें। दानदाताओं की इच्छानुसार उनके दान को स्थायी लाभ देनेवाला तथा स्मृति को चिरस्थायी रखने की व्यवस्था भी की जा सकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा इस निधि में राशि लगाने के लिये शीघ्र ही निर्णय लेगी। महर्षि दयानन्द के भक्तों से आशा है कि वे आगे आवेंगे। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों का शैक्षणिक एवं विद्वानों के क्षेत्र में प्रभाव बनाये रखने के लिये यह एक उत्तम रास्ता है।

जबलपुर,
दि. १५–५–१९६८

– जयसिंह गायकवाड,
संयोजक

संख्या २८० – धार्मिक परीक्षाएं

सार्वदेशिक विद्या आर्य सभा द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षा का केन्द्र गत वर्ष जबलपुर में खोला गया था। इस केन्द्र से २२ कुमार व कुमारियां बैठीं थीं। इनमें से २० परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। सभा की ओर से इन समस्त विद्यार्थियों को बधाई दी जाती है।

गत दिनों प्रदेशीय कार्यकर्ता सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित करके समस्त समाजों में परीक्षा केन्द्र खोलने का आग्रह किया गया है।

आगामी परीक्षाएं जुलाई मास में होंगी। समाजों के एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे आगामी परीक्षाओं में अधिक से अधिक संख्या में परीक्षार्थियों को बैठाएं। वांछित जानकारी श्री देवव्रत धर्मेन्दु, परीक्षा मंत्री, सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन, दिल्ली से प्राप्त का जा सकती है।

संख्या २८१-मंत्री सभा का कार्य

दिनांक २६ अप्रील को मैं नागपुर से निकला और उसी रात दुर्ग पहुंचा। दिनांक २७ को सभा के प्लाटों की बिक्री संबंधी कार्य किया और प्राचार्यजी के साथ तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की समस्याओं पर विचार किया तथा हिसाब जांचा। दिनांक २८ रविवार को आर्य समाज, रायपुर, के साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित रहा। स्थानीय अधिकारियों से भेंट की और समस्याओं पर विचार किया। उसी दिन संध्या समय सभा के ग्राम लवन पहुंचा। दिनांक २९ को लवन के कृषि संबंधी प्रश्नों के बारे में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को आवश्यक आदेश दिए तथा ढुनढ़नी की भूमि की विक्रय की समस्या को हल किया। दिनांक ३० को ११ बजे बलौदाबाजार पहुंचा। सभा के वकील से भेंटकर न्यायालय में चल रहे मामलों पर विचार किया व आवश्यक आदेश प्राप्त करने को कहा। आर्य समाज के पुराने प्रेमी व वर्तमान प्रधान श्री यदू साहब से भेंट की। समाज की सुन्दर भूमि के उपयोग पर चर्चा की। श्री सुंदरलाल जी गुप्त से भी भेंट की व समाज की उन्नति पर विचार विमर्श किया। भाटापारा होते हुए रेलमार्ग से रात्री को दुर्ग वापस आ गया। दिनांक १ मई को माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त से दुर्ग भूसंपत्ति व दयानंद शिक्षा समिति के बारे में विचार किया। श्री यदू व श्रीरामदयाल जी साहू, एडवोकेट, महोदयों को सभा के मामले समझाए और न्यायालय में उचित कार्यवाही करने का कार्य सौंपा। दुर्ग समाज मंदिर का जो कार्य चल रहा है उसका निरीक्षण किया। ५ बजे भिलाई पहुंचा व प्रतिनिधियों व स्थानीय आर्यों से भेंट की तथा स्थानीय समस्याओं पर विचार किया। दिनांक २ को तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय के भवन की वृद्धि पर इंजीनियर व ठेकेदार से चर्चा की। ४ बजे रायपुर पहुंचा और वहां की समाज की बैठक में भाग लिया। तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय में एंजिन से पानी पहुंचाने के संबंध में विक्रेताओं से टेण्डर प्राप्त किए। रात्री को ९ बजे दुर्ग वापस आ गया। दिनांक ३ को प्राचार्यजी को साथ लेकर माननीय श्री घनश्यामसिंह जी से भेंट की व स्थानीय समस्याओं पर विचार किया। उसी दिन मध्यान्होत्तर में श्री गुप्त जी के साथ विद्यालय भवनों के नव-निर्माण, नकशे, आनुमानित व्यय, आदि विषयों पर चर्चा की। दिनांक ४ को प्राचार्यजी व श्री. आर. के. गुप्ता जी इंजीनियर के साथ कूरा पहुंचा। सभा के खेतों की उपज, वृद्धि, हिसाब, आदि विषयों पर सहायक प्रबंधकजी से चर्चा की। दिनांक ५ मई को वह कृषि क्षेत्र आदि देखे जिन्हें कुछ लोग क्रय करना चाहते हैं। संध्या समय भिलाई पहुंचा और उस रात वहीं ठहरा। दिनांक ६ को दुर्ग भूमि के प्लाट क्रेताओं को भूमि बतलाई तथा सौदों पर विचार किया। दि. ७ को दयानन्द शिक्षा समिति की बैठक में उपस्थित रहा। संध्या समय सभा के उपप्रधान श्री बालकृष्ण जी चढ्ढाजी से विद्यालय में भेंट की और समस्याओं पर चर्चा की। दिनांक ८ को नागपुर वापस आ गया।

महर्षि दयानंद भवन,
नागपुर,
दि. २४-५-१९६८

श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

३४ श्री संस्थापकजी,
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांघला, जिला रोहतक (पंजाब)

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

जुलाई] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, आषाढ शुक्ल २ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ } वर्ष ६८ अंक ७ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान ।
युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम ।।

यजु. ४०।१६

अग्नि देव ! तुम सब सुख-दाता । सब ही विद्याओं के ज्ञाता ।।
हमें श्रेष्ठ पथ से ही ले चल । फंसे न हम प्रभु ! दुर्गुण-दलदल ।।
कुटिल कर्म से मुक्त कराओ । पाप कर्म सब दूर भगाओ ।।
धर्म मार्ग ही हम अपनाएं । उत्तम कर्म, व ज्ञान कमाएं ।।
सदा तुम्हारी हीं स्तुति गाएं । कर प्रशंसा, पुण्य कमाएं ।।
गहें नम्रता; आनन्द धारें । ओ३म् नाम तव प्रिय उच्चारें ।।
सदाचार प्रिय हो हम सब जन । करें होम गाएं श्रुति-गायन ।।
धर्म जाति हित हो यह जीवन । आर्यों का हो पावन तन, मन ।।

दोहा

देह समर्पण देश हित, धर्म हेतु मम प्राण ।
श्रुति-प्रचार हित ज्ञान दूं, वर दो यह भगवान ।।

– श्रीकृष्ण गुप्त, सिध्दान्त रत्न

वार्षिक मूल्य सम्मानित – ५) साधारण – २) } सम्पादक – दिव्यानन्द सरस्वती { एक अंक पचीस पैसे

सिंहस्थ कुंभ मेला, उज्जैन में

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, का प्रचार शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश और मध्यभारत के प्रचार शिविरों में अनेक उपदेशक और सन्यासी पधारे। स्वामी अमर मुनिजी के ओजस्वी व्याख्यानों को सुनकर जनता काफी प्रभावित हुई। दोनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रचार कार्य में पारस्परिक सहयोग रहा।

साथ के चित्र में — शिविर के मुख्य द्वार पर आसी न बाएं से श्री कन्हैयालाल शर्मा, एम ए., नायब तहसीलदार, श्री महिपालसिंह शर्मा प्रचारक भारत गोसेवक समाज, एक कार्यकर्ता, पीछे खडी हुई हैं लोक सेवा आश्रम की संचालिका श्रीमती शान्तिदेवी शर्मा।

सिंहस्थ कुंभ मेले में ईसाई पादरियों की राष्ट्र एवं हिन्दू धर्म विरोधी प्रवृत्तियों की अपने व्याख्यान में कटु आलोचना करते हुए, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० विश्वम्भरप्रसाद शर्मा। सभा के उप-प्रधान एवं वेद-प्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती सामने बैठे हुए दिखाई पड़ रहे हैं।

जुलाई ओ३म् आर्य-सेवक १९६८

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, आषाढ़ शुक्ल २, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४३ | वर्ष–६८ अंक– ७

श्री जगजीवनराम से त्यागपत्र की मांग

करोड़ों हिन्दुओं के हृदय पर चोट पहुंचाने का अपराध क्षमा नहीं किया जायगा।
सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल की सरकार को चेतावनी।

भारत सरकार के कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के संसद में दिए इस वक्तव्य से कि वैदिक काल में गौ मांस खाया जाता था सम्पूर्ण देश में तीव्र विरोध की लहर दौड़ गई है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल संसद सदस्य ने अपने एक वक्तव्य में भारत सरकार को चेतावनी देते हुए मांग की है कि ऐसा अनर्गल और करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं पर ठेस लगाने वाला वक्तव्य देने वाले श्री जगजीवनराम या तो क्षमा मांगें अन्यथा उन्हें केन्द्रीय सरकार के मन्त्री पद से हटा दिया जाए।

श्री रामगोपाल जी ने अपने वक्तव्य में आगे कहा है कि — वेद शास्त्र और प्राचीन इतिहास द्वारा यह स्पष्ट है कि गौ हमारी संस्कृति की केन्द्र बिन्दु है। यहां के नागरिक उसकी पूजा करते थे, उसकी हत्या जघन्यतम अपराध था। अतः एक उत्तरदायी जन प्रतिनिधि का कोई अधिकार नहीं कि वह जन मानस पर चोट पहुंचाने का साहस करे।

आपने कहा कि — आज भी करोड़ों हिन्दू गौ को माता मानते हैं। उसकी रक्षा के लिए करोड़ों व्यक्ति अपने प्राण देने को तैयार हैं। उसकी हत्या किसी भी मूल्य पर राष्ट्र की जनता नहीं सह सकती। फिर भी ऐसे अवसर पर जब एक उच्चस्तरीय समिति गौवध बन्द कराने के प्रश्न पर विचार कर रही है, श्री जगजीवनराम का वक्तव्य अत्यन्त अनुचित और अनुत्तरदायित्वपूर्ण है। अतः आपने देश की जनता का आवाहन करते हुए सभी से प्रार्थना की है कि वे अपने नगर में सभाएं आयोजित कर श्री जगजीवनराम के वक्तव्य का विरोध करें।

सर्वत्र निम्न प्रस्ताव पारित किया जाए —

"------ नगर के नागरिकों की प्रतिनिधि यह सभा केन्द्रीय सरकार के कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के इस वक्तव्य का कि -- "वैदिक युग में गौ मांस खाया जाता था" तीव्र विरोध करती है। यह सभा मांग करती है कि या तो श्री जगजीवनराम अपने असत्य वक्तव्य के लिए खेद प्रकट करें अन्यथा भारत सरकार उन्हें केन्द्रीय मंत्रीमण्डल से प्रथक करे।"

इस प्रस्ताव की प्रतियां प्रधान मन्त्री, राष्ट्रपति, श्री जगजीवनराम कृषि मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली और समाचार पत्रों को भेजी जाए।

सारे देश में श्री जगजीवनराम के वक्तव्य के विरोध में जन सभाएं की जाएं।

धार्मिक व नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

आचार्य मित्रसेन द्वारा वार्तापरिषद में जानकारी

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद, अलीगढ़ के परीक्षा मन्त्री आचार्य मित्रसेनजी ने नागपुर की एक वार्ता परिषद में कहा कि देश में फैले हुए अज्ञान, अन्धकार, अनुशासनहीनता, अभाव, छात्रों में अस्थिरता और अशान्ति को दूर करने का यत्न आज समस्त सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक संस्थायें कर रही हैं। समस्त नेतागण इस विषय में अपनी विचारधारा के अनुसार प्रयत्न कर रहे हैं परंतु सफलता किसी को प्राप्त नहीं हो रही है और सारे नेताओं के प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं। देश के नवयुवकों के समक्ष स्वराष्ट्र, देशभक्ति, राष्ट्रभाषा तथा स्वधर्म के प्रति आदर्श उपस्थित करके उनमें भावी जीवन के प्रति आशा भरने का कार्य अत्यधिक आवश्यक है।

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद के परीक्षामन्त्री आचार्य मित्रसेनजी ने वार्ता परिषद में बतलाया कि भारतीय धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन तथा प्रचार-प्रसार के लिये परिषद ३ परीक्षायें आयोजित करती हैं। उसके बाद समस्त धर्मों के अध्ययन के लिए ३ उच्चस्तरीय परीक्षायें आयोजित की जाती हैं। उन परीक्षाओं में इस वर्ष १३ हजार विद्यार्थी बैठे थे जिनमें ८५० ईसाई भी थे।

उन्होंने बतलाया कि वैदिक परीक्षायें युगांडा, बैंकाक और मारिशस में भी आयोजित की जाती हैं तथा अब इस स्थापना में भी शुरू की जायेंगी।

उन्होंने कहा कि दलगत एवं निकृष्ट राजनीति से दूर रहते हुए आर्य समाज यह प्रयत्न करता रहा है कि देश में आदर्श प्रजातन्त्र स्थापित हो सके। ऐसी ही कल्पना रामराज्य के रूप में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने की थी। भावी विदेश नीति क्या हो, आर्थिक नीति, राष्ट्रीय धर्म तथा शिक्षा प्रणाली क्या होनी चाहिये इसके संबंध में आज सभी दल, नेता और विद्वान किसी निश्चित परिणाम पर नहीं पहुंच सके हैं और निकट भविष्य में भी ऐसी आशा नहीं है। किन्तु आर्य समाज के माध्यम से यह सब कुछ संभव है।

इस पृष्ठ भूमि पर जब हम विचार करते हैं तो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांत ही सुख, शान्ति स्थापित करने एवं समस्त अवगुणों को नष्ट करने का एकमात्र उपाय पाते हैं, जिससे विभिन्न राष्ट्रों में अपनी अपनी स्वतंत्रता होते हुए भी परस्पर प्रेम भावना का उदय एवं उत्थान होगा।

आर्य समाज की उक्त राष्ट्र निर्माण की योजना के प्रति विशेष रूप से युवकों का ध्यान आकर्षित करने के लिये भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् ने धार्मिक एवं वैदिक परीक्षाओं का माध्यम अपनाया है। यह परीक्षाएं स्कूल, कालेजों में विशेष रूप से प्रचलित की जाएं, इसके लिये आर्य वीर दल, एवं आर्य कुमार सभाएं प्रयत्न कर रही हैं। वार्ता परिषद में सभा प्रधान सर्वश्री पंडित विश्वम्भरप्रसाद शर्मा, श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, जयंतीप्रसाद श्रीवास्तव और नरेन्द्रमोहन अग्रवाल उपस्थित रहे।

धार्मिक परीक्षायें

वैदिक सिद्धान्त परिषद की सिद्धान्त प्रवेश, सि. विशारद, सि. भूषण, सिद्धान्तालंकार, सि. शास्त्री तथा सिद्धान्ताचार्य परीक्षायें आगामी जनवरी में समस्त भारत तथा विदेशों में होगी। कोई भी व्यक्ति किसी भी परीक्षा में बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा में सुन्दर व तिरंगा उपाधि पत्र प्रदान किया जाता है। सर्वप्रथम, द्वितीय, तृतीय आनेवाले परीक्षार्थियों को उनकी कक्षा का वर्ष भर का शुल्क पुरस्कार में भेंट किया जाता है। निम्न पते से नियमावली १५ पैसे की डाक टिकट भेजकर मंगाइये। परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी है।

आचार्य मित्रसेन, एम्. ए., सिद्धान्तालंकार,
परीक्षा मंत्री,
भारत वर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्
सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़ (उ. प्र.)

आचार्य मित्रसेन जी का नागपुर में स्वागत

नागपुर नगर की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभा के आमंत्रण पर आर्य समाज अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) के शिक्षाविज्ञ, युवक नेता श्री आचार्य मित्रसेनजी, एम. ए. साहित्य रत्न, रिसर्चस्कालर, सिद्धांतालंकार २५ मई को नागपुर पधारे।

२५ मई की रात को आयोजित कार्यकर्त्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुये आचार्यजी ने कहा कि कार्यकर्त्ताओं में आज निष्ठा का, कर्त्तव्य पालन का जो अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है, उस के लिये आज का युवक दोषी नहीं है, दोष है उचित मार्ग-दर्शन के अभाव का। इस कमी को पूरा करने के लिये धार्मिक पुस्तकों का पढ़ना आवश्यक है। आपने धार्मिक परीक्षाओं में सम्मिलित होने का आग्रह किया।

२६ मई को सायंकाल ८ बजे आदरणीय पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर की अध्यक्षता में भाषण देते हुए आचार्य जी ने आज के भारत और अतीत के भारत का चित्रण बड़े ही मार्मिक शब्दों में किया। इस हीन दशा के लिये उन्होंने देश के कर्णधारों को "युवक शक्ति" का उचित उपयोग न कर सकने की बात कही। सभा प्रधान पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली भाषण में कहा कि युवक शक्ति को संगठित कर उनमें सहिष्णुता और अनुगामी भावनायें भरने की आवश्यकता है। इस अवसर पर आचार्य वी. एस. कृष्णन, पं. दीनानाथजी शर्मा, श्री जयंतीप्रसादजी श्रीवास्तव ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये।

पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने आचार्य मित्रसेन जी का पुष्प मालाओं द्वारा स्वागत करते हुये आपके आगमन पर हर्ष प्रकट किया। श्री नरेन्द्रमोहन अग्रवाल ने श्री आचार्य जी के कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुये आभार प्रदर्शन किया।

दयानंद की जय जय कार !

श्रीकृष्ण शेंदरे "हृदयेश" बी.ए.,एल.एल.बी., एडवोकेट ७०७, छोटी ओमती, जबलपुर (म. प्र.)

(१)

जाति भेद का भूत खड़ा है,
उसको दूर हटाना होगा।
ऊंच नीच के भेद-भाव को,
हमको दूर भगाना होगा॥

(२)

ऊंचे तो सिद्धान्त हमारे,
पर उस सम न अरे ! व्यवहार।
कैसे फिर आगे जावेंगे ?
कैसे फिर होगा उद्धार ?॥

(३)

समता का औ बंधुभाव का,
हमें पाठ पढ़ना होगा।
द्वेष, विषमता दूर हटाकर,
जड़ता से लड़ना होगा॥

(४)

उठो, देश के आर्य सपूतो !
तुमको समय जगाता है।
जो कि समय पर जाग खड़े हों,
वही सुकीर्ति कमाता है॥

(५)

क्यों निराश हो ? क्यों हताश हो ?
डरने का ना काम यहां है।
दृढ़ निश्चय, साहस, बल लेकर,
बढ़े चलो, विश्राम कहां है ?॥

(६)

अरे ! सफलता पद चूमेगी,
झूम उठेगा सब संसार।
वेदों का संदेश सुनाओ,
दयानंद की जय जय कार॥

बूचड़खाना कैसे टूटेगा ?

(श्री प्रो० श्याम राव)

●

१८ अप्रेल १९६८ के दिन मनियारी प्याऊ पर बस से उतर कर जब मैं कुण्डली के बूचड़खाने की ओर बढ़ा तो मन में बड़ी उत्सुकता थी यह जानने की कि यह बूचड़खाना क्या है--कैसा है--कितना लम्बा चौड़ा राक्षस है जो प्रतिदिन सैंकड़ों पशुओं को निगल जाता है और इतने विरोध के बावजूद भी बिना किसी की परवाह किये यहां डटा हुआ है।

वहां पहुंच कर हमने सूचना भेजी और हमें बड़े आदर के साथ अन्दर बुलाया गया। उपस्थित मैनेजर महोदय ने हमारे अनुरोध पर सारी चीजें आदि से अन्त तक स्वयं घूम-घूम कर दिखाई। जो कुछ मैंने अपनी आंखों से देखा उसका संक्षिप्त वर्णन देकर फिर अपनी बात रखूंगा।

दिल्ली से सतरहवें मील पर जी. टी. रोड़ पर यह बूचड़ खाना "एसेक्स फार्मेस (प्रा.) लिमिटेड" नाम से बना है। इसके मुख्य मालिक दिल्ली निवासी रामनाथ गोयल हैं।

दिल्ली की ओर से तीन बन्द विशाल ट्रकों में यहां बकरे, बकरियां, भेड़, सूअर आदि पशु लाये जाते हैं। एक बड़े कमरे में उन्हें ठूंस कर भर दिया जाता है। मौत की सूचना पशुओं से छिपी नहीं रहती और वे अत्यन्त भयभीत, कांपती हुई, दीवाल से चिपटी खड़ी रहती हैं। उनके निकलने का एक छोटा दरवाजा होता है। अन्दर से कोंचकर तीन चार जानवर एक बार में निकाले जाते हैं। एक व्यक्ति बिजली का बड़ा सा चिमटा लिये तैयार रहता है। सूअरों के कान पर वह जोर से दबा कर उन्हें मूच्छित कर देता है ताकि उन पर अच्छी तरह काबू पाकर उन्हें आसानी से वध किया जा सके। जानवर बुरी तरह चिल्लाता और छटपटाता है अन्य पशु भी जोरों से चीत्कार करते हैं पर बिजली के चिमटे से बेहोश पशु को पिछले पैरों में कांटा लगाकर उल्टा टांग कर यन्त्रों की सहायता से एक कुण्ड के ऊपर लाया जाता है। वहां तीसरा व्यक्ति एक लम्बी छूरी से सूअर के कण्ठ को चीर कर बाल्टी में रक्त इकट्ठा कर लेता है। इस रक्त को जलाकर काला सा द्रव्य बाहर खेतों में फैंक दिया जाता है। (आगे की योजना है कि उस रक्त का खाद बनाकर बेचा जाय) उस जानवर को एक गरम खौलते हुए पानी के कुण्ड में उतार देते हैं जिससे उसके रोंये आदि नरम पड़ जांय। पांच सात मिनट बाद चाकू से उसके बदन को खरोचकर साफ कर लिया जाता है। यहां तक जो जानवर के अन्दर प्राण होते हैं छटपटाते रहते हैं। फिर उसका सिर काट कर अन्यत्र रखा जाता है और फिर उसका पेट काटकर अंतड़ियों को निकाल कर उसके शरीर की बोटियां बनाई जाती हैं। मैंने जीवन में पहली बार किसी पशु को कटते देखा था। इस क्रूरता के नग्न प्रदर्शन के बीभत्स दृश्य को देखते हुए कैं सी आने लगी पर मन को बहुत कड़ाकर के प्रत्येक प्रक्रिया को ध्यान से देखता रहा। मांस को बड़े बड़े भाप की मशीनों में गरम किया जाता है और बड़े बड़े ठंडे कमरों (Cold Storages) में रखा जाता है। वहां से टीन के डब्बों में भरकर मांस बाहर जाने के लिये तैयार हो जाता है।

मैनेजर महोदय ने बड़े गर्व से हमें यह बताया कि अब वहां प्रतिदिन १००० पशु कट सकेंगे पर शीघ्र ही उसका विस्तार करके वहां प्रतिदिन ५००० पशु काटने की योजना है। उनका तो यह दावा था कि इतनी आधुनिकतम मशीनों से युक्त उनका यह बूचड़खाना सारे भारत का सबसे बड़ा, बूचड़खाना है। हमारे यह पूछने पर कि हरयाणा की जनता जब नहीं चाहती तो उन्होंने बूचड़खाना वहां क्यों बनाया। उन्होंने उत्तर दिया कि सरकार ने ही उन्हें ऐसा करने के लिये लाइसेन्स दिया है। सरकार ने ही उन्हें पोलीस की टुकड़ी देकर रक्षा की जिम्मेदारी ली है—उन्हें जनता की कोई परवाह नहीं।

कुण्डली का विशाल बूचड़खाना हरयाणा के लिये कलंक है, और हरयाणा के आर्य वीरों के लिये एक चुनौती है।

यह चुनौती स्वीकार की गई है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

धार्मिक जागरूकता की आवश्यकता

(श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी, १५ तिलोकनगर, अजमेर)

आजादी के बाद भारत में सांस्कृतिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुए हैं। जब अंग्रेज थे, तो भारत के सामने एक विरोधी था। उसकी दासता से मुक्त होने की आकांक्षा थी। उसकी संस्कृति, उसकी भाषा, उसकी वेष-भूषा, आदि के प्रति स्वाभाविक संकोच था। उनसे बचने की सहज प्रवृत्ति थी। आजादी के बाद अंग्रेज चले गये और पश्चिमी संस्कृति के प्रति जो स्वाभाविक संकोच या खतरा था वह भी समाप्त होने लगा। नेहरूवाद ने अंग्रेज से नहीं, अंग्रेज की बुरी बातों से बचने की सलाह दी; पतित से नहीं, पतित के दुर्गुणों से बचने की सलाह दी और धर्म निरपेक्षता की आड में विदेशी संस्कारों का भारत में अबाध आगमन हुआ। विदेशी संस्कार के रूप में आया हुआ भोगवाद सहज आकर्षक तो था ही, सिनेमा, आदि के प्रचार के कारण, व पूंजी के दिखावटी चकाचौंध के कारण ईश्वर विमुखता भी बढ़ी। इसने भारतीयों को अपने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रति तो बेखबर किया ही, धार्मिक अनुशासन की जड़ें भी हिला दीं। इसके साथ ही, सारे संसार में यह प्रचारित किया गया कि समृद्धि का आगार अमरीका सांस्कृतिक समृद्धि का भी आगार है। सैकडों विद्यार्थी अमरीका जाकर दीक्षा पाने लगे व अपनी संस्कृति के प्रति अनास्थावान होने लगे। नतीजा यह हुआ कि जो जाति अपनी संतानों का वध कराकर भी अपने धर्म की रक्षा हेतु पाकिस्तान जैसे देशों से बच निकली थी, आज अपने धार्मिक अनुशासन व सांस्कृतिक गौरव से च्युत हो रही है। ऐसी स्थिति का सबसे बड़ा लाभ विदेशियों ने, विशेषकर अमरीकी धर्मप्रचारकों ने उठाया है। धर्मनिरपेक्ष राज्य की पोल का लाभ उठाकर, वे अपने धन से, व कुटिल चालों से धर्मपरिवर्तन का कार्य निरन्तर बढ़ा रहे हैं। विदेशी यह अच्छी तरह जानते हैं कि भारत एक उपनिवेश या अधीन राष्ट्र के रूप में तभी रह सकता है, जबकि अधिकांश जनता उनके धर्म की अवलम्बी बन जावे। इस प्रयास का विषफल हमें नागालैंड व नेफा में देखने को मिल रहा है, जहां पृथक् राज्य के रूप में ईसाईस्तान की मांग की जा रही है। कश्मीर में भी यही बात है जहां देश द्वारा इतना त्याग करने के बाद भी मुस्लिम राज्य की स्थापना का मानचित्र बनाया जा रहा है। आज का यथार्थ यह है कि अपने वर्तमान रूप में धर्म निरपेक्षता खोखली सिद्ध हुई है। उसके स्थान पर धर्म सजगता आवश्यक हो गई है।

इस विदेशी धर्मप्रचार का कुछ दिन पूर्व मुझे बड़ा कटु अनुभव हुआ। संध्या को पहाड़ी की ओर घूमने गया। पहाड़ी के अंचल में गरीबों की बस्ती है। दो गोरे व कुछ काले पादरी घूम रहे थे। थोड़ी दूर पर एक लड़का मिला जो अपनी बकरियां घेरकर ला रहा था। उससे पूछा तो पता लगा कि ये लोग डुबकी वाले हैं। थोड़ा कुतूहल हुआ। पता लगा, ये लोग ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने दो लकड़ी की मूर्तियां बनवा रखी थीं, एक कृष्ण की और दूसरी ईसा की। पानी में तैराने पर कृष्ण की मूर्ति डूब जाती थी और दर्शकों से कहा जाता था, "देखो कृष्ण ईसा के मुकाबले में डूब गया। इसका सहारा लोगे तो तुम भी डूब जाओगे।" उस लड़के ने बताया कि उसे विवाह कराने, धन देने, आदि प्रलोभन भी दिये गये थे। अपने धर्म की अच्छी बातें बताना व उनका प्रचार करना तो जनतांत्रिक है। पर इस तरह भ्रामक बातें फैलाकर या प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करना देश के संविधान व एकता के प्रति द्रोह है और राष्ट्रद्रोह से कुछ कम नहीं है। अतः स्वाभाविक है कि हिन्दुत्व की रक्षा के प्रति हम भी सजग हों।

मैं आर्य समाज को एक समर्थ संस्था मानता आया हूं, जिसका भारत के पुनर्जागरण के इतिहास में महत्त्वपूर्ण योग रहा है। आज आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित अनेक सुधारों के लागू हो जाने के कारण उसका सैनिक रूप समाप्त हो गया है और उसमें एक

प्रकार की अगति-सी प्रतीत है । फिर भी यही देशव्यापी संस्था है, जिसका विशाल संगठन है व जिसके विशाल साधन हैं । ऐसी अनेक सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थाएं भारत में हैं जो किसी रचनात्मक कार्यक्रम के अभाव के कारण कोई महत्वपूर्ण नहीं कार्य कर पा रहीं । अतः आवश्यक है कि इन संस्थाओं का कोई ऐसा सक्रिय कार्यक्रम हो, जो इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो व इनकी उपयोगिता प्रमाणित कर सके । कुछ सुझाव विचारार्थ प्रस्तुत हैं ।

आज देश में सहस्रों प्रशिक्षित विद्यार्थी, बालक-बालिकाएं बेकार हैं । उधर, ईसाई मिशनरी अपने स्कूलों से गांव-गांव में प्रचार व सेवा कर रहे हैं । अतः जरूरी होगा कि आर्य समाज, आदि संस्थाएं भी गांव-गांव में जहां-जहां ईसाई स्कूल, आदि हैं वहां-वहां, अच्छे स्कूल खोलें जो कि सरकारी स्कूलों से बेहतर हों । त्याग की भावना पर आधारित अच्छे स्कूल चलाएं । भारतीय दृष्टिकोण से प्रशिक्षण के लिए विशेष कैम्प आयोजित करें । किसी अच्छे कार्य के लिये देश में दानवृत्ति का अभाव नहीं है । शर्त काम करने की है । ये पाठशालाएं केवल शिक्षण का ही कार्य न करें बल्कि धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान भी करें तो भ्रामक धर्म परिवर्तन से देश को छुटकारा मिल सकेगा ।

(पृष्ठ ६ का शेष)

तपस्वी नेता आचार्य भगवानदेव जी के नेतृत्व में एक बूचड़खाना निरोध समिति का गठन हुआ जिसके द्वारा यह कई बार समाचार पत्रों में आ गया कि यह बूचड़खाना अब अधिक समय तक नहीं रह सकता ।

प्रश्न होता है कितने समय तक ?

सन् १९६४ से बूचड़खाना बनना प्रारम्भ हुआ और जनवरी १९६८ से प्रतिदिन वहां सैंकड़ों निरीह पशुओं की निर्मम हत्या हो रही है । हरयाणा की पावन धरती में जहां एक पक्षी का भी वध निन्दनीय समझा जाता है आज तक वहां कम से कम १२००० (बारह हजार) बेकसूर निराश्रित भूमि प्राणियों की लाशों की ढेर लग गई । गोभक्त निरामिष भोजी जनता के इस दूध और घी बहुल प्रदेश में आज खून की नदी बह निकली है, हरयाणा का शान्त सात्विक वातावरण आज पिछले ४ महीनों से कातर पशुओं के आर्तनाद से प्रतिक्षण प्रकम्पित हो रहा है ?

इसके विरोध में जितने भी "वैधानिक" उपाय हो सकते थे अपनाये गये, और जब राई की ब्लाक समिति से लेकर कामरेड रामकिशन भगवत्दयाल शर्मा और राव बीरेन्द्र सिंह तथा जगजीवनराम, प्रो० शेरसिंह यशवन्तराव चव्हाण आदि के यह कहने के बावजूद कि बूचड़खाना नहीं बन सकता हम यह देखते हैं कि इसी बेशर्म सरकार के नृशंस अधिकारियों की सहायता से यह बूचड़खाना हरयाणा की धरती पर नंगा नाच दिखा रहा है तो विधान की दुहाई देने वाली इस सरकार की वैधानिकता पर सन्देह होने लगता है ।

हरिण को वश में करने के लिये आप बीन बजायें तो बात समझ में आती है पर भैंस के सामने बीन बजायें तो समझ में कमी मालूम पड़ती है । जिस चीज से भैंस वश में की जाती है वह बीन नहीं कुछ और है ।

हरियाणा के वीर जवानों--तुम्हें पता है यह "कुछ और" क्या है । भगतसिंह और बिस्मिल फांसी के तख्ते पर मरे नहीं अमर हो गये । और आज भी उनकी परम्परा को कायम रखने वाले "सिरफिरे" नवजवान मौजूद हैं । वे भैंस को पहचानते हैं ।

"कुछ और" के तरीके भी जानते हैं । प्रसन्नता की बात है कि--अब वे कुछ करना भी चाहते हैं । उन्हें पता है--बूचड़खाना कैसे टूटेगा ? भाषण से नहीं टूटेगा, प्रस्तावों से नहीं टूटेगा, सत्याग्रह और भूख हड़ताल से नहीं टूटेगा । बूचड़खाना-जनता के संकल्प से टूटेगा ।

'आर्योदय' के सौजन्य से उद्धृत

" दयानन्द बोध-रात्रि "

(श्री शंकरलाल आर्य, वैकुन्ठपुर, सरगुजा, (म. प्र.)

यह संसार अनेक ज्ञान से युक्त है। संसार में अनेक प्रकार की घटनायें नित्य होती हैं किन्तु साधारण मनुष्य उसे भुला देता है। किन्तु जो जिज्ञासु होता है तथा अपनी एक अनुपम ज्योति संसार के समस्त प्रसारित करना चाहता है, वह मानव छोटी से छोटी घटनाओं से शिक्षा लेकर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में विश्व के इतिहास में लिखा जाता है जो अमिट होता है। साधारण रोगियों को हम सभी लोग नित्य देखते हैं किन्तु इसी साधारण दृश्य को गौतम सिद्धार्थ ने देखकर अपने राजसी वैभव को त्यागकर और अपनी प्रिय रानी एवं पुत्र को त्यागकर जंगल की ओर बढ़े एवं घोर तप करके विश्व में बुद्ध धर्म की नींव रखी।

इसी प्रकार की एक घटना आज से कई वर्ष पूर्व फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को जिसे हम सभी शिवरात्रि के महान पर्व के नाम से जानते हैं, घटी थी, जिसने भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक इतिहास में महान क्रान्ति उत्पन्न कर दी। गुजरात के मौरवी राज्य में एक टंकारा ग्राम है। जिसे हमारे क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द को उत्पन्न करने का गौरव प्राप्त है। वह भूमि धन्य है जो महापुरुषों को उत्पन्न करती है और उस माता-पिता का वर्णन मैं किस प्रकार करूं जो महापुरुषों को उत्पन्न कर अपने जीवन को सार्थक करते हैं। यदि दयानन्द न होते तो पंडित कर्सन जी तथा उस पवित्र जन्मस्थली का गुणानुवाद कौन करता। कौन वेदों के प्रेमामृत को पिलाता, कौन गौ की करुणा को देखकर बिलख-बिलखकर रोता, कौन विधवाओं की दुर्दशा देखकर तड़प उठता। विश्व के मार्ग-दर्शक दयानन्द जी के पिता जी कट्टर शिवभक्तों में से एक थे और मूलशंकर को भी मूलशंकर विहीन कर बाह्य शंकर का भक्त बनाना चाहते थे।

शिवरात्रि के दिवस पर उनके पिता जी ने मूलशंकर (दयानंद) से व्रत रखने को कहा, किन्तु माता ने कहा कि अभी मेरा लाल मूलशंकर छोटा है इससे यह कठोर व्रत ग्रहण न कराओ किन्तु पिता जी की त्यौरियां चढ़ गई। माता जी चुप हो गईं और हमारे दिव्य दर्शी नन्हें दयानन्द ने शिवरात्रि का कठिन व्रत ग्रहण किया। रात्रि में टंकारा ग्राम के बाहर शिवालय में शिवपुराण की कथा हो रही थी। बालक ने रात्रि में जागरण करने का निश्चय कर लिया, अर्धरात्रि बीतने के पश्चात सभी भक्तगण घोर निद्रा की चपेट में लीन हो गये और पिता जी भी निद्रा देवी की गोद में जा पड़े, किन्तु वाह रे दयानन्द एक टक दृष्टि से घोर अंधेरी रात्रि में न जाने क्या निहार रहा था। इतने में एक आश्चर्य जनक घटना घटी और एक चूहा शिव की प्रतिमा पर आकर उछल कूद करने लगा और उस प्रतिमा पर चढ़े सब अक्षत तथा फलों को निर्भय होकर खा कर चलता बना। जिज्ञासु दयानन्द यह दृश्य देखकर अवाक हो गये और अपने मन में सोचने लगे कि यह कैसा शिव है जो अपनी भी रक्षा नहीं कर सकता और यह दुष्ट चूहा शिव पर चढे अक्षत, फल को खाकर चला गया और शिव जी कुछ न कर सके। तब दयानन्द ने अपने पिता जी को जगाकर चूहे की सारी घटना कह सुनाया और अपनी शंकाओं के निवारण के लिए उसने कहा, किन्तु, सब व्यर्थ। इसी घटना ने मूलशंकर को महापुरुष के स्थान पर आसीन कर दिया। मूलशंकर सच्चे शंकर प्राप्त करने को व्याकुल हो उठे। आगे चलकर १५ वर्षों तक जो घोर कष्ट सच्चे शिव की तलाश में हमारे दयानन्द ने उठाये हैं उन्हें पढ़कर नयन अश्रु से भीग उठते हैं, किन्तु वे अपने सत्य पथ से विचलित नहीं हुए। इसी मूर्ति पूजा के खण्डन में उन्हें सत्रह बार विष के प्याले पिलाये गये और बड़े-बड़े राजा महाराजाओं ने उन्हें राजगद्दी का प्रलोभन भी दिया और कहा कि आप मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ दो। किन्तु दयानन्द ने कहा कि मुझे यदि त्रिलोक का राज्य भी मिले तो मैं मूर्ति पूजा का खण्डन जो वेद विरूद्ध है, नहीं छोड़ सकता।

आज हमारे देश में चारों ओर शिवरात्रि का पर्व बड़े धूम धाम से मनाया जाता है किन्तु इस पुनीत पर्व पर घर-घर वेद का संदेश पहुंचाने का व्रत लेना ही सच्ची भक्ति होगी। भारत में आज भी अन्ध-विश्वास का प्राबल्य है उनकी प्रबल जड़ों को काटना प्रत्येक आर्य का पुनीत कर्त्तव्य है। ※

आर्य समाज के बिना देश में सुख शांति असंभव

आचार्य मित्रसेनजी, एम. ए. की घोषणा

आचार्य मित्रसेनजी, एम. ए.

अमरावती, पथरोट, परतवाडा इत्यादि नगरों और शहरों में सार्वजनिक सभाओं में बोलते हुए आचार्य मित्रसेनजी, एम. ए., भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद के परीक्षा मंत्री ने अनेक उदाहरणों और तर्कों तथा प्रमाणों द्वारा बताया कि बिना आर्य समाज के देश की अन्य किसी भी संस्था के द्वारा भलाई नहीं हो सकती। उसके लिए देश को एक बार फिर से भगवान दयानन्द के चरणों में बैठना होगा और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के नेतृत्व में ही सुख और शांति पा सकता है। आज आर्य समाज में नये रक्त को भी प्रवेश देना होगा। बिना युवकों के आर्य समाज अपने उद्देश्यों में पूर्ण सफलता न पा सकेगा।

इन समस्त सभाओं में बोलते हुए आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा, नागपुर के मंत्री श्री मधुकर मदार, सिद्धातालंकार, ने अपने ओजस्वी शब्दों में इस बात को बड़े रोचक ढंग से रखा कि ईसाई और मुसलमान किस प्रकार से हिन्दूओं को विधर्मी बनाते हैं। आपने यह भी बताया कि सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति एक दिखावामात्र है जिसकी आड़ में राष्ट्रद्रोही तत्व पनप रहे हैं। इन सबका दृढ़ता से मुकाबला केवल आर्य समाज ही कर सकता है। आपने जनता से अपील की कि वह आर्य समाज के कार्यों में सहयोग दें।

'आर्य सेवक' का उपकारी विशेषांक

आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र आर्य सेवक का अगस्त मास का अंक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस विशेषांक में आर्य समाज क्या है? उसकी क्या आवश्यकता है? उसने अब तक विश्व के लिये क्या क्या उपकार किये हैं। उसकी सफलता कैसे हुई? अब भविष्य में आर्य समाज को क्या करना चाहिए आदि आदि प्रश्नों के संबंध में लेख होंगे।

इस विशेषांक का सम्पादन आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध लेखक एवं विद्वान आचार्य मित्रसेनजी एम. ए. सिद्धांतालंकार कर रहे हैं। यह अंक संग्रह करने एवं प्रचारार्थ बांटने के योग्य होगा। मूल्य भी लागत मात्र केवल ५० पैसे रखा गया है। समाजें अभी से अपनी प्रति सुरक्षित करालें। —व्यवस्थापक, आर्य सेवक, दयानंद भवन, नागपुर (महाराष्ट्र)

शान्ति का मार्ग

(श्री श्रीकृष्णजी गुप्त, सिद्धांतरत्न, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, म. प्र. व विदर्भ, नागपुर)

आज हमारा भारत स्वाधीन है। इस स्वतंत्रता के प्रकाश को लाने में कितने ही शहीदों ने अपने प्राणों को आहुत कर दिया। इनमें भी संख्या उन लोगों की अधिक है जिन्होंने मार्ग दर्शन महर्षि दयानन्द के ग्रंथों से लिया। वे बलिदानी अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल हुये। हमने स्वतंत्रता के वातावरण में सांस ली और गौरवपूर्वक अपने मस्तक को विश्व में उन्नत किया।

स्वतंत्र भारत का नेतृत्व जिन अशक्त हाथों में आया इन्होंने इसके शासन को प्रणाली पाश्चात्य ढंग की समाजवादी पद्धति के अनुसार चलाने का संकल्प किया। भारत के प्राचीन समाजवाद में आमूल परिवर्तन हुआ और संभवतः इसीलिए धर्म निरपेक्ष नीति अपनाई जो देश को गहरे अवनति के गर्त में गिराती चली गई।

धर्म रहित जीवन अशान्ति का कारण है। इसके अनुसार भारत में भी अशान्ति फैलती चली गई। धनोपार्जन की इच्छा बढ़ी। भौतिक सुख पाने के लिए कर्म-अकर्म की भावना नष्ट हुई। भ्रष्टाचार, अनाचार, चोर बाजारी, रिश्वत का चहुं ओर बोलबाला हो गया। देश में दुःख और अशान्ति बढ़ी। भविष्य में क्या होगा, आनेवाली संतति वर्तमान नेताओं और अपने माता-पिता को अवश्य कोसेगी, क्योंकि उनके जीवन को सुखमय बनाने का कर्तव्य उन्हीं का था जिसे वे पूरा न कर सके।

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद के अधिकारियों ने इसे गंभीरता पूर्वक विचारा और बालकों, युवकों तथा प्रौढ़ों में भी धर्म क्या है ? शान्ति कैसे मिलेगी ? सुख किस प्रकार प्राप्त हो आदि आदि जटिल प्रश्नों के उत्तर रोचक, आकर्षक, कहानियों के माध्यम से दिये जाने की व्यवस्था की। आर्य समाज में नया जोश, नया रक्त प्रविष्ट हो इसका विशेष प्रयत्न किया और इसके लिए धार्मिक परीक्षाओं की व्यवस्था की। हजारों नवीन व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य बने। नया जोश आया और सहस्त्रों बालकों में भी ज्ञान आया कि हमारे जीवन में सुख का संचार करनेवाला मुक्ति प्रदाता आर्य समाज ही हो सकता है।

आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से महाराष्ट्र विदर्भ पिछड़े हुए क्षेत्र हैं। युवक नेता आचार्य श्री मित्रसेनजी ने विदर्भ की प्रचार यात्रा करके आर्य समाज का दिव्य संदेश सुनाया और परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित किये। प्रसन्नता है कि वे जहां जहां गये उन्हें सहयोग मिला, फिर भी अनेक ऐसे स्थान रह गये जहां समयाभाव के कारण उत्साह होते हुये भी हम उन्हें वहां न भेज सके। फिर भी जहां वे नहीं गये वहां की आर्य समाजें, स्कूल, कालिजों के प्राचार्य महोदय अपने यहां पर परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित करने की कृपा करें। जहां केन्द्र स्थापित है वहां अधिक से अधिक परीक्षार्थी सम्मिलित करावें जिससे महर्षि दयानन्द का दिव्य संदेश ग्राम-ग्राम में, जन-जन में पहुंचे। सभी को शांति मिले।

चन्दा समाप्ति की सूचना

जिन सज्जनों का चन्दा इस अंक से समाप्त हो गया है, उन्हें सूचना अंक के पृष्ठ भाग में दी जा रही है। कृपया अपना चंदा मनीआर्डर द्वारा भेज दें, ताकि उन्हें आर्य सेवक नियमित रूप से भेजा जा सके।

प्रबंध सम्पादक 'आर्य सेवक'

एक संस्मरणार्थ लेख—

स्व० दाऊ गेन्दसिंह गुप्त

(लेखक श्री घनश्यामसिंह गुप्त, दुर्ग)

स्वर्गवासी पूज्य पिता जी दाऊ गेन्दसिंह जी गुप्त का जन्म छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध अग्रवाल वैश्य परिवार में (जो कट्टर सनातनी परिवार था) विक्रमी संवत १९१९ को दुर्ग में हुआ और उनका स्वर्गवास दिनांक ११-११-१९३१ ईसवी को हुआ। उनकी आयु तब लगभग ७० वर्ष की थी।

अपनी लगभग २० (बीस) वर्ष की आयु में ही वे कट्टर आर्य समाजी हो गये। जिसके परिणाम-स्वरूप उनको अपने जातिवालों से पारिवारिक बहिष्कार आदि भोगना पड़ा था।

उनके आर्य समाजी होने का प्रसंग यह हुआ कि दुर्ग के एक सब-पोष्ट-मास्टर के साथ उनका सत्संग होता रहा। (जो कदाचित उत्तर प्रदेश या पजाब निवासी थे) उनकी कट्टरता यहां तक हो गई थी कि वे प्रायः यहां के सभी विद्वान पौराणिकों से धर्म सम्बन्धी शास्त्रार्थ किया करते थे। श्री गणपति शर्मा आर्य-समाज के प्रसिद्ध विद्वान भी हमारे यहां आया करते थे।

उनके तत्सम्बंधी कार्य का कुछ संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :—

१. लगभग सन १९०८ में उन्होंने दुर्ग आर्य समाज की स्थापना की, जिसमें लगभग आठ दस सदस्य थे। साप्ताहिक अधिवेशन उनके ही घर के कार्यालय कोष्ट में हुआ करता था।

२. कुछ काल पश्चात् उन्होंने आर्य समाज भवन निर्माण हेतु एक प्लाट बिना कुछ लिये दिया और समाज भवन के निर्माणार्थ भी कुछ सहायता दी। इस भूमि दान की नियमानुसार लिखा पढ़ी रजिस्ट्री आदि भी कर दी गई थी। वह प्लाट तथा भवन आज भी आ. प्र. सभा के नाम पर है।

३. स्वर्गवासी दानवीर तुलाराम जी से लगभग मई जून सन १९२६ को जो—लाखों रुपयों की सम्पत्ति उनके वसीयत के द्वारा आ. प्र. सभा को प्राप्त हुई उनका भी श्रेय दाऊ गेन्दसिंह जी को है। क्योंकि उन्होंने ही मुझे वहां (कूरा ग्राम में) आम सभा होने की तिथि के एक दिन पूर्व ही जाने को प्रेरित किया था।

४. सन १९११ में जो मेरा अन्तर-उप-जाति विवाह हुआ जिसके परिणाम स्वरूप न केवल हमारे जाति वालों ने अपितु निकट सम्बन्धियों ने भी हमें जाति से बहिष्कृत किया था उसका भी श्रेय दाऊ गेन्दसिंह जी को था।

५. लगभग सन १९०० ईस्वी की बात है। रायपुर के गोल बाजार के पास जहां एक पीपल का झाड़ है वहां उन दिनों ईसाई पादरी आकर अपने धर्म सम्बन्धी व्याख्यान लोगों को जमा करके दिया करता था। एक दिन उस पादरी ने दो-चित्र बनाकर लाया था। एक में ईसा मसीह की दोनों हाथ जोड़े हुए चित्र था और दूसरे में भगवान कृष्ण का एक हाथ में लड्डू खाते हुए और दूसरा हाथ मूत्रेन्द्रि के पास रखा हुआ चित्र था। वह पादरी आम जनता को कुछ इस प्रकार सम्बोधित करता था :- "देखो हमारे ईसा मसीह को कैसे हाथ जोड़े हुए परमात्मा की बन्दना कर रहे हैं। और देखो तुम्हारे कृष्ण को एक हाथ से लड्डू खा रहा है और दूसरा हाथ मूत्रेन्द्रिय में है।' तब दाऊ गेन्दसिंह जी ने कहा वह ऐसा नहीं है पादरी साहब। तो उस पादरी ने कहा— तो कैसा है तब दाऊ जी ने कुछ इस प्रकार कहा :-"हमारे भगवान कृष्ण लड्डू खा रहे हैं, तुम्हारा ईसा मसीह उनसे हाथ जोड़कर लड्डू मांग रहा है तब भगवान कृष्ण आपके ईसामसीह को कहते हैं ले ये (अर्थात—मूत्रेन्द्रिय) तब वहां इकट्ठे सब हिन्दू जनता बहुत प्रसन्न हुई और पूज्य पिता जी की खूब सराहना करने लगी। मैं लगभग १० वर्ष का था और रायपुर हाई स्कूल के मिडिल कक्षा में पढ़ता था। मुझे भी गोद में उठाके वे लोग नाचने लगे। उस दिन से वह पादरी भाषण देने नहीं आया।

यह उन दिनों की बात है जब ब्रिटिश शासन अति प्रखर था। इससे दाऊ गेन्दसिंह जी की निर्भयता का अन्दाज लगाया जा सकता है। ※

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में नये (६ से १० वर्ष तक की आयु के) ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई १९६८ से प्रारम्भ होगा। शिक्षा निःशुल्क सब विषयों की शिक्षा। आश्रमवास, विशेष देख रेख। कड़ा अनुशासन। एक सा रहन सहन। प्राकृतिक, सुन्दर, स्वास्थ्यप्रद वातावरण। पालन पोषण का साधारण व्यय। उपाधियां सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। नियमावली मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार जिला सहारनपुर से मंगावें।

संस्कृति संरक्षण सम्मेलन

अ. भा. आर्य युवक परिषद् द्वारा मराठा मन्दिर हाल, बम्बई, में संस्कृति संरक्षण सम्मेलन का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष श्री त्र्यंबक शिवराम भारदे ने अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया तथा उद्घाटन आर्यजगत के प्रसिद्ध नेता, संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने किया। सभा में श्री सत्यकाम विद्यालंकार, डॉ. बसन्तकुमार पंडित, M.L C. श्री एच. आर. ठक्कर, और श्री गण्डाराम मेहता के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए। प्रसिद्ध गीतकार तथा कवि पं. भारत व्यास और सरस्वती कुमार दीपक के कविता पाठ एवं श्रीमती शिवराजवती देवी के आकर्षक भजन प्रस्तुत किये गये।

महर्षि के अमुद्रित ग्रन्थ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दिनांक १३–१४ जनवरी १९६८ को अन्तरंग सभा ने एक प्रस्ताव पास कर परोपकारिणी सभा से मांग की है कि ऋषि दयानन्द का संग्रहीत जो साहित्य मुद्रित अमुद्रित उनके संरक्षण में है उसकी सूचना सभा को दें। यथा–मुद्रित ग्रन्थ–उनकी सूची, संस्करण, निर्देश। हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची। ऋषि के अपने मुद्रित ग्रन्थ के हस्त लेख तथा जो अमुद्रित ग्रन्थ है उनकी सूची।

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा प्रचार

सभा के उप-प्रधान तथा वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने मास मई और जून में निम्न स्थानों में भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा अन्य संस्कार करायें–रायगढ़, जशपुर, बैकुण्ठपुर, कुर्रा, गिर्रा, खरोरा, गोपकापार खरियार रोड आदि।

श्री सत्यदेव जी आर्य द्वारा प्रचार

सभा के उपदेशक श्री सत्यदेव जी आर्य ने १९ मई से १० जून १९६८ तक अमृतधारा, बिलासपुर, रायपुर, कुर्रा, कोर्रा ग्राम, रायगढ़, अंबिकापुर तथा अम्बिकापुर के निकटस्थ ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

श्री रामाश्रय जी द्वारा प्रचार

श्री रामाश्रय जी आर्योपदेशक ने मई मास में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु ग्राम गंगापुर, श्रीगढ़, अम्बिकापुर, लोधमा, सीतापुर, प्रतापगढ़, सूर, देवगढ़ बैकुण्ठपुर, चिरमिरी, अमृतधारा, बिलासपुर, कलाभीठी, लब्जी, धोर आदि स्थानों में पधारे तथा प्रचार किया।

आचार्य मित्रसेनजी तथा सभा मंत्री की प्रचार यात्रा

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद के परीक्षा मंत्री, श्री आचार्य मित्रसेन जी, एम. ए. तथा मध्य-प्रदेश व विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री श्रीकृष्ण जी गुप्त, सिद्धांतरत्न ने दुर्ग, भिलाई, रायपुर, भाटापारा, कूरा तथा डाबा की सफल प्रचार यात्रा की। सभी स्थानों पर सार्वजनिक सभायें, साप्ताहिक सत्संगों में श्री आचार्य जी के प्रभावशाली प्रवचन हुए जिनमें आपने धर्म की देश की आवश्यकता तथा इसका सजग प्रहरी आर्य समाज ही है बताया। देश की उन्नति का साधक एकमात्र आर्य समाज है। इसलिए समस्त जनता को आर्य समाज का सदस्य बनना चाहिए। आपके साथ कुछ स्थानों पर श्री सीताराम जी भजनोपदेशक के सुंदर, व प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

अमरावती में शुद्धि संस्कार

आर्य समाज, अमरावती के प्रयत्नों से दिनांक २ जून ६८ को एक जन्मजात ईसाई महिला की शुद्धि करके उसका नाम शान्तिदेवी रखा गया और उसका विवाह हिन्दू युवक से कर दिया गया। इस कार्य को आचार्य मित्रसेन जी, एम. ए. सिद्धांतालंकार ने संपन्न कराया। आपने अपने व्याख्यान में बताया कि वैदिक धर्म और उसके सिद्धांत कार्य पद्धति सबसे पुरानी है इसीलिए समस्त संसार को इस ओर आना पड़ेगा।

उपनीत संस्कार

३ जून को ६ नवयुवकों का जिन्होंने भारत वर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद की सिद्धांत भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है, का यज्ञोपवीत संस्कार परीक्षा मंत्री आचार्य मित्रसेनजी, एम. ए. ने कराया। उन्होंने जीवन भर आर्य समाज की सेवा करने का व्रत लिया।

कन्या गुरुकुल, हाथरस

गुरुकुल पद्धति पर बी. ए. स्तर तक निःशुल्क शिक्षा देने वाली कन्याओं की अ. भा. संस्था। इंग्लिश, अर्थ शास्त्र, इतिहास, भूगोल, गणित, संगीत, गृह विज्ञान आदि के साथ साथ हिन्दी, संस्कृत, वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र की विशेष शिक्षा। सीधा सादा एक सा जीवन, एकसा बर्ताव। भोजन, आश्रम आदि के लिए ३०–३५ रु. मासिक शुल्क। अलीगढ़ आगरा सड़क पर अलीगढ़ से १६ मील पर स्थित। नया सत्र १ जुलाई से प्रारम्भ।

बिलासपुर में शुद्धि कार्य

मंगलवार, दिनांक १८–६–६८ को आर्य समाज मन्दिर में, शहडोल निवासी बिलसन लॉयल वल्द जयलाईल नामक ईसाई युवक की शुद्धि उसकी इच्छानुसार वैदिक विधि से श्री नीलकंठ जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न की गई। इनका पहले का नाम सिद्धेश्वरी प्रसाद ही रखा गया।

खाद्य मंत्री जगजीवनरामजी खेद प्रगट करें

आर्य समाज-- गोरखपुर जबलपुर, शहर बिलासपुर, और खंडवा ने एक प्रस्ताव पास कर-- केन्द्रीय खाद्य मंत्री जगजीवनराम के संसद में दिये गये वक्तव्य कि "वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था।" तीव्र विरोध प्रकट किया है तथा मांग की है कि खाद्य मंत्री अपने इस असत्य, अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें।

आर्य समाज की वेदी की पवित्रता की रक्षा करें।

सार्वदेशिक सभा का निश्चय

आर्य समाज की वेदी से महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का ही प्रचार किया जाय। महर्षि और आर्य समाज ने समाज सुधार और देशोद्धार आदि के जो कार्य किये और आदर्श प्रस्तुत किए हैं उन पर प्रकाश डाला जाया करे।

आर्य समाज की वेदी से सामूहिक रूप में किसी राजनीतिक पार्टी का नाम लेकर पक्ष या विपक्ष में न बोला जाय। उक्त निश्चय ५ नवंबर ६७ की अन्तरंग सभा में किया गया। ※

सिंहस्थ कुंभ मेला उज्जैन में आयोजित
अ० भा० गोरक्षण - गोसंवर्द्धन सम्मेलन के दो दृष्य

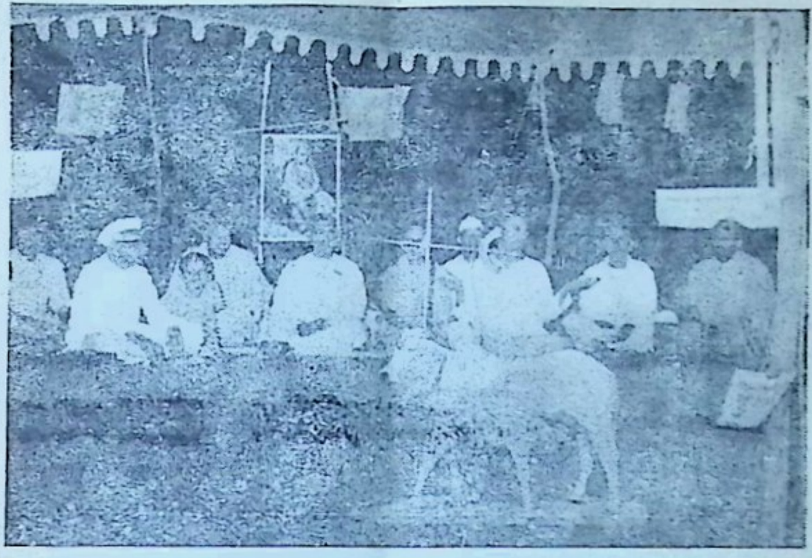

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यभारत के प्रधान श्री बाबूलाल जी गुप्त (मध्य) की अध्यक्षता में सम्मेलन के द्वितीय दिवस की कार्यवाही सम्पन्न हुई। आपके दाहिनी ओर श्री अमरस्वामी जी महाराज विराजमान हैं जिनके ओजस्वी भाषण से जनता काफी प्रभावित हुई। मंच पर आ. प्र. सभा मध्यप्रदेश विदर्भ के प्रधान पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा, म. प्र. गोशाला संघ के मंत्री श्री शिवशंकर रावल वक्ता वेदव्रतजी ब्रह्मचारी तथा अन्य विद्वान आसीन हैं।

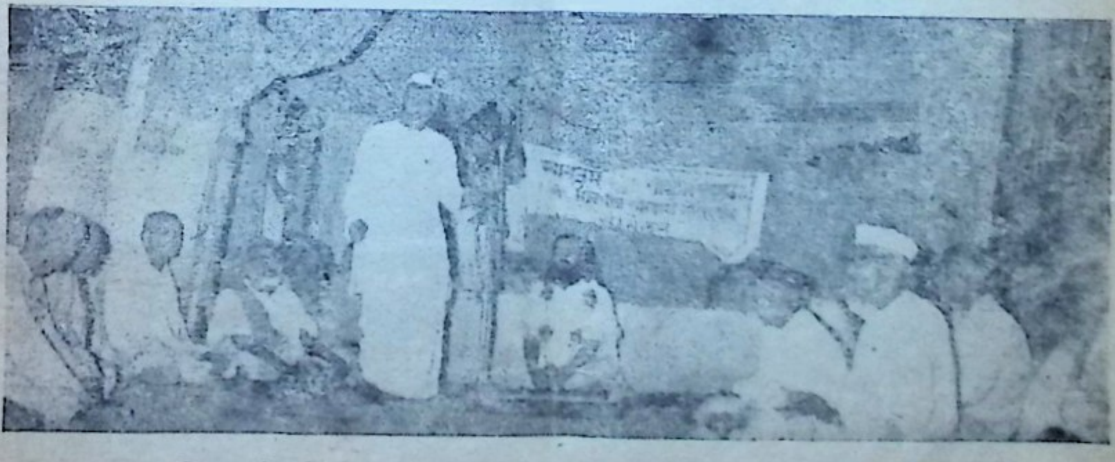

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित अ. भा. गोरक्षण-गोसंवर्द्धन सम्मेलन में भाषण करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा। दाहिनी ओर उज्जैन के सुप्रसिद्ध नेता श्री शिवशंकरजी रावल और पूनमचन्दजी गर्ग दिखाई पड़ रहे हैं।

सभा की सूचना

संख्या २८२–मेरा कार्य

दिनांक ८ जून को मैं रात में दुर्ग पहुंचा। दिनांक ६ को आचार्य श्री मित्रसेनजी विदर्भ के दौरे से वहां आए। रविवार को प्रातः आर्य समाज, दुर्ग, में उनका भाषण कराया। उसी दिन १० से ११ तक भिलाई समाज में उन्हें लेकर गया, जहां उनका प्रवचन कराया। उसी दिन संध्या उन्हें लेकर रायपुर पहुंचा; शारदा चौक में उनका भाषण कराया। दिनांक १० की प्रातः कूरा पहुंचा; वहां बोरिया के बारे में उचित कार्य किया। दानवीर स्वर्गीय तुलाराम जी की धर्मपत्नि श्रीमती कलावतीबाई कूरा आईं और उनके दिए गए भूमि दान के बारे में चर्चा की। संध्या समय सभा के खेतों का निरीक्षण किया। कुछ खेत खरीदना है। उन्हें देखा और सौदे पर चर्चा की। सभा की कुछ भूमि को जो लोग खरीदना चाहते हैं उनसे भेंट सौदा पक्का किया। दिनांक ११ को कूरा कार्यालय का हिसाब जांचा व आवश्यक आदेश दिए। खलिहान की भूमि को देखा और जो नव कमरे कोठी, पशुशाला, बनाना है उनके लिए उस स्थान को अधिक उपयोगी समझकर नकशा बनाने का आदेश दिया। दिनांक १२ को, श्री मित्रसेनजी भी कूरा आ गए। [illegible] केन्द्र स्थापित किए जाने की दृष्टि से स्थानीय आर्यों व साहित्यकारों से परामर्श किया, बोरिया के खरीददार से चर्चा की। दिनांक १३ की प्रातः ढावा गया और कोठी, पशुशाला, आदि स्थानों का निरीक्षण किया। बाड़े के बड़े दरवाजों को, जो नये बनाये गये हैं, भी देखा। यहां निवास के लिए मकान बनाने के नकशे बनाने का भी आदेश दिया। श्री रामप्रसाद ने जो गन्ने की कृषि आरंभ की है उसे भी देखा और समुचित आदेश दिए। डीजल एंजिन का प्लेटफार्म बनाना आवश्यक है, उसके निर्माण की स्वीकृति दी। कूरा से रायपुर व वहां से दुर्ग संध्या समय मित्रसेन जी के साथ आया। दिनांक १४ को प्रातः सभा के नव निर्वाचित उप मंत्री श्री रमेशचंद्रजी श्रीवास्तव से सभा के कार्य व्यवस्था संबंधी चर्चा की। रामायण मण्डल के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री हीरालाल जी शास्त्री से श्री मित्रसेन जी की भेंट करायी और वेदप्रचार संबंधी चर्चा की। दिनांक १५ को नगरपालिका के कार्यालय में प्रधान अधिकारी से सभा की भूमि के प्लाटिंग कराने संबंधी चर्चा की। टौन इंप्रूवमेंट कार्यालय से पत्र व्यवहार की जानकारी भी प्राप्त की और उचित कार्य किया। दिनांक १६ को दुर्ग और भिलाई समाज में आचार्य मित्रसेन जी के [illegible] कराए। उसी मध्यान्ह रायपुर गया और प्रधान श्रीमती कौशल्यादेवी जी से भेंट कर समाजोन्नति आदि विषयों पर परामर्श किया। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं से भी भेंट की। उसी रात श्री प्रकाशचंद्र जी [illegible] के निवास स्थान पर समाज संबंधी चर्चा की। दि. १७ को सभा के अंतरंग सदस्य श्री गुलाबचंद जी बंसल के घर पर सभा के संबंध में चर्चा की। दिनांक १८ को श्री मित्रसेन जी के साथ नागपुर वापस आया।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. २४–६–१९६८	श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

वर चाहिए

डबल एम ए. पास, आर्य परिवार की एक सुशील शिक्षित कन्या के लिए, ३० वर्षीय शिक्षित, व्यापारी या सरकारी कार्य में लगे हुए वर की आवश्यकता है। अहलूवालिया या पंजाबी खत्री अरोरा परिवार ही पत्र व्यवहार करें—

श्रीकृष्ण गुप्त,
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, म. प्र. व विदर्भ
महर्षि दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर, नागपुर-१

License No. 33, D/ 28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

३८ श्री संस्थापकजी, आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला, जिला रोहतक, (पंजाब)
ले

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलिफोन नं. २३४४२
प्रकाशक–वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन–प्रत्येक अंग्रेजी मास की २८ तारीख को।

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

आर्य-सेवक

वार्षिक मूल्य
सम्मानित – ५ रु.
साधारण – २ रु.
एक अंक – २५ पैसे

अक्तूबर] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, आश्विन शुक्ल १० संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४४ { वर्ष ६८ अंक १० [१९६८

वेदोद्धारक, परमहंस महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोधस्थल शिव मन्दिर, टंकारा [गुजरात]

शिव मन्दिर टंकारा का भीतरी दृष्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान, पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा की धर्मपत्नी शान्तिदेवी शर्मा ऋषि की स्मृति में मंत्रमुग्घ खड़ी हैं।

टंकारा नदी के तट पर स्थित यह छोटा सा शिव मन्दिर जहां बालक मूलशंकर को सच्चे शिव के दर्शन नहीं हुए; जहां शिवरात्रि–बोधरात्रि बन गई; अचेतन जड़ महादेव पर चूहों द्वारा उपद्रव और प्रसाद खराब होते देख उन्हें ग्लानि हुई; और वे चैतन्य परमात्मा की खोज में निकल गये। प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द से दीक्षा लेकर लगभग ३६ वर्ष बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में आर्य समाज की स्थापना की।

आर्य समाज के महान विद्वान, शिक्षा शास्त्री, विचारक

पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का निधन

हम बड़े दुःख के साथ आर्य जगत को यह समाचार दे रहे हैं कि हमारे बीच से आर्य जगत का एक महान स्तम्भ गिर गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मंत्री, श्री पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम. ए. का प्रयाग में २९ अगस्त को प्रातःकाल ८७ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप महान विद्वान, दार्शनिक, यशस्वी साहित्यकार तथा सैंकड़ों आर्य ग्रन्थों के रचयिता थे। आपके द्वारा लिखा गया उच्च कोटि का वैदिक साहित्य आर्य जनों के जीवन को सदा उन्नत बनाता रहेगा। आपने अपने ग्रन्थ–संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, तथा अंग्रेजी चार भाषाओं में प्रकाशित किये थे ताकि अधिकांश लोग पढ़कर लाभ उठा सकें। आपके निधन से आर्य जगत की महान क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। आपकी अमूल्य सेवाओं के उपलक्ष्य में आर्य जगत द्वारा सन् १९५९ में ५०० पृष्ठ का एक विशद अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया गया था।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। उनके परिवार को धैर्य व शांति दें तथा हमें सद्बुद्धि दें ताकि हम उनके पदचिन्हों पर चलते हुए समाज सेवा में योगदान दे सकें।

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा — प्रधान
नागपुर — दिनांक १० सितम्बर १९६८
श्रीकृष्ण गुप्त — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ

सार्वदेशिक सभा की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली

सभा मन्त्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने श्री उपाध्याय जी के निधन का समाचार सुन कर निम्नलिखित वक्तव्य दिया—

'आर्य जगत में यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना जायेगा कि आर्य समाज के महान विद्वान, यशस्वी साहित्यकार एवं विचारक श्रीयुत पण्डित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का २९-८-६८ को प्रातः अपने निवास स्थान प्रयाग में लगभग ८५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

श्री पंडित जी ने आजन्म आर्य समाज की मूल्यवान सेवा की। श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के बाद उपाध्याय जी ही पहले विद्वान थे जिन्हें आर्य समाज को सर्वाधिक साहित्य देने का अवसर प्राप्त हुआ था। उनके हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी के ग्रन्थ सर्व सामान्य जनता में ही नहीं अपितु शिक्षित एवं विद्वत् समाज में भी बड़े चाव के साथ पढ़े जाते हैं। इस साहित्य से देश और विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार और आर्य समाज का गौरव बढ़ा है। उनको आस्तिकवाद, कम्यूनिज्म, वैदिक संस्कृति, इस्लाम का दीपक आदि ग्रन्थों पर सरकारी और गैर-सरकारी पुरस्कार प्राप्त हुए। श्री उपाध्याय जी कई वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री रहे और इन पदों को गौरवान्वित किया। दक्षिण अफ्रीका आदि जाकर विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

उनका व्यक्तिक जीवन बड़ा उच्च एवं प्रेरणाप्रद था जो सर्वथा आर्य आदर्शों में ढला था। वे सुयोग्य पुत्रों, पुत्रियों आदि से भरा-पूरा परिवार और अपनी अक्षय कीर्ति छोड़ गए हैं।

उपाध्याय जी पुराने विशिष्ठ आर्यों के नक्षत्र मण्डल के चमकते हुए नक्षत्र थे और आर्य समाज के प्रधान स्तम्भ थे। अब यह नक्षत्र भी अस्त हो गया।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिजनों को इस वियोग का दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करे। उनके निधन से आर्य जगत की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होनी कठिन है।

आर्य सेवक-नागपुर

सम्पादक : दिव्यानन्द सरस्वती

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, आश्विन शुक्ल १०, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४४ | वर्ष–६८ अंक–१०

आई रे जब दीवाली

–श्री विनयकुमार पाठक, पत्रकार, बिलासपुर

दिन से ब्याही रात गई संध्या के अधरों पर लाली।
क्यों मानव दुख में डूबा है आई रे जब दीवाली॥

●

माना यह तू है दिवालिया, खाली पेट तिजोरी।
कपड़ा कफन साथ में लेकर निकला ले लम्बी डोरी॥
विपदाओं से ग्रस्त और ऋण भार असह्य शीश लेकर।
मारा–मारा फिरता है खो शांति चित्त की इधर उधर॥
दरवाजे पर पाल रहा है क्यों इतनी गंदी नाली।
क्यों मानव दुख में डूबा है, आई रे जब दीवाली॥

●

हर दिन तो रोता ही रहता, कलह–बीज बोता रहता।
दुख जल–निधि में दुख की नैया अपनी नित खेता रहता॥
जीने की जो मजबूरी है, मंजिल की भी है दूरी।
आंका गया मूल्य क्या तेरा, कितनी तेरी मजदूरी॥
निशि दिन तो रोता ही रहता, आज मना ले खुशहाली।
क्यों मानव दुख में डूबा है आई रे जब दीवाली॥

●

लिये वेदना हृदय स्थल में, हंस तो कुछ क्षण सकता है।
दीपक जैसे लिये अंधेरा दे प्रकाश मन हर सकता है॥
एक दिवस तो किसी तरह से कटे तिमिर की यह जाली।
होगी सार्थक तब सचमुच ही तेरे हित यह दीवाली॥
अकर्मण्य इन हाथों को तो आज बजाने दो ताली।
क्यों मानव दुख में डूबा है आई रे जब दीवाली॥

" आनन्द मार्गी मैदान छोड भागे "

(पं. सत्यवीर शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज, अमरावती)

दिनांक २३–६–६८ रविवार को आर्य समाज अमरावती की ओर से शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया था, इस शास्त्रार्थ में आर्य समाज की ओर से पं सत्यवीर जी शास्त्री, पं. देवदत्त जी शर्मा, पं. विनायकराव जी सि. शा. ने भाग लिया। आनंद मार्गिओं की ओर से पांच छः अवधूत आये थे। शास्त्रार्थ "आर्यों का आगमन, आर्य आनार्य, शिखा-सूत्र" आदि विषयों पर हुआ। इस शास्त्रार्थ में आनन्द मार्गिओं को अपनी हार स्वीकार करनी पडी। कुछ प्रश्नोत्तरों का नमूना नीचे दिया जाता है।

आनन्दमार्गी:– आर्य लोग बाहर से आए हुए हैं, ऐसा वेदों में लिखा है।

पं. सत्यवीर शास्त्री:– आर्य लोग बाहर से आये हुए हैं ऐसा किस वेद में और कौन से मंत्र में लिखा है? बताइये।

आनन्दमार्गी:- तंत्र में बताया गया आगम को मानने वाले आर्य हुए और न मानने वाले अनार्य।

सत्यवीर शास्त्री:– महाशय आप मेरे प्रश्न का उत्तर दें, वेद मंत्र बतायें, याद न हो तो स्थान का पता बताएं।

आनन्दमार्गी.– वेद का मंत्र तो मुझे याद नहीं, हमारे आनन्दमार्गी जैसे कहते वैसे मैं भी कह रहा हूं, प्रमाण मेरे पास है नहीं।

सत्यवीर शास्त्री:– आपको वेदों के बारे में जानकारी नहीं है? तो आप वेदों का नाम लेकर अट पटांग बातें बताकर लोगों को क्यों बहकाते हो?

आनन्दमार्गी:– क्या आप को वेदों के बारे में जानकारी है? वेद तो दो ही जगह कलकत्ता और बनारस विश्वविद्यालय में है, और कहीं नहीं हैं।

सत्यवीर शास्त्री:– अभी आप आनन्दमार्गिओं के आश्रम से बाहर निकले हैं, वेद किस चिडिया का नाम है? आपको पता नहीं है, चारों वेदों की संहिताएं मेरे पास हैं? आकर देखिए।

आनन्दमार्गी:– अच्छा जी, हमें कहीं और जाना है। जलदी पूछो जो पूछना है।

शास्त्री:– आप अपने आपको हिन्दू कहते हो और प्रचार करते हो शिखा सूत्र रखने की कोई जरूरत नहीं है। शिखा सूत्र नहीं रखना चाहिये ऐसा कहां लिखा है?

आनन्दमार्ग :– रखना चाहिए-ऐसा कहां लिखा है?

शास्त्री:– वेदों में, स्मृतियों में, ब्राह्मण ग्रन्थों, में लिखा है, इन पुस्तकों को तुम मानते हो तो तुम शिखा और सूत्र अभी पहन लो।

आनन्दमार्गी:–हम शिखा और सूत्र नहीं रखेंगे। हम शिखा सूत्र को महत्व नहीं देते हैं, क्या शिखा सूत्र रखना जरूरी है?

शास्त्री:– हां, शिखा सूत्र रखना नितान्त जरूरी हैं शिखा सूत्र हिन्दूत्व (आर्यत्व) के चिन्ह हैं, ये आर्यों के लिए उतने ही आवश्यक हैं, जितने देश के लिए ध्वज, सेना के लिए भेष, मोटर कार के लिए नम्बर आदि, आपने भी तो आनन्दमार्गिओं के चिन्हस्वरूप लाल कपड़े पहने हैं, बिल्ला लगाया है। यदि आप चिन्हों का खण्डन करते हो तो, लाल कपडे और बिल्ला अभी उतार दो, (लोगों की हंसी)

आनन्दमार्गी:– ये चिन्ह न रखने से क्या होगा? आकाश तो न गिर पडेगा?

सत्यवीर शास्त्री:– नीला आकाश तो कभी गिरता ही नहीं, किन्तु दुःख का आकाश तो आपके ऊपर जरूर गिरेगा, आप तरुण हैं और लाल कपडे न पहरने पर आपसे कोई लडकी प्यार करेगी, और आप चाऊ म्याऊ (बच्चे) पैदा करके मुसीबत मोल ले लेंगे (हंसी) ये आपके चिन्ह न रखने के कारण होगा। चिन्ह रखने पर आप अपना सन्यासी धर्म पाप रहित बिता सकते हो। चिन्ह रखने से कितना बड़ा फायदा है। जैसे आपके चिन्ह हैं, वैसे हमारे। (इसके बाद आनन्दमार्गी उठकर चले गये)। ✻

दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन, हैदराबाद

दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन दि. ८-९ तथा १० नवम्बर १९६८ को हैदराबाद के सुप्रसिद्ध औद्योगिक प्रदर्शनी (नुमाईश मैदान) के विशाल प्रांगण में होगा। इसे सफल बनाना प्रत्येक आर्य का आद्य कर्तव्य है।

अतिथियों की आवास-व्यवस्था

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित क्षेत्र की समाजों तथा भारतवर्ष की अन्य समाजों से आने वाले, सन्यासी, महात्मा, विद्वान्, तथा कार्यकर्ताओं व आगन्तुकों के आवास के लिए उत्तम व्यवस्था की जा रही है। हैदराबाद के दोनों रेल्वे स्टेशनों अर्थात् नामपल्ली (ब्राडगेज) और काची गुडा (मीटरगेज) पर स्वागत् सम्बन्धी कार्यालय रहेंगे और स्वयं सेवकों की भी व्यवस्था की जा रही है, जो आनेवाले आगन्तुकों को सम्मेलन पंडाल तक पहुंचाएंगे।

भोजन व्यवस्था

आगन्तुकों को भोजन व अल्पाहार की सुविधा के लिए पंडाल में भोजनालयों और प्रातः-रात्र के निमित्त होटलों का प्रबन्ध किया जा रहा है, जिससे आने वालों को किसी प्रकार का कष्ट न हो सके।

सम्मेलन के अध्यक्ष का नगर परिक्रमा (जुलूस)

दिनांक ८ नवम्बर ६८ मध्यान्ह २ बजे, दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष का भव्य आकर्षक और ऐतिहासिक तथा भारतीय परम्परा के अनुरूप जुलूस निकाला जायगा।

समस्त आर्य समाजों से अनुरोध है कि सम्मेलन में सम्मिलित होते समय ओ३म् का ध्वज (जो सार्वदेशिक सभा से निर्धारित है) को लायें। अन्य प्रकार के ध्वज स्वीकृत नहीं होंगे। प्रत्येक समाज को अपने साथ समाज के नाम का पर्दा भी लाना होगा। समाज व आर्य संस्थाएं अपनी आर्थिक सुविधानुसार ब्यांड भी ला सकेंगे।

सम्मेलनों का आयोजन

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर:-

१- वेद सम्मेलन, २- आर्य महिला सम्मेलन, ३- शिक्षा सम्मेलन, ४- गोरक्षा सम्मेलन, और आर्य वीर दल सम्मेलन का आयोजन किया गया है। आर्य वीर सेवा दल सम्मेलन में नव युवक अधिक संख्या में भाग लेवें। जिससे वे भावी नेतृत्व अपने हाथ में लेकर देश तथा आर्य समाज में एक नयी क्रान्ति तथा जागृति का सूत्रपात कर सकें।

प्रस्ताव तथा सुझाव भेजें

दशमार्य महा सम्मेलन को सफल बनाने के निमित्त आर्य विद्वान् आदि अपने प्रस्ताव व सुझाव, स्वागत् समिति, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाज़ार हैदराबाद व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१ के पते पर भेजें। यह सब इस मास के अन्त तक प्राप्त हो जाना चाहिए।

दान ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है

दशमार्य महा सम्मेलन की सफलता के फल स्वरूप दक्षिण में आर्य समाज के भावी कार्यक्रम को जारी रखने और इस सम्मेलन की दृष्टि से सफल बनाने के लिए जो एक लाख रुपये की योजना स्वागत् समिति द्वारा प्रकाशित की गई है यदि आर्य जन और दानी महानुभाव पूर्ति का संकल्प करें तो पूर्ति शीघ्र हो सकेगी। आशा है दानी महानुभाव अपने इस कर्तव्य पूर्ति का ध्यान रखेंगे।

समाजें सम्मेलन पर आनेवालों की संख्या भिजावें

आगन्तुक महानुभावों के आवास और सुख सुविधा के उत्तम प्रबन्ध के लिए आवश्यक है कि स्वागत् कारिणी को आने वाले महानुभावों की संख्या का भी पता हो जावे।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण क्षेत्र से सम्बन्धित समाजें तथा अन्य प्रान्तों की समाजों के मन्त्री आदि अधिकारियों से अनुरोध है कि वे अपनी-अपनी समाजों से आनेवाले आर्य महानुभावों की संख्या का ज्ञापन करा दें। उनकी सूचना कार्यालय स्वागत समिति, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के पते पर १० अक्टूबर ६८ तक प्राप्त हो जानी चाहिए।

छगनलाल विजयवर्गीय — नरेन्द्र
स्वागत मंत्री — स्वागताध्यक्ष

हैदराबाद, दि. १० सितम्बर १९६८

जीवन सुखी बना लो!

श्री विनयकुमार पाठक, पत्रकार, बिलासपुर (म. प्र.)

(जुलाई अंक से आगे)

सत्यार्थ प्रकाश के दशवें समुल्लास में आचार, अनाचार, भक्ष्या-भक्ष्य का विषय है। सदाचार से ही मानव का जीवन श्रेष्ठ बनता है तथा आचरण करने से उसकी मुक्ति अवश्य है। प्राचीनकाल में सदाचारी व्यक्तियों की संख्या बहुत अधिक थी। स्वामी जी ने भावी संतानों को उत्तम पथ प्रदर्शन हेतु इस समुल्लास में लिखा है। धार्मिक कार्यों में रत, सुशील स्वभाव युक्त, महापुरुषों की सत्संगति में संलग्न, सच्ची शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक आचार व इसके विपरीत मग पर चलना अनाचार कहलाता है। सत्संग का भी अपना विशेष महत्व है। सत्संग से व्यक्ति के जीवन में निखार आता है और वह स्वयं के कर्त्तव्यों से अवगत होने लगता है। सत्संग के प्रभाव से न जाने कितनों का उद्धार हुआ। प्राचीन काल में राजा के पास जब बीड़ा पान खाने के लिये ले जाया जाता था तो एक सामान्य परसे के पान में रखकर ही उन तक पहुंचाने की प्रथा प्रचलित थी। इस तरह बीड़ा पान के साथ परसे के पान का भी राजा के पास पहुंच हो जाता। एक प्रत्यक्ष उदाहरण भी देखिए एक बड़े सम्मानित या विद्वान मनुष्य के साथ में रहने वाला दूसरा मनुष्य भी यथोचित सम्मान का अधिकारी होता है। उसी तरह कुसंगति में पड़कर अच्छे आचरण भी बिगड़ने लगते हैं। सत्य कर्मों से विभूषित होकर आचरण करना ही वेद और स्मृति में आचार कहा गया है। आचार प्रथमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च।

चोर और डाकुओं का परिवार सम्पन्न होते हुए भी क्यों प्रगति नहीं कर पाता? उत्तर स्पष्ट है चोर लूट खसोट व चोरी से येन केन प्रकारेण धन लाता है अतः उस धन का उपयोग करने वाले कभी ज्ञानी व सुखी नहीं रह सकते। वे आत्मोन्नति या आत्मोद्धार नहीं कर सकते। भोजन पर चित्त का विशेष असर पड़ता है। ठीक ही कहा गया है– "जैसा खाए अन्न वैसा हो मन।" एक महोदय ने मुझसे इसी विषय पर एक शंका व्यक्त की–कि चोर का लड़का वही अन्न खाता है जो मेहनती किसान का लड़का भी खाता है। पर चोर के लड़के का भोजन क्यों सात्विक नहीं होगा और किसान के लड़के का भोजन क्यों सात्विक होगा? तब मैंने हंसते हुए उस भोले मित्र महोदय को कहा कि प्रत्येक मनुष्यों द्वारा लिया गया भोजन दो प्रकार से प्रभाव डालता है।

१. उसके स्वास्थ्य व शरीर के निर्माण में मदद देता है। चोर और किसान के लड़के में यह प्रभाव एक रूप में ही रहेगा।

२ उसके चित्त पर प्रभाव पड़ेगा जिससे चोर के लडके का चित में कुविचार प्रस्फुटित होगा एवं किसान के लडके के चित्त में सद्विचार प्रस्फुटित होगा।

सात्विक भोजन से सद्विचार उत्पन्न होते हैं और सद्विचार से सत्पथ का अनुसरण होता है जो कि सद्बुद्धि प्रेरणा का ही परिणाम है। सद्बुद्धि की प्रेरणा एवं सत्पथ के अनुसरण से चित्त की शुद्धि आती है और इससे शांति भी मिलती है। शांति रूपी फल को पाकर मानव आत्मिक आनंद की प्राप्ति करता है। इस तरह ईश्वर का साक्षात्कार करता है। अतः सात्विक और नपातुला भोजन ही मानव को ग्रहण करना चाहिए। सात्विकी भोजन से मानसिक दुखों का निवारण होता है एवं आत्मा–परमात्मा को पहिचानने में मदद मिलती है। सांसारिक सुख, मान सम्मानादि क्षणिक सुख से जब मानव अत्यंत प्रसन्न हो जाता है तब तो न जाने प्रभु का आत्मा में आभास से कितनी शांति मिलेगी? मनुष्य जाति के पास ही समस्त सुविधाओं का भंडार है। मनुष्य को चाहिए

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वैदिक संस्कृति के मूलतत्त्व

(प्रो० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम. ए., गोरखपुर)

वैदिक संस्कृति का क्या अर्थ है ? वैदिक संस्कृति का क्या दृष्टिकोण है ? वैदिक संस्कृति किस उद्देश्य तक मानव को पहुंचाना चाहती है और उसके आधार भूत तत्त्व कौन से हैं ? वैदिक संस्कृति का नाम लेने वाले भी कभी-कभी इन वस्तुओं को दूसरे रूप में समझ जाते हैं । वास्तव में संस्कृति शब्द एक विशेष दिशा का बोधक है । वह एक विशेष दृष्टि है । वैदिक युग में या वेदों में मानव जीवन का क्या उद्देश्य है ? विश्वशांति कैसे हो सकती है ? इस विषय में वैदिक विचारधारा ही वैदिक संस्कृति है ।

वैदिक संस्कृति क्या है ? यह हृदय और बुद्धि की पूजा करने वाली उदार भावना और निर्मल ज्ञान के योग से जीवन में सुन्दरता लाने वाली है । यह संस्कृति ज्ञान-विज्ञान के साथ हृदय का मेल बैठाकर संसार में मधुरता का प्रचार करने वाली है । भारतीय संस्कृति या वैदिक संस्कृति का अर्थ है कर्म, ज्ञान, भक्ति की जीती-जागती महिमा—शरीर, बुद्धि और हृदय को सेवा में सतत लीन करने की महिमा । वैदिक संस्कृति का अर्थ है सहानुभूति, विशालता और सेवा । वैदिक संस्कृति का अर्थ है बिना स्थिर रहे ज्ञान का मार्ग ढूंढते-ढूंढते आगे बढना । संसार में जो कुछ सुन्दर व सत्य दिखाई दे, उसे प्राप्त करने की चेष्टा करना । यह संस्कृति ज्ञान, शक्ति और प्रतिभा का संग्रह करती है यह सब को निकट लाने वाली है । 'सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मचर्यं समारभे' यही उसका उद्देश्य है । इस संस्कृति को संकीर्णता पसंद नहीं । वैदिक संस्कृति का उद्देश्य मृत्यु से अमरता की ओर जाना, अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना, भेद से अभेद की ओर जाना, कीचड़ से कमल की ओर जाना, विरोध से विवेक की ओर बढ़ना, अव्यवस्था से व्यवस्था की ओर जाना । सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् ही वैदिक संस्कृति का उद्देश्य है ।

अब प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि इस संस्कृति के मूल तत्त्व कौन से हैं ? वह कौन सी भित्ति है या वे कौन से साधन हैं जिनसे हम इस संस्कृति के उद्देश्य तक पहुंच सकते हैं ? वे तत्त्व हैं :—

१. तपस्या, २. सत्यनिष्ठा, ३. त्यागभाव, ४. आध्यात्मिकता, ५. शान्ति की भावना ।

वैदिक संस्कृति का प्रथम तत्त्व है तपस्या । तपस्या का तात्पर्य है सब प्रकार के कष्टों को सहते हुए भी निरन्तर सत्य की ओर बढ़ते जाना । जब तक मनुष्य में तपस्या नहीं आयेगी वह सुन्दरता की ओर बढ़ ही न सकेगा । वैदिक संस्कृति साधना सिखलाती है । अधीर मत बनो, फल के लिए लालायित मत रहो, विह्वल मत बनो । महान् उद्देश्य चुटकी मारते नहीं मिल जाते, उनके लिये अनन्त साधना और निरन्तर तप की आवश्यकता है । स्वामी रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे—कमल विकास चाहता है । रात-दिन कीचड़ में पैर गड़ाकर वह इसके लिए प्रयत्न करता है । सूर्य की ओर मुंह करके खिलने का प्रयत्न करता है । वह ठण्ड, धूप, हवा, वर्षा, कीचड़ आदि में रहकर ही प्रयत्न करता रहता है, यही उसकी तपस्या है । सब प्रकार के द्वन्द्वों को सहकर ही उद्देश्य तक पहुंचा जा सकता है और एक दिन आता है जब भ्रमर उसकी प्रदक्षिणा करते हैं और कहते हैं—'पवित्र कमल तू खिल चुका है, तुझमें कितनी सुगन्ध है, कैसा सुन्दर रंग है, तुझमें कितना मीठा रस है" । यह है साधना और तपस्या का फल । तपस्या से ही सत्य की, सत्यसे बुद्धि की और बुद्धि से आत्मा की प्राप्ति होती है । आत्मा पर जिसने विजय प्राप्त करली उसने संसार को जीत लिया । परमात्मा ने तपस्या द्वारा ही विश्व का निर्माण किया है । अतः मनुष्य को तपस्या अपने जीवन में डालनी चाहिये ।

वैदिक संस्कृति का दूसरा तत्त्व है सत्य । "न हि सत्यात् परो धर्मः" सत्य से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं । महर्षि दयानन्द ने मिथ्याडंबरों को दूर करने के

लिये प्राण न्योछावर किए, महात्मा गांधी ने सत्य का पालन जीवन भर किया, दशरथ ने सत्य की रक्षा के लिए राम को वन भेजा, राम ने सत्य की रक्षा के लिये पिता की आज्ञा का पालन किया। उपनिषदों ने सत्य, ब्रह्म और आत्मा को समानार्थक बतलाया। बुद्ध भगवान् ने अपने शिष्य को मरते समय कहा कि एकमात्र सत्य बात अमर होती है। सत्य ही निरन्तर रहने वाला धर्म है। सत्य को दीपक के समान दृढ़ हाथ से पकड़ना। कबीर जी ने भी सत्य की महिमा बतलाते हुए लिखा है--

सांच बराबर तप नहीं झूंठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।

वेद में भी कहा गया है "तत्त्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये" "अनृतात्सत्यमुपैभि" झूंठ से सत्य की ओर आता हूं। "सत्यमेव जयते नानृतम्" यह है सत्य के विषय में वैदिक धारणा।

वैदिक संस्कृति का तीसरा तत्त्व है त्याग। "ईशोपनिषद्" में त्याग से भोग करने का उपदेश दिया गया है। लिखा है "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" इस कारण वैराग्य भाव से (त्यागे हुए धन से) भोग करो। भोग का आदेश देते हुए भी कुछ विचित्र सा लगता है। पर भोग दो प्रकार के होते हैं, एक 'लोभ से भोग' और दूसरा 'त्याग से भोग'। लोभ से भोग का मतलब है स्वयं भोगना। इस भोग पर परमात्मा ने स्वयं प्रतिबन्ध लगा दिये हैं। आपके घर में मन भर लड्डू हैं। पर आप दो-चार खा सकते हैं। आपके पास बक्सों कपड़े हैं, पर आप तीन-चार पहन सकते हैं। आपके पास सैकड़ों जोड़े जूते हैं, पर आप एक जोड़ा काम में ला सकते हैं। वास्तव में त्याग से भोग में जो आनन्द है, वह आनन्द 'भोग से भोग में' नहीं। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शब्दों में "त्याग की भावना आत्मशुद्धि के लिए आवश्यक है।" प्राचीन भारत में यज्ञ और विशेष कर सर्वमेध यज्ञ का विधान तो इसी भावना का विस्तार था।

वैदिक संस्कृति के चतुर्थ मूल तत्त्व पर जब हम विचार करते हैं तो हमें पता चलता है कि इस संस्कृति ने आध्यात्मिकता को बहुत महत्त्व दिया था। आज हम धन तथा भौतिक समृद्धि को प्रधानता देते हैं; पर वैदिक लोग इनकी अपेक्षा आध्यात्मिकता एवं नैतिक संयम को प्रधान मानते हैं। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था में आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि होने के कारण वैश्य और सम्राट् से भी ब्राह्मण का महत्त्व अधिक माना गया है। कठोपनिषद् में सम्पूर्ण भौतिक समृद्धि के विद्यमान होने पर भी कहा--"भौतिक वासनाएं तो एक जन्म क्या सैकड़ों जन्म लेते जायें तब भी नहीं मिटतीं, परन्तु जब मनुष्य को आत्मतत्त्व के दर्शन हो जाते हैं, उस समय भौतिक जगत् हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है।" बृहदारण्यक उपनिषद् में जब याज्ञवल्क्य ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति मैत्रेयी को देनी चाही तो उसने पूछा 'किमहम् तेनामृता स्याम्'? याज्ञवल्क्य के अस्वीकार करने पर उसने कहा, "येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्" जिस वस्तु को प्राप्त करके मैं सुखी नहीं हो सकती, उसको लेकर क्या करूंगी। अतः आप मुझे आत्मतत्त्व का उपदेश दीजिये। इस प्रकार अध्यात्मवाद ही वह साधन है जिससे सुख प्राप्त किया जा सकता है। अध्यात्मवाद का तात्पर्य है अहंकार और स्वार्थ को दूर कर अपने को सर्वत्र समझना अर्थात् 'आत्मवत् सर्वभूतानि यः पश्यति स पण्डितः' अपने समान ही विश्व के प्रत्येक प्राणी से व्यवहार करना ही आध्यात्मिकता का समझने लायक रूप है। वैदिक संस्कृति को छोड़कर ऐसी आध्यात्मिकता अन्य कहीं नहीं। इसी कारण विदेशियों के आक्रमण और पराजय का हम पर कुछ प्रभाव न पड़ा। आर्थिक हानियों, और कष्टों के बावजूद भी उसकी आत्मा विजयी है।

इन उपर्युक्त तत्त्वों का सार और उद्देश्य 'शांति की भावना' हमारी संस्कृति का अन्तिम तत्त्व है। शान्ति की विजय को युद्ध की विजय से अधिक गौरवशाली माना गया है। शान्ति की भावना इतनी उग्र और सच्ची थी कि उपनिषदों में कर्मकाण्ड में सर्वत्र मंत्र की समाप्ति 'ओ३म् शान्तिः', के उच्चारण के साथ होती है और प्रार्थना की जाती है कि आकाश,

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज

(श्री डा० सूर्यकान्तजी, डी. लिट्., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

महर्षि दयानन्द ने जब अपना प्रचार कार्य प्रारम्भ किया तब भारतभूमि नाना प्रकार के मत-मतान्तरों से विप्लवित हुई अपने प्राचीन आर्यत्व को भूल चुकी थी। वर्णव्यवस्था जन्म से मानी जाने के कारण, सभी वर्ण अपने कर्मों की उपेक्षा कर रहे थे। बालविवाह, छूत-छात, सतीप्रथा, स्त्रीशिक्षा-विरोध आदि अनेकों कुरीतियां धर्म का चोला पहन कर पनप रही थीं। सप्त समुद्रों की यात्रा करने वाले भारतीय सार्थवाहों की सन्तान समुद्र यात्रा में धर्म के भ्रष्ट होने की कल्पना किए बैठी थी। संकीर्णता जनता के हृदयों पर अधिकार जमाए थी। वेद तो केवल पूजा की वस्तु रह गये थे, जिन्हें पढ़ना मनुष्य की शक्ति के बाहर की वस्तु समझा जाने लगा था। कुछ एक सुधारक प्रवृत्ति के लोगों ने देश की इस शोचनीय अवस्था को देख कर सुधार करने का प्रयत्न किया था, पर गहरी निद्रा में पड़े इस देश को तो कड़ी चोट की आवश्यकता थी, जो दयानन्द जैसा साहसी पुरुष ही दे सकता था।

वेद को आधारशिला बना कर इस उत्साही ऋषि ने जो क्रान्ति का गान भारत की जनता को सुनाया उसे सुन सभी विस्मयान्वित हो उठे, क्योंकि अंग्रेजी भाषा तथा योरुपीय शिक्षा से नितान्त अनभिज्ञ हिन्दू संन्यासी समाजसुधार विषयक इतने क्रान्तिकारी विचार रख सकता है, इस की कल्पना भी किसी ने नहीं की थी।

ऋषि दयानन्द में दृढनिश्चयात्मक बुद्धि थी। उन्हें वेदाध्ययन के क्षेत्र में तथा समाजसुधार के क्षेत्र में अनेक विरोधी शक्तियों का सामना करना पड़ा पर वह तनिक भी नहीं घबराए। वस्तुतः वह उन साधारण अवसरवादी मनुष्यों में से नहीं थे जो बहते पानी के साथ बह जाते हैं और जैसे कैसे, परिस्थितियों के समक्ष घुटने टेक देते हैं। उन्होंने तो परिस्थितियों को बदलना सीखा था, बहते पानी की धारा को मोड़कर उस से सूखती धरती को अभिषिचित करने की ठानी थी। हिमालय की हिमाच्छादित घाटियों के कष्ट उन्हें अपने मार्ग से हटा न सके, ओखीमठ की महन्त पदवी का प्रलोभन उन्हें अपने ध्येय से विरत न कर सका। जो ठाना था उसे कार्य रूप में परिणत करके ही उन्होंने चैन लिया। वैदिक मत के प्रचार तथा अवैदिक मतों के खण्डन की भावना जो प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द ने उन्हें चिनगारी के रूप में दी थी वह प्रज्वलित अग्नि का रूप धारण करके न केवल भ्रान्त विचारधाराओं के विनाश में ही तत्पर हुई प्रत्युत सदियों से विलुप्तप्राय वैदिक दीप-शिखा को भी उस ने पुनः प्रदीप्त कर दिया। आर्य समाज की स्थापना द्वारा उन्होंने अपने कार्य को स्थायी रूप दिया ताकि उनका प्रारम्भ किया कार्य निरन्तर बढ़ता रहे।

इस में सन्देह नहीं कि ऋषि संचालित आर्य समाज ने ऋषि के संकल्प को पूर्ण करने में पर्याप्त प्रयत्न किया तथा सफलता भी प्राप्त की। आर्य समाज के प्रचार द्वारा स्त्रीशिक्षा, विधवा-विवाह, अछूतोद्धार इत्यादि कार्य इतने लोकप्रिय हो गये कि आज भारत की प्रत्येक विचारशील संस्था ने इन्हें अपना लिया है। सनातन धर्मी भाई जो स्त्रियों को शिक्षा देना पाप समझते थे, आज कन्या पाठशालाओं तथा महिला कालिजों की स्थापना गर्व से करते हैं। छूत-छात अब समाप्तप्राय हैं तथा बाल विवाह अन्तिम सांस ले रहा है।

इससे क्या समझा जाए कि आर्य समाज अपना कार्य पूरा कर चुका है? नहीं। समाज सुधार के साथ-साथ आर्य समाज की स्थापना का अन्य मुख्य उद्देश्य देश में फैली वेदविषयक भ्रान्तियों को दूर करना था और इस क्षेत्र में अभी पर्याप्त कार्य करना

शेष है । ऋषि दयानन्द का ऋग्वेदभाष्य इसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था। उनकी इच्छा ऐसे वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने की भी थी जिन के माध्यम से वैदिक ग्रन्थों का उच्च कोटि का अनुसन्धानात्मक अध्ययन सम्भव हो। काशी में ऐसे विद्यालय को स्थापित करने की चेष्टा की गई, पर कारणवश सफल न हो पायी।

आज आर्य समाज का यह कर्तव्य हो जाता है कि इस क्षेत्र में ऋषि के संकल्पों को पूरा करे। दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य की महत्ता में सन्देह नहीं किया जा सकता, पर यह कथन भी अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि आधुनिक वेदार्थ पद्धतियों में इसे यथोचित सम्मान नहीं मिल पाया। माधव, सायण आदि के भाष्य विश्वविद्यालयों में अधिक प्रचलित हैं तथा पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रसारित शैलियां ही अधिक वैज्ञानिक मानी जा रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज के धुरन्धर विद्वान् वेद के कार्य में जुट कर दयानन्द शैली की वैज्ञानिकता को सिद्ध करें। कहा जाता है कि ऋग्वेद भाष्य में दयानन्द की निजी कल्पना तथा चातुर्य का मनमाना प्रदर्शन है। उन की शैली नियमबद्ध न हो कर स्वच्छन्द है, अतः समालोचनात्मक दृष्टि से ग्राह्य नहीं। वस्तुतः ऐसा ही आरोप सायण आदि के भाष्यों पर भी तथा आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों के भाष्यों पर भी लगाया जा सकता है, जो प्राक् कल्पित पक्षपातों को ले कर ही वेदार्थ बतलाते हैं। आर्य समाज के विद्वानों का कर्तव्य है कि वह समय की चेतावनी को समझ कर इस कार्य को हाथ में लें, अन्यथा उन्हें कुसन्तान बनने का कलंक सहना होगा।

(पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन ग्रंथ से)

(पृष्ठ ८ का शेष)

पृथ्वी, जल, वनस्पति, वृक्षों और हृदयों में सर्वत्र शान्ति प्राप्त हो।

'कठोपनिषद्' में लिखा है कि बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिये कि वह वाणी को मन में, मन को बुद्धि में, और बुद्धि को स्व' में, 'आत्मा' में तथा महान् स्व या आत्मा को शान्ति में विलीन कर दे।

वैदिक संस्कृति कितनी महान् है। इसी संस्कृति का प्रचार महर्षि दयानन्द की कामना थी। आर्य समाज का यही उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ज्ञान, कर्म और शान्ति द्वारा अनेक व्यक्तियों ने प्रयत्न किया।

शरद ऋतु में बादल गरजता बहुत है किन्तु बरसता नहीं और वर्षा ऋतु में बिना गर्जन के ही बादल वर्षा करता है। इसी प्रकार नीच मनुष्य बोलता ही है करता कुछ नहीं है और श्रेष्ठ पुरुष बोलता नहीं है—कर्म कर देता है।

— स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती

मृत्यु को सदैव याद रखो

(श्री शंकरलालजी आर्य, बैकुन्ठपुर)

संसार का प्रत्येक मानव अपनी मृत्यु को नजदीक आते देखकर भयभीत हो उठता है। उसके हृदय में जीवन की प्रत्येक मुख्य घटना सिनेमा की तरह उसके सन्मुख आती और जाती दिखाई देती है। तब मनुष्य अपने जीवन के उत्तम कामों की खोज करता है, किन्तु जब उत्तम कामों का अभाव एवं बुरे कामों की भरमार पाता है, तब उसकी विफलता तथा भय और भी अधिक विकराल रूप धारण कर लेती है। यहां तक कि मनुष्य पागल हो जाता है।

किन्तु क्या उस भयानक मौत से डरने से कोई काम बनेगा? नहीं! यदि विचारपूर्वक एवं सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो मृत्यु से हमें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। जिस तरह हम रात्रि में सोते हैं और प्रातः उठ बैठते हैं उसी प्रकार मृत्यु भी मनुष्य के लिये एक महानिद्रा के समान है। इस महानिद्रा के पश्चात् हमारा पुनः जन्म रूपी प्रभात होता है। वास्तव में मृत्यु इस जन्म का अन्त, और अगले जन्म का आरंभ है। किन्तु इतना सब कुछ जानते हुए भी संसार का कोई भी व्यक्ति मृत्यु का नाम लेना भी ठीक नहीं समझता है। यदि कोई मरीज बिस्तरे पर पड़े-पड़े मृत्यु की घड़ियां गिनता हो, तो भी परिवार के लोग तथा मित्र आदि उस मरीज के पूंछने पर सदैव आनेवाली मृत्यू को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। और यदि डाक्टर को मालूम भी हो जाय कि रोगी मरने वाला है, तब भी पूंछने पर यही कहता है कि मौत अभी दूर है। मृत्यु नजदीक आने पर भी रोगी को अन्धकार में रखा जाता है। जीवन भर इस नाशवान शरीर को चाहे कितना ही क्यों न संवारा जाय, कितना भी उपाय क्यों न किया जाय, किन्तु बचपन के बाद युवावस्था, युवावस्था के बाद बुढ़ापा और अन्त में मृत्यु निश्चित है।

जब मृत्यु निश्चित है तब उसे भुलाने का असफल प्रयत्न क्यों किया जाये? क्यों न डटकर उसका मुकाबला करें। मृत्यु के पहले ही क्यों न ईश्वर के कृपा पात्र बनकर उसे परास्त करें। यदि हमें सदैव मृत्यु का स्मरण बना रहे तो संसार में आज होने वाले सभी पाप, पाखन्ड, दुराचार, ईर्षा और द्वेश हमेशा के लिए बिदा हो जांए। किन्तु ऐसा होते बहुत कम देखा गया है, उसका कारण यह है कि मनुष्य अज्ञान के वशीभूत होकर, अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए अनेक पाप कर्मों में रात दिन जुटा हुआ है। उससे निकलने के लिए ज्ञान रूपी प्रकाश की आवश्यकता है। उपरोक्त कथन की सत्यता के लिए यहां पर एक उदाहरण, जो संत विनोबा जी का कहा हुआ है लिखना उचित होगा—

एक बार संत नामदेव जी से किसी व्यक्ति ने पूछा कि महात्मा जी आपका जीवन कितना सादा तथा शान्त है, और आपके विचार भी कितने उच्च हैं। उक्त सज्जन संत नामदेव जी से बातें कर रहे थे, कि उन्होंने कहा- "भाई, ये सारी बातें तो छोड़ो, मुझे अभी २ तुम्हारे बारे में एक बात मालूम हुई है, वह यह कि आज से ठीक सातवें दिन तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। बस फिर क्या था, संत नामदेव जी की यह बात सुनते ही वह व्यक्ति घबरा गया। वह चिन्तित होकर सोचने लगा कि मेरी-मृत्यु और वह भी केवल १६८ घंटे में और फिर भला संत नामदेव जी की वाणी कभी झूठी कैसे हो सकती थी। वह व्यक्ति अपने घर आकर संत नामदेव जी की उक्त बातें कही..... सुनकर सभी लोग बड़े व्याकुल हो उठे। उस व्यक्ति ने बिस्तर पकड़ लिया और जैसे २ एक-एक दिन बीतता गया वैसे २ उसे मृत्यु निकट आती हुई दृष्टिगोचर होने लगी। अन्त में सातवें दिन संत नामदेव जी उस आदमी से मिलने उसके घर गये। उन्होंने पूछा—"कैसी तबियत है?" वह बोला—अब तो कुछ ही घन्टों का मेहमान हूं। तब नामदेव जी बोले—इन सात दिनों में कितना पाप कमाया? वह बोला-पाप करने को कौन

कहे, पाप करने के विचार तक मेरे हृदय में नहीं आये, । तब संत नामदेव जी बोले–बस हमारा जीवन भी इसी प्रकार है ।

उपरोक्त कथन का तात्पर्य यह है कि यदि हम मृत्यु को सदैव स्मरण करें, तो पाप कर्मों की ओर हमारी चित्त वृत्ति नहीं बढ़ेगी। इस प्रकार इस मृत्यु रूपी अंकुश के लगे रहने से हम दिनों दिन अच्छे कार्यों की ओर बढ़ते रहते हैं। यह वह लगाम है जिसको याद रखने से कुमार्ग पर जाने से रोक लगती है।

अस्तु प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह प्रारंभ से ही राग-द्वेष आदि बुराइयों को अपने से अलग करे, तथा उसके स्थान में सदाचार, सद्‌विचार, परोपकार, दया, क्षमा तथा ईश्वर भजन अर्थात् संध्या–हवन आदि करते हुए अपने जीवन को बिताये, तथा मृत्यु को सदैव अपना मित्र समझे। वास्तव में मृत्यु तो एक मित्र है, जो यातना से मुक्ति दिलाती है।

※

(पृष्ठ ६ का शेष)

कि उसका जीवन पशुओं से उठा रहे। सात्विकी भोजन न करने से मानव भी पशुवत् और नीच हो जाता है। भोजन का उद्देश्य स्वाद के लिये नहीं अपितु शरीर को कायम रखने के लिये किया जाना चाहिये। वायु को केवल स्वाद हेतु और पानी को भी केवल स्वाद हेतु ग्रहण करनी चाहिये। इन्द्रियों को स्वतंत्र बैल बनकर हरित–हरित घासों को चरने देना ठीक नहीं। आवश्यक है कि उस पर उचित प्रतिबंध लगे अन्यथा इसका कुप्रभाव पड़ेगा। अब तो दो ही मार्ग हैं। या तो इंद्रियों के इशारे पर नाचो या निग्रह कर उनको नचाओ। इसमें से एक को निकालना और दूसरे को उगलना ही है।

एक कथा है। एक ब्राह्मण देव प्रति दिन प्रातः भिक्षा मांगने हेतु निकल जाया करते थे और बाद में पकाकर खाया करते थे। प्रति दिन की तरह वे एक दिन खाना खाकर लेटे ही थे कि स्वप्न देवी ने उन्हें अपनी गोद में ले लिया। नाक जाते के सदृश बजाते हुए वे स्वप्न संसार में विचरण करने लगे। स्वप्न में वे देखते हैं कि उन्होंने अपनी मां का अपने ही हाथों से खून कर डाला है। कितना दर्दनाक व अविचारणीय स्वप्न था उनके लिये। घबड़ाते हुए वे स्वप्न की कड़ी को तोड़कर उठ बैठ जाते हैं और पश्चाताप करने लगते हैं। दूसरे दिन वे राजा के यहां जाकर पता लगाते हैं तो मालूम होता है कि उनके यहां से भिक्षा हेतु जो चांवल दिया गया था वह मेहनती किसानों के द्वारा अतिरिक्त लगान के रूप में जबरन ही एकत्रित किया गया था। अब आप स्वयं अंदाज लगा लेवें कि भोजन का चित्त पर कैसा प्रभाव पड़ता है। आजकल भले ही लोग भ्रष्टाचार की कमाई से पेट बढ़ालें किंतु उनका आत्मिक विकास संभव नहीं है। इसीलिये आज हमारे पास समस्त सुविधाओं के होते हुए भी कलह है, अशांति है।

कवि के शब्दों में गुनगुनाते रहिये–

नित ही बरते सदाचार, होए वैसा कोय।
चोर डाकू का बेटा, कभी न पंडित होय।।
कभी न पंडित होय, जब तलक अन्न खाएगा।
रह के उनके साथ, विद्या को न छू भी पाएगा।।
'विनय' कहै क्या कर पावेगा पर जन के हित।
कुत्ते सम जीवेगा, करते वह अनाचार नित।।

मांसाहारी मनुष्यों में दया आदि उत्तम गुण– होते ही नहीं, किन्तु वे स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करने में ही सदा तत्पर रहते हैं।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

प्रधान जी सभा द्वारा कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान श्री पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा, ने १८ से २९ अगस्त के बीच सभा कार्यालय में ६ बार पधार कर कार्यालय में कार्य किया तथा महत्वपूर्ण कागजातों को देखा और आदेश प्रदान किया।

श्री दालचन्द्रजी उप-प्रधान सभा का सागर में स्वागत

सभा के सक्रिय उपप्रधान, श्री दालचन्द जी यादव, बी. काम., गत मास वेद प्रचार सप्ताह के के अवसर पर अपने दौरे में सागर पधारे। १३ अगस्त को, समाज द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में अपने अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया। समाज द्वारा विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया गया तथा वैदिक साहित्य प्रत्येक छात्र को भेंट स्वरूप दिया गया।

इस अवसर पर एक औपचारिक बैठक भी रखी गई थी जिसमें आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर विचार विमर्श हुआ।

श्री धर्मदेवसिंह जी उपमंत्री सभा द्वारा प्रचार कार्य

श्री धर्मदेवसिंह जी, उप मंत्री सभा ने दि. १७ और १८ अगस्त को तिरोड़ा पहुंचकर बिट्ठल जी आर्य के निवास स्थान पर साप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया। लगभग २५ प्रतिष्ठित आदमियों को आमंत्रित किया गया। हवन के पश्चात् विश्वनाथ जी मुंगे, राजाभाऊ मोरे रुखमा जी और श्री द्वेवा जी के भजन हुए। ईसाइयों की बढ़ती हुई गतिविधियों पर अंकुश लगाने तथा वैदिक धर्म की महत्वता पर आपके उपदेश हुए।

छत्तीसगढ़ में शुद्धि व प्रचार कार्य

आर्य समाज दुर्ग व भिलाई द्वारा नियुक्त श्री श्यामसुन्दरलाल जी शर्मा द्वारा दिनांक २७।६।६८ से १ ९।१९६८ तक ग्राम टाटीबंद, हीरापुर, जरनाम, सरोना तथा अमनपुर ग्रामों में रोमन कैथलिक चर्च द्वारा सतनामी हिन्दुओं को बलात् व प्रलोभन द्वारा ईसाई बनाये गये लोगों को सामूहिक रूप से शुद्धिकर पुनः उनके अपने धर्म सतनामी समाज में शामिल किया गया। श्यामसुन्दरलाल जी की सहायता के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री सत्यदेव जी वानप्रस्थी को भी टाटीबंद ग्राम में प्रचारार्थ भेजा गया था।

संसद सदस्या मीनी माता जी सतनामी समाज की हितैषी कहलाती हैं। वे टाटीबंद व रांयपुर में पधारीं तथा अपना एक वक्तव्य प्रकाशित कर शुद्धि कार्य का समर्थन तथा आर्य समाज के राष्ट्रहितैषी कार्य की सराहना की।

श्री शंकरलाल आर्योपदेशक द्वारा प्रचार

सभा के उपदेशक श्री शंकरलाल जी ने मास अगस्त १९६८ में निम्नलिखित स्थानों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। एक हिन्दू बाला की रक्षा की; ईसाइयों के कुचक्र में न फंसने के लिए जनता को समझाया; वैदिक साहित्य व पर्चे बंटवाये। फूलपुर, आनी, गायमाड़ा, बैकुण्ठपुर, सूरजपुर, पटना, अम्बिकापुर, जशपुर, बरपानी, मनोरा, घघमा, घनीटोली, कन्डोरा, कुनकुरी, पत्थलगांव व सोंस आदि।

श्री रामाश्रय आर्योपदेशक द्वारा प्रचार

श्री रामाश्रय जी ने मास अगस्त में निम्नलिखित स्थानों में भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार, यज्ञ की उपयोगिता आदि पर व्याख्यानों द्वारा प्रचार किया–रामपुर बाघेलान, लोहरा, देवरा, कूंद, झाड, कोरगवां आदि।

स्व. उपाध्याय जी को श्रद्धांजलि

पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन पर प्रदेश की अनेकों आर्यसमाजों ने अपनी शोकयुक्त श्रद्धांजलि अर्पित की है उनमें आर्य समाज, खंडवा, बुरहानपुर तथा गनकैरिज फैक्टरी की समाजों ने प्रस्ताव पारित कर मृतात्मा की शांति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की है।

आर्य समाज-सतना

स्थानीय समाज की ओर से श्रावणी पर्व समारोह पूर्वक ८ से १६ अगस्त तक मनाया गया। सुभाष पार्क में प्रतिदिन श्री पन्नासिंह जी तथा अन्य विद्वानों के व्याख्यान होते रहे। सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित "वैदिक सिद्धान्त" की १०० प्रतियां निःशुल्क बांटी गई। पारिवारिक यज्ञों का आयोजन हुआ।

आर्य समाज–खंडवा

समाज के प्रचारक श्री सुखराम जी आर्य सि. शास्त्री ने समस्त मास में ग्राम खुटला खुर्द, बिहारीपुरा, अट्टद और बनवारीलाल जी आर्य के सहयोग से कालमुखी में ईश्वर भक्ति, मानव धर्म विषयों पर सारगर्भित धर्मोपदेश दिया। निशुल्क वैदिक साहित्य का वितरण किया गया।

श्री जयकृष्ण कुन्हाडे, प्रधान आर्य समाज अमरावती से, न्यायालय द्वारा हिसाब की मांग

आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व उप प्रधान श्री जयकृष्ण कुन्हाड़े, जब वे आर्य समाज अमरावती के प्रधान थे–समाज का हिसाब व्यवस्थित न रखने तथा ६ वर्षों का हिसाब प्रस्तुत न करने के कारण सभा को कानूनी कार्यवाही करने के लिये बाध्य होना पड़ा–अमरावती के माननीय न्यायाधीश महोदय ने २१ सितम्बर को हिसाब लेकर अपने समक्ष उपस्थित होने के लिये उन्हें बुलाया है। ❊

धार्मिक परीक्षायें

वैदिक सिद्धान्त परिषद् की सिद्धान्त विशारद, सिद्धान्त भूषण, सिद्धान्तालंकार, सिद्धान्ताचार्य परीक्षायें आगामी जनवरी में समस्त भारत में होंगी। कोई भी व्यक्ति किसी भी परीक्षा में बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा में सुन्दर व सुनहरा उपाधि पत्र प्रदान किया जाता है। सर्व प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले छात्रों को उनकी कक्षा का वर्ष भर का शुल्क पुरस्कार रूप में भेंट किया जाता है। निम्न पते से पाठ विधि व आवेदन पत्र मंगाकर केन्द्र स्थापित करें। परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी है।

आचार्य मित्रसेन, एम्. ए., सिद्धान्तालंकार,
परीक्षा मंत्री,
भारत वर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्,
परीक्षा कार्यालय, सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़।

मराठी सत्यार्थ प्रकाश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, मराठी सत्यार्थ प्रकाश का नया संस्करण – आर्य प्रतिनिधि सभा के नागपुर कार्यालय में उपलब्ध है। मूल्य रु. ४–५० है। बाहर से मंगाने वाले सज्जनों को डाक व्यय अलग देना होगा।

मंत्री, आ. प्र. सभा, म. प्र. व विदर्भ
महर्षि दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर, नागपुर

नल दमयन्ती का प्रकाशन !

प्रयास प्रकाशन बिलासपुर का छठवां पुष्प लघु प्रबंध "नलदमयन्ती" (रचयिता श्री सोहित राम साहू 'राठी') शीघ्र ही प्रकाशित होगा। प्रयास उत्साही नवयुवकों का प्रकाशन है। इच्छुक सज्जन श्री बिनय कुमार पाठक, पचरीघाट, बिलासपुर (म. प्र.) के पते पर सम्पर्क साधें।

सभा की सूचना

संख्या २८५– मेरा कार्य

(१)

दिनांक ८ जुलाई को सायंकाल दुर्ग पहुंचा। ९ जुलाई को माननीय प्रधान श्री विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा नागपुर से दुर्ग पधारे। उनके साथ श्री घनश्याम-सिंह जी गुप्त के घर जाकर तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय तथा सभा की सम्पत्ति के संबंध में चर्चा की। वापसी में प्रकाशचन्द्रजी वर्मा के घर जाकर मिला। सायंकाल विद्यालय में भिलाई से श्री बालकृष्णजी चड्ढा तथा श्री जयदेव जी विरमानी मिलने आये; उनसे स्वामी दिव्यानन्द जी जांच समिति की कार्य प्रणाली पर चर्चा की। १० जुलाई की मध्यान्ह में प्राचार्य जी के साथ तुलाराम कन्या विद्यालय का कार्य किया। प्रधान जी आज सायंकाल वापस गये। मैं ११जुलाई को नागपुर वापस आया।

(२)

छत्तीसगढ़ की समाजों के निमंत्रण पर १८ जुलाई को रात्रि में दुर्ग पहुंचा। प्रातः आर्य समाज मंदिर, भिलाई पहुंचा। वहां सभा के उपप्रधान श्री बालकृष्ण चड्ढा और आर्य समाज, रायपुर की प्रधाना श्रीमती कौशल्या देवी, श्री दालचन्द यादव, उपप्रधान सभा, एवं श्री जयदेव विरमानी उपस्थित थे। स्वामी दिव्यानन्दजी जांच समिति की प्रथम बैठक आयोजित की गई जिसमें कार्य की रूप रेखा तथा क्या क्या कार्य करना है इस पर विचार किया गया। २१ जुलाई को प्रातः ८ बजे दयानन्द शिक्षा समिति की बैठक में भाग लिया। १० बजे से शिक्षा मंत्री धर्मपालसिंह गुप्त के विद्यालय में स्वागत अभिनन्दन

जा ग रे

(कु. पुष्पावती, संचालिका मातृ मन्दिर, वाराणसी)

सोये मानव जागरे।
प्रपीड़न शोषण धरणी हल से जाएं अव भाग रे।
तू विधाता की सुन्दर रचना, सर्वोत्तम प्राणी।
पशु वर्ग को छोड़ तू ही दया प्रेम का दानी।
तेरे हाथों ही उत्पीड़न हो, कैसा विपरीत राग रे।
मत भूल तू अपनी रचना को, रचना की दिव्य कहानी।
मत भूल तू था केवल अपने मनुजत्व का अभिमानी।
खोए प्रेम सूत्र टटोल, गा ले नया विहाग रे।
तू धरती का संपन्न लाल काहे बना भिखारी।
प्रेम अमृत वर्षक था तू बना क्यों हिंसा पुजारी।
अपने अन्तस्तल को जगा ढूंढ ला मानवता का अनुराग रे।
मानव ! दानव बनने में तेरा नहीं कल्याण।
अपने हाथों होगा चूर कभी तेरा अभिमान।
चल संभाल अपने को तू धरा का सुभग सुहाग रे।

में व्यस्त रहा। सायंकाल ५ बजे टाटीबंद ग्राम में सब मित्रों के साथ गया और शुद्ध किये हुए सतनामी भाइयों के साथ भोजन किया। २२ जुलाई को प्रधान जी समा को स्टेशन में बिदाई देकर, सायंकाल श्री बालकृष्ण चड्ढा से मिलने श्री सुकुमार पगारे के साथ भिलाई गया। स्वामी दिव्यानन्द जी जांच कमेटी के बारे में उनसे चर्चा की। २३ जुलाई को नागपुर वापस लौट आया।

(३)

दिनांक १३ अगस्त ६८ को रात्रि में नागपुर से निकलकर १४ को प्रातः मुर्तिजापुर पहुंचा। वर्षा काफी तेज थी दिन भर पानी बरसते रहा कहीं जाना नहीं हो सका। १५ अगस्त को प्रातः कार्यालय अधीक्षक श्री युधिष्ठिरप्रसाद दुबे मुर्तिजापुर आये। उनके साथ मोटर द्वारा मध्यान्ह में १२ बजे कारंजा पहुंचा। संबंधित अधिकारियों से भू सम्पत्ति सभा के नाम रजिस्टर कराने के लिये उचित कार्यवाही करने के लिये प्रेरणा की। सायंकाल मुर्तिजापुर वापस आया और सभा की भू सम्पत्ति का निरीक्षण किया। १६ अगस्त को प्रातः एक्सप्रेस से निकलकर नागपुर पहुंच गया।

संख्या २८६– प्रदेश की आर्य समाजें कुंभ मेला प्रचार व्यय भेजें

प्रदेश की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा गत अकोला बृहदधिवेशन में सहायता का आश्वासन दिये जाने पर, सभा द्वारा कुंभ मेला, उज्जैन में वेदप्रचार शिविर खोला गया था जो १॥ माह तक निरंतर आर्य विद्वानों व सन्यासियों द्वारा, वैदिक धर्म का प्रचार कार्य करता रहा। इस प्रचार कार्य में सभा को एक सहस्त्र रुपया व्यय करना पड़ा था। प्रदेश की कुछ समाजों ने अपनी सहायता की राशि भेज दी थी। निम्नलिखित समाजों ने अभी तक अपनी सहायता की राशि नहीं भेजी है– आर्यसमाज– सागर, दुर्ग, अमरावती, पुसद, गोरखपुर जबलपुर, जरीपटका नागपुर, आकोट, कोतमा, दयानंद भवन नागपुर, रायपुर और बिलासपुर। उक्त समाजों से अनुरोध है कि वे अपनी सहायता राशि सभा कार्यालय में अविलंब भेजने की कृपा करें। उन्हें कार्यालय द्वारा प्रथक स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं।

महर्षि दयानंद भवन,
नागपुर,
दि. २४–९–१९६८

श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965

Licensed to—

POST WITHOUT PREPAYMENT

३४ श्री संस्थापकजी, आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला, जिला रोहतक, (पंजाब

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक–वि. ब. कौशिक, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन–प्रत्येक अंग्रेजी मास की २८ तारीख को।

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

आर्य-सेवक

वार्षिक मूल्य
सम्मानित – ५ रु.
साधारण – २ रु.
एक अंक – २५ पैसे

नवम्बर] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, कार्तिक शुक्ल ७ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४४ } वर्ष ६८ अंक ११ [१९६८

दिव्य द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती

तमसो मा ज्योतिर्गमय

"आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त करके भारत को सत्य और पवित्रता की जागृति में लाने वाले गुरुवर दयानन्द को बार बार प्रणाम है।"

– कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ टैगोर

दशम् सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री पं. नरेन्द्र जी की

मार्मिक अपील

आर्य जगत को यह पता चल गया होगा कि ८, ९, १० नवम्बर १९६८ को एक अभूतपूर्व सांस्कृतिक, धार्मिक आर्य सम्मेलन आंध्र प्रदेश की ऐतिहासिक और आर्य शहीदों की भूमि हैदराबाद में होने जा रहा है, जिसमें भारत तथा विदेशों के आर्य समाजों के नेता व संन्यासी भाग ले रहे हैं।

इस सम्मेलन का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के शब्दों में "संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने के रूप में ही है।" जैसे कि अपने गत जीवन में आर्य समाज सदा भारत देश को समय २ पर पथ प्रदर्शन करता जा रहा है, वैसे ही इस समय भी भारतीय प्रजा को आर्य समाज के पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है। उसी के लिए यह समारोह आयोजित किया गया है। समस्याएं निम्न हैं, जिन पर यह सम्मेलन विशेष रूप से सारी शक्ति केन्द्रित करेगा और प्रजा को मार्ग दिखावेगा।

(१) ईसाई मत प्रचार के परिणाम स्वरूप देश के सामने भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता को जो खतरा पैदा हो गया है उससे राष्ट्र को बचाना।

(२) भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात् से भारत के अल्प संख्यक मुसलमान पुनःअंगडाई लेकर सांप्रदायिकता को उभारने और भारत की आन्तरिक शांति एवं देश की उन्नति के मार्ग में बाधक बन खड़े हो रहे हैं। इस दुष्मनोवृत्ति से देश को बचाने के लिए हिन्दुओं में एकता और संगठन पैदा करना।

(३) पंच वर्षीय योजना में चरित्र निर्माण विषयक उदासीनता व उपेक्षा के प्रति सरकार तथा जनता को चेतना करना।

(४) भारत सरकार के द्वारा धर्म निरपेक्ष राज्य के प्रचार का जो प्रभाव भारतीय जीवन पर अभिशाप के रूप में पड़ रहा है, उससे जनता को बचाना और संप्रति धर्म के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन कराना।

यह सब कार्य आर्य वीरों के महान त्याग और निःस्वार्थ सेवा के परिणामस्वरूप ही हो सकता है। इसी विश्वास के आधार पर हमने इस बड़े सम्मेलन को मनाने का दायित्व लिया है। हैदराबादवासियों के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि भारतीय जनता को एक बार फिर इस सम्मेलन द्वारा पथ प्रदर्शन करने का उज्ज्वल श्रेय मिल रहा है।

आशा है हैदराबाद निवासी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजें एवं आर्यजन अपने त्याग और सेवा के मिसाल को कायम रखते हुए हमें सब प्रकार से अर्थात् आर्थिक सहायता देंगे जिससे कि यह महान यज्ञ सफल हो सके और उद्देश्य की मञ्जिल पर अग्रगामी हो सके।

इन सब कार्यों के लिए एक लाख रुपये की आवश्यकता है। अन्त में समस्त आर्य समाजों और धर्मप्रेमी जनता से अपील करता हूं कि वह अपना आर्थिक सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश के पते पर भेजें। समय अल्प है और कार्य महान है। आर्थिक सहयोग रूप में आशीर्वाद आपेक्षित है।

ओ३म्
आर्य-सेवक

सम्पादक : दिव्यानन्द सरस्वती

आर्य सवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, कार्तिक शुक्ल ७, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४४ | वर्ष–६८ अंक–११

करो प्रतिज्ञा देवालय में, बहे रक्त की धार नहीं !

[पशुबलि निरोध सम्मेलन, ग्राम चंद्रपुर में छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय नवयुवक कवि विनय कुमार पाठक द्वारा गाई प्रभावोत्पादक कविता–]

●

" रक्त पिपासु देव–देवी हैं, " ऐसा किसने कहो कहा ?
वे दयालु अतिशय उदार हैं, यज्ञ धूम से तुष्ट महा ।।
मदिरा मांस और शोणित की उनको है दरकार नहीं ।
घृणित वस्तुओं का रुचता है उनको तो व्यापार नहीं ।।

निज निर्मित जीवों की हत्या, कैसे उन्हें सुहावेगी ?
प्रसन्नता के बदले केवल क्रोधानल भड़कावेगी ।।
यह कुकृत्य अंधे विश्वासों पर ही तो आधारित है ।
पाकर ज्ञानालोक अविद्या अब तो स्वयं तिरोहित है ।।

देवालय पवित्र थल है, नित करो हवन माला गिन गिन ।
हो न अपावन ठौर, मक्खियां करें कदापि नहीं भिन भिन ।।
हिन्दू धर्म विशुद्ध, नहीं पशुबलि का अनुमोदन करता ।
वेद शास्त्र के हो विरूद्ध वह अपने चरण नहीं धरता ।।

पाखंडियो, प्रपंचकारियों ने कुकृत्य को जन्म दिया ।
खा–पीकर राक्षसी वृत्ति से साधित अपना स्वार्थ किया ।।
करो प्रतिज्ञा देवालय में, बहे रक्त की धार नहीं ।
हुआ सो हुआ, सब पापों का लेंगे सिर पर भार नहीं ।।

स्कूलों में गोमांस भक्षण का प्रचार

राजस्थान सरकार द्वारा स्कूलों की नवीं कक्षा के लिये निर्धारित पाठ्य पुस्तक 'डान रीडर' के पृष्ठ १०३ में उल्लिखित निम्नलिखित अवतरण पर घोर क्रोध एवं क्षोभ प्रकट किया जा रहा है :—

Now it's time for lunch. I am going to have beef and beans and then fruits and cream in the second course. It will be a nicer lunch than your's at school, I expect.

"यह दोपहर के भोजन का समय है। मैं गोमांस और सागभाजी खाऊंगा और दूसरे दौर में फल, और मलाई (क्रीम) लूंगा। मुझे आशा है कि स्कूल में तुम्हारे दोपहर के भोजन की अपेक्षा यह भोजन बढ़िया होगा।"

आर्य समाज रतनगढ़ (राजस्थान) ने इस शरारत के विरुद्ध सर्वप्रथम आवाज उठाकर बहुत अच्छा किया है। उस समाज ने एक सार्वजनिक सभा का आयोजन करके इसके विरुद्ध प्रस्ताव भी पारित कराया है जिसमें इस अवतरण को तुरन्त हटा दिये जाने और जब तक ऐसा नहीं होता है तब तक इस पुस्तक का पढ़ाया जाना स्थगित कर दिये जाने की राज्य सरकार से मांग की है, जो सर्वथा उपयुक्त है। विदित हुआ है कि इस पुस्तक का लेखक ईसाई है। इस प्रकार की पुस्तकों को पाठ्यक्रम में स्थान देने वाले अपने कर्त्तव्य एवं दायित्व के प्रति अंधे प्रतीत होते हैं। इस पाठ से हिन्दू बालक बालिकाओं की भावना को ठेस लगे बिना नहीं रह सकती। अच्छा यही होगा कि राज्य सरकार इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में से स्वयं निकालकर अपनी भारी भूल का परिमार्जन कर दे अन्यथा इसके विरुद्ध उत्पन्न हुए रोष के बढ़ने और व्यापक रूप से फैलने की आशंका है जिसकी उत्तरदायिता राजस्थान सरकार पर होगी। विश्वास है ऐसी स्थिति उत्पन्न न होने दी जायगी।

Hinduism on the move again in Kenya

NAIROBI, Tuesday. Hinduism is beginning to make a few converts in Kenya after 70 years of apathy among Africans towards the religion.

The Arya Samaj—the Vedic Church reform movement in Hinduism has been stepping up its missionary work, spreading the Vedas (Hindu scriptures) among predominantly Christian Kenyans.

About 35 Africans many with their families have already joined the church.

After several generations of British colonial rule, the influence of Christian missionaries is still the strongest religious force in Kenya as in most parts of Africa, followed by that of Islam.

The Arya Samaj is making plans to expand its missionary Programme by sending two Kenya African Hindus to train as Hindu missionaries in India later this year. (Reuter in the Evening Standard.)

COMMENT By A. J. SIGGINS

The Arya Samaj are making thousands of converts in India and will make thousands more in Africa and elsewhere because, not only do they offer Spiritual guidance, but because they are the only sect in the world which offers GUARANTEES that Man's Rights to an equal share of the Creator's Gifts shall be **accurately** divided between all races and not monopolized by a tiny minority of Whites who possess genocidal weapons.

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के तत्वावधान में

चन्द्रपुर (बिलासपुर) में पशुबलि निरोध सम्मेलन और प्रदर्शन

भारतीय संस्कृति, तथा कानून की दृष्टि से मूक पशुओं की बलि (वध) करना केवल अमानवीय कुकृत्य ही नहीं है, बल्कि जघन्य पाप भी है। आज हमारे स्वतंत्र भारत के अनेक गांवों, कस्बों तथा शहरी क्षेत्रों में स्वार्थी पाखंडी एवं अंधविश्वासियों के द्वारा देवी देवताओं के नाम पर मूक एवं बेबस प्राणियों को हजारों तथा लाखों की संख्या में वध किया जा रहा है। जिस देवी को प्रसन्न करने के लिए बलि चढ़ाई जाती है, वस्तुतः उसे इस कुकृत्य से असीम कष्ट और लज्जा होती है। यः ध्रुव सत्य है कि संसार का कोई भी धर्मावलंबी दूसरे की जान लेकर स्वयं सुख की इच्छा करे, यह धर्म और न्याय से कोसों दूर है। संसार में कौन ऐसी माता होगी जो अपने ही बेटे का खून और मांस खाए और खिलाने वाले की इच्छा पूरी करे? यह विचारने योग्य तथ्य है। जो मनुष्य ऐसे कुकृत्य करते हैं वे "राक्षस" हैं, मनुष्य नहीं। ऐसे व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत करना अथवा उनकी आदतों को सुधारना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है।

मानव समाज के इस कलंक को दूर करने के लिए आर्य समाज सदैव आगे रहा है। ग्राम-चंद्रपुर में पिछले वर्षों से वहां के भूतपूर्व जमींदार श्री वीरेन्द्रनाथसिंह, देवी दुर्गापूजा में भैंसा तथा बकरों का बलि चढ़ाते आ रहे हैं। इसकी सूचना बंबई जीवदया मंडल के महामंत्री श्री जयन्त लाल, ना. मानकर ने सभा के प्रधान श्री विश्वंभरप्रसादजी शर्मा को दिल्ली में दिया। प्रधानजी ने तत्काल कार्यवाही करने का आदेश सभा कार्यालय को भेजा। सभा मंत्री श्री श्रीकृष्णजी गुप्त ने एक क्षण का विलंब किये बिना सभा के उपदेशक श्री शंकरलाल आर्य (बैकुण्ठपुर) को ग्राम चंद्रपुर व्यवस्था करने हेतु रवाना कर दिया।

दिनांक २७ से २९ सितम्बर १९६८ तक आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के तत्वावधान में पशुबलि निरोध सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहला जत्था श्री गिरिजा सहाय व्यास संपादक, "ज्ञानयज्ञ" के नेतृत्व में ता. २६ को चंद्रपुर पहुंचा। इसमें दयानंद वाचनालय, आर्य समाज, बिलासपुर, के उपमंत्री श्री प्रमोदकुमार श्रीवास्तव एवं छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय नवयुवक कवि श्री विनयकुमार पाठक, पत्रकार विशेष रूप से सम्मिलित थे। ता. २८ को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान एवं अ. भा. सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति के मंत्री श्री विश्वंभरप्रसादजी शर्मा एवं बिलासपुर आर्य समाज के प्रधान श्री लद्धारामजी वहां पहुंचे। ता. २९ को गाडगे मिशन बंबई की जीवदया मंडली आई जिसमें विशेष रूप से श्री मुकुंदराव महाराज, श्री नारायण महाराज, श्री नामदेव महाराज, श्री गुणवंतराव महाराज थे।

कार्यक्रम इस तरह बांटा गया था कि सुबह यज्ञ, हवनादि के पश्चात् यज्ञ के महत्वों पर प्रकाश डालते हुए पशु बलि से संबंधित व्याख्यान विद्वानों द्वारा होते थे। दोपहर में जन संपर्क का काम एवं सम्मेलन की सफलता हेतु समुचित व्यवस्था का कार्यक्रम होता था, फिर संध्या को "पशु बलि हिन्दू धर्म पर कलंक है," "पशु बलि घोर पाप है", 'पशु बलि बंद हो," "वैदिक धर्म की जय," "महर्षि दयानन्द सरस्वती की जय।" का नारा लगाते हुए, बीच बीच में ओजस्वी भाषण देते हुए, श्री राम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित पुस्तक "पशुबलि मत कीजिये" एवं छपे फार्म बांटते हुए पूरे ग्राम का (विशेषकर राजा के भवन पास एवं मेले के स्थान पर) एक चक्कर लगाते हुए एक जुलूस निकलता था। रात्रि को श्री विनयकुमार पाठक के प्रभावशाली पशुबलि से

संबंधित गीत के साथ ही वहां के सरपंच जो की अध्यक्षता में विद्वानों के व्याख्यान होते थे। दिनांक २९ अगस्त १९६८ को चंद्रपुर बाजार में एक सार्वजनिक सभा, श्री भुवनेश्वर प्रसाद, सरपंच, ग्रामपंचायत, चंद्रपुर, की अध्यक्षता में हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने पशुबलि को एक अंधविश्वास व कुकृत्य कार्य बतलाते हुए कहा कि "निरीह पशुओं की बलि से देवी कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकती।" श्री गिरजा सहाय व्यास ने अपने व्याख्यान में कहा कि "रुढ़िवादी लोग पशुबलि जैसी कुप्रथाओं को उसी प्रकार से चिपकाये हैं जैसे कोई अज्ञानी मरे हुए शव को छाती से लिपटाये रहे।" श्री लद्धाराम ने कहा कि "एक नाई जब छांटे से बच्चे का बाल काटता है और यदि उसके असावधानीवश बच्चे का खून निकलने लगता है तो बच्चे के पिता को विशेष करके दुःख होता है, तो फिर निरीह बकरे या भैंसे को कटते हुए देखकर देवी कैसे अप्रसन्न नहीं होगी। श्री प्रमोदकुमार श्रीवास्तव ने कहा कि" वेद के मतानुसार 'हिंसा मा कुरु" (किसी प्रकार की भी हिंसा—बलि इत्यादि न करो)। अब तक जो हुआ सो हुआ पर आज ही से हमें प्रण करना है कि ऐसा अपवित्र कार्य न करेंगे और न किसी को करने देंगे।" श्री श्रीवास्तवजी ने छत्तीसगढ़ी में भी व्याख्यान दिये; चूंकि छत्तीसगढ़ी वहां की भाषा है; अतः उसका काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। सेठ प्रहलादराय ने अपने व्याख्यान में कहा कि 'हमें दुःख है कि अपने धर्म के प्रति हमें लोगों को शिक्षायें देनी पड़ रही है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सेठ प्रह्लादराय, सरपंच श्री भुवनेश्वरप्रसाद जी एवं हाईस्कूल के शिक्षक बंधु विशेषकर श्री प्राचार्य जी, श्री पटेलजी, श्री त्रिपाठी जी का पूरा सहयोग मिला।

सभा में एक प्रस्ताव पशु बलि के विरोध में प्रस्तुत किया गया जिसमें नागरिकों की ओर से इस प्रथा की निन्दा करते हुए वहां के जमीदार परिवार के महानुभावों से अनुरोध किया गया कि वे नवरात्रि पर की जाने वाली पशु बलि को बंद करें और शुद्ध, पवित्र तथा अहिंसात्मक रूप में देवी की पूजा अर्चा करके ऊंचा आदर्श लोगों के सामने रखें। चंद्रपुर के प्रसिद्ध नागरिक श्री प्रहलादराय जी ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और अपने ओजस्वी भाषण में पशु बलि की निन्दा करते हुए यह आशा की कि जमींदार घराना इस दुष्कृत्य के लिए जनता की भावना का आदर करते हुए इस प्रथा को बंद करेंगे।

सभा की समाप्ति के पश्चात् सैकड़ों की संख्या में नागरिक संत गाडगे महाराज की कीर्तन मंडली के साथ कीर्तन करते हुए जमींदार महोदय के यहां पहुचे और जो प्रस्ताव सभा में पशु बलि के विरोध में नागरिकों द्वारा पारित किया गया था वह उन्हें दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विश्वंभरप्रसाद जी शर्मा ने इस प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया और आपने जमींदार महोदय से अनुरोध किया कि वे पशु बलि न करें और जनता की भावना का आदर करें। परंतु जमींदार परिवार के सदस्यों ने पशु बलि बंद करने के अनुरोध को स्वीकार न कर केवल यह आश्वासन दिया कि वे सब मिलकर इस विषय में निर्णय करेंगे और इस प्रथा को बंद करने का प्रयत्न किया जायेगा। ✳

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री, श्री रामगोपालजी शालवाले, संसद सदस्य, ने सूचित किया है कि आर्य युवक परिषद, बम्बई, का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्बन्ध के बारे में बहुधा पत्र व शिकायतें आती रहती हैं। अतः आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि इस संस्था से सार्वदेशिक सभा का कोई संबंध नहीं। सभा से संबंधित एकमात्र संस्था आर्य वीर दल है। इसे ही सबको सहयोग देना उचित है।

विदेशी षड़यन्त्रों का अड्डा—भारत

(श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, संसद सदस्य)

●

आज संसार रूसी व अमरीकी गुटों में बटा है और जो देश इन गुटों से बाहर हैं उन्हें इन दोनों गुटों की कूटनीति का शिकार बनना पड़ रहा है। तटस्थ देशों में भारत का स्थान सर्वोपरिय है। इसका विशाल क्षेत्रफल, जन-संख्या एवं भौगोलिक स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यदि कहा जाय कि भारत के किसी एक पक्ष में सम्मिलित हो जाने मात्र पर ही संसार की राजनीति का स्वरूप ही बदल जायगा। यही कारण है कि रूस एवं अमरीका दोनों ही भारत को अपनी ओर आकर्षित करने के निमित्त इसके जन्मकाल से ही साम, दाम, दण्ड, भेद आदि सभी नीतियों का अवलम्बन कर रहे हैं और करोड़ों रुपया प्रति वर्ष वह अपने प्रयासों पर व्यय कर रहे हैं।

अमरीकी व रूसी शक्तियों के अतिरिक्त भारत में एक तीसरी शक्ति पाकिस्तान है जो भारत को समूल नष्ट कर समूचे भारत पर ही इस्लामिक ध्वज फहराने के स्वप्न ले रहा है। भारत का अन्दर, बाहर विरोध करना ही उसने अपना परम धर्म बनाया हुआ है। नित्य नई समस्याएँ उत्पन्न कर वह अपनी घृणा व क्रोध को प्रकट करने का प्रयत्न करता रहता है।

इस प्रकार भारत विदेशी षडयंत्रों का अड्डा बना हुआ है और भारत में एक दो नहीं अपितु करोड़ों व्यक्ति ऐसे हैं जो रहते, सोते, खाते, पीते यहां हैं, परन्तु उनके दिल-दिमाग रूस-चीन, पाकिस्तान व अमरीका में रहते हैं। उनके धार्मिक सामाजिक व राजनीतिक आदेश, इन्हीं देशों से प्राप्त होते हैं। उनकी आस्था, श्रद्धा व विश्वास भारत में नहीं अपितु विदेशों में है। भारत का कोई भाग ऐसा नहीं जहां यह पंचमांगी व्यक्ति न हों। सभी का प्रयास भारत की पीठ में छुरा मारना है।

भारत में अमरीकी षडयन्त्र, सेवा व शिक्षा की आड में चल रहा है। विदेशी ईसाई मिशनरी, डाक्टर, रिसर्च स्कालर, सामाजिक कार्यकर्त्ता आदि अनेकों रूप में हजारों अमरीकी एजेन्ट भारत में कार्य कर रहे हैं। इन का लक्ष्य क्या है, इसका सही स्वरूप इस षडयन्त्र के मूल संचालक श्री बिली फ्रेंके ग्राहम के शब्दों में ही जानना उचित है। श्री बिली फ्रेंके ग्राहम अमेरिका के बड़े पादरी हैं और इनका घनिष्ट सम्बन्ध भूतपूर्व राष्ट्रपति आइजनहावर और विदेश मन्त्री श्री डलेस के साथ था। इन्होंने सन १९५४ में अमरीका की आकाशवाणी से अमरीकी जनता के नाम अपील करते हुए अपनी योजना को इस प्रकार प्रकट किया था कि यदि अमरीका कम्युनिज्म का सामना करना चाहता है तो उसे संसार में लगभग एक अरब ईसाई बनाने होंगे। इसके लिए एशिया और एशिया में भी भारत में सबसे पहिले इस कार्य को करना होगा और वहां मुख्यतः यह नारा लेकर चलना होगा कि बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त कर ईसाई धर्म की स्थापना हो। इस पुनीत कार्य के लिए भारत में एक आक्रमणकारी पादरी-सेना को भेजना होगा। इस कार्य में अमरीका की जनता व सरकार दोनों को आर्थिक सहयोग देना होगा।

सन् १९५० की घोषणा के पश्चात् भारत में अमरीकी मिशनरियों का तूफान आ गया और पानी की भांति धन, स्कूल, अस्पताल, रिलीफ के रूप में बहने लगा। अमरीका आदि देशों से विदेशी ईसाई मिशनरियों को कितना धन विदेशों से मिल रहा है इसका संकेत सन् ५८ में भारत के भू० उपगृह मन्त्री श्री बी. एन. दातार द्वारा लोक-सभा में दिये प्रश्नोत्तर से मिल सकता है। उन्होंने उत्तर देते हुए कहा कि केवल गत ढाई वर्षों में विदेशी ईसाई मिशनरियों को विदेशों से ३९.२७ करोड़ रुपया आया है, और इसमें अकेले अमरीका से २२.६८ करोड़ रुपया आया

है। सन् ४७ में अखण्ड भारत में विदेशी ईसाई मिशनरियों की संख्या जहां २०७१ थी, वहां सन् ५८ में यह संख्या ६८८७ हो गई। इस धन के अतिरिक्त विदेशी ईसाई मिशनरियों को अमरीका से लाखों मन अन्न व सूखा दूध आदि वस्तुऐं प्रति वर्ष प्राप्त हो रही हैं। इस धन के अतिरिक्त अमरीका का पी-एल.-४८० का लगभग २२ अरब रुपया भारत के बैंक में जमा है जिसका वह यहां मनमाना व्यय कर रहा है।

भारत का ऐसा कोई भाग नहीं है जहां विदेशी ईसाई मिश्नरी न हो। भारत की निर्धन जनता और मुख्यतः अनुसूचित जातियां व बनवासी जातियां इनके शिकार हैं। धर्म परिवर्तन कर जगह २ भारत में ईसाई-स्थानों का निर्माण करना इनका लक्ष्य है। अपने लक्ष्यकी ओर जिस गति से यह बढ़ रहे हैं उसका दिग्दर्शन सन् ६१ की जनगणना द्वारा व्यक्त ईसाइयों की संख्या वृद्धि के निम्न आंकड़ों से चलता है, अर्थात् सन् ५१ से ६१ तक दस वर्षों में ईसाईयों की संख्या में वृद्धि किस अनुपात से हुई है वह इस प्रकार है :—

प्रान्तवार ईसाइयों की वृद्धि

प्रान्त	प्रतिशत वृद्धि
आसाम	५७
मध्य प्रदेश	१३२
उड़ीसा	४२
पंजाब	५२
राजस्थान	१००
हिमाचल प्रदेश	८७
मनीपुर	१२२
त्रिपुरा	९१
नागालैण्ड	९९
सिक्किम	८२५
अण्डमान-निकोबार	८९
लेकेडिव द्वीप समूह	२७००

प्रान्तों में ईसाइयों की संख्या में वृद्धि ही आश्चर्य जनक है, परन्तु इससे सही वृद्धि का अनुमान लगाना कठिन है। वास्तविक वृद्धि उन जिलों में ईसाइयों की संख्या वृद्धि से लगता है जहां यह कार्य कर रहे हैं। जानकारी के लिए कुछ प्रान्तों के जिलों के आंकड़े दिये जा रहे हैं :—

जिला—		प्रतिशत वृद्धि
रीवा	(म. प्रदेश)	१५,२००
सरगूजा	"	१,५१२
गुना	"	१,०००
पन्ना	"	७६७
रायगढ़	"	५७०
भिण्ड	"	५००
दमोह	"	४२४
विदिशा	"	३ ७
दुर्ग	"	३०४
सीहोर	"	२६७
मुरैना	"	२०४
सतना	"	२००
सिडनी	"	२००
पश्चिमी निमाड़	"	१९८
रायगढ़	"	१९५
संथाल परगना	(बिहार)	६०९
सहरसा	"	४६४
मुजफ्फरपुर	"	४४६
शाहबाबाद	"	३६५
भागलपुर	"	१६६
पटना	"	१३४
दरभंगा	"	१३२
पुरलिया	"	१२२
चम्पारन	"	११७
कच्छ	(गुजरात)	३५७
जामनगर	"	१८०
भावनगर	"	१५७
राजकोट	"	९१
सुरेन्द्रनगर	"	७७
अमरोली	"	७५
जूनागढ़	"	६३

कन्नानोर	(केरल)	१९८
काजीकोड	"	७८
अरना कुलम	"	६९
श्रीकाकुलम	(आंध्र प्रदेश)	१६१
विजगापट्टम	"	६९
गारो हिल्स	(आसाम)	१२२
कच्छार	"	८०
खसिया जैन्तिया हिल्स	"	७८
कामरूप	"	६८
ग्वालपाड़ा	"	६७

ऊपर लिखित आंकड़ों से एक मूर्ख व्यक्ति भी अनुमान लगा सकता है कि भारत में अमरीकी षड़यन्त्र किस गति से आगे बढ़ रहा है। यदि इस गति से धर्म परिवर्तन होता रहा तो दस वर्षों में समूचा पहाड़ी क्षेत्र ईसामसीह के ध्वज के नीचे आ जायगा।

यह षड़यन्त्र परिवर्तन तक ही सीमित नहीं है। धर्म परिवर्तन के पश्चात् राष्ट्र-द्रोह इसके ज्वलन्त प्रमाण है। नागालैण्ड–मिजोलैण्ड में केवल अमरीकन बेप्टिस्ट मिशन कार्य कर रहा है। इन विद्रोहों के पीछे अमरीका चाहता है कि स्वतन्त्र नागालैण्ड व मिजोलैण्ड में चीन के विरुद्ध अमरीका का सशक्त फौजी अड्डा बन सकता है। चीन भी इसी क्षेत्र को दक्षिण वियतनाम बना कर भारत के विरुद्ध अपना सैनिक जाल फैलाना चाहता है।

भारत सरकार इन षड़यन्त्रों से खूब परिचित है, परन्तु वह स्वरक्षित जाल में ऐसी फंसी है कि इनका सामना करने में सर्वथा असमर्थ है। रूस, अमरीका के एजेन्टों का यह इसलिए दमन नहीं कर सकती है कि यह दोनों के कर्जे से दबी है। पाकिस्तानी एजेन्टों को छूते हुए इसे इसलिए डर लगता है कि कहीं यह हिन्दू सरकार सिद्ध न हो जाय अर्थात् झूठा सैक्यूलरवाद इसके गले में अटका है।

अतः अब भारत के देश-भक्तों का ही कर्तव्य हो जाता है कि वह इन विदेशी षड़यन्त्रों का दमन करे। आज देश का धर्म, संस्कृति व स्वतन्त्रता सभी खतरे में है। हमारी मौनावस्था व उपेक्षा बड़ी घातक सिद्ध होगी। हमें स्वयं जंगलों में जाकर अपने असहाय बन्धुओं की सहायता करनी होगी। हमें सरकार को विवश करना होगा कि वह सेवा–शिक्षा की आड़ में राजनैतिक षडयन्त्र चलाने वाले विदेशी मिशनरियों को देश से निष्कासित करें और विदेशों से प्राप्त सहायता पर नियन्त्रण करें और साथ ही लोभ, लालच व भय के आधार पर किये जा रहे धर्म परिवर्तनों पर प्रतिबन्ध लगावें। अराष्ट्रीय कार्य करने वाले रूसी–चीनी, पाकिस्तानी गुर्गों के साथ कड़ाई का व्यवहार करें और माओवादियों के संगठन को गैर कानूनी घोषित करें।

आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस पुनीत कार्य को अपने हाथ में लिया है। राजस्थान, मध्य प्रदेश उड़ीसा, बिहार, उतर प्रदेश व आसाम के पर्वतीय क्षेत्र में इसने दयानन्द सेवाश्रमों की स्थापना की है। अबतक हजारों ईसाइयों को वापस वैदिक धर्म में लाया गया है। अब आसाम प्रान्त में बड़े विशाल पैमाने पर कार्य करने का निश्चय किया गया है। स्कूल, अस्पताल, छात्रावास आदि खोलने की योजना है। लाखों रुपयों की आवश्यकता है। सभा को धन-जन दोनों ही चाहिए। जो व्यक्ति जंगलों में रहकर कार्य कर सकते हैं वह अपना समय दें और जो धन दे सकते हैं वह सभा को दिल खोल कर धन दें। आर्य समाज इन षड़यंत्रों का सफलता पूर्वक सामना कर सकता है–यह समझ कर जनता को आर्य समाज के हाथ मजबूत बनाने चाहिए।

गाय ही मनुष्य जीवन का आधार है।

(श्री शांतिकुमार जाधव, मंत्री आर्य समाज, अकोला)

जिस प्रकार माता अपने दूध से सन्तान का लालन पालन करती है उसी प्रकार गाय अपने सर्व गुण सम्पन्न विटामिन्स युक्त दूध से मानव जाति का पालन पोषन करती है एवं उसके बछड़ों से खेती द्वारा भरपूर अन्न उपजाया जाता है। भारत वर्ष में गाय को जो माता समझकर उसकी पूजा करते हैं उसका तात्पर्य यह है कि गाय की उत्तम रीति से सेवा कर उसकी दूध देने की शक्ति को बढाकर उसके दूध, घृत, मक्खन, मट्ठा दही आदि का सेवन करते हुए दीर्घ जीवन तथा शक्ति शाली स्वास्थ्य प्रदान कर भारत भूमि की रक्षा के लिये सदा तत्पर रहे। यही कारण है कि प्राचीन भारत में महान राजा एवं महापुरूषों ने गाय की सेवा की है। गाय के गोबर एवं मूत्र से अनेक बीमारियां दूर होती हैं। गाय का दूध समस्त प्राणियों के लिये लाभकारी है क्यों कि इसमें प्रोटीन चिकनाई, शर्करा केलसियम, फॉस्परस होने से पाचन-शक्ति बढती है, एवं धारोष्ण दूध पीने से बुद्धि प्रखर एवं विकसित होती है। इतना सब कुछ होते हुए भी हमारे देश के कर्णधारों का इस तरफ कतई ध्यान नहीं है। जिस गाय से मनुष्य को ऐसी गुणकारी वस्तुएं मिलती हैं उसके वध करने से कैसे राष्ट्र की उन्नति हो सकती है? आज हम देख रहे हैं कि दूध-वाली गायें कट रही हैं; गोवंश का नाश दिन प्रति दिन बढता जा रहा है। उत्तम चारा दाना और घास के संतुलित आहार न देने से भी गायों की दूध देने की शक्ति नष्ट होती जा रही है। यदि हमने उनको मरने से बचाया और उत्तम खिलाई पिलाई की तो देश में दूध की गंगा बहकर सबको भरपूर मात्रा में दूध मिलेगा। उत्तम बैल खेती के लिये मिलेंगे व देश में भरपूर अन्न-धान्य प्राप्त होकर कोई भूखा नहीं मरेगा। इसीलिये स्वराज्य के प्रथम पूज्य स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने अपनी गो करूणानिधि पुस्तक में लिखा है कि गोवंश की वृद्धि से ही देश की वृद्धि है। जब तक गाय है, तो देश है, गाय नहीं तो विनाश है। अतः देश के सच्चे भक्तो यदि देश को रोग व्याधियों से बचाकर समृद्धि शाली बनाना है तो आज से ही सच्चे दिल से गाय की रक्षा कर तन, मन, धन से उसका शास्त्रोक्त विधि से खान पान कर देश की सम्पत्ति की रक्षा करने में हाथ बढावें। गाय राष्ट्र की आर्थिक सम्पत्ति तथा आधार शिला है और सर्व धर्मावलम्बियों के लिये समान उपयोगी है, क्योंकि गाय किसी जाति पंथ से भेद भाव नहीं रखती। हिन्दु, मुस्लिम, क्रिश्चियन, पारसी, जैन, बौद्ध आदि के खूंटों पर बंधकर समान दूध देती है। यह किसी मे भी ईर्षा द्वेष न रखकर सबको खेती के लिये बैल देती है। फिर क्यों निरपराध प्राणी की कुछ क्रूर लोगों द्वारा हत्या की जाती है?

गो दुग्ध निर्मित वस्तुओं की खास विशेषताएं :-

दूध:- स्वादिष्ट बलकारक कांतिप्रद, वीर्य और शुक्र बढाने वाला होकर क्षय रोग से मुक्त कर दीर्घ जीवी बनाकर नपुंसकता को दूर कर पुरूषत्व प्रदान करता है।

दही:- स्वादिष्ट, बलवर्धक, तेजस्विनी दीपक, वातजन्य मंदाग्नि होता है। वायु नाश पित्त दूरकर रक्त शुद्धि करने वाला है एवं अजीर्ण को दूर करने वाला होता है।

छांछ:- जठराग्नि प्रदीप्त कर खट्टी तुर्षफर हृदय को विकसित करता है। प्रमेह, पांडू, संग्रहणी, अतिसार, भगन्दर, वायु, शूलादि नाश करती है।

घृत:- भोजन व पाक को स्वादिष्ट बनाता है। जठर अग्नि को प्रदीप्त करने वाला, स्निग्ध, सुगधित,

(शेष पृष्ठ १५ पर)

★ उराँव जाति का इतिहास ★

(आचार्य श्री कालिदास जी कनोजिया, बी. ए. पारंगत, रत्न)

उराँव जाति की उत्पत्ति वैदिक क्षत्रिय वर्ण से हुई है अतः ये प्राचीन क्षत्रिय हैं। सभी हिन्दू जानते हैं कि भगवान परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार किया था। उसी समय प्राण रक्षा के हेतु उराँव जाति के लोग संभव गांगेय समतलभूमि को त्याग कर विन्ध्याचल तथा सतपुड़ा पर्वतों की उपत्यकाओं में आकर बस गये। प्राचीन कीकट देश अर्थात् झारखंड (आधुनिक छोटा नागपुर) में आकर उराँवों ने अपना नवीन राज्य स्थापित किया जिनमें रोहतासगढ़ का राज्य सर्वशक्तिशाली तथा समृद्ध एवं उन्नत था। इनका धर्म वही प्राचीन वैदिक धर्म ही था और अभी तक वही है। हाँ कालक्रम से इसमें विकृति तथा कुसंस्कार आ गये हैं। महाभारतकाल के पश्चात् उराँव जाति का सम्पर्क समतलभूमि के निवासियों से छिन्न प्रायः हो गया। बुद्धकाल से लेकर मुसलमानों के शासनकाल तक यह अञ्चल त्याज्य तथा विस्मृत सा ही रहा। निविड़ कानन तथा हिंसक पशुओं के भय से उत्तराञ्चल के साधु सन्यासी तथा ब्राह्म-पुरोहितों का यहां आना एकदम बन्द सा हो गया। फलतः ये अपने धर्म को भूलते गये। असुर आदि के संसर्ग में रहकर इनमें कु-संस्कार तथा अन्धविश्वास की मात्रा अधिक बढ़ गई। इतना होने पर भी इनका प्राचीन धर्म मूलतः लुप्त नहीं हुआ। इनका धर्म वैदिक है और प्रकृति के देवताओं की उपासना भी ये करते हैं। इनके उपास्य देवताओं का उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

सिंगबोंगा

सिंगबोंगा अर्थात् सूर्य देवता इनका सर्व प्रधान तथा सर्व शक्तिशाली देवता है। वैदिक आर्य भी सूर्य (विवस्वान्) की उपासना किया करते थे। केवल भारतीय आर्य ही नहीं अपितु पारसी (जरदुश्ती) एवं ग्रीक तथा रोमन आर्य भी सूर्य (एपोल्लो) को सर्वश्रेष्ठ देवता मानते थे। जापानी तो अपने को सूर्य पुत्र ही मानते आते हैं। उराँव लोग सिंगबोंगा की अर्चना तथा प्रार्थना अभी तक करते हैं।

मारंग बोंगा (महादेव)

मारंगबोंगा अर्थात् महादेव (शिव) की उपासना भी ये लोग अपने पड़ोसी मुंडाओं के समान ही करते हैं। प्रत्येक गांव में महादेव मन्दिर स्थापित थे। अभी भी अनेक उराँव-गावों में शिवमन्दिर देखने को मिलते हैं।

गाँवाँ देवी (ग्रामदेवता)

उराँव लोग ग्रामों की रक्षा के लिए गाँवाँ देवी अर्थात् ग्रामदेवता की पूजा अभी तक करते हैं। इसे डीहवार पूजा भी कहते हैं। डिहवार देवता का अर्थ है गाँव का देवता।

काली माई

बहुत से गावों में काली माई के स्थान भी देखे जाते हैं जिन्हें उराँव लोग भक्तिभाव से पूजते हैं। इन देवी देवताओं के अतिरिक्त उराँव लोग ग्राम देवता (हातू बोंगा), गृह देवता (ओड़ा बोंगा), सारना देवता, दरहा देवता तथा अपने पूर्वजों की मृतात्माओं की भी पूजा करते हैं।

उराँवों के पर्व-त्योहार

इनके पर्व भी हिन्दुओं के ही पर्व हैं जिनमें किसी किसी में कुछ विकृति आ गई है। (१) सरहुल पर्व-यह पर्व होली के समान ही पालित होता है और होली के कुछ ही दिन पश्चात् इसका प्रारम्भ होता है। युवक-युवतियाँ बड़े समारोह से शुद्ध मिट्टी से फाग खेलते हैं और अखरा में नृत्य वाद्य करते रहते हैं। उराँवों का यह एक महत्वपूर्ण पर्व है।

कर्मा पर्व

यह पर्व हिन्दुओं के विश्वकर्मा पूजा का ही विकृत रूप है। करमगाछ की डाली की सहायता से इसका श्री गणेश होता है। कर्मा और धर्मा की कथाएँ कही जाती हैं जिन्हें आबाल वृद्ध नरनारी सभी प्रेम और भक्ति से सुनते हैं। यह पर्व भादों महीने की एकादशी को मनाया जाता है।

इन्द्र पर्व

यह पर्व शुद्ध वैदिक इन्द्र पर्व है। पौराणिक इन्द्र-पूजा भी इसे कह सकते हैं। निघण्टु के अनुसार इन्द्र का अर्थ भी ईश्वर होता है। वैदिकयुग में आर्य लोग इन्द्र (ईश्वर) की स्तुति किया करते थे। उसी का यह भग्नावशेष है पौराणिक युगमें वर्षा के लिए लोग इन्द्र देवता की पूजा किया करते थे। अभी भी यह पर्व बड़े समारोह के साथ ठीक कर्मा पूजा के आस पास ही मनाया जाता है।

नवा जोम परव (नवान्न पर्व)

उड़ीसा में इसे 'नुआ खाई' पर्व कहते हैं। इस समय नये अन्नों का भक्षण किया जाता है। भारत के सभी हिन्दू इसे करते हैं।

सोहराई पर्व

यह पर्व दिवाली के पश्चात् आता है। इस पर्व में विशेष कर गाय बैल आदि पशुओं की पूजा तथा सत्कार किये जाते हैं। पशुओं को नहला कर उनके शरीर पर रंग बिरंग के चित्र अङ्कित किये जाते हैं तथा उन्हें स्वादिष्ट भोजन तथा माल्य प्रदान किये जाते हैं और उस दिन उनसे कोई काम नहीं लिया जाता।

दिवाली

हिन्दुओं की भांति उरांव भी इस पर्व का पालन करते हैं और अपने घरों को दीपों से प्रकाशित करते हैं।

दसई (दशहरा) पर्व

इस पर्व को दशहरा अर्थात् विजया दशमी भी कहते हैं। उरांव लोग बड़ी धूमधाम से इसका पालन करते हैं। अखरा में नाच रंग खूब होते हैं। छोटानागपुर के नागवंशी राजा इस पर्व को बड़े समारोह से मनाते थे जिसमें उरांव-मुण्डा भी सम्मिलित होते थे।

कार्तिक जतरा (कार्तिक-यात्रा)

यह उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। विभिन्न गाँवों के युवक-युवतियां अपने निशान (पताका) तथा वाद्य यन्त्रों के साथ आते हैं तथा नृत्य करते हैं।

फागू पर्व (होली)

फाल्गुन मास में इसको मनाया जाता है। गाँव के एक स्थानमें पुवाल या लकड़ी इकट्ठा करके उसमें आग लगा दी जाती है। रातमें उत्सव तथा नाच गाना होते हैं।

जेठ जतरा (जेठ-यात्रा)

यह उत्सव ग्रीष्म ऋतु में जेठ के महीने में मनाया जाता है। कार्तिक जतरा की भाँति ही इसका पालन किया जाता है।

कडंलेटा और तौली पर्व

ये गौण रूपसे मनाये जाते हैं और नाच-गाने होते रहते हैं।

मंडा पर्व

विशेष करके वसन्त ऋतु के पश्चात् यह पर्व आता है। इस अवसर पर गोसाई (पुरोहित) आते हैं और युवकों में से भगतों (भोकतों) को चुनते हैं। कुछ दिनों तक भोक्ता लोग ग्राम के बाहर शिव-मन्दिर के पास रहते हैं। रात दिन में कई बार स्नान कराये जाते हैं। जनेऊ (यज्ञोपवीत) पहनाये जाते हैं। निश्चित तिथि के दिन भोगता लोग निर्जला रहते हैं। उन्हें एक लकड़ी पर उलटा लटकाया जाता है। जिसने भूल से पानी पी लिया है उसका पानी मुँह से निकल जाता है। ऐसी हालत में उसे अलग कर दिया जाता है। अन्यान्य भोगताओं को काँटों पर सुला दिया जाता है। जिसके शरीर में काँटे नहीं चुभते हैं और रक्त

नहीं निकलता है उसे पृथक् रखा जाता है। उधर २०-२५ हाथ की लम्बाई तक प्रज्वलित अग्नि रखी रहती है। उसी अग्नि पर भोगताओं को नंगे पांव धीरे धीरे चलना पड़ता है। सर्व प्रथम गुरु गोसाईं अग्नि पर जाते हैं। उनके पीछे एक एक करके समस्त भोगता चलते हैं। पीछे भगतिन तथा बाजे वाले भी उसी प्रज्वलित अग्नि पर पार होते हैं। दूसरे दिन सन्ध्या समय एक ऊँचे मंच पर चढ़ कर घूमते हैं और पुष्प वर्षा करते हैं। इस प्रकार यह मुंडा पर्व पालित होता है। बंगाल के समान ही यह पर्व समझा जाता है। भोगता लोग समयानुसार इन वाक्यों का जप भी करते रहते हैं :– ऊधो माधो, गौरी, गणेश, हर हर महादेव आदि।

जनी शिकार उत्सव

यह उत्सव प्रत्येक बारह वर्ष पर आता है। इसमें केवल स्त्रियां ही भाग लेती हैं। अस्त्र-शस्त्र से लैस होकर और मर्दों की पोशाक पहन कर नारियाँ प्रत्येक गाँव में जाती हैं और मनमानी शिकार खेलती हैं। यह परंपरागत उत्सव है। उपरोक्त पर्व तथा उत्सवों के अतिरिक्त और भी कितने छोटे छोटे पर्व हैं जिनका पालन उरांव लोग बड़े समारोह से करते हैं।

उरांव हिन्दू जाति के हैं अतः उनके पर्व-उत्सव भी ठीक हिन्दूओं के पर्वों के समान हैं। पर हजारों वर्षों से समतलभूमि के हिन्दूओं से पृथक् रहने के कारण इनके पर्वों की रीतियों में कुछ कुछ विकृति आ गई है यह स्वाभाविक है। इनके पर्वों की प्रणालियों में यदि कुछ भिन्नता आ गई है तो उनका कारण है भौगोलिक और पृथकत्व। वास्तविक में उरांव हिन्दू हैं और उनके पर्व भी हिन्दू पर्व हैं—इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है केवल देखने के लिए निष्पक्ष और न्यायसंगत दृष्टि होनी चाहिए।

संस्कार

हिन्दुओं की भाँति उरांव लोग भी संस्कारों को मानते हैं उनके संस्कार ठीक हिन्दुओं के समान ही हैं, किन्तु उनमें कुछ परिवर्तन आ गये हैं। इन परिवर्तनों के मूल कारण हैं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा भौगोलिक परिस्थितियाँ। तथापि इनके संस्कार हिन्दू संस्कार के जीवित प्रतिनिधि स्वरूप हैं।

जन्म संस्कार

सन्तानोत्पत्ति के समय स्त्री पुरुष देवताओं की आराधना, उत्सव आदि करते हैं। छठे दिन छठी संस्कार होता है और प्रसूता स्त्री बाहर आती है।

नामकरण संस्कार

यह संस्कार प्राचीन आर्य संस्कृति से समानता रखता है। घर के वृद्ध नर-नारी अथा गोसाईंपाहनों के सन्मुख नामकरण किया जाता है। जलपूर्ण शुद्ध मृण्मय पात्रमें कुछ अक्षत (चांवल) पूर्वजों के नाम लेकर छोड़े जाते हैं। जिस नामके लेने से कम से कम दो अक्षत परस्पर मिल जाते हैं उसी पूर्वज के नामानुसार नवजात शिशु का नामकरण होता है। नामों में कुछ तो प्राकृत होते हैं जैसे खैंटा, टुनु, डोम्बा, कैड़ा, नैपी, कोकी, सैनी आदि और कुछ नाम हिन्दू महीनों के अनुसार रखे जाते हैं जैसे जेठुवा, भदवा, सावना, कातिक, फागु आदि। कुछ नाम दिनों के नामों पर रखे जाते हैं जैसे सोमरा, मंगरा, बुधुवा, बिरसा, सुकरा, एतवा, सोमारी, मंगरी, बुधनी आदि। कुछ नाम शुद्ध हिन्दू नामों के अनुसार रखे जाते हैं जैसे महावीर, जगन्नाथ, राम, लछमन, अर्जुन, नकुल आदि। इस प्रकार के नाम अभी तक उरांवों में प्रचलित हैं।

विवाह संस्कार

विवाह संस्कार भी हिन्दू संस्कारों के अनुसार होता है किन्तु रीतियों में कुछ भिन्नताएँ आ गयी हैं। समगोत्र में उरांव विवाह नहीं करते हैं। लड़के के पिता, काका आदि संबंधी कन्या खोजने जाते हैं किन्तु लड़की वाले नहीं। कन्या ठीक हो जाने पर लड़की को लेकर लड़के के घर बाराती जाते हैं। बारात में स्त्रियों की संख्या अधिक होती है। साथ में नाना प्रकार के बाजे रहते हैं। नगाड़ा, मांदर, ढोलक भेरे, नरसिघा, शंख आदि के झंकारों से

वायुमंडल गूंज जाता है । द्वार–पूजा के पश्चात् विवाह होता है । वर अपने हाथों से कन्या की माँग में सिन्दूर देता है । पश्चात् सहभोज होता है जिसमें खाद्यान्नों के अतिरिक्त मांस तथा हँडिया का बोलबाला रहता है । रातभर अखरा तथा आँगन में नाचगान चलते रहते हैं । लोटापानी (वर रक्षा, तिलक) से लेकर कन्या ग्रहण तक खूब धूमधाम रहती है । वधू का शरीर तेल, हल्दी, माला, नवीन वस्त्र तथा अलंकारों से सुशोभित हो जाता है । विजाति में विवाह कदापि नहीं होता है––तो उसे घरमें स्थान तो मिलजाता है पर जिसके हाथकी रसोई घरवाले नहीं खाते हैं । ऐसी स्त्री को रखनी नाम से अभिहित किया जाता है । विवाहित पत्नी अपने पति को सहसेविका तथा सहगामिनी होकर पतिव्रत धर्म का पालन करती रहती है ।

अन्त्येष्टि क्रिया संस्कार

यह अन्तिम संस्कार है । मृत्यु के पश्चात् सगे संबंधी तथा जातिवाले मृतक को मसना में (श्मशान में) गाड़ देते हैं और उस स्थान में ऊँचे पत्थर गाड़ देते हैं । बाकी क्रियाएं सरना में की जाती हैं ।

अन्यान्य गौण संस्कार

(१) शिखा धारण:––प्रत्येक उराँव के सिरपर शिखा (चोटी, चूंदी) होती है । हिन्दुओं की अपेक्षा उराँव अधिक लम्बी तथा मोटी चोटी रखते हैं ।

(२) कर्णछेदन:––उराँव बालकों के कर्ण छेदन होते है और वे बड़े शौक से अपने कानों में बाला पहनते हैं । रंगीन ताडपत्र के लम्बे अलंकार देखते ही बनते हैं । सिर पर माला तथा दूसरे आभूषण धारण करना भी वे पसन्द करते हैं ।

(३) सिगा:––प्रत्येक उराँव बालक अपने हाथ में सिगा धारण करता है । गर्म वस्तु से जलाकर यह चिन्ह बनाया जाता है जो मृत्युके पश्चात् साक्षी देता है ।

(४) उराँव बालिकाएँ मुंह, हाथ तथा छाती पर गोदना गोदवाती हैं । पैरों में भी गोदने गोदे जाते हैं । उनके ललाट पर गोदना अवश्य रहता है । नासिका छेदन भी बालिकाओं के लिए अनिवार्य है ।

(५) अस्पृश्यता:—उराँव अपने धर्म के कट्टर होते हैं । दूसरी जाति से छू जानें पर भात नहीं खाते हैं । ब्राह्मणों के हाथ का भात भी उन्हें अग्राह्य होता है । नीच वर्ण वालों के हाथ का पानी वे ग्रहण नहीं करते हैं । उपरोक्त संस्कार उराँव जाति में अभी तक प्रचलित हैं । विस्तार के भय से मैंने मुख्य मुख्य संस्कारों का ही उल्लेख संक्षेप में किया है ।

इस समय उराँव जाति चार पांच शाखाओं में विभक्त हो गयी है जिसका विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

संसार उराँव

संसार उराँव को सौंसार अथवा आदि उराँव भी कहते हैं । ये दीन हीन अवस्था में हैं । इनमें शिक्षा, नवीन सभ्यता तथा नवीन विचारधारा का अभाव है । ये अपनी परंपरागत संस्कृति में रहते हुए अपनी रीति नीति में चलते आ रहे हैं । अधिकतर ये कृषि कार्य तथा मजदूरी करके जीविका चलाते हैं । इनमें अंध–विश्वास तथा रूढ़िवादिता अधिक है । मद्यपान करना तथा नृत्यनाच में काल व्यतीत करना ही इनके जीवन का अन्तिम लक्ष्य हो गया है । ये छोटानागपुर के पाँचों जिलों में, मध्यप्रदेश के सरगुजा, जशपुर, उदयपुर, रायगढ़, और उड़ीसा के सुन्दरगढ़, सम्बलपुर, पाटना आदि जिलों में फैले हुए हैं ।

टाना भगत उराँव

उराँव जाति में टानाभगत सुसंस्कृत जाति है । इनकी रीति नीति कट्टर हिन्दुओं से भी आगे है । ये महात्मा गाँधी के परम भक्त हैं । बीसवीं सदी के प्रारंभ में एतवा उराँव का जन्म गुमला सबडिवीजन के सिसई थाना के एक गाँव में हुआ था । बाल्यकाल से ही वह ईश्वर भक्त था । उसने हिन्दू पुराणों को सुना था तथा रामायण की कथा से उसे बहुत प्रेरणा मिली थी । वह एकान्त में बैठ कर "नौरतन गढ़" के पास भगवान का कीर्तन तथा गुणानुवाद करता

था। इसी बीच महात्मा गांधी जी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के मंत्र उसके कानों में आये। वह गाँधी भक्त बन गया। उसके अनेक अनुयायी बन गये जो रांची जिले के गुमला, लोहरदगा और सिमडेगा तहसीलों में अभी तक हैं। अपने हाथ से काते हुए सूतों के वस्त्रों का व्यवहार करते हैं। मांस, मछली तथा मदिरा को छूते नहीं हैं। लम्बी गुच्छेदार शिखा (चोटी) रखते हैं और पवित्रता के साथ रहते हैं। ये अपनी जाति को छोड़ कर दूसरे के हाथ का भात तक नहीं खाते हैं। ब्राह्मणों के हाथ का भी भात नहीं खाते हैं। वे अपने धर्म का पालन बड़े उत्साह और सादगी से करते हैं। कर्मा, दिवाली, होली, दसई त्योहारों का पालन भली भांति करते हैं।

कबीर पंथी उराँव

उराँव जाति में कबीर पंथी उराँव भी सभ्य, सुसंस्कृत और धर्मनिष्ठ हैं। इनका आचार-विचार, रीति-नीति, रहन सहन आदि उच्च श्रेणी की है। महात्मा कबीर दास के शिष्यों में एक छतीसगढ आया था। वहीं से उसका एक शिष्य इस अञ्चल में आया और इस पंथ का प्रचार किया है। रीवाँ राज्य के बांधव गढ़ से भी कुछ कबीर पंथी इधर आये थे जिन्होंने इस पंथ को यहाँ चलाया। कबीर पंथी भोले भाले, सच्चे, ईमानदार और धर्मप्रिय होते हैं। ये मांस मदिरा का सेवन नहीं करते हैं। इनका जीवन सुसंस्कृत, परिमार्जित और अनुकरणीय है। गांगपुर स्टेट के जामबहाल, माझीडीह, टाँयसेर आदि गांवों में अभी तक ये हैं। वर्तमान एम. एल. ए. श्री प्रेमचन्द भगत इसी पंथ के हैं।

हरि बाबा उराँव

इस शताब्दि के प्रारंभ में रांची जिले के पंचपरगना इलाके में हरि बाबा का प्रादुर्भाव हुआ था। इन्होंने भी टाना भगतों के समान भूत भगाने का आन्दोलन प्रारंभ किया था। संसार उराँवों में भूत बाद का विश्वास है। इसी अंधविश्वास को टाना भगतों और हरि बाबा के शिष्यों ने दूर किया। टाना भगतों का मन्त्र अभी तक प्रचलित है।

"टाना बाबा टाना, ढकनी में खाना। भूत मार भगाना, मांटी में सोना। दोहाई ईश्वर महादेव की।"

हरि बाबा के शिष्य, टाना भगत अथवा संसार में ही रह गये। उनकी संख्या नगण्य हो गई। इस इलाके में जब बिरसा भगवान का उदय हुआ तब ये भी बिरसा के अनुयायी हो गये। संसार उराँव भी अब भगतों के समान शिक्षित होकर सभ्य और सुसंस्कृत हो रहे हैं। उनका परिमार्जित आचार हिन्दुओं से कम नहीं है। भगवान इन्हें सभ्य, शिक्षित और योग्य व्यक्ति बनावें जिससे ये अपनी जाति और धर्म संस्कृति की रक्षा कर सकें। हिन्दुओं को भी चाहिए कि इन दीन हीन उराँवों की उन्नति में तन, मन, धन से सहायता करें क्योंकि ये हमारे भाई हैं। मौका पड़ने पर ये ही गीता और मन्दिरों की रक्षा करेंगे। (बनवासी मासिक से साभार)

(पृष्ठ १० का शेष)

रसायन, नेत्रोंकी ज्योती बढाने वाला, कांतिकारक और बुद्धि वर्धक है।

अतः उपरोक्त वर्णन किये गये विचारों से यह सिद्ध हो गया है कि हमें गाय को बचाना ही होगा। अतः भैंस का दूध न पीकर गाय का दूध ही उपयोग में लावें व प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में एक एक गाय का पालन करे। तथा यह भी सिद्ध करके बतायें कि जिस प्रकार अपनी वृद्धा माता का पालन करते हैं उसी प्रकार गाय का दूध सूखने पर एवं वृद्ध होनेपर उसका मृत्युपर्यंत रक्षण करेंगे। तभी हमे गाय को मनुष्य जीवन का सच्चा आधार स्तंभ बना सकेंगे।

मध्यप्रदेश धर्म–स्वातन्त्र्य विधेयक

(श्री गोविन्द नारायण सिंह, भारसाधक सदस्य, भोपाल)

उद्देश्य एवं कारणों का विवरण

यह देखा गया है कि राज्य के आदिवासियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के व्यक्तियों में बड़े पैमाने पर धर्म-परिवर्तन हो रहे हैं। लोगों की निरक्षरता तथा निर्धनता का अनुचित लाभ उठाया जाता है और उन्हें अपना धर्म त्यागने तथा कोई अन्य धर्म अंगीकृत करने के लिये प्रलोभन देने के हेतु आर्थिक, चिकित्सीय तथा अन्य सहायता दिये जाने के वचन दिये जाते हैं। यह विधेयक ऐसे धर्म संपरिवर्तनों का प्रतिषेध करना चाहता है जो कि बलप्रयोग द्वारा या प्रलोभन द्वारा या किन्हीं कपटपूर्ण साधनों द्वारा किये जाते हैं।

अतः यह विधेयक प्रस्तुत है।

बल प्रयोग या प्रलोभन द्वारा या कपटपूर्ण साधनों द्वारा एक धर्म से किसी अन्य धर्म में संपरिवर्तित करने के प्रतिषेध के लिये तथा उससे आनुषंगिक विषयों के लिये उपबन्ध करने के हेतु विधेयक।

भारत गणराज्य के उन्नीसवें वर्ष में मध्यप्रदेश विधान मण्डल द्वारा इसे निम्न लिखित रूप में अधिनियमित किया जाय :—

संक्षिप्त नाम, विस्तार तथा प्रारम्भ

१—(१) यह अधिनियम मध्यप्रदेश धर्म स्वातन्त्र्य अधिनियम, १९६८ कहा जा सकेगा।

(२) इसका विस्तार सम्पूर्ण मध्यप्रदेश राज्य पर होगा।

(३) यह तत्काल प्रवृत्त होगा।

परिभाषाएं

२—इस अधिनियम में जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) "प्रलोभन" से अभिप्रेत है।
(एक) किसी दान या परितोषण चाहे वह नकदी में हो या वस्तु के रूप में हो;
(दो) कोई सारवान फायदा चाहे, वह आर्थिक हो या अन्यन्य हो, देने के रूपमें किसी लालच का दिया जाना;

(ख) "धर्म संपरिवर्तन" से अभिप्रेत है एक धर्म त्याग देना तथा कोई अन्य धर्म अंगीकृत कर लेना;

(ग) "बल" के अन्तर्गत बल-प्रदर्शन या किसी प्रकार की क्षति पहुंचाने की धमकी, जिसमें दैवी अप्रसाद या सामाजिक जाति बहिष्कार की धमकी सम्मिलित है, आती है;

(घ) "कपट" के अन्तर्गत दुर्व्यपदेशन या कोई अन्य कपटपूर्ण उपाय आता है;

(ङ) "अप्राप्त वय" से अभिप्रेत है अठारह वर्ष से कम आयु का व्यक्ति।

बलपूर्वक धर्म संपरिवर्तन का प्रतिषेध

३—कोई भी व्यक्ति बल प्रयोग द्वारा या प्रलोभन द्वारा या किसी कपटपूर्ण साधन द्वारा किसी भी व्यक्ति को एक धर्म से किसी अन्य धर्म प्रत्यक्षतः या अन्यथा संपरिवर्तित नहीं करेगा या प्रत्यक्षतः या अन्यथा संपरिवर्तित करने का प्रयत्न नहीं करेगा और न ही कोई व्यक्ति किसी ऐसे संपरिवर्तन का दुष्प्रेरण करेगा।

४--धारा ३ में अन्तर्विष्ट उपबन्धों का उल्लंघन करनेवाला कोई भी व्यक्ति धारा ३ के उपबन्धों किसी सिविल दायित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, कारावास से जो एक वर्ष तक के उल्लंघन के लिये का हो सकेगा, या जुर्माने से, जो पाँच हजार रुपये तक का हो सकेगा, या दोनों से दण्डनीय होगा।

परन्तु उस दशा में जबकि अपराध किसी अप्राप्त वय किसी स्त्री या अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में किया गया हो तो दण्ड दो वर्ष तक का करावास और दस हजार रुपये तक का जुर्माना होगा।

५--(१) जो कोई किसी व्यक्ति का एक धर्म से किसी अन्य धर्म में संपरिवर्तन, धर्म-संपरिवर्तन के ऐसे धर्म संपरिवर्तन के लिये आवश्यक संस्कार धार्मिक पुरोहित के रूपमें स्वयं करके सम्बन्ध में जिला या ऐसे संस्कार में प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः भाग लेकर, करेगा, वह इस संस्कार के मजिस्ट्रेट को प्रज्ञापना पश्चात् ऐसी कालावधि के भीतर, जैसी कि विहित की जाय, उस जिले के, जिसमें दी जायगी वह संस्कार हुआ हो, जिला मजिस्ट्रेट को ऐसे प्ररूप जैसा कि विहित किया जाय, ऐसे धर्म संपरिवर्तन के तथ्य की प्रज्ञापना भेजेगा।

(२) यदि कोई व्यक्ति उपधारा (१) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों का अनुपालन करने में पर्याप्त कारण के बिना असफल रहेगा, तो वह कारावास से, जो एक वर्ष तक का हो सकेगा, या जुर्माने से, जो एक हजार रुपये तक का हो सकेगा, या दोनों से दण्डनीय होगा।

६--इस अधिनियम के अधीन अपराध संज्ञय होगा और उसका अन्वेषण अपराध संज्ञय होंगे, पुलिस निरीक्षक के पद से निम्न पद के आफिसर द्वारा नहीं किया जायगा।

७--इस अधिनियम के अधीन अपराध के लिये कोई भी अभियोजन, जिला मजिस्ट्रेट की मजिस्ट्रेट द्वारा या उसकी पूर्व मंजूरी से ही या उसकी पूर्व मंजूरी से ही या उपखण्ड आफिसर के पद से अनिम्न मंजूरी से अभियोजन पद के ऐसे अन्य प्राधिकारी, जिसे कि वह (जिला मजिस्ट्रेट) उस सम्बन्ध में प्राधिकृत संस्थित किया जायेगा, करे, द्वारा या उसकी पूर्व मंजूरी से ही संस्थित किया जायगा अन्यथा नहीं।

नियम बनाने की शक्ति

८--राज्य सरकार इस अधिनियम के उपबन्धों को कार्यान्वित करने के प्रयोजन के लिये नियम बना सकेगी।

--दिनांक २४-८-१९६८

(सार्वदेशिक मासिक से उद्धृत)

मंत्री सभा अस्वस्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के मंत्री, श्री श्रीकृष्ण जी गुप्त, दिनांक २५ अक्टूबर १९६८ से अचानक अस्वस्थ हो गये हैं। आपका सीधा हाथ और जबान कार्य नहीं कर रहे हैं, रक्त का दबाव "ब्लड प्रेशर" बढ़ गया है। डाक्टरों की सलाह से आपको दिनांक २८ अक्तूबर से मेडीकल कालेज अस्पताल में भरती किया गया है। अभी आपकी हालत में सुधार नहीं हुआ है।

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

चन्द्रपुर के पास ५ मिशनरी बन्दी

प्रलोभन से आदिवासियों के धर्म परिवर्तन का आरोप

कटक ११ अक्तूबर–ज्ञात हुआ है कि गत सप्ताह करोत जिला के गुनुपुर सबडिवीजन में चन्द्रपुर के पांच ईसाई मिशनरियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मिशनरियों पर कुछ आदिवासियों को प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन कराने के आरोप हैं।

उक्त कथित अभियुक्तों पर उड़ीसा धर्म स्वातन्त्र्य अधिनियम की धारा ४ के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया है। प्रत्येक मिशनरी पर पांच आरोप लगाये गये हैं। इन मिशनरियों के अलावा दो अन्य मिशनरियों पर उनकी सहायता करने का अभियोग लगाया गया है। इसमें से एक स्पेनिश महिला भी है।

म. प्र. से गोवंश की निकासी बंद न करें

केन्द्रीय सरकार की सलाह

भोपाल—म. प्र. विधान सभा ने लोक सेवक दल के श्री मालूराम सिंघानिया का यह प्रस्ताव ध्वनिमत से पारित कर दिया कि राज्य से गाय और गोवंश की निकासी रोकने के लिये कानून बनाने हेतु आवश्यक कार्यवाही करें। उपमुख्यमंत्री श्री सखलेचा ने प्रस्ताव पर बहस का समापन करते हुए बताया कि राज्य सरकार गोवंश की निकासी बंद करने के लिये गत दो वर्षों से कानून बनाने के लिये प्रयत्नशील है किंतु केन्द्रीय शासन की अनुमति अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। केन्द्र ने यही राय दी है कि हम गो निकासी को बंद न करें।

कांग्रेस के श्री कुंजीलाल दुबे ने प्रस्ताव का समर्थन किया और कहा कि बूढ़ी गाय और बैलों के निर्यात को बन्द कर राज्य में गोशालाएं खोली जायें।

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, हैदराबाद में कार्यकर्ताओं का सम्मान

हैदराबाद में होने वाले आर्य महासम्मेलन, दिनांक ८ ९ और १० नवम्बर १९६८ के अवसर पर देश के मूर्धन्य आर्य विद्वान और ५ विशिष्ट आर्य महानुभावों (कार्यकर्ताओं) को सम्मानित किया जा रहा है। इसके लिये समस्त प्रतिनिधि सभाओं से नाम मांगे गये थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, म. प्र. व विदर्भ की ओर से हमारे प्रधान जी ने निम्नलिखित महानुभावों को सम्मेलन में सम्मानित करने के लिये नाम प्रस्तुत किये हैं–

१. महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज दिल्ली
२. न्यायभूषण पं. भगवानस्वरूप जी, अजमेर
३. श्री ताराचन्द गाजरा, कल्याण
४. ,, पं० नरेन्द्र जी, हैदराबाद
५. ,, कुंवर सुखलालसिंह जी, भजनोपदेशक

आर्य समाज, खंडवा

खंडवा समाज के स्थायी प्रचारक श्री सुखरामजी आर्य, सिद्धान्त शास्त्री ने दि. २३-९-६८ से २७-९-६८ तक ग्राम अतर, स्टेशन अतर, भैरूखेड़ा, मलगांव, निमाड़खेड़ी आदि ग्रामों में रामायण का राष्ट्रीय स्वरूप, वैदिक धर्म क्या है, मानव धर्म आदि विषयों पर महत्वपूर्ण उपदेश दिया। प्रत्येक ग्रामों के स्कूलों में भी आपने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर भाषण दिया। ११६ ट्रेक्ट व धार्मिक पुस्तकें प्रचारार्थ निःशुल्क वितरण किये गये।

आर्य समाज, अम्बिकापुर

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज अम्बिकापुर ने एक शोक प्रस्ताव पास कर स्वर्गीय वेदमूर्ति पं. सातवलेकर जी तथा स्थानीय समाज के कोषाध्यक्ष श्री पोकरमल जी की भगिनी के निधन पर शोक व्यक्त किया तथा मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रस्ताव में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिये तथा शोक संतप्त परिवार को इस गहन दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई।

शुद्धि संस्कार

दिनांक ३०-८-६८ को ग्राम हसदा, तहसील धमतरी, जिला रायपुर में १३ व्यक्तियों को पुनः अपने धर्म में शुद्ध कर सम्मिलित किया गया। इन लोगों को टाटीबंद रोमन मिशन द्वारा प्रलोभनवश ईसाई बनाया गया था। इस कार्य के लिये सरपंच श्री टेकूराम जी तथा ग्राम के अन्य प्रतिष्ठित सज्जनों ने पूर्ण सहयोग दिया। शुद्धि संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री सत्यदेव जी वानप्रस्थी ने कराया।

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध का संगठन

छत्तीसगढ़ में ईसाई मिशनरियों द्वारा बलात् धर्म परिवर्तन तथा अराष्ट्रीय कार्य के निर्मूलन हेतु ग्राम टाटीबंद, जिला रायपुर में अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध संयुक्त समिति का गठन, आर्यसमाज रायपुर के मंत्री श्री नीलकण्ठ शर्मा तथा सत्यदेवजी वानप्रस्थी के मार्गदर्शन में निम्नप्रकार हुआ–

श्री घासीराम चन्द्रकार	–	प्रधान
श्री ननकुराम जी	–	उपप्रधान
श्री पिल्ले बाबू	–	मंत्री
श्री द्वारकाप्रसाद सोनी	–	उपमंत्री
श्री प्यारेलाल साहू	–	कोषाध्यक्ष
श्री रूपचन्दजी टण्डन	–	पुस्तकाध्यक्ष

श्री सत्यदेवजी वानप्रस्थी द्वारा प्रचार

सभा के उपदेशक श्री सत्यदेव जी वानप्रस्थी ने मास अगस्त १९६८ में निम्न स्थानों में जाकर प्रचार कार्य किया तथा ईसाई बने हिन्दुओं को पुनः शुद्ध कर अपने धर्म में सम्मिलित किया। समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों में उपदेश दिये–

रायपुर, टाटीबंद, भिलाई, हीरापुर, हसदा और राजिम।

नागपुर में विश्व हिन्दु सम्मेलन

१३ दिसम्बर को आयोजन

इलाहाबाद–हिन्दु धर्म के लिए नई आचार संहिता तैयार करने के लिए विश्व हिन्दु परिषद के तत्वावधान में १३ दिसम्बर को नागपुर में हिन्दु धर्म के विभिन्न पंथों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन होगा।

परिषद के महामन्त्री दादा आप्टे ने आज यह घोषणा करते हुए कहा कि परिषद का उद्देश्य, जिसका गठन दो वर्ष पूव किया गया था, हिन्दु समाज को सुरक्षा प्रदान कर मजबूत बनाना है।

दादा आप्टे ने कहा कि परिषद विदेशों में, जहां हिन्दु काफी संख्या में रहते हैं, काफी संख्या में अपनी स्वतंत्र शाखायें स्थापित करना चाहता है। उन्होंने कहा कि अदन, केनिया, ब्रिटेन, त्रिनिडाड और मारीशस में ऐसी शाखाओं की स्थापना की जा चुकी है। भारत के १४ राज्यों में परिषद ऐसी समितियों की स्थापना कर चुकी है और शेष राज्यों में शीघ्र ऐसी समितियां गठित की जायेंगी।

आर्य समाज, बुरहानपुर

पूज्य पं० रामदत्त जी ज्ञानी द्वारा संचालित प्रदेश की प्रमुख आर्य समाज, बुरहानपुर, जो उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी के अभाव में निर्जीव हो गई थी, वर्तमान पदाधिकारियों के अथक प्रयास और लगन के कारण पुनर्जीवित हो उठी है। साप्ताहिक सत्संगों में ६०–७० तक उपस्थिति हो जाती है। समाज में आर्य विद्वानों के उपदेशों का लाभ आर्य जनता उठा

रही है। आशा है समाज की गणना शीघ्र ही प्रदेश की प्रमुख समाजों में हो जायेगी।

आर्य समाज गनकैरिज फैक्टरी

स्थानीय समाज द्वारा श्री एम. एल. दास असिस्टेन्ट मैनेजर जी. सी. एफ. के बंगले में यज्ञ का कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार श्री कृष्णलालजी आर्य की पुत्री का नामकरण संस्कार डॉ. श्रीराम शर्मा के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, पुत्रीका नाम बुद्धिमती रखा गया।

आर्य समाज ने पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय के निधन पर शोक प्रकट करते हुए ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोकातुर परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की है।

आर्य समाज सागर का वार्षिकोत्सव

इस वर्ष आर्य समाज, सागर ने अपनी समाज का वार्षिकोत्सव बड़े समारोहपूर्वक दिनांक २७–२८ और २९ अक्तूबर १९६८ को मनाया। समाज के निमंत्रण पर आर्य जगत के अनेक विद्वान, महात्मा तथा भजनोपदेशक उत्सव में पधारे थे। वार्षिकोत्सव में आर्य सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

सागर की आर्य प्रेमी जनता ने आर्थिक सहायता प्रदान कर उत्सव को सफल बनाने में पूर्ण योगदान दिया जिसके लिये समाज ने आभार प्रदर्शन किया हैं। आर्य समाज, सागर ने अपना ध्वनि विस्तारक यंत्र खरीद लिया है और अब समाज में प्रतिदिन सत्संग होने लगे हैं।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ में दिनांक १३–१०–६८ को साप्ताहिक अधिवेशन की सभा में श्री. प्रोफेसर ताराचन्दजी गाजरा के देहावसान पर दो मिनट मौन रखकर श्री. रामचन्द्रजी आर्य ने उनके जीवन पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्यप्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

संत सिंगाजी मेले में वैदिक धर्मप्रचार

दिनांक ४-१०-६८ से ७-१०-६८ तक सिंगाजी मेले में आर्य समाज खंडवा के स्थायी प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धान्तशास्त्री ने–(रामायण का राष्ट्रीय स्वरूप, महाभारत, भारतीय संस्कृति, ईश्वर भक्ति, मानव धर्म, आदि विषयों पर) ओजस्वी भाषण दिया। साथमें विनोदकुमार निगम एवं कृष्णकुमार आर्य के सुमधुर संगीतमय भजन हुए।

मेले में प्रचारार्थ धार्मिक पुस्तकें एवं महत्वपूर्ण ट्रेक्ट निःशुल्क वितरण किये गये। योगासन प्रदर्शन कर प्रत्येक आसन से क्या लाभ है विस्तारपूर्वक समझाया गया। उपरोक्त उपदेशों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज गन कैरिज फैक्टरी, जबलपुर का निर्वाचन

आर्य समाज गन कैरिज फैक्टरी, जबलपुर के पदाधिकारियों का वार्षिक चुनाव श्री जयसिंह जी गायकवाड़ कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

श्री विज्ञान शंकर जी	–	प्रधान
श्री रामस्वरूप शर्मा	–	उप प्रधान
श्री डॉ. श्रीराम शर्मा	–	उप प्रधान
श्री डॉ. रवीन्द्रनाथ शर्मा	–	मंत्री
श्री महेन्द्रनाथ जी शर्मा	–	उप मंत्री
श्री रामनाथ जी शर्मा	–	कोषाध्यक्ष
श्री विजयसिंह चौहान	–	पुस्तकाध्यक्ष

आर्य सेवक का उपकारी अंक

सामग्री की दृष्टि से संकलन बहुत अच्छा किया गया है। आर्य बन्धुओं को कहना तो अतिशयोक्ति होगा परन्तु मेरी स्वतः की जानकारी के अनुसार जो अपूर्णता थी वह इस उपकारी अंक के पठन से अनिर्वचनीय आनंद की पूर्ति हुई। जन साधारण के लिये विशिष्ट संदेश वाहक अंक सिद्ध हुआ है। –श्री सुन्दरलालजी

आर्यसमाज, आमला का वार्षिकोत्सव

आमला आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव दि. २ से ४ अक्तूबर ६८ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन हजारों की संख्या में नर नारियों ने आर्य विद्वानों के उपदेशों से लाभ उठाया। उत्सव को सफल बनाने के लिये बाहर से अनेक आर्य विद्वान तथा उपदेशक पधारे थे जिसमें सर्वश्री स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती महाराज, श्री सोहनलालजी पथिक भजनोपदेशक, श्री जगदीशचन्द्रजी पिपासा आदि महानुभावों का नाम उल्लेखनीय है।

जन्मजात मुस्लिमों का हिन्दू धर्म में प्रवेश

मुर्तिजापुर तहसील के यावर्डी ग्राम में आर्य-समाज पूसद के उत्साही मंत्री श्री धर्मदेवसिंह जी आर्य द्वारा ४ मुसलमानों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रवेश किया गया। धर्मदेवसिंह जी आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ के उपमंत्री भी हैं। आपने इस अवसर पर शुद्धि संगठन तथा वैदिक धर्म की महत्ता पर ओजस्वी भाषण दिया। सभा में आसपास के ग्रामों के तथा स्थानीय लोग काफी संख्या में उपस्थित थे। शुद्ध किये गये व्यक्तियों का पूर्व और वर्तमान नाम निम्न प्रकार है--

१.	श्रीमती हबीबाबी	–	सौ यमुनाबाई
२.	श्री हनीफ	–	श्री हरि ठाकरे
३.	,, रसूल	–	,, महादेव ठाकरे
४.	,, अब्बास	–	,, पांडुरंग ठाकरे

श्रीमान देवीदयाल जी पुरंग एवं माता श्रीमती गार्गीदेवी का वैदिक धर्म प्रचार

दि. १ से ७ सितम्बर १९६८ तक गणेशोत्सव सप्ताह में, कोतमा शहर के आसपास घूम घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार कार्य एवं हरिजनों के उद्धार हेतु आप दोनों ने मिलकर कार्य किया।

शहडोल जिले में हरिजन उद्धार हेतु भंगी-कष्ट-मुक्ति तथा अस्पृश्यता निवारण समिति बनाकर श्री पुरंग जी के जिम्मे कार्यभार सौंपा गया है। इस कार्य में आर्यसमाज कोतमा की प्रधाना माता गार्गीदेवी का पूर्ण सहयोग मिल रहा है।

दिनांक ११ सितम्बर को आर्यसमाज शहडोल में यज्ञ का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्री पुरंग जी ने ईसायत के बढ़ते हुए दुष्प्रचार को रोकने तथा महर्षि दयानन्द के अधूरे काम को पूर्ण करने का उपस्थित आर्य बंधुओं से आग्रह किया। आर्यसमाज के मंत्री जी ने सत्संग गुटक तथा अन्य ट्रैक्टस का वितरण किया।

प्रो० ताराचन्द जी गाजरा के निधन पर शोक सभा

आर्यसमाज, जरीपटका, नागपुर ने अपने रविवार दिनांक १३ अक्तूबर १९६८ के साप्ताहिक अधिवेशन में, आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध के वयोवृद्ध प्रधान श्री प्रो. ताराचन्द गाजरा के निधन पर अपनी शोकांजलि अर्पित की और सिंध सभा के लिये उनकी सेवाओं की भूरि भूरि प्रशंसा की गई। उन्होंने अपने प्रभावशाली व्याख्यानों द्वारा भारत भर में विशेषकर सिंध प्रांत में वैदिक धर्म का आयु भर प्रचार किया। वे सिंध सभा के प्राण थे। उनके स्वर्गवास से सिंध सभा की महान क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना कठिन है।

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के प्रधान महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

दिल्ली, १५ अक्टूबर ६८।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से प्रचारित विज्ञप्ति के अनुसार, हैदराबाद में ८, ९, १० नवम्बर १९६८ को होने वाले, दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के प्रधान श्रीयुत महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज निर्वाचित हुए हैं।

पुस्तक समीक्षा

खौलता–खून

सम्पादक– विनयकुमार पाठक, पत्रकार,
बिलासपुर (म. प्र.)
प्रकाशक– प्रयास प्रकाशन, पचरीघाट, जूना
बिलासपुर (म. प्र.)
मुद्रक– प्रभात प्रिंटिंग प्रेस, आजद नगर,
बिलासपुर (म. प्र.)
पृष्ठ संख्या ८०, आकर्षक एवं सुंदर मुखपृष्ठ,
मूल्य दो रुपये

प्रयास प्रकाशन का पांचवा पुष्प "खौलता खून" में प्रायः सभी प्रांतों के कम से कम एक–दो कवि संकलित हो गये हैं और इस प्रकार वह संकलन अखिल भारतीय स्तर पर बन पड़ा है। यह खून को खौला सकने मे समर्थ वीरोचित कविताओं का सशक्त, सुंदर एवं मूल्यवान संग्रह है। आज के युग में यह वीर गीतों का संग्रह राष्ट्र को प्रेरणात्मक नई चेतना और स्फूर्ति देने में सक्षम है। कवियों ने अपने आंतरिक छिपी भावनाओं को कविता का माध्यम बनाकर कविताओं का निर्माण किया है जो राष्ट्र प्रेम से भरपूर है, यह इस संग्रह की अपनी विशेषता है। इसमें ७५ कवियों की रचनाएं हैं। प्रत्येक कविता का शीर्षक एवं भाव बड़ा ही रोचक, स्फूर्तिदायक एवं प्रेरणादायक है। रचनाओं की एक एक पक्ति वीर गीतों का उद्‌बोधन है। यह वीर गीतों का संग्रह पठनीय एवं संग्रहनीय है। प्रयास प्रकाशन का यह प्रयास सचमुच प्रशंसनीय है। विशेषकर इसके संपादक श्री विनयकुमार पाठक, स्वयं एक तरुण, उत्साही एवं मध्यप्रदेश के लोकप्रिय कवि हैं। आर्य वीर दलों और आर्य समाजों को चाहिये कि वह इसकी प्रति अपने पुस्तकालय में अवश्य रखें।

–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धांत रत्न. मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश
व विदर्भ, नागपुर

राष्ट्रीय एकता के लिये

गाय–माता की पुकार

श्री खुशीराम चो. जेसवानी,
शिक्षक सिंधी–हिंदी पाठशाला, लालगंज नागपुर–२

हिन्दू–मुस्लिम, सिख, ईसाई,
पीते हो मेरा दूध।
फिर क्यों नहीं मिल कर रहते,
बनकर राष्ट्र सपूत॥
मेरे बेटे बैल कहलाते,
खेत में जाकर हल चलाते;
सब्जी, मेवा, अन्न उगाते,
खाते हो तुम खूब;
फिर क्यों नहीं मिलकर रहते,
बनकर राष्ट्र सपूत॥१॥
मेरे चमड़े से जूते बनाते,
चप्पल, स्लीपर सैंडल सप्पाटे;
पांवों में पहिनकर आनन्द भाते,
पहिनते हो शू–बूट;
फिर क्यों नहीं मिलकर रहते,
बनकर राष्ट्र सपूत॥२॥
मेरे गोबर मूत्र से,
शुद्ध होता है हर स्थान;
जो भी मेरी पूजा करते,
पाते हैं शांति दान;
जिस मंदिर में गोबर घूमता,
वहां मिट जाती है छुआ-छूत;
फिर क्यों नहीं मिलकर रहते,
बनकर राष्ट्र सपूत॥३॥
बंदे मत काटो अब मेरा शीश,
'खुशी' कृष्ण भगवान जैसी करो आशीस;
मेरे जिंदे रहने से भारत को,
मिलेगी बक्षीस;
दूध, मक्खन घी पेट भर खाओ,
मस्त बन जाओ मजबूत;
फिर क्यों नहीं मिलकर रहते,
बनकर राष्ट्र सपूत॥४॥

––––

सभा की सूचनाएं

संख्या २८७-आर्य समाजों से दशांश अप्राप्त

सभा कार्यालय द्वारा बार बार लिखे जाने, तथा स्मरण पत्र भेजे जाने पर भी प्रदेश की निम्न-लिखित आर्यसमाजों ने वर्ष १९६७ का दशांश प्रतिनिधि सभा को नहीं भेजा है। आर्य सेवक द्वारा उन्हें पुनः स्मरण दिलाया जाता है कि कृपया अपनी समाज का दशांश शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें।

आर्य समाज सागर, पथरोट, हिवरखेड़, दुर्ग, इटारसी, जरीपटका नागपुर और महिला समाज गंजीपुरा जबलपुर।

संख्या २८८-वेद वेदांग विद्यालय, नागपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा, म. प्र. व विदर्भ द्वारा संचालित वेद वेदांग विद्यालय, नागपुर ने जिसकी स्थापना १९६४ में की गई थी, दिन प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। इसका सारा श्रेय पं. दीनानाथ जी शर्मा को है, जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से निःशुल्क संस्कृत अध्ययन का प्रबंध किया है तथा विद्यार्थियों, वेद पाठियों को छात्रवृत्ति देने हेतु दानदाताओं से मासिक सहायता प्राप्त कराते रहे हैं। वर्ष १९६४ से १९६८ तक का आय-व्यय विवरण निम्न प्रकार है-

वर्ष	आय	व्यय
१९६४	४०-२५	२७-३०
१९६५	१६६-५५	२९५-२३
१९६६	२३७-४५	२१२-१०
१९६७	३९२-१०	३०१-००
१९६८	४२७-५०	७८४ १५
(सितम्बर तक)	१२६३-८५	१६१९-७८

सभा पं. दीनानाथ जी को धन्यवाद देती है कि संस्कृत के प्रचार व प्रसार तथा वेद ज्ञान को सर्व साधारण तक पहुंचाने के लिये वे अकथनीय प्रयास कर रहे हैं।

संख्या २८९-प्रधानजी सभा का हैदराबाद का कार्यक्रम

सभा के प्रधान माननीय पं. विश्वंभरप्रसाद जी शर्मा दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन, दिनांक ८-९-१० नवम्बर में सम्मिलित होने के लिये ७ नवम्बर को हैदराबाद पहुंच रहे हैं। हैदराबाद में आपका निवास स्थान कहां रहेगा, इसकी जांच, सम्मेलन के पूछताछ कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। प्रधानजी संभव है दिनांक १२ नवम्बर को वापस नागपुर लौट आवेंगे।

संख्या २९०-आर्य समाज सदस्यता प्रमाण-पत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ ने, सभा से संबधित प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को भेजने के लिए संबद्धता प्रमाण-पत्र छपवाये हैं। ये शीघ्र ही प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को निःशुल्क भेजे जायेंगे। समस्त समाजें इस प्रमाण-पत्र को कांच की फ्रेम में लगाकर समाज में टांग दें। यह प्रमाण-पत्र नष्ट हो जाने या खो जाने पर दुबारा मांगे जाने की स्थिति में एक रुपया शुल्क देकर पुनः मिल सकेगा।

संख्या २९१-दुर्ग विद्यालय में पानी का सुप्रबंध

तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय, दुर्ग में पानी की असुविधा को देखते हुए, सभा के कुएं पर बिजली का पंप लगाने का आदेश और उसके खर्च का प्रबंध कर दिया गया है। अक्तूबर के अंतिम सप्ताह तक विद्यालय को भरपूर पानी मिलने लगेगा और छात्राओं का पानी का कष्ट दूर हो जायेगा।

संख्या २९२-कन्या विद्यालय, दुर्ग में कमरों का निर्माण।

सभा के निश्चयानुसार तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय, दुर्ग, में कुछ कमरों का निर्माण करना आवश्यक है। इस कार्य के लिये मध्यप्रदेश शासन ने भी सहायता प्रदान की है परंतु निर्माण कार्य को कुछ समय के लिए स्थगित करना पड़ा है क्योंकि सभा के कार्यकर्त्ता धमतरी में दुकान निर्माण कार्य में व्यस्त हैं। वहां का कार्य समाप्त होने पर दुर्ग का कार्य आरंभ किया जायेगा।

संख्या २९३-आर्य समाज हंसापुरी का निर्माण कार्य।

सभा के निश्चयानुसार आर्य समाज, हंसापुरी, नागपुर, के प्रांगण में दूकानों के पीछे, शौचालय तथा

स्नानागार का निर्माण लगभग २,०००) खर्च करके पूर्ण कर दिया गया है ओर नई बनाई गई तीन दूकानों के सामने सीमेण्ट का पक्का फर्श बनवा दिया गया है। नवनिर्मित ६ दूकानों और ऊपर के ३ कमरों से मासिक आय ८८०) हो रही है। अभी एक कमरा खाली पड़ा है। उसके किराये पर उठ जाने के बाद रु. ९३०) किराया प्रतिमास मिलने लगेगा। यह किराया सभा वसूल करती है और हंसापुरी समाज को दिये गये ऋण खाते में जमा करती है।

संख्या २९४–दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन।

आर्य सेवक, विज्ञप्तियों तथा अन्य समाचार पत्रों द्वारा प्रदेश की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य बंधुओं को ज्ञात हो गया होगा कि, हैदराबाद में, दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन, औद्योगिक प्रदर्शनी (नुमाइशी मैदान) में दिनांक ८–९ और १० नवम्बर १९६८ को संपन्न होने वाला है जिसमें देश के कोने कोने से आर्य सन्यासी, महात्मा, विद्वान तथा कार्यकर्त्ता पहुंच रहे हैं। ८ नवम्बर को मध्यान्ह में मनोनीत अध्यक्ष का नगर परिक्रमा (जुलूस) निकाला जायेगा। प्रदेश की समाजों से निवेदन है कि वे अपनी समाज से अधिकाधिक संख्या में प्रतिनिधि हैदराबाद भेजकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान प्रदान करें। समाजें अपने साथ समाज के नाम का पर्दा और ओ३म् का ध्वज भी लेती जावें।

संख्या २९५–जयकृष्ण कुन्हाड़े से हिसाब की मांग।

अक्तूबर १९६८ के मासिक आर्य सेवक में पृष्ठ १४ पर प्रकाशित [illegible] "जयकृष्ण कुन्हाड़े से हिसाब की मांग" [illegible] संबंध में, [illegible] समाज, अमरावती, के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि श्री. जयकृष्ण कुन्हाड़े भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज, अमरावती, ने पुनः कमिश्नर महोदय से हिसाब प्रस्तुत करने के लिये समय की मांग की है। हिसाब पेश करने के लिए दिनांक ५–१०–६८ की पेशी थी जिसमें वे हिसाब प्रस्तुत न कर सके। कार्यवाही चल रही है।

संख्या २९६–उपदेशकों का कार्यक्रम।

माननीय प्रधानजी सभा के आदेश दिनांक १०–१०–१९६८ की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है–

"श्री रामाश्रय तथा सत्यदेव आदि सभी उपदेशकों को आदेश दिया जाता है कि वे कार्यालय को अपने कार्यक्रम की सूचना देते रहें और मंत्रीजी के आदेशानुसार अपना प्रचार कार्यक्रम बनायें।"

सभा से संबंधित समस्त उपदेशक उपर्युक्त आदेशानुसार कार्यक्रम बनायेंगे।

संख्या २९७–धमतरी में दूकानों का निर्माण

दानवीर श्री स्वामी अग्निदेवजी महाराज द्वारा प्रदत्त भूमि की कच्ची दूकानों को तोड़कर नई दूकानों का निर्माण न्यायालय के निर्णयानुसार आवश्यक था। इसकी स्वीकृति अंतरंग सभा दे चुकी है। समय बहुत कम है और नवम्बर तक दूकानें तैयार कर किरायेदारों को सौंप देना है। इंजीनियर महोदय और उनकी सहायता के लिए श्री रामराजजी शर्मा, सम्पत्ति प्रबंधक का हेडक्वार्टर दूकान निर्माण होने तक धमतरी बना दिया गया है।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. २४–९–१९६८	श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/ 28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

३४. श्री. संस्थापकजी, आत्मशुद्धि आश्रम, पोस्ट सांपला, जिला रोहतक, (पंजाब)

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक–वि. व. कौशिक, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन–प्रत्येक अंग्रेजी मास की २८ तारीख को।

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

आर्य-सेवक

वार्षिक मूल्य
सम्मानित - ५ रु.
साधारण - २ रु.
एक अंक - २५ पैसे

दिसम्बर] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, मार्गशीर्ष शुक्ल १२ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४४ } वर्ष ६८ अंक १२ [१९६८

दशम आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के विशाल जुलूस की एक झांकी

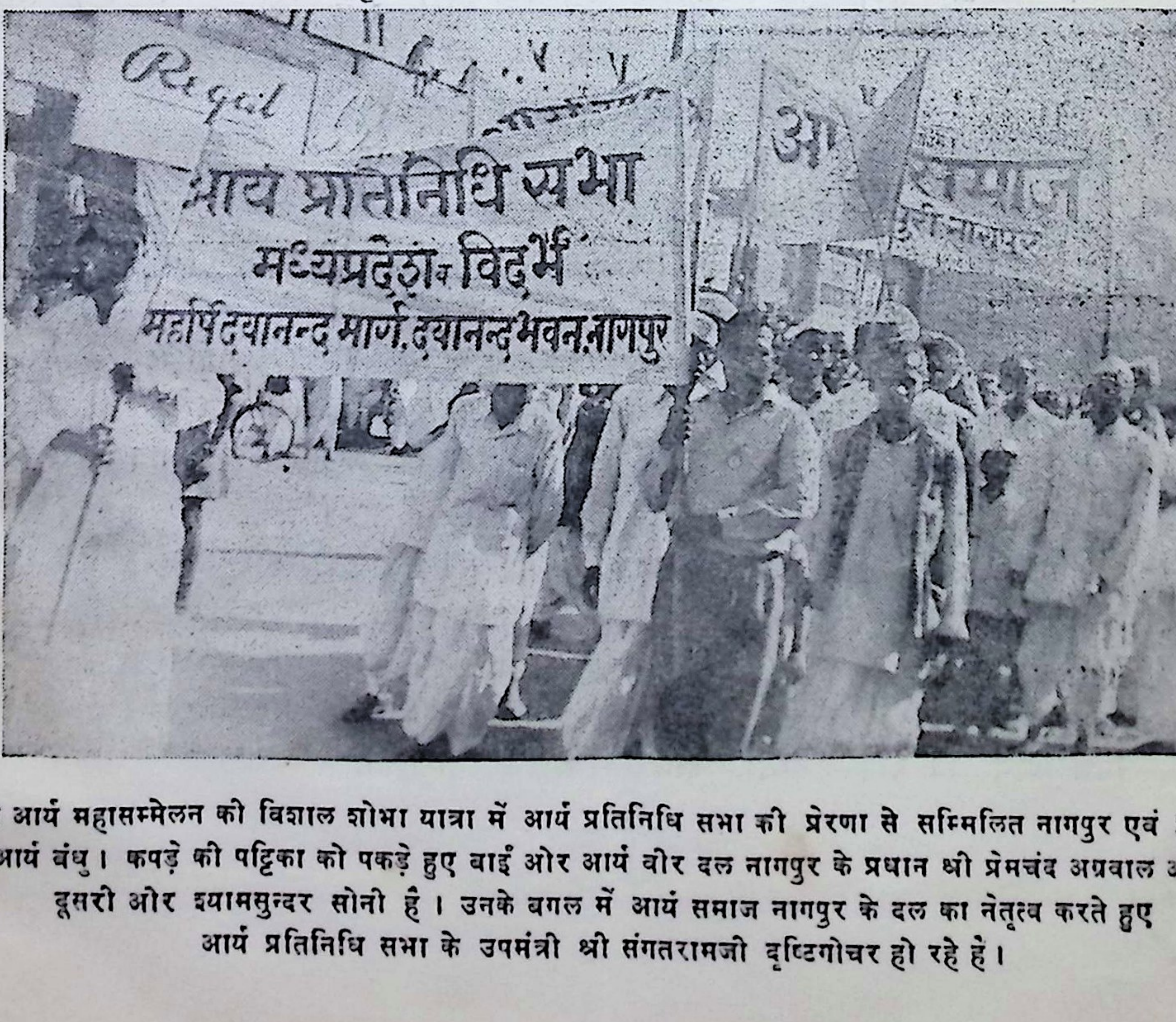

दशम आर्य महासम्मेलन की विशाल शोभा यात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा से सम्मिलित नागपुर एवं प्रदेश के आर्य बंधु। कपड़े की पट्टिका को पकड़े हुए बाईं ओर आर्य वीर दल नागपुर के प्रधान श्री प्रेमचंद अग्रवाल और दूसरी ओर श्यामसुन्दर सोनी है। उनके बगल में आर्य समाज नागपुर के दल का नेतृत्व करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री संगतरामजी दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

उठो देश के वीर सपूतो !

(श्री मधुकर सदार, सिद्धांतालंकार, दयानन्द भवन, नागपुर)

उठो देश के वीर सपूतो, गो माता पुकारती ।
नयनों में है नीर भरा, वह आज तुम्हें निहारती ॥

गोमाता की करुण कहानी, फटती जिससे छाती है ।
उगते सूरज के पहले ही, जननी काटी जाती है ॥
उसके पहले उसे नहाते, उगले उगले पानी में ।
हजारों का है रक्त बहाते, हाय भरी जवानी में ॥
हाय ! यह कैसी क्रूरता, यह मूक तपस्वी गाय रे–
गोहत्या से दुःखित है, यह राम–कृष्ण की भारती ॥१॥

नन्हे मुन्ने, जवान, बुढ्ढे, नही है माता और उसी को ।
माता बनकर दूध पिलाती, नहीं करती है दूर किसी को ॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, संप्रदाय औ पंथ सभी को ।
देशी–विदेशी, काला–गोरा, है बनाती स्वस्थ सभी को ॥
यह कामधेनु ! आधार जगत का, यह मूक तपस्वी गाय रे–
निज बैलों से कृषि उपजाती, अन्न संकट निवारती ॥२॥

मरने बाद भी दे जाती है, महिमा का है पार नहीं ।
सोच समझ ले अपने मन में, बिना इसके उद्धार नहीं ॥
मानव तुझको बहु उपकारी, जीवन साथी और नहीं ।
ढूंड़ेगा तू सभी जगत को, गोमाता बिन सार नहीं ॥
फिर भी मानव ! क्यों काट रहे, यह मूक तपस्वी गाय रे–
महा पाप भयंकर करने को, गो माता तुम्हें धिक्कारती ॥३॥

गद्दारों ने भुला दिया है, दिये वचन को शर्म नहीं ।
याद रखो जयचन्दो ! तुम्हें, नहीं मिलेगी जगह कहीं ॥
संकट हरने गोमाता का, बच्चा बच्चा जाग उठेगा ।
गोरक्षा की ज्योति जली है, अंधियारा शीघ्र मिटेगा ॥
कसम तुम्हें है आर्य वीरों, यह मूक तपस्वी गाय रे–
निज प्राणों का दीप जलाओ, बलिदानों की आरती ॥४॥

ओ३म्
आर्यसेवक
ARYASEWAK

धार्मिक,
सांस्कृतिक,
सामाजिक मासिक

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, मार्गशीर्ष शुक्ल १२, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४४ { वर्ष–६८ अंक–१२

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के पदाधिकारी

●

प्रधान

श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा, नागपुर

उप–प्रधान

श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, नागपुर
श्री शान्तिकुमार जाधव, अकोला
श्री दालचन्द यादव, जबलपुर
श्री बालकृष्ण चड्ढा, भिलाई

मंत्री

श्री श्रीकृष्ण गुप्त, नागपुर

उपमंत्री

श्री संगतराम आर्य, नागपुर
श्री चन्द्रकान्त वर्मा, जबलपुर
श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, भिलाई
श्री ठा. धर्मदेवसिंह, पूसद

कोषाध्यक्ष

श्री जयसिंह गायकवाड़, सिहोरा

पुस्तकाध्यक्ष

श्री मल्हारराव माथनकर, नागपुर

●

कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते ।
नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्या पूयते तु सः ॥

मनु० अ० ११ श्लो० २३०

चाहे कितना भी पश्चाताप किया जाये, तो भी कृत पापों को तो भोगना ही चाहिये । इसका दृष्टान्त–जैसे कोई कुएं में गिरा और उसके हाथ पांव टूट गये तो अब वह चाहे कितना भी पश्चाताप करे, तो भी उसके हाथ पांव जो टूटे, सो तो टूट ही चुके, वह तो कुछ भी किये (से) नहीं छूट सकता । हां ! आगे के लिये कुएं में न गिरेगा, इतना ही केवल होगा ।

सम्पादकीय—

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का संदेश

(श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा, प्रधान, आ. प्र. सभा, म. प्र. व विदर्भ, नागपुर)

दिनांक ८।९।१० नवम्बर १९६८ को हैदराबाद में बड़े भव्य रूप में दशम आर्य महासम्मेलन पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में सुसम्पन्न हुआ। सम्मेलन की ओर आर्य जगत की आंखें लगी हुई थीं और आर्य जनता बड़ी उत्सुकता के साथ सम्मेलन के आदेश और संकल्पों की प्रतीक्षा कर रही थी। सम्मेलन की समस्त कार्यवाही बड़े सजीव रूप में सम्पन्न हुई। सम्मेलन का आरंभ एक विशाल शोभायात्रा के साथ हुआ जिसमें ५०,००० आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। यह शोभा यात्रा अत्यन्त अनुशासित और प्रभावशाली रही और उससे आर्य समाज की शक्ति और तेजस्विता का बड़े सुन्दर रूप में प्रदर्शन हुआ। जुलूस के आगे एक हाथी पर आर्य ध्वज लहरा था और उस पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के नेता श्री ओमप्रकाश जी त्यागी संसद सदस्य विराजमान थे। इस जुलूस में अनेक प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य समाजों के जत्थे अपने बोर्डों के साथ सम्मिलित थे। जुलूस में दिल्ली से आई इस अवसर के लिये स्पेशल ट्रेन के लगभग ८०० नर नारी भी पूर्ण उत्साह के साथ सम्मिलित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के जत्थे में बड़ी संख्या में आर्य बंधु और देवियां सम्मिलित थे। अनेक आर्य समाजों के जत्थे वैदिक गीत गाते और जयघोष करते हुए चल रहे थे। जुलूस में अनेक कन्याएं, विद्यालय और गुरुकुलों की बालक बालिकाएं अपने बैंड बाजों के साथ चल रहे थे। महासम्मेलन के अध्यक्ष महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज एक खुली कार में विराजमान थे। उनकी बगल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ओ३म का ध्वज लिये बैठे थे। जुलूस हैदराबाद के प्रमुख बाजारों से होता हुआ सांयकाल ५॥ बजे सभा स्थल में समाप्त हुआ।

आर्य महासम्मेलन की ३ दिन की कार्यवाही अत्यन्त प्रभावशाली रही। स्वागताध्यक्ष पं० नरेन्द्र जी का भाषण अत्यन्त ओजस्वी और प्रेरणाप्रद था। आपने आर्य समाज को राजनीति से पूर्णतया अलिप्त रहने का संकेत दिया और अपनी शक्ति को सुदृढ़ बनाकर महर्षि स्वामी दयानन्द जी के संदेश को सारे विश्व में फैलाने का अनुरोध किया। सम्मेलन का उद्घाटन मौरिशस के भारतस्थित राजदूत माननीय रवीन्द्र घरबरन जी ने किया। अपने भाषण में आपने आर्य समाज के संगठन और महर्षि स्वामी दयानन्द जी के दिव्य संदेश की प्रशंसा करते हुए आर्य समाज से अनुरोध किया कि वह भारतवर्ष में प्रचलित जाति पाति और अस्पृश्यता के अभिशाप को दूर करने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा दें और भारत की राष्ट्रिय एकता तथा संस्कृति को सुदृढ़ बनाने में कृत संकल्प हों।

महात्मा आनन्द स्वामी जी का भाषण अत्यन्त मधुर और उद्बोधक तथा मार्गदर्शक था। सम्मेलन के सभी भाषण अन्यत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं। सम्मेलन से पहले विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक हुई थी जिसमें अधिकांश समय आर्य समाज के आंतरिक वादविवादों को समाप्त करने और आर्य समाज के संगठन को दलबंदी तथा पारस्परिक संघर्ष से मुक्त कराने के उपायों को खोज कराने में व्यतीत हुआ। और यह हर्ष की बात है कि सर्व सम्मति से यह निर्णय किया गया कि आर्य समाज के समस्त विवाद न्यायालय में न ले जाकर अपनी न्याय सभाओं द्वारा निपटाये जांय, जो मामले न्यायालय में चल रहे हैं उन्हें तुरन्त उठा लिया जाय। सम्मेलन ने पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज को यह अधिकार दिया कि वह इस प्रकार के मामले स्वयं निपटा दें। वे जो फैसला करेंगे वह सबको मान्य होगा। जो लोग इसके विपरीत आचरण करेंगे उन्हें आर्य समाज की सदस्यता से पृथक कर दिया जायेगा। यह निर्णय आर्य समाज की आन्तरिक शक्ति को सुदृढ़ बनाये रखने के लिये अत्यन्त आवश्यक है और

हमें विश्वास है कि देश के समस्त आर्य बंधु इस पर शुद्ध हृदय से आचरण करेंगे और आर्य समाज के संगठन की प्रतिष्ठा की रक्षा करेंगे।

आर्य महासम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए जिनमें राष्ट्र विरोधी तत्वों का उन्मूलन करके राष्ट्र की सुख समृद्धि और स्वतंत्रता की दृढ़ता-पूर्वक रक्षा करने की मांग की गई है। एक प्रस्ताव द्वारा आर्य बंधुओं से जाति पाति और अस्पृश्यता के अभिशाप को दूर करके हिन्दू समाज को एक सुसंगठित शक्ति के रूप में खड़ा करने तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं को धर्मान्तर करने के कुचक्र को विफल बनाने का निश्चय किया गया। सम्मेलन में और भी महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए, इन सब का उल्लेख आगामी अंक में किया जायेगा। आर्य महासम्मेलन के तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और गोरक्षा सम्मेलन भी बड़ी सफलता के साथ हुआ। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में श्री प्रो. बलराज मधोक का अध्यक्ष पद से बड़ा ओजस्वी भाषण हुआ। आपने बताया कि सरकार की दुर्बल नीति के कारण किस प्रकार राष्ट्र की स्वतंत्रता और सीमाओं को खतरा पहुंच रहा है और चीन तथा पाकिस्तान हजारों वर्ग मील भूमि को

दशम आर्य महासम्मेलन, हैदराबाद के विशाल जुलूस में आर्य समाज, नागपुर का नेतृत्व करते हुए दयानन्द भवन आर्य समाज, नागपुर के कर्मठ मंत्री श्री मोहनलाल मेहता वैदिक भजन गा रहे हैं। उनके पीछे आर्य समाज हंसापुरी के कोषाध्यक्ष श्री मल्हारराव माथनकर और बाएं ओर आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री तथा आर्य समाज पुसद के मंत्री श्री धर्मदेवसिंह आर्य दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

हड़पे बैठे हैं । आपने सरकार को सचेत किया कि यदि उसने अपनी प्रतिरक्षा नीति को सुदृढ़ नहीं बनाया तो राष्ट्र की स्वतंत्रता खतरे में पड़ जायेगी । आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया और अपने ओजस्वी भाषण में राष्ट्रिय ऐक्य और स्वतंत्रता को चुनौती देने वाले देश विरोधी तत्वों से सावधान रहने की सरकार को चेतावनी दी । आपने कहा कि सरकार की गलत और दुर्बल नीति का ही यह परिणाम है कि पाकिस्तान हमारे लिये स्थाई खतरा बना हुआ है और आसाम तथा अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति ऐसी बनती जा रही है कि जो कभी भी विस्फोटक बन सकती है । श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने इस सम्मेलन में विचार व्यक्त करते हुए ईसाई पादरियों की देश व्यापी राष्ट्र विरोधी तत्वों की चर्चा की और बताया कि सरकार की कमजोर नीति और उसकी धर्म निरपेक्षता के परिणाम स्वरूप लाखों हिन्दू ईसाई बन रहे हैं । आपने कहा कि आर्य समाज को इस संबंध में महत्वपूर्ण कार्य करना है ।

दशम आर्य महासम्मेलन के विराट जुलूस में नागपुर की आर्य महिलाओं का दल । चित्र में सामने की पंक्ति में सौ. चिन्दीबाई गंगोत्री, उनकी पुत्री कु. उर्मिला गंगोत्री, सौ. सुलोचनादेवी पावनकर, और श्रीमती जमनाबाई माथनकर दृष्टिगोचर हो रही हैं ।

आर्य महा सम्मेलन के साथ वेद सम्मेलन का भी बड़ा प्रभावशाली आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी और अध्यक्षता वानप्रस्थी श्री पं० धर्मदेव जी विद्यालंकार ने किया । इन दोनों महानुभावों के भाषण बड़े उद्बोधक और मार्ग दर्शक थे । इसी प्रकार महिला सम्मेलन का कार्यक्रम भी बड़ा प्रेरणादायी रहा जिसमें अध्यक्षा महोदया ने आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने

तथा आर्य समाज के प्रचार को देशव्यापी करने के लिये महिलाओं की शक्ति का सदुपयोग करने का अनुरोध किया।

आर्य महा सम्मेलन की सम्पूर्ण व्यवस्था बड़ी सुन्दर रही। भोजनालय का प्रबंध बड़ा संतोषजनक था। बाहर से आये हुए प्रतिनिधि और दर्शकों के निवास आदि की भी उत्तम व्यवस्था थी, परन्तु यह खेद की बात रही कि वहां चोरियाँ बहुत हुई और अनेक आर्य बंधुओं के रुपये तथा सामग्री चोरी गई। यदि प्रतिनिधि निवास स्थानों पर स्वयंसेवकों का विशेष प्रबंध किया जाता तो शायद यह घटना न होती। मथुरा में श्रीमदयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव के समय लाखों व्यक्ति पधारे थे परन्तु वहां किसी का कोई नुकसान नहीं हुआ। इसी प्रकार श्री मद्यानन्द अर्ध निर्माण शताब्दी अजमेर का प्रबंध भी बड़ा प्रशंसनीय रहा और वहां भी किसी प्रकार की ऐसी घटना नहीं हुई। हम इस तथ्य का उल्लेख आर्य महासम्मेलन हैदराबाद की व्यवस्था संबंधी त्रुटियों का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से नहीं कर रहे हैं। निस्संदेह वहां की सारी व्यवस्था बहुत उत्तम थी और इसका बहुत बड़ा श्रेय वहां के एक छत्र नेता पं० नरेन्द्र जी और स्वागत मंत्री श्री छगनलाल विजयवर्गीय तथा उनके अन्य सहयोगियों को है। प्रायः हमारी अपनी असावधानी के कारण भी चोरियां होती हैं और हैदराबाद में भी यही स्थिति रही। हमें विश्वास है कि आर्य महासम्मेलन से आर्य समाज के संगठन में एक नई स्फूर्ति और शक्ति उत्पन्न होगी और देश के समस्त आर्य बंधु उसके संकल्पों और निश्चयों की पूर्ति करने में कृत संकल्प होंगे।

विदेशी विचारधारा भारत के लिए खतरनाक।

(श्री रामगोपाल शालवाले, संसद सदस्य)

चन्दौसी, १६ नवम्बर ६८। आर्य समाज चन्दौसी के वार्षिकोत्सव पर भाषण करते हुए श्री रामगोपाल जी शालवाले संसद सदस्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने सभी प्रकार की परकीय दासता से मुक्त कराने का गम्भीर उपदेश दिया। एक परमात्मा की पूजा तथा वेद का ईश्वरकृत होने का तथा आर्य जाति के सुदृढ़ संगठन का दिव्य सन्देश दिया था। हिन्दू जाति को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने एक ईश्वरवाद, एक धर्मग्रन्थ वेद, राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा नमस्ते जैसे सर्वसम्मत अभिवादन देकर संगठित होने की प्रेरणा दी थी।

श्री शालवाले ने आगे कहा इस देश पर वाममार्गियों के पश्चात् बौद्ध धर्म का प्राबल्य हुआ। उस स्थिति में हमारी अन्दर और बाहर की राष्ट्रीय चेतना पर गहरा प्रभाव पड़ा और विदेशी ताकतों ने उसका लाभ उठाया। मुगलों और अंग्रेजों के शासन काल ने लगातार एक हजार वर्ष तक हमारे पूर्वजों के मन, मस्तिष्क से प्राचीन गौरव, की भावना मिटा कर हीन मनोवृत्ति पैदा करने का अनथक प्रयत्न करते रहे पर वे हमें मिटा न सके। किन्तु आज सभी राजनैतिक तथा धार्मिक शक्तियां ऋषियों के इस पुराने देश भारत के गौरव को मिट्टी में मिलाने का कुचक्र कर रही हैं। मुस्लिम लीग और कम्युनिस्ट पार्टी एवं ईसाई मिशनरी पुनः विभाजित भारत के और टुकड़े करने की तैयारियों में संलग्न हैं किन्तु सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी वोटों के लोभ के वशीभूत होकर अनेक भूलों की पुनरावृत्ति करने का कायरतापूर्ण पार्ट अदा करने जा रही है। श्री शालवाले ने कहा कि मुस्लिम लीग और विदेशी पादरियों का सफलता पूर्वक प्रतिरोध करने के लिए आर्य समाज की सहायता करें जिससे पुनः इस देश में विदेशी विचारधारा न पनप सके। ※

एक तथ्य एक भ्रम

आर्यों का मूल निवास स्थान

— श्री विनयकुमार पाठक, बिलासपुर।

श्री विनयकुमार जी पाठक का खोजपूर्ण लेख पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। आर्यों के मूल निवास स्थान के संबंध में देश तथा विदेश के अनेक विद्वानों के प्रथक प्रथक विचार गहन अध्ययन के बाद प्रस्तुत किये गये हैं। —सम्पादक

संसार की समस्त भाषाओं को भाषा विज्ञान के अनुसार बारह कुलों में विभक्त किया गया है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने भारत यूरोपिय कुल को सर्व प्रथम माना है। इसे आर्यकुल, भारत जर्मनिक कुल या हिंदी यूरोपिय कुल भी कहते हैं। इस कुल की भाषायें उत्तर भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान तथा प्रायः सम्पूर्ण यूरोप में प्रचलित हैं। इसी कुल की प्राचीन भाषायें संस्कृत, पाली, प्राचीन ईरानी, ग्रीक लेटिन आदि हैं। आजकल इस कुल में अंग्रेजी फ्रांसीसी, जर्मन, आधुनिक ईरानी, पश्तो, हिन्दी, मराठी, गुजराती एवं बंगला आदि भाषायें मानी गई हैं। अब प्रश्न उठता है कि ये सब विभिन्न भाषायें एक ही कुल में कैसे रखी गईं? उत्तर भारत के सदृश ही जर्मनी अपने आपको आर्य होने का गर्वानुभव करता है। अब फिर प्रश्न उठता है कि हजारों मील की दूरी होने के बावजूद भी उनमें समानता कैसे आई? इस आधार पर कहा जा सकता है कि उनमें समानता होने का अर्थ ही है कि उनके सभी पूर्वज एक रहे होंगे। परिस्थितियों के कारण वे इधर-उधर चले गये और आज यदि हम उन दोनों को एक मानें तो हास्यास्पद लगता है। आर्यों के मूल निवास स्थानों पर विभिन्न लोगों के विभिन्न मत है।

१) मैक्समूलर के "मध्य एशिया सिद्धांत" नामक ग्रंथ के अनुसार आर्य मध्य एशिया में रहते थे। बाद में ये पूर्व और पश्चिम दो शाखाओं में बट गये।

२) आर्य भाषा लिथु आनियन में अन्य यूरोपिय भाषाओं की अपेक्षा प्राचीनता के अधिक चिन्ह मिलने के आधार पर माना गया है कि ये वाल्टिक सागर के दक्षिण पूर्वी तट, जर्मनी के विभिन्न भाग एवं यूरोप के उत्तरी भागों में रहते थे।

३) डॉ. श्रेडर आर्यों का मूल निवास स्थान वोल्गा नदी के मुहाने के प्रदेश को मानते हैं।

४) डॉ. पीटर गाइल्स ने हंगरी के कारपेथियन पर्वत के आस पास वृत्ताकार प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान माना है।

५) लोकमान्य तिलक ने उत्तरी ध्रुव के निकट आर्यों का मूल निवास स्थान माना है।

६) सर देशाई वालकश झील के आस पास इनका मूल स्थान मानते हैं। आज भी इस प्रदेश में सात नदियों का देश या सप्तसिंधू नामक प्रांत है।

७) पश्चिमी ईरान एवं तुर्की में मिले आर्य देवताओं के नामों के शिलालेखों के आधार पर इनका मूल निवास स्थान मेसीपोमिया कल्पित किया गया है।

८) डॉ. लैथर इनका मूल निवास स्थान स्कैन्डिनेविया को मानते हैं।

९) श्री अविनाशचंद्र दास इनका मूल निवास स्थान सप्तसिंधु को मानते हैं।

१०) लोकमान्य तिलक के ध्रुव वाले मत का खंडन करते हुए "ऋग्वेदिक इंडिया" के लेखक ने सिद्ध किया है कि आर्यों का मूल निवास स्थान भारत में ही सरस्वती नदी तट पर हिमालय के भीतर के हिस्से में कहीं पर था। यहीं से जाकर आर्य लोग ईरान में बसे।

११) डॉ. राजबली पांडेय इनका मूल निवास स्थाम मध्य देश अर्थात उत्तर प्रदेश और बिहार को मानते हैं।

१२) डॉ. बाबूराम सक्सेना के मतानुसार "भारतीय आर्य ग्रंथों में कहीं यह उल्लेख नहीं मिलता कि आर्य बाहर से आये।— संभव है देवभूमि और पितृभूमि की कल्पना में आर्यो के आदि देश की झलक हो। वैदिक संहिता की पुरानी ऋचाओं में सप्तसिंधू प्रदेश का और उसकी अर्वाचीन ऋचाओं का उल्लेख मिलता है।

१३) डॉ. सक्सेना के मत के आधार पर सम्पूर्णानंद ने भी भारत में ही उत्तरी भारत को आर्यो का मूल स्थान माना है।

इतिहास में आर्य जाति की जो कल्पना की गई है वह पूर्णतया गलत है। उत्तम गुणों से युक्त. सत्य विद्याओं को प्राथमिकता देने वाले, सच्चे धर्म के मग में चलने वाले, शीतल स्वभाव से युक्त सज्जन ही सच्चे अर्थों में आर्य कहलाते हैं। कुमार्ग पर चलने वाले, आर्यो के कर्म, स्वभाव से विरुद्ध दिशा की ओर मुडने वाले "अहं ब्रह्मास्मि" को चरितार्थ करने वाले सभी दुर्जन अनार्य कहलाते हैं। आर्य की कोई जाति नहीं है। वह तो मानव के कर्मानुसार आर्य व अनार्य में विभक्त कर देता है। इस के कारण लोग पहले अच्छे कर्म करने हेतु सदैव प्रयत्नशील रहते थे। "कृणवन्तो विश्वमार्यम" का अर्थ होता हैं सर्व विश्व को आर्य बनाओ। जाति सदैव अपने आपको पृथक रखकर अपना बड़प्पन कायम रखती हैं और आर्य तो सभी को अपने सदृश बनाने के लिये उद्यत थे। अत: स्पष्ट है कि आर्य कोई जाति विशेष नहीं है। प्राचीनकाल में पति व राजा के संबोधन के लिये आर्य शद्ब प्रयुक्त होता था। इसी तरह पति का समानार्थी शद्ब 'वर' है जिसका अर्थ संस्कृत में श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

ऊपर वर्णित मतों में अधिकांश मत यूरोपिय विद्वानों के हैं और यही कारण है कि अपना स्वार्थ साधने हेतु हमें काफी बहकाया गया है। यूरोप को वे सभी अच्छी बातों का केन्द्र बतलाते हैं और यही कारण है कि डॉ. लेथर ने स्कैन्डिनेविया को आर्यों का मूल स्थान माना है।

"आनुवंशिता जाति और समाज" नामक पुस्तक के लेखक उन्न एवं डोबजान्स्की ने लिखा है कि "मैक्समूलर ने किसी बुरे दिन ही आर्य जाति शद्ब का प्रयोग किया था। इसी से वास्तव में केवल बातों ही बातों में एक काल्पनिक प्राणी आर्य मानव की उत्पति हो गई।

आर्य भाषा लिथु आनियन में अन्य यूरोपिय आर्य भाषाओं की अपेक्षा प्राचीनता के अधिक चिन्ह मिलने के आधार पर उनके मूल निवास की कल्पना में सत्यता का दिग्दर्शन नहीं होता। आज की स्थिति के अनुसार अमेरिका में यूरोप और इंगलैंड की बोलियों के अतिरिक्त कई प्रकार के अन्य भाषाओं का प्रचलन पाते हैं। यह बात तो उपरोक्त सिद्धान्तानुसार यही बतलायेगा कि लोग अमेरिका जाकर यूरोप में बस गये। जबकि बात तो कुछ और ही है।

इतिहास के माध्यम से विद्यार्थियों को यही सब गलत चीजे तोते की तरह रटा दी जाती हैं। इस भयंकर भूल को सुधारना इस पर पुनर्विचार करना एवं सत्य का ही खोज लगाकर फिर इतिहास में लिखना ही इसका ध्येय होना चाहिए। आर्य जाति एवं उनके आगमन के संबंध में लिखे पृष्टों को इतिहास से निकाल फेंकना ही उचित है। विशेषकर आर्यो के मूल निवास स्थान के संदर्भ में आज मान लें ठीक ठीक कह पाना कठिन है तो फिर क्यों इतिहास विदेशियों के भ्रमात्मक सिद्धांत का पक्ष करता है, समझ में नहीं आता।

अल्प संख्यक-बहुसंख्यक का नारा स्वार्थान्ध राजनीतिज्ञों का षड़यन्त्र है

(श्री ओमप्रकाशजी त्यागी, संसद सदस्य)

भारत में जब चुनाव समीप आते हैं तभी अल्प संख्यकों की सहानुभूति में अदूरदर्शी राजनीतिक पार्टियां व स्वार्थान्ध राजनीतिज्ञ बड़े बड़े सम्मेलनों का तथा गोष्ठियों का आयोजन करते हैं। उनका लक्ष्य अल्प संख्यकों का भला नहीं अपितु उनकी वोटों की प्राप्ति मात्र होता है। कारण यह है कि वर्तमान समय में अल्प संख्यकों के हाथ में ही चुनावों की संतुलन शक्ति है। २० वर्ष से कांग्रेस पार्टी इन्हीं के सहारे अपनी गद्दियों को सम्भाले हुए है। सन ६७ में अल्प संख्यकों से पूर्ववत् सहयोग प्राप्त न होने से कांग्रेस पार्टी को कई प्रान्तों में सत्ता से हाथ धोना पड़ा था। इस रहस्य को पाकर अन्य स्वार्थी पार्टियों ने भी अल्प संख्यकों को अच्छे-बुरे सभी उपायों से अपनी ओर आकर्षित करना शुरु कर दिया है। उनके इस आचरण से देश की एकता व सुरक्षा पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसकी उन्हें लेश मात्र भी चिन्ता नहीं है।

धर्म, जाति के आधार पर अल्प संख्यक व बहु संख्यक की कल्पना ही साम्प्रदायिक एवं अप्रजातान्त्रिक है। धर्म, जाति, के नाम पर देश के एक नागरिक को दूसरे नागरिक से अलग समझना और उन्हें उन्नति के समान अवसर न देकर उनमें विभेद उत्पन्न करना प्रजातन्त्र की भावना के सर्वथा विपरीत है। सौभाग्य से भारतीय संविधान ने भारत के समस्त नागरिकों को समान मान कर सबको राज्य में समान अधिकार दिये हैं। धर्म-जाति के कारण किसी को, किन्हीं अधिकारों से वंचित करना संविधान के विरुद्ध है और योग्यता के आधार पर सबको राज्य के समस्त पदों व अधिकारों को प्राप्त करने की छूट है। दुर्भाग्यवश भारतीय संविधान के विपरीत राजनीतिज्ञ स्वार्थवश धर्म व जाति को महत्व देते हुए देश को साम्प्रदायिक वर्गों में बांटने का कुप्रयास कर रहे हैं और साथ ही देश से साम्प्रदायिकता को समाप्त कर देश में एकता उत्पन्न करने का भी ढोंग कर रहे हैं।

धर्म के आधार अल्प संख्यक व बहु संख्यक की कल्पना विदेशी अंग्रेजी सरकार की देन है और इसके कारण ही देश का विभाजन हुआ तथा लाखों लोगों को बेघर हो शरणार्थी बनना पड़ा। स्वतंत्रता की प्राप्ति के पश्चात इस विदेशी जहर को समाप्त कर केवल आर्थिक आधार पर सम्पन्न वर्ग व पिछड़ा वर्ग के आधार पर ही राष्ट्र को अपनी नीति निर्धारित करना चाहिए था। सरकार ने अनुसूचित जातियों व अनुसूचित वनवासियों को इसी आधार पर विशेष सुविधायें दे कर सराहनीय कार्य भी किया, परन्तु अब उस विदेशी जहर को पुनः राष्ट्र की जनता को पिलाया जा रहा है और सरकार ने भी अंग्रेजों की भाषा में धर्म के नाम पर अल्प संख्यक व बहुसंख्यक की रट लगाना प्रारंभ कर दिया है। इसे प्रगति कहें या विनाश-मार्ग यह देश-भक्तों के विचारने का प्रश्न है।

धार्मिक अल्प संख्यकों की वकालत करने वालों से मैं कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं—क्या वह बतला सकते हैं। कि कहां किस विभाग में अल्प संख्यक वर्ग को योग्यता के आधार पर समान अधिकार व पद प्राप्त करने से रोका जा रहा है? क्या उनका विचार योग्यता के आधार को समाप्त कर केवल धर्म व जाति के नाम पर अधिकार व पद दिलाने का है? ऐसा करना क्या प्रजातंत्र के अनुकूल होगा? क्या वह बतलाने का साहस कर सकेंगे कि जैन, पारसी, सिख, ईसाई आदि वर्ग धार्मिक दृष्टि से अल्प संख्यक होकर भी उन्हें सरकार से कोई शिकायत क्यों नहीं? और क्यों उन्हें किसी विशेष संरक्षण की आवश्यकता नहीं है? मुस्लिम वर्ग ही बेचैन क्यों हैं और इसी के साथ साम्प्रदायिक संघर्ष क्यों होता है? यही वर्ग अपने को द्वितीय श्रेणी का नागरिक क्यों अनुभव करता है?

ऊपर लिखित प्रश्नोंका उत्तर स्पष्ट है कि भारत के जो वर्ग अपने को भारतीय राष्ट्र का अंग मानते हैं, यहां की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास व साहित्य को अपना मानते हैं उन्हें अपने अल्प संख्यक होने के कारण कोई असुविधा व बेचैनी नहीं है और जो अपने को अलग राष्ट्र मान कर चलते हैं जिनका विश्वास व श्रद्धा इस देश की भाषा, संस्कृति, साहित्य व इतिहास में नहीं हैं और जिनके दिल-दिमाग देश से बाहर अन्य देश में रहते हैं उन्हें ही अपने पाप का आभास होना या उनके प्रति ही अविश्वास का वातावरण उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसे इस प्रकार के सम्मेलनों व गोष्ठियों से कदापि समाप्त नहीं किया जा सकता है। हां इनके द्वारा चुनाव में उनके वोट उन्हें अवश्य प्राप्त हो सकते हैं।

देश के समस्त नेताओं, राजनीतिक पार्टियों व सरकार का कर्तव्य है कि वह अपने स्वार्थ की अपेक्षा देश के स्वार्थ को सर्वोपरि समझे, और अल्प संख्यक की सुरक्षा के नाम पर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर देश को विनाश की ओर न ले जायें। इस प्रकार यह न अल्प संख्यकों का ही भला कर सकेंगे और न देश का ही। उनकी यह क्षणिक स्वार्थ सिद्धि देश की फूट व विनाश का ही कारण बनेगी-ऐसा समझ देश-हित में वह सही मार्ग को ही अपनाने की कृपा करें अन्यथा यह सौदा उन्हें मंहगा पड़ेगा।

एक संस्मरण

श्रीमती स्वर्गवासिनी विद्योत्तमा का पंचाठ (पंच निर्णय)

— श्री घनश्याम सिंहजी गुप्त दुर्ग.

आदि शंकराचार्य जी, मण्डन मिश्र जी की प्रकाण्ड विद्वता की कीर्ति को सुनकर उनसे चारों वेदों के अर्थ के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ करने के लिये काशी की यात्रा के लिये निकल पड़े। उन दिनों रेल आदि की यात्रा की सुविधा नहीं थी। विमान की सुविधा तो थी। अतः उन्हें काशी पहुचने में कई दिन लगे। अस्तु काशी पहुंकर उन्होंने मण्डन मिश्र जी के निवास स्थान को जानना चाहा; और वहां के निवासियों से मण्डन मिश्र के निवास स्थान के बारे में पूछा। उत्तर में उन्हें बताया गया कि जहां के तोते (सूआ) संस्कृत श्लोकों का उच्चारण करते हैं वही मण्डन मिश्र जी का निवास स्थान है।

अब शास्त्रार्थ आरम्भ करने के पूर्व यह समस्या उपस्थित हुई कि शास्त्रार्थ का निर्णय देने के लिये मध्यस्थ कौन हो। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हो गये कि मण्डन मिश्र जी की धर्मपत्नि श्रीमती विद्योत्तमा जी मध्यस्थ बनाई जावें।

वेदों के वास्तविक अर्थ के जानकार उन दोनों प्रकाण्ड विद्वानों का शास्त्रार्थ कई दिनों तक चलता रहा। श्रीमती विद्योत्तमा जी उन दोनों के कथन को ध्यान पूर्वक सुनती रहीं और अन्त में उन्होंने अपना निर्णय शंकराचार्य जी के पक्ष में दिया। अर्थात शंकराचार्य जी को विजयी घोषित किया।

यह लगभग एक हजार वर्ष पूर्व की बात होगी। स्त्री और शूद्र को वेद का ज्ञान निशिद्ध बताने वालों को।

ढोल गवांर शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥

कहने वालों को इस आख्यायि का पाठ कराना चाहिये।

आर्य–संस्कार [मृतक]

(श्री गुरु रामप्यारे अग्निहोत्री, इतिहासकार, रीवां)

आर्यों के प्रमुख ग्रन्थ वेद हैं। वेद अपौरुषेय कहे जाते हैं। वेदों पर हिन्दू जाति की अनन्तकाल से अपूर्व श्रद्धा रही है। ऐसा कोई भी विषय नहीं है जो वेदों से परे हो अथवा वेदों में न हो। हिन्दू जाति के लिये वेद स्वतः और अन्तिम प्रमाण हैं। वेदों में हमारे समाज की अमूल्य सांस्कृतिक निधि छिपी पड़ी है। आज के युग में वेद केवल संज्ञा परिगणन के लिये ही हैं। हिन्दू जाति में एक प्रति दशहजार व्यक्ति ही वेदों के विषय में कुछ जानकार कहे जा सकते हैं। देश के ऐसे निन्यानवे प्रतिशत पुस्तकालय हैं जिनमें वैदिक साहित्य के केवल कुछ ग्रन्थ ही पाये जाते हैं। देश में शायद ही ऐसा कोई पुस्तकालय हो जिसमें पूर्ण वैदिक साहित्य की उपलब्धि हो। इस तरह आज का हिन्दू समाज वैदिक साहित्य से पूर्ण अनभिज्ञ होता जा रहा है। सिनेमा (छविगृह) और उपन्यास के आगे वैदिक आश्रमों और वैदिक साहित्य की पूर्ण उपेक्षा सी हो गई है। वैदिक आश्रमों का स्थान छविगृहों ने और वैदिक साहित्य का स्थान आज के गन्दे उपन्यासों ने ले लिया है। निन्यानवे प्रतिशत ऐसे हिन्दू बालक और बालिकायें मिलेंगी जिन्हे वेद का नाम तक नहीं मालूम है।

वैदिक परम्परा विश्व के लिये आदर्श थी और इसी वैदिक परम्परा के कारण ही संसार इस देश को अपना पथ प्रदर्शक मानता रहा है। दर्शन उपासना और सदाचार आदि जो कुछ भी है, वैदिक साहित्य पर अवलम्बित है। यजुर्वेद के चालिसवें अध्याय के दो मंत्रों––

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे ॥"

पर ही गीता के अठारह अध्यायों का प्रणयन हुआ है। वेदों में केवल आधिभौतिक उन्नति की चरम सीमा ही नहीं है अपितु आधिदैविक अभ्युदय की भी चरम सीमा है। दिव्य गुण, दिव्य शक्ति, दिव्य विभूति, और दिव्य लोक की प्राप्ति के लिये सत्य, सदाचार, नीति, यज्ञ और संस्कार आदि के पालन की भी विधि वेदों में है।

वेदांग को कल्प सूत्र कहा जाता है। कल्प का अर्थ नीति-न्याय और विधान होता है और संक्षिप्त एवं साररूप निर्दोष वाक्य ही सूत्र कहलाते हैं। इस तरह कल्प और सूत्र दो शब्दों से कल्प सूत्र की रचना होती है। कर्मकाण्ड ही कल्प सूत्र की आधार शिला है। हिन्दू धर्म के सम्पूर्ण कर्म, संस्कार, अनुष्ठान आदि आदि कल्प सूत्रों से ही निसृत हुये हैं। कल्प सूत्र तीन प्रकार के होते हैं। वैदिक संहिताओं में यज्ञ सम्बन्धी विधि, विधान और विवरण को श्रौत सूत्र कहा जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कर्तव्यों एवं अनुष्ठानों की विधि को गृह्य सूत्र कहते हैं। इसी प्रकार परमार्थिक, राजनैतिक और सामाजिक कर्तव्यों के निर्वाह प्रणाली को धर्म सूत्र की संज्ञा दी गई है। इस तरह श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र और धर्म सूत्र मिलकर कल्प सूत्र कहे जाते हैं।

गृह्य सूत्र के यज्ञ और संस्कार दो प्रमुख अंग माने गये हैं। कल्प सूत्र ग्रन्थों में आश्वलायन गृह्य सूत्र ही प्रधान है जिसमें गृहस्थ के यज्ञों और संस्कारों का विस्तृत विवरण पाया जाता है। शांखायन गृह्य सूत्र में संस्कारों का वर्णन आया है। इनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक संस्कार वैदिक संस्कारों से सर्वथा भिन्न हैं। वैदिक साहित्य की अनभिज्ञता के कारण ही आधुनिक संस्कारों का विकृत रूप हो गया है। मानव जीवन का अन्तिम संस्कार-मृत्यु संस्कार होता है। आश्वालय गृह्य सूत्र के चौथे अध्याय की चतुर्थी कण्डिका में अंत्येष्टि क्रिया का विस्तृत विवरण आया है।

मृत्यु के अनन्तर अन्त्येष्टि क्रिया के अधिकारी पुरोहित को बुलाकर शव यात्रा का प्रबन्ध करते थे। वैदिक मंत्रों के साथ शव यात्रा निवास स्थान से प्रारम्भ होती थी जिसमें मृतक के सगे सम्बन्धियों के अलावा मित्र और पड़ोसी भी भाग लेते थे। निवास स्थान से दूर एकान्त में चिता स्थान का निर्माण किया जाता था। चिता स्थान का निर्माण हो जाने पर ही शव को यात्रा के लिये उठाया जाता था। सगे सम्बन्धी शव को कंधों पर एक विशेष विमान पर सजाकर अविराम गति से निवास स्थान से चिता स्थल तक ले जाते थे।

चिता स्थल पर पुरोहित द्वारा त्रयाग्नि की स्थापना की जाती थी। गार्हपत्याग्नि, दक्षिणाग्नि, और आहवनीयाग्नि. त्रयाग्नि कही जाती थी। इन तीनों अग्नियों का अलग अलग विवरण है। गृहस्थ के रोजाना काम में आने वाली अग्नि को गार्हपत्याग्नि; यज्ञार्थ भोग निर्माण में काम आने वाली अग्नि को दक्षिणाग्नि और हवन करने वाली अग्नि को आहवनीयाग्नि कहा जाता था। इन तीनों अग्नियों के अलग अलग स्थान होते थे और इन तीनों का मेल विशेष अवसरों पर ही होता था।

चिता के समीप ही पुरोहित द्वारा तीनों अग्नियों को एक साथ ही प्रज्वलित की जाती थीं। यदि मृतक को आहवनीय अग्नि पहले स्पर्श करतो तो साथ में जाने वाले समझ जाते थे कि मृतक को स्वर्ग प्राप्त हुआ और उसके बाल बच्चे संसार में रह कर समृद्धिता को प्राप्त होंगे। गार्हपत्याग्नि के पहले स्पर्श करने पर अन्तरिक्ष लोक मिलने का अन्दाज लगाया जाता था और दक्षिणाग्नि के स्पर्श करने पर मनुष्य लोक प्राप्त करने का सकेत समझा जाता था और यदि तीनों अग्नियाँ एक साथ ही शव को स्पर्श करतीं तो उसे आवागमन से रहित मान लिया जाता था। इस तरह अग्नि स्पर्श से ही जीव की गति अगति का भाव समझ लिया जाता था।

चिता प्रज्वलित हो जाने पर––

"प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्वेभिः" (ऋग० १०-१४-७)

मंत्र पढ़ा जाता था जिसका अर्थ होता है कि जिस मार्ग से पूर्वज गये हैं उसी मार्ग से तुम भी जाओ। चिता में शव के जल जाने पर सगे सम्बन्धी तथा अन्य शव वाहक आदि––

"इये जीवा वि मृतैरावृचन" (ऋग० १०-१८-३)

कहते हुये, चिता को बाँई ओर छोड़कर लौट आते थे और फिर मुड़कर पीछे की ओर नहीं देखते थे। इस मंत्र का अर्थ– ये जीवित प्राणी मरे हुये प्राणो के पास से लौट रहे हैं, होता है। चिता स्थान से वे लोग किसी जलाशय में जाते थे और स्नान कर गीले वस्त्र पहने हुये मरे हुये प्राणी का नाम और गोत्र का उच्चारण करते हुये जलांजलि दिया करते थे। इसके बाद नये वस्त्र धारण करते थे।

यदि घर लौटते समय सन्ध्या हो जाती तो घर में वे तब तक प्रवेश नहीं करते थे; जब तक कि आकाश में तारागण न देख लेते और यदि रात्रि में शव दाह किया जाता तो लोग सूर्योदय के बाद ही गृह प्रवेश करते थे। घर में प्रवेश के पूर्व पुनः स्नान कर तथा यज्ञोपवीत धारण करते और सन्ध्या वन्दन कर पवित्र होते थे। मृतक संस्कार के बाद आश्वालय गृह सूत्र की कण्डिका सात और आठ में वर्णित मृतक के नाम पर मृतक के पुत्र पौत्रादि द्वारा नियमित श्राद्ध किया करते थे। श्राद्ध का यह प्रकरण बहुत विस्तृत और बड़े विधान का है।

आज कल जो मृतक संस्कार किया जाता है; वह इसी वैदिक काल के मृतक संस्कार का ही विकृत रूप है। जिस विधि विधान से वैदिक कालीन मृतक संस्कार पूर्ण किया जाता था; वैसा अब नहीं किया जाता। चिताग्नि प्रज्वलित करने की सामग्री भी हवन पद्धति पर निर्भर थी। आर्य लोग मृतक संस्कार को भी एक प्रकार का यज्ञ ही मानते थे। आर्यों का जीवन ही यज्ञ मय था।

आर्य बंधु दयानंद के वीर सैनिक बनें और वेदों के प्रचार में जुट जायें

दशम आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के अध्यक्षपद से महात्मा आनन्द स्वामी जी का उद्बोधक भाषण

हैदराबाद ८ नवम्बर ६८। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी महात्मा आनंद स्वामी जी महाराज ने हैदराबाद में आयोजित दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष पद से ओजस्वी और उद्बोधक भाषण देते हुए आर्य समाज को अपनी सम्पूर्ण शक्ति वेदों के प्रचार में लगाने तथा वेदों के उपदेशों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का अनुरोध किया। स्वामी जी का भाषण निम्न प्रकार है—

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो,
त्वं माता शतक्रतो वभूविथ अधा ते सुमून मीमहे।
ऋ० ८-९८-११

माताओ तथा सज्जनो !

४१ वर्ष व्यतीत हो गए जब सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का आरम्भ हुआ था, उस महासम्मेलन के प्रधान पूज्य महात्मा हंसराज जी महाराज बनाए गए थे। और अब १० वें सम्मेलन का यह भार मुझे सौंपा गया है। संन्यास लेकर मैंने अपना मार्ग कुछ ऐसा निर्धारित किया था जिसमें ऐसे सम्मेलन सहायक नहीं बनते। मेरी इच्छा भी नहीं थी कि मैं इसे स्वीकार करता, किन्तु सारे आर्य जगत की आज्ञा की अवहेलना करना भी मैंने उचित नहीं समझा। क्योंकि आर्य जगत के इतने अहसान मुझ पर हैं कि उसके आदेश पर मैं दहकते अग्नि-कुण्ड में भी कूद सकता हूं। अतः मुझे यह आज्ञा मानकर आपकी सेवा में उपस्थित होना पड़ा। आर्य समाज के इस दशम महासम्मेलन में देश के कोने-कोने से हजारों माताएं, और श्रद्धालु आर्य जन आए हैं--उन सभी को महर्षि के प्रति अगाध प्रेम है, यही प्रेम उन्हें यहां लाया है।

हम सभी को आज गंभीरता से अपने कर्तव्य का और भावी कार्यक्रमों का विचार करना है। मेरी प्रार्थना तो केवल यही है कि हमें सदा एक बात स्मरण रखनी है कि हम महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं और हमारा काम महर्षि के दिव्य स्वप्नों को पूर्ण करना है।

महर्षि का उपकार

हमारे गुरुदेव दयानन्द ने समाधि का सुख छोड़कर, विष के प्याले पी-पीकर ईंट-पत्थर और गालियां खाकर भी मनुष्य जाति को मृत्यु मार्ग से हटा जीवन और आनन्द के मार्ग पर चलाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। महर्षि चाहते थे कि संसार में रहने वाले ईश्वर के अरबों पुत्र सच्चे अर्थों में पिता के पुत्र बन आनन्द, शान्ति और प्रेम के मार्ग पर चलें। दुःख की छाया भी किसी के पास न आए। इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी और आज इस पवित्र लक्ष्य की पूर्ति कैसे हो, हमने यही विचार करना है। आज संसार में बहुत बड़े तूफान उठ खड़े हुए हैं। इन तूफानों से धरती पर सत्य का सिंहासन हिल रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म, मानवता, सभ्यता और संस्कृति को विनाश करने वाले उन तूफानों का सामना करने के लिए कार्य क्षेत्र में आए थे। भारत ही नहीं दुनियां के सभी देशों में इस समय भयंकर हा-हाकार मचा हुआ है। विज्ञान ने मानव को सुखी बनाने के लिए कसर उठा नहीं रखी परन्तु कष्टों, क्लेशों विपदाओं व परस्पर के संघर्षों में मानव अधिक फंसता हुआ चला जा रहा है।

आर्य समाज की सेवाएं

पिछले २०-२५ वर्षों में दुनियां के अन्दर जो नाना प्रकार के परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं उनसे मानव सुखी नहीं हुआ अपितु दुःखी हो गया है। आर्य समाज ने अपने गत ९३ वर्षों में अपनी शक्ति से बढ़ कर कार्य किया है। अपने संपूर्ण कार्यों द्वारा आर्य

समाज मनुष्य मात्र के कल्याण और उत्थान के लिए यत्नशील रहा है। वस्तुतः निष्पक्ष भाव से विचार किया जाए तो भू-मंडल में आर्य समाज ही एक मात्र ऐसा संगठन है जो मनुष्य-मनुष्य के बीच की समस्त दीवारों को समाप्त कर देना चाहता है। वह संसार के प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई समझता है। वर्ग-जाति रंग, नस्ल, ऊंच-नीच और देश के आधार पर आर्य समाज मनुष्य मनुष्य में कोई भेद स्वीकार नहीं करता।

आर्य समाज वेद के शब्दों में एक ऐसे संसार का निर्माण करना चाहता है :—

यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्

यह संसार एक घोंसला बन जाए। सारे दुःख और सारे सुख हम मिलकर बांट लें तो फिर दुःख कहां रहेगा ? द्वेष, दुःख, ईर्ष्या और घृणा की हस्ती को आर्य समाज जड़ मूल से मिटा कर प्रेम-एकता आनन्द के पवित्र संदेश को सर्वत्र प्रसारित करने के लिए कृत-संकल्प है।

इस महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज जन्म काल से ही यत्नशील रहा है। भारत वर्ष के अविद्यान्धकार में प्रकाश-ज्ञान की किरणें फैलाने का उसका प्रयत्न अत्यन्त सफल रहा और उसके कार्यों का ही यह परिणाम है कि आज स्त्री शिक्षा में वह लोग भी बढ़ कर भाग ले रहे हैं जो उनकी शिक्षा के कट्टर विरोधी थे। वर्ण व्यवस्था तो स्थापित नहीं हुई पर जाति पांति के बन्धन स्वयंमेव दूर होते जा रहे हैं। विद्या प्रचार के लिए आर्य समाज ने गुरुकुलों, कालिजों, पाठशालाओं और विद्यालयों का एक जाल-सा देश में बिछा दिया है जिसका अनुकरण अन्य लोग भी कर रहे हैं।

दैवी संकट में सेवा, सहायता के कार्य भी सबसे पहले आर्य समाज ने आरंभ किये। बीकानेर के अकाल, कांगड़ा के भूचाल और दक्षिण के तूफान व मालाबार के भयंकर नर-संहार में, बिहार और क्वेटा के भूकम्प में और इसी प्रकार सर्वत्र कष्ट क्लेश व दैवी विपदाओं में आर्य समाज के सेवक प्रथम पंक्ति में रहे हैं।

राष्ट्र की पराधीनता को स्वतन्त्रता में बदलने का मूलमन्त्र भी सबसे प्रथम आर्य समाज ने ही दिया। उसकी शिक्षा के परिणामस्वरूप निर्भयता और स्वराज्य की भावना फैलती गयी—और यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि १८५७ के भयंकर दमन के बाद महर्षि दयानन्द ने भारत को वैदिक संजीवनी न दी होती तो आज इस देश में राम-कृष्ण की, ऋषि-मुनियों की संस्कृति समाप्त हो चुकी होती।

आर्य समाज के प्रयत्नों और नए जागरण से देश स्वतन्त्र तो हो गया पर स्वराज्य के २० वर्ष बीतने पर भी भारत सुखी न हो सका। सुख की खोज में भटकती हुई दुनियां सुख से दूर होती जा रही है। जैसा पहले मैंने कहा तूफान बड़ा भयंकर है भारत स्वतन्त्र तो हो गया परन्तु इसके विरोधियों की गिनती भी बहुत बढ़ गई। हर प्रकार से भारत को नीचा दिखाए रखने के लिए चारों ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। भारत के बाहर और भीतर से यह विरोधी तूफान बढ़ते ही चले जा रहे हैं। ऐसे समय में एक आर्य समाज ही ऐसी शक्ति दिखाई देती है जो इन तूफानों का सामना कर सके और आज भी मानवता की रक्षा और भारत के उत्थान व दुनियां को सन्मार्ग बताने के लिए आर्य समाज ही हमारी आशाओं का केन्द्र है। ऋषि दयानन्द के वीर सैनिकों से मुझे कहना है कि तूफान तो उठते ही रहते हैं और उठते ही रहेंगे। इनका मुकाबला हम आर्यों को करना ही होगा।

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो॥

शारीरिक व आत्मिक उन्नति

ऐसी अवस्था में करना क्या है ? पहली बात, आर्य समाज को सशक्त बनाना। आर्य समाज की शिथिलता का सबसे बड़ा कारण आध्यात्मिकता की कमी है। आज से ३७ वर्ष पूर्व महात्मा नारायण स्वामी जी ने भी कहा था कि—"जन्म काल ही से जो उदासीनता आर्य समाज के सदस्यों ने आत्मिक सुधार के सम्बन्ध में दिखाई है वह अक्षम्य है। जहां

देखो दलीलबाजी मिलेगी । तर्क-ऋषि प्रतिष्ठित मिलेंगे । इस तर्क साम्राज्य में जो आर्य समाजियों ने स्थापित कर रखा है श्रद्धा और विश्वास का कोई स्थान नहीं है । इसीलिए ईश्वर विश्वास, आस्तिक बुद्धि, और भक्ति व प्रेम के बाहुल्य से जो तेज और शान्ति की झलक चेहरे से दिखाई दिया करती है, उनसे अधिकतर आर्यों के चेहरे शून्य मिलेंगे ।'

मैं महात्मा नारायण स्वामी जी के शब्दों से पूर्णतया सहमत हूं । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में शारीरिक और आत्मिक उन्नति को साथ साथ रखा है । जब तक पक्षी के दोनों पंख न हों तब तक वह उड़ ही नहीं सकता । आज की दुनियां के दुःख और बिगाड़ का सबसे बड़ा कारण यही है, यह भौतिक उन्नति की ओर तो दौड़ती चली जा रही है और आध्यात्मिकवाद को इसने सर्वथा भुला दिया है । आर्य समाज की शिथिलता का भी कारण यही है और इसके अन्दरूनी झगड़ों का भी कारण यही है । आध्यात्मवाद के द्वारा एक ऐसा आत्मिक बल उत्पन्न होता है जिसके तुल्य कोई भौतिक शस्त्र-अस्त्र नहीं है । और इस बल को बढ़ाने के लिए महर्षि ने अपने ग्रन्थों में लिखा है कि प्रत्येक को न्यून से न्यून १ घण्टा ध्यानावस्थित होना चाहिए । महर्षि के ये शब्द हमें सदा समक्ष रखने चाहिए । आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी नहीं घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा ।

आर्य समाज में अध्यात्म की कमी के कारण आज देश में कितने ही मत मतान्तर निकल आए हैं जो थोड़े ही वर्षों में सर्व साधारण पर छा गए। महर्षि ने कार्यक्षेत्र में तब पदार्पण किया था जब निरन्तर २५-३० वर्षों तक साधना की भट्टी से अपने जीवन को गुजार चुके थे और आत्मिक व शारीरिक शक्ति प्राप्त कर चुके थे । तभी वे केवल ९ वर्षों में इतना बड़ा कार्य कर गए कि आज आर्य समाज के एक करोड़ के लगभग अनुयायी भी नहीं कर पा रहे ।

आर्य समाज के लिए आवश्यक है कि जैसे उसने नाना प्रकार की संस्थाओं द्वारा शारीरिक उन्नति के साधन जुटाए हैं इसी तरह साधना आश्रमों की स्थापना कर अध्यात्म बल को बढ़ाने का यत्न करें । हम सभी सदा यह स्मरण रखें कि हमें यह मनुष्य शरीर एक पवित्र लक्ष्य सिद्धि के लिए मिला है । वह लक्ष्य है प्रभु प्राप्ति । परमात्मा को भूल कर इस संसार में और भले ही सब कुछ मिल जाए पर शान्ति और आनन्द नहीं मिल सकता ।

अध्यात्मवाद का रास्ता छोड़ देने से ही आर्य समाज की आंतरिक स्थिति भी शोचनीय होती जा रही है । स्थान-स्थान पर परस्पर वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष व कलह-क्लेश देखने में आते हैं । यह रोग इतना बढ़ चुका है कि अब इसकी चिकित्सा होनी ही चाहिए और इसके लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित विशेष न्यायाधिकरणों को सक्रिय और सबल होना चाहिए । और यह अनिवार्य नियम होना चाहिए कि आर्य समाज के सारे विवाद सरकारी न्यायालयों में न जाकर सार्वदेशिक सभा द्वारा सघटित न्याय सभा द्वारा ही निपटाए जाएं । कोई भी आर्य किसी भी स्थिति में आपस के विवादों को लेकर राजकीय न्यायालय में न जाए । जो जाए उसे आर्य समाज का सभासद न समझा जाए । इस अनिवार्य नियम के होने से और अपनी न्याय सभाओं द्वारा न्याय कराने से ही इस पवित्र संगठन में एकता और प्यार बच सकेगा । अतः इस विषय में देरी न कर शीघ्र से शीघ्र आवश्यक पग उठाने चाहिए । वस्तुतः मुकदमेबाजी से कभी झगड़े का निपटारा नहीं होता । परस्पर सहनशीलता, सामंजस्य की भावना और लक्ष्य के प्रति प्रेम व सहिष्णुता से ही समाज उन्नति कर सकता है । झगड़े तो निकृष्ट स्वार्थ से होते हैं इसे दूर करने के लिए अध्यात्मवाद ही अमोघ अ ा है ।

आर्य समाज और राजनीति

आज के युग में विज्ञान और राजनीति दो बड़े हथियार माने जाते हैं । इन दोनों से ही आर्य समाज ने कार्य लेना है । आर्य विचारधारा वाले वैज्ञानिक वैदिक सिद्धान्तों का विज्ञान द्वारा समर्थन करें और राजनीति में रुचि रखने वाले आज की बिगड़ी राजनीति का सुधार करें । प्रचलित राजनीति तो इतनी गन्दी, घिनौनी और बदनाम हो चुकी है कि कोई भला आदमी तो इसमें भाग लेने के लिए तैयार नहीं

होता। आर्य समाज के कुछ महानुभाव आर्य समाज को बलशाली बनाने के लिए यह सुझाव देते हैं कि आर्य समाज को सामूहिक रूप से राजनीति में भाग लेना चाहिए परन्तु इस राजनीति का अर्थ है केवल निर्वाचनों में भाग लेना और वोट एकत्र करना। और जिस प्रकार से आज वोट एकत्र किए जाते हैं क्या वही ढंग आर्य समाज बर्तने के लिए तैयार होगा? यदि होगा तो उसका पतन हो जाएगा, यदि नहीं होगा तो सफलता नहीं मिलेगी। फिर राजनीति में भाग कैसे लें, इसका मार्ग महर्षि ने दिखाया है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि--

"राजा और राजसभा के सभासद तब हो सकते हैं कि जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना, ज्ञानविद्याओं के जानने वालों से तीनों विद्या, सनातन दण्डनीति, न्यायविद्या, आत्मविद्या, अर्थात् परमात्मा के गुण, कर्म स्वभाव रूप को यथावत जानने रूप ब्रह्म विद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ (कहना और पूछना) सीखकर सभासद वा सभापति हो सकें। सब सभासद और सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश में रख के सदा धर्म में बर्तें और अधर्म से हटे-हटाए रहें, इसलिए रात-दिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें, क्योंकि जो अजितेन्द्रिय अपनी इन्द्रियों (जो मन, प्राण और शरीर प्रजा है इस) को जाने बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।"

ऋषि के इस आदेश के अनुसार जो अपने को बना सकें वे राजनीति में लगें परन्तु बिना इस स्थिति को प्राप्त किए जो राजनीति में प्रवेश करेंगे, वे राजनीति का सुधार न कर सकेंगे अपितु आर्य समाज को शिथिलता का ही कारण बनेंगे। इसके साथ ही हमें आज की राज्य शक्ति और विज्ञान शक्ति का उपयोग अध्यात्म की उन्नति में करना है। वस्तुतः आर्य समाज आज के युग का मार्गदर्शन विज्ञान को अध्यात्म की खोज में प्रवृत्त करके ही कर सकता है। भौतिकवादी विज्ञान से भौतिक पदार्थों के रहस्य खोज रहे हैं। उन्हें सफलता भी मिल रही है। किन्तु समस्त भौतिक पदार्थों का भोक्ता जो 'मैं' हूं, जिसे आत्म तत्व कहते हैं उसे कोई नहीं जानता। संसार के विश्वविद्यालयों में और सभी कुछ पढाया जाता हैं किन्तु कहीं यह पढ़ाने का प्रबन्ध नहीं कि यह "मैं" कौन है? अतः सुख-शांति और आनन्द की धारा पृथ्वी तल पर बहाने, और साकार स्वर्ग दुनियां को बनाने के लिए आवश्यकता है कि विज्ञान और राजनीति अध्यात्म की खोज और प्रेरणा में लगें। इस राह का मार्गदर्शन केवल आर्य समाज ही कर सकता है।

वेद प्रचारक की आवश्यकता

आर्य समाज की शक्ति को बढ़ाने का सबसे बड़ा साधन यह है कि विदेशों में वेद का सन्देश पहुंचाया जाए। मैं योरुप तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के अनेक देशों में भ्रमण कर आया हूं, वहां के लोग वेद की बात बड़ी श्रद्धा-भक्ति से सुनते हैं पर वेद को अपनी भाषा में पढ़ना चाहते हैं। राम-कृष्ण परमहंस के सच्चे शिष्य, स्वामी विवेकानन्द जी ने विदेशों में जाकर परमहंस रामकृष्ण जी का नाम अमर कर दिया। संसार का कोई देश ऐसा नहीं जहां रामकृष्ण मिशन न मिलते हों और भारत में भी इनकी शक्ति बढ़ती जा रही है। महर्षि दयानन्द को कोई विवेकानन्द नहीं मिला जो विदेशों में वेद का सन्देश सुनाता, फैलाता। योरुप, अफ्रीका आदि देशों के लोग पूछते हैं कि क्या वेद इंगलिश, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं में मिलते हैं। जिस प्रकार आर्य समाज ने अध्यात्मवाद से उदासीनता दिखाई उसी तरह वेद को विभिन्न भाषाओं में प्रसारित करने में भी उदासीनता दिखाई। अब तो यह उदासीनता छोड़नी चाहिए और वेदों के विभिन्न भाषाओं में सुन्दर प्रकाशन की व्यवस्था में आर्य समाज को शक्ति लगानी चाहिए। हमें यह किसी भी स्थिति में नहीं भूलना चाहिए कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना हमारा साधारण नहीं --परम धर्म है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है उसकी उन्नति करना हमारा कर्तव्य है। किन्तु आर्य समाज का वास्तविक कार्य तो वेद-प्रचार है। एक भाषा से चिपटकर तो वेद का सन्देश संसार में नहीं फैल सकता इसलिये संसार की प्रमुख भाषाओं में वेद भाष्य का आयोजन हमें अवश्य ही करना चाहिए और इस

सम्मेलन में पधारे आर्य महानुभावों से मैं प्रार्थना करता हूं कि वे इस दिशा में रचनात्मक पग उठाएं। मैं तो इस दशम आर्य महासम्मेलन को तभी सफल समझूंगा जब इस दिशा में क्रियात्मक पग उठाने का वे संकल्प लेंगे। इसके साथ ही हमें प्रचार के आधुनिकतम उपाय भी व्यवहार में लाने होंगे। हमारा साहित्य, हमारे अखबार, ट्रेक्ट सभी ऐसे सुन्दर और आकर्षक होने चाहिए कि उन्हें देखकर, पढ़कर सभी प्रभावित हों। विज्ञान ने प्रचार के जो नवीनतम साधन रेडियो, टेलीविजन, चल-चित्रादि खोजें हैं उनकी उपेक्षा कर हम अपना सन्देश नहीं फैला सकते। हमें अपनी विचारधारा फैलाने के लिए सभी सम्भव और आधुनिकतम साधनों का प्रयोग करने के साधन जुटाने चाहिए।

देश-विदेश में अच्छे और प्रभावशाली प्रचारक तैयार कराने और फिर उनकी जीविका का प्रबन्ध करने की ओर ध्यान देना भी आगे बढ़ने के लिए परमावश्यक है। त्यागी, तपस्वी, साधक युवकों का स्वागत, सम्मान कर उन्हें वेद-सन्देश फैलाने की प्रेरणा करना भी आज की अनिवार्य आवश्यकता है। यह हर्ष की बात है कि हैदराबाद के आर्य बन्धु इस दिशा में क्रियात्मक पग उठा रहे हैं।

गो वंश की रक्षा और विकास

आर्य समाज को स्वामी दयानन्द जी महाराज ने गो-करुणानिधि देकर यह आदेश दे रखा है कि गोवंश की वृद्धि की जाए। किन्तु गो-रक्षा केवल नारों से नहीं हो सकती और न ही यह कार्य केवल सरकार के सुपुर्द किया जा सकता है। इसलिए आर्य समाज ने जैसे लोगों के अज्ञान को दूर करने के लिए विद्यालय स्थापित किए हैं इसी प्रकार गो-वंश वृद्धि के लिए गो-निकेतन आरम्भ करने चाहिएं। साथ ही सरकार को भी चाहिए कि वह अविलम्ब कानून द्वारा गो-वंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाए।

योरुप तथा दूसरे देशों में ईसाइयत की प्रगति रुक चुकी है क्योंकि यह साइंस के विपरीत है। ईसाई मत के सेवकों ने यह देखा कि ईसाइयत के सिद्धान्त लोगों पर प्रभाव नहीं डाल सकते इसलिए उन्होंने ईसाइयत प्रसार के लिए सेवा-त्याग और प्रलोभन से कार्य लेना आरम्भ कर रखा है और भारत में इन्हीं के बल पर ईसाइयत फैल रही है। हम केवल भाषणों से उनका सामना नहीं कर सकते। जहां कहीं ईसाइयों ने अपने अस्पताल, मंदिर आदि बनाए और सेवा कार्य आरम्भ किया वहां पहुंचकर हमें भी सेवा और त्याग का सहारा लेकर कार्य करना चाहिए। साथ ही सरकार को चाहिए कि वह विदेशी पादरियों की राजनैतिक गतिविधियों को धर्म-प्रचार की ओट में न पनपने दे।

आर्य समाज ने जो शुद्धि का कार्य आरंभ किया था—उसमें सामूहिक शुद्धि के कार्य में हम सफल हुए—किन्तु व्यक्तिगत शुद्धि में सफलता हमसे दूर रही क्योंकि हमने अपनाया नहीं। इस दिशा में व्यावहारिक और ठोस पग उठाने की आवश्यकता है। शुद्ध हुए बन्धुओं की आवश्यकताओं की पूर्ति और सामाजिक सम्मान के विषय में हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

अछूतोद्धार का कार्य आर्य समाज अपूर्व सफलता से कर रहा था और जिन्हें अछूत कहा जाता था उन्हें आर्य समाज सभी के बराबर बिठा रहा था किन्तु स्वराज्य मिलते ही जिन लोगों के हाथों राज्य की बागडोर आयी उन्होंने आर्य समाज के ७० वर्ष के परिश्रम पर पानी फेर दिया। इस अछूतोद्धार के लिए कितने ही आर्य युवकों ने अपनी बलि देकर अछूत कहे जाने वालों को यज्ञोपवीत देकर द्विज बनाया। किन्तु शासन ने हरिजन नाम और उन्हें कानून का संरक्षण देकर उन्हें विशेष वर्ग के रूप में पैदा किया। परिणामस्वरूप जिन्हें आर्य समाज ने उठाया था और संस्कार तक कराते थे वे फिर उसी गढ्ढे में गिर गए और इस नीति ने देश में एक गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी है जिसके लिए उत्तरदायी सरकार की अदूरदर्शितापूर्ण नीति है।

भावी कार्यक्रम

आज हैदराबाद में यह सम्मेलन हो रहा है। यह हैदराबाद वह संग्राम-स्थली है जहां युवक व वृद्ध आर्यों का खून बह चुका है। निजामशाही के अन्याय के विरुद्ध आर्य समाज ने जब सत्याग्रह आरंभ किया तो

कहा गया कि आर्य समाज ने पहाड़ से टक्कर लगाई है किन्तु दुनियां ने देख लिया कि आर्य वीरों के बलिदान, तप, त्याग पवित्र भावना ने आज उस पहाड़ का अस्तित्व भी समाप्त कर दिया है। आर्य समाज का यह सत्याग्रह पूर्ण सफल रहा था। अतः हम श्रद्धा से स्वर्गीय श्री श्यामलाल, विष्णु भगवान, दत्तात्रेय, शिवचन्द्र आदि वीर शहीदों की स्मृति में सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ऐसी पवित्र भूमि पर यह सम्मेलन हो रहा है, हमें यहां से तब उठना चाहिए जब हम ऐसे निश्चय कर लें कि जिन से आर्य समाज पूर्ण शक्तिशाली होकर महर्षि के महान लक्ष्य को पूर्ण कर सके। अन्त में मैं अपने हृदय की बात आपसे कहना चाहता हूं और वह यह कि—

१. आर्य समाज में अध्यात्मवाद को मुख्य स्थान दिया जाय।

२. वेद विचार के प्रसार और प्रचार के लिए जो आर्य देवी पुरुष स्वाध्यायशील हैं वे वानप्रस्थ या संन्यास ग्रहण कर प्रचार में जुट जाएं।

३. विदेश प्रचार के लिए इंग्लिश, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं में प्रचारक और साहित्य तैयार किए जाएं।

४. आर्य समाज के आंतरिक झगड़ों को मिटाने के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित निष्पक्ष सज्जनों की न्याय सभाएं कार्य करें।

५. आर्य समाजें अन्य कार्यों को करते हुए गो निकेतन भी आरंभ करें।

६. जो लोग राजनीति में भाग लेना चाहते हैं वे पहले योग साधन की भट्टी में से अपने को गुजारें।

७. सन्यासियों, उपदेशकों और विद्वानों का पूर्ण सम्मान होना चाहिए ताकि वे अनुभव करें कि वेद प्रचार करते हुए उनका कार्य आदर की दृष्टि से देखा जा रहा है।

माता और सज्जनो!

मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता। मेरा हृदय तो आपके उत्साह और उमंग को देख कर हर्ष विभोर हो रहा है। मैं तो वह दिन देखने के लिए तरस रहा हूं जब सत्य, धर्म और मानवता की प्रतीक 'ओ३म्', की यह पावन पताका धरती के प्रत्येक मनुष्य के हृदय मंदिर पर लहर-लहर लहराएगी।

मैं तो आपसे यही प्रार्थना करता हूं कि आप दयानन्द के वीर सैनिक बनें और वेद विचार के प्रचार के लिए जुट जाएं। आपस की फूट, ईर्ष्या द्वेष, स्वार्थों को यज्ञ की अग्नि में समाप्त कर प्रेम, एकता, संगठन और त्याग का मन्त्र लेकर यहां से जाएं और अपने महान् गुरु दयानन्द ऋषि के चरणों की स्मृति में बैठकर व्रत लें कि हम अपनी पूरी शक्ति महर्षि के दिव्य स्वप्नों की पूर्ति में लगा देंगे।

आर्य माताओ और सज्जनो! ध्यान से देखो और विचारो, हमारे धर्म पर, संस्कृति और परंपरा पर संकट की ऐसी काली घटा सारे इतिहास में कभी नहीं मंडरायी जैसी आज आयी है। समस्त आसुरी शक्तियां अपने हथियार सजा कर सत्य, धर्म और मानवता को मिटाने की तैयारी कर निरंतर आगे बढ़ रही हैं। ईश्वर के अमृत पुत्रो! उठो! अपने गुरु के चरण चिन्हों पर चल कर, सत्य का बल और प्रभु का विश्वास लेकर, पवित्र 'ओ३म्' पताका के साथ आगे बढ़ो! कार्य करो, विजय निश्चय ही तुम्हारी होगी क्योंकि सत्य तुम्हारे साथ है।

एक सन्यासी होने के नाते मैं आपसे गुरुदेव देव दयानन्द का कार्य पूरा करने की भिक्षा मांगता हूं——

"प्राण जाएं तो जाएं, पर वेद की ध्वजा न झुकने पाए"

मुझे विश्वास है कि आप यह भिक्षा अवश्य ही मेरी झोली में डालेंगे, और मेरे साथ मिल कर घोषणा करेंगे कि—

"वैदिक धर्म जहां से मिटा है न मिटेगा,
फूंकों से आफताब बुझा है न बुझेगा।"

राष्ट्र विरोधी तत्वों का दृढ़ता से दमन किया जाये

ईसाई धर्मान्तरण के विरुद्ध अभियान जारी किया जाये

आर्य महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष पं. नरेन्द्र जी की गर्जना

हैदराबाद, ८ नवम्बर। "देश के विभाजन के बाद भी साम्प्रदायिक तत्व दो-राष्ट्रों के सिद्धांत का खुला समर्थन कर रहे हैं और अब इन्हीं तत्वों द्वारा इसी सिद्धांत के अनुसार केरल में पृथक जिला बनाने और एक वर्ग विशेष की जनता को एकत्र करने के लिए सूबों के निर्माण की माँग उभारी जा रही है। ये तत्व वस्तुत: देश के शत्रु हैं और इनकी निष्ठा किसी अन्य देश के प्रति है। केन्द्रीय सरकार को राष्ट्र की अखण्डता और सुरक्षा के लिए इन तत्वों का कठोरता से दमन करना चाहिए।"

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष पण्डित नरेन्द्र जी ने आर्य महासम्मेलन में देश के कोने कोने और विदेशों से आए हुए सहस्रों प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए उक्त उद्गार प्रकट किये।

आपने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने ऐसा न किया तो देश की स्वाधीनता और अखण्डता के लिए एक भयानक परिस्थिति उत्पन्न होगी। सरकार को चाहिए कि वह ऐसे संगठनों पर कड़ी दृष्टि रखे। आर्य समाज ऐसे देशद्रोही तत्वों को उजागर करने में प्रयत्नशील रहा है और आर्य समाज का कोई भी सदस्य ऐसे तत्वों को कदापि सहन न करेगा।

आर्य समाज और राजनीति

आपने आर्य समाजी नेताओं से अनुरोध किया कि आर्य समाज से लेकर केन्द्रीय संगठन तक आर्य समाज का कोई भी पदाधिकारी किसी राजनैतिक दल का सदस्य न बने। क्योंकि व्यक्ति प्रजातन्त्र के प्रवाह में अपना स्वतन्त्र प्रभाव नहीं डाल सकता। आर्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि वह पूर्ण तन्मयता और परिश्रम से आर्य समाज के ऊंचे आदर्शों को पूर्ण करने में संलग्न रहेगा।

आर्य समाज की प्रचार पद्धति को पूर्ण रूप से बदलने का सुझाव देते हुए पण्डित नरेन्द्र ने कहा कि शिक्षा और प्रचार विभाग को इस प्रकार पृथक कर दिया जाए कि शिक्षा के विशेषज्ञ शिक्षा विभाग संभालें और अपनी पूरी शक्ति उसी में लगा दें तथा एक ऐसी पूर्ण अधिकार प्राप्त केन्द्रीय संस्था बनाई जाय जो सभी शिक्षा संस्थाओं की निगरानी करे और इन संस्थाओं में धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबंध करे। इसी से भारतीय समाज का स्वस्थ गठन करने में सफलता मिलेगी।

आपने कहा कि हमारी सरकार की ओर से सेक्युलरिज्म का दूषित भाव उत्पन्न किया गया है। इससे जनता नास्तिकता व अधार्मिकता की ओर प्रेरित हुई व राष्ट्रीयता और भारतीय संस्कृति की भावनाएं शिथिल हो रही हैं। भाषा समस्या को आपने राजनैतिक खिलाड़ियों की चाल बताया और कहा कि वर्तमान स्थिति में त्रिभाषा फार्मूला पर ही अमल किया जाना अपेक्षित है। भाषा की उलझन को दूर करने के लिए आपने दक्षिण में एक हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना पर भी जोर दिया।

पं. नरेन्द्र ने कहा कि आज भारतीय संस्कृति के विस्तार और प्रसार की ओर ध्यान देना आवश्यक है, जिस से देश-देशान्तर में इसकी दिग्विजय हो। सार्वदेशिक सभा धर्म और संस्कृति की इस दिग्विजय को अपने हाथ में ले और अपनी ओर से कुशल विद्वानों को भारत का सांस्कृतिक दूत बनाकर एशिया, यूरोप और अफ्रीका महाद्वीपों के देशों में भेजे, ताकि ये लोग उन भूखण्ड के कोने कोने में पहुंचकर भारतीय संस्कृति के दर्शन करायें और वैदिक धर्म के मानवता पर आधारित और शांति के वाहक जीवन आदर्श को पीड़ित और त्रस्त जनता तक पहुंचा सके।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

आर्य समाज के विस्तार के लिये आर्य वीर दल का संगठन आवश्यक

आर्य वीर दल सम्मेलन के अध्यक्ष डा. दुःखनराम जी का भाषण

हैदराबाद, १० नवम्बर। विनायकराव नगर में दशम आर्य महासम्मेलन के तीसरे दिन प्रातः आर्य वीर दल का सम्मेलन पटना विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा. दुःखनराम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इसका उद्‌घाटन करते हुए संसद सदस्य श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने आर्य वीर दल की उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि संकट के समय मानव मात्र की सेवा करना हमारा धर्म होना चाहिए। जो अनुशासन हम सेवा दल में रह कर सीखें उसका जीवन भर पालन करें।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए पद्मभूषण श्री डा. दुःखनराम ने आर्य वीर दल के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा—

आर्य वीर दल की प्रवृत्तियों का इतिहास कई दशकों का है। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान के बाद देश में एक अपूर्व जागृति और क्षोभ व्याप्त हो गया था। यद्यपि आर्य समाज का रंगमंच इतना प्रभावशाली था कि देश में ब्राह्म-शक्ति उछाल का अनुभव कर रही थी परन्तु छात्र-शक्ति का पर्याप्त ह्रास था। वैदिक धर्म "यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरतः सह" की वेदोक्ति के अनुसार ब्राह्म और क्षात्र दोनों ही शक्तियों के साथ साथ चलने में समाज एवं राष्ट्र का कल्याण मानता है। अतः इस न्यूनता की पूर्ति के लिए स्वर्गीय महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में एक प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक आर्य वीर दल की स्थापना हुई। अब तक आर्य वीर दल के अनेकों सम्मेलन हो चुके हैं।

सन् १९४२ में आर्य वीर दल का पुनर्गठन किया गया और इस की बागडोर श्री ओमप्रकाश जी त्यागी को सौंपी गई। सभी प्रान्तों में इसकी शाखाओं का प्रचार और विस्तार हुआ। भारत को स्वतन्त्रता मिलने के समय सारे देश में आर्य वीरों की संख्या एक एक लाख थी। पश्चाद्वर्त्ती काल में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा प्रोत्साहन और सहयोग में ढील पड़ने से इसके कार्य में कुछ शिथिलता आ गई।

डा. साहब ने कहा कि भारत में समय समय पर प्राकृतिक एवं राजनीतिक उतार चढ़ाव के कारण कई विपत्तियां आईं। इन सभी विपत्तियों में आर्य वीर दल सेवा कार्य में अग्रणी रहा है। सन् १९४२ में मिदनापुर में तूफान आया और ४३, ४४ में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा। आर्य वीर दल ने इनमें बहुत बड़ा कार्य किया। नोआखली की पैशाचिकी लीला सन् ४६ में घटी और सन् ४७ में भारत का विभाजन होने से पाकिस्तान की स्थापना हुई। ये दोनों ही घटनायें मानव की दानवी बर्बरता और पाशविकता की अपने ढंग की बेमिसाल घटनायें हैं। इन में जो हानि हुई है वह किसी से छिपी नहीं है। लाखों लोगों को बेघरबार होकर शरणार्थी बनना पड़ा और कितनों को अनाथ होना पड़ा। ऐसे संकट के अवसर पर आर्य वीर दल ने बहुत सराहनीय सेवा कार्य किया। सन ५१ के आसाम का भूकम्प और हैदराबाद में रजाकारों के संघर्ष के समय आर्य वीर दल ने अपनी सेवा भावना का बड़ा ही उदात्त परिचय दिया। पंजाब के हिन्दी आन्दोलन और गोरक्षा आन्दोलन के अवसरों पर भी आर्य वीरों ने भाग लिया और कार्य किया।

आर्य वीर दल की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए अपने कहा, कि कोई संस्था या संगठन केवल भूत की प्राप्तियों की प्रशंसा पर तृप्त होकर ही नहीं जीवित रह सकता है। उसे तो इनके आधार पर अपने भविष्य को भी सोचना पड़ेगा। वर्तमान समय में अराष्ट्रीयता, जातीयता सम्प्रदायवाद, अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार और विदेशी संस्कृति का प्रभाव अपना सिर उठाये खड़े हैं और भारत की उर्वर भूमि में

अधिक पनप रहे हैं। ऐसी अवस्था में यदि कोई इनसे लोहा ले सकने में समर्थ हैं तो वह है केवल महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज। उसके अतिरिक्त किसी में इनके निराकरण की शक्ति नहीं है। आर्य समाज के विस्तार के लिए आर्य वीर दल एक मेरुदण्डात्मक पृष्ठभूमि हैं जिससे युवक वर्ग इधर आकृष्ट होता है। हमें सोचना चाहिए कि हम आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल का अधिक से अधिक विस्तार करें कि युवक वर्ग को आर्य समाज के अंचल में ला सकें। यहां एक प्रश्न स्वभावतः उठ खड़ा होता है आर्य वीर दल ही क्यों आवश्यक है? भारत वर्ष में वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति एवं वैदिक राष्ट्र की जितनी स्पष्ट कल्पना महर्षि दयानन्द ने की है उतनी किसी ने नहीं की। युक्ति और प्रमाण के साथ आर्य समाज की विचारधारा नव युवकों में जितना सुलभ एवं दृढ़ प्रचार पा सकती हैं उतना और कोई विचारधारा नहीं। ऋषि का जीवन एक क्रांतिकारी जीवन था। समाज यदि भगवान दयानन्द के उद्देश्यों की पूर्ति चाहता है तो उसे चतुर्मुखी सामाजिक क्रांति करनी पड़ेगी।

डा. साहब ने सुझाव दिया कि (१) आर्य वीर दलों को प्रत्येक प्रांत, जिला और ग्राम तथा भारत के बाहर के प्रदेशों में जहां पर आर्य समाजें है संगठित और संचालित किया जावे। (२) आर्य वीरांगना दल की भी स्थापना की जावे। (३) प्रत्येक आर्य समाज को अपने कोष में एक निश्चित भाग अनिवार्य रूप से इस कार्य के लिए रखना चाहिये। उसे आर्य वीर दल की शाखा स्थापित करनी चाहिए और व्यायाम शाला खोलनी चाहिये। (४) प्रत्येक प्रान्तीय सभा को अपने यहां एक प्रान्तीय संचालक और एक शिक्षक अवश्य रखना चाहिये। (५) विदेशों में आर्य समाज के आश्रम से चल रहे आर्य वीर दलों और आर्य वीरांगना दलों को सुव्यवस्थित किया जावे। (६) आर्य शिक्षण संस्थाओं में इसका प्रचार किया जावे। तथा (७) आर्य समाज की स्थापना शताब्दी तक आर्य वीरों और आर्य वीरांगनाओं की संख्या १० लाख तक पहुंचनी चाहिए।

इस अवसर पर दो प्रस्ताव भी पारित किये गये जिनमें धार्मिक शिक्षाको, शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाने, अश्लील साहित्य तथा फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगाने- युवक युवतियों में शारीरिक उत्थान कार्यक्रम लागू करने की मांग की गई। दूसरे प्रस्ताव में कहा गया है कि महर्षि दयानन्द की विचारधारा द्वारा ही भारत तथा मानव जाति का कल्याण संभव है। ★

(पृष्ठ २० का शेष)

आपने कहा कि देश की विकट स्थिति में आर्य समाज पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। हमें आपसी फूट समाप्त कर महर्षि के बताए मार्ग पर अग्रसर होना पड़ेगा।

भारत में ईसाई धर्म प्रचारक विपुल धन राशि और बड़े बड़े देशों की सहायता से धर्मान्तर का बहुत बड़ा चक्र चला रहे हैं। सार्वदेशिक सभा अपने सीमित साधनों से इस धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए सन्तोषजनक ढंग से काम कर रही है परन्तु सभा को चाहिए कि वह विदेशी प्रचारकों के विरोध में तथा धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए इतना व्यापक आन्दोलन खड़ा करे कि मध्यप्रदेश और उड़ीसा की भांति केन्द्रीय सरकार को भी धर्म परिवर्तन के विरोध में कानून बनाना पड़े। हमें भी अपनी पूर्ण शक्ति हिन्दू जाति के पिछड़े वर्गों की निर्धनता मिटाने में लगा देनी पड़ेगी।

गोरक्षा के सम्बन्ध में आपने कहा कि यह प्रश्न धार्मिक विश्वास के साथ ही साथ भारत की आर्थिक दशा से भी जुड़ा है। इस देश के करोड़ों लोगों की कृषि बैल पर ही आधारित है। गाय के दूध की उपयोगिता को देखते हुए ही भारत में गाय को माता का नाम दिया गया है। अतः गोरक्षा हमारे देश में धार्मिक कर्तव्य भी है। गोरक्षार्थ अभियान समिति द्वारा चलाए गए आंदोलन में आर्य समाज ने पूर्ण योग दिया और भविष्य में भी आर्य समाज आन्दोलन का साथ देता रहेगा। आपने मद्य निषेध पर भी बल दिया। ✻

सरकार ने गोहत्या पर प्रतिबंध न लगाया तो चार मास बाद पुनः आंदोलन होगा

हैदराबाद में पुरी के शंकराचार्य जी की गर्जना

हैदराबाद १० नवम्बर। दशम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित गोरक्षा सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए श्री जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ गोवर्धन मठ पुरी ने गौ का धार्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और आर्थिक महत्व प्रकट करते हुए कहा कि गाय भगवान का प्रत्यक्ष स्वरूप है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि की रचना करते हैं उसी प्रकार गो माता भी मनुष्यों की सृष्टि करती है। उसी की सावना से उत्पन्न दुग्ध और अन्नादि पदार्थों को खाकर रज और वीर्य बनते हैं और उसी से मानव की रचना होती है।

गो मांस भक्षण सिद्ध करने वालों को चुनौती

श्री शंकराचार्य जी ने वेदों या हिन्दुओं के धर्म शास्त्र में गो मांस भक्षण का प्रतिपादन सिद्ध करने वालों को शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी और कहा कि यदि कोई इन ग्रंथों में गो मांस भक्षण की बात सिद्ध कर दे तो मैं गोरक्षा आंदोलन को बंद करने तथा शंकराचार्य का पद तक छोड़ने के लिये तैयार हूं।

उन्होंने कहा कि १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद अंग्रेज सरकार ने भाड़े के टट्टुओं से पुस्तकें लिखाईं जिनमें लिखा गया कि वेदों में गो वध का उल्लेख है। पर वे ऐसे लेखक थे जिन्होंने अष्ठाध्यायी और अमर कोश नहीं पढ़ा। अन्यथा वे ऐसी व्याख्या नहीं करते। श्री जगद्‌गुरु ने कहा कि हिंदु धर्म में ही नहीं अन्य धर्मों में भी गो मांस भक्षण का निषेध हैं। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब ने हदीस में लिखा है कि गाय का दूध पीना दवा है और गाय का गोश्त खाना बीमारी को बुलाना है इसी तरह कुरान शरीफ में भी कहीं गो की कुर्बानी का आदेश नहीं है। न ईसाईयों के इंजिल में ही गाय के वध या मांस खाने की चर्चा है। यह इस बात का प्रमाण है कि किसी भी धर्म में गोमांस भक्षण का आदेश नहीं है।

आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता

गोरक्षा आंदोलन में आर्य समाज के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा करते हुए जगद्‌गुरु शंकराचार्य ने बड़े सुन्दर शब्दों में आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। आपने कहा कि इस आंदोलन में आर्य समाज का सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा। मैं उनके सहयोग के लिये इस जन्म में ही नहीं अगले जन्मों में भी ऋणी रहूंगा।

राजस्थान के अकाल पीड़ित गो वंश की सहायता

राजस्थान के वर्तमान अकाल की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आज वहां २-३ लाख गायें चारे के अभाव में भूखों मर रही है। उनकी रक्षा के लिए हैदराबाद के नागरिकों को आगे आना चाहिए। कम-से-कम पांच लाख रुपया इस के लिए मिलना चाहिए। गीता प्रेस के सहायता केन्द्र अकाल ग्रस्त क्षेत्र में हैं। वहां रुपया और चारा भेजना चाहिए।

हिन्दू धर्म में नारी की प्रतिष्ठा

हिन्दू धर्म और संस्कृति में नारी की प्रतिष्ठा का उल्लेख करते हुए श्री शंकराचार्य जी ने कहा कि जो लोग भारत में नारी को पुरुषों की बराबरी का स्थान दिलाने की बात कहते हैं और उनकी आर्थिक पराधीनता की बात कहते हैं उन्हें मालूम होना चाहिये कि हिन्दू धर्म में नारी का अत्यन्त पूज्यनीय स्थान है। हिन्दू धर्म में सन्यासी का स्थान सब से ऊंचा माना गया है। सन्यासी का पिता भी अपने पुत्र सन्यासी

को प्रणाम करता है परन्तु यदि उनकी माता सामने आ जाये तो सन्यासी ही नहीं जगद्गुरु शंकराचार्य तक को माता को साष्टांग प्रणाम करना पड़ता है।

फरवरी के बाद पुनः आंदोलन

श्री शंकराचार्य जी ने घोषणा की कि फरवरी में अनेक राज्यों में मध्यवर्ती चुनाव है। अतः मध्यवर्ती चुनाव होने तक गोरक्षा आंदोलन बंद रहेगा। हम नहीं चाहते हैं कि मध्यवर्ती चुनाव में गाय के नाम का कोई लाभ उठाया जाय। कुछ लोग गोरक्षा आंदोलन को चुनाव स्टंट बताते हैं परन्तु यह बात ठीक नहीं है। गोरक्षा आंदोलन को राजनीति से सर्वथा अलिप्त रखा गया है। हां ये चुनाव होने के बाद यदि सरकार ने गोरक्षा के बारे में अपनी नीति नहीं बदली तो पुनः आंदोलन होगा और इस बार निर्णायक आंदोलन होगा।

श्री शालवाले जी की चेतावनी

अध्यक्ष पद से भाषण करते हुये सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा संसद सदस्य लाला रामगोपाल शाल वाले ने कहा कि आर्य समाज ने गोरक्षा के लिए अनेक बलिदान किये हैं। यदि भारत सरकार ने ४० करोड़ जनता की भावनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया, तो उसके गम्भीर परिणाम होंगे।

श्री शालवाले ने आगे कहा कि केन्द्रीय सरकार गोरक्षा के प्रश्न को प्रान्तीय सरकारों का प्रश्न बताकर टालना चाहती है। इसलिए मेरा आन्ध्र प्रदेश की श्री रेड्डी सरकार से अनुरोध है कि वह अपने राज्य में कानूनन गोवंश की हत्या पर पाबन्दी लगाये अन्यथा कहीं आर्य समाज को इसी हैदराबाद में पूर्ववत आन्दोलन न करना पड़े जैसा कि पहले निजाम को गद्दी से उतारने के लिए महान आन्दोलन करना पड़ा था। इसलिये प्रदेश सरकार को शीघ्रातिशीघ्र कानूनन गोहत्या पर पाबन्दी लगानी चाहिए।

श्री शालवाले ने अन्त में सरकार को चेतावनी दी कि यदि गोरक्षा के प्रश्न को शीघ्र हल न कियां गया तो देश में पुनः संगठित रूप से प्रबल गोरक्षा आन्दोलन प्रारम्भ हो जायेगा। यह पहले सभी आंदोलनों से अधिक प्रभावशाली होगा।

गोहत्या बंद करने की मांग

सम्मेलन के स्वागत मंत्री श्री छगनलाल विजयवर्गीय द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में सम्मेलन ने महर्षि स्वामी दयानंद जी सरस्वती द्वारा गोरक्षा के लिय किये गये प्रयत्नों की चर्चा करते हुए सरकार से अविलंब सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर केन्द्रीय कानून द्वारा रोक लगाने की मांग की। प्रस्ताव में कहा गया कि यदि सरकार ने जनता को गोरक्षा संबंधी तीव्र भावनाओं को ठुकरा दिया तो इस बार निर्णायक आंदोलन होगा और आर्य समाज उसे सफल बनाने में बड़े से बड़ा उत्सर्ग करने में पीछे न रहेगा।

श्री गुलाम मुहम्मद लोदी द्वारा अनुमोदन

उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन हैदराबाद नगर के भूतपूर्व उपनगराध्यक्ष श्री गुलाम मोहम्मद खां लोदी ने किया। उन्होंने कहा कि इस्लाम खादारी अर्थात् पड़ोसी की भावना का सम्मान करने की शिक्षा देता है। हदीस भी गाय के गोश्त को खाने की मनाई करती है क्योंकि वह बीमारियों का घर है और गाय का दूध बीमारियों को मिटाने के लिए दवा है। निजाम राज्य में गाय की कुरबानी पर पाबन्दी थी। इसका उल्लंघन करनेवालों को सजा दी जाती थी। गोवध बन्दी के विरोध में यह बात कही जाती है कि इससे कसाव बेकार हो जाएंगे। पर उनके लिए पुनर्वास का प्रबंध हो सकता है, जैसा कि सुनारों आदि के लिए किया गया है। मैं सच्चे मुसलमान के नाते गोवध बंदी की मांग का समर्थन करता हूं।

प्रस्ताव का अनुमोदन बिहार के पं० रामनारायण शास्त्री ने किया।

राजस्थान के मूक गोधन को बचाइये !

भारत गो सेवक समाज के सभापति संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास की अपील

दिल्ली—१८ नवम्बर, १९६८। भारत गो सेवक समाज के सभापति संसद सदस्य सेठ गोविन्ददासजी ने राजस्थान के अकाल पीड़ित गोवंश की सहायतार्थ अपील करते हुए निम्न वक्तव्य दिया है :-

राजस्थान में इस वर्ष जैसा भीषण अकाल पड़ा है वैसा कदाचित ही कभी हुआ हो। कहते हैं इसके लगभग १०० वर्ष पहले राजस्थान में इस प्रकार का अकाल पड़ा था। परन्तु सौ वर्ष पहले की स्थिति और आज की स्थिति में बहुत अन्तर है। आज जितनी महंगाई है उतनी महंगाई उस समय नहीं थी। सस्ते जमाने में कार्य करना सरल होता है। पर कुछ हो, कैसा भी समय हो उस समय ही ऐसी आपत्तिजनक स्थिति का सामना तो करना ही पड़ता है।

अकाल पीड़ितों को सहायता पहुंचाने के लिये केन्द्रीय और राज्य सरकार काफी प्रयत्नशील है। परन्तु हम सरकारी सहायता पर ही निर्भर नहीं रह सकते। राजस्थान के लोग बम्बई, कलकत्ता आदि बड़े बड़े नगरों में बसे हुए हैं और व्यापार में संलग्न हैं। ऐसे अवसर पर उनको अपनी पवित्र जन्मभूमि को हर प्रकार की सहायता पहुंचानी चाहिये चाहे वे जहां भी हों।

कलकत्ते की मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने जिसका इतिहास ही ऐसे अवसरों पर हर प्रकार की सहायता पहुचाना रहा है। राजस्थान के इस संकटकाल में १० लाख रुपये की योजना बनाकर कार्यारम्भ कर दिया है। पता चला है कि श्री घनश्यामदासजी बिड़ला ने भी जैसलमेर में कुछ केन्द्र खोलने के लिये मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी को स्वीकृति दे दी है।

बम्बई में श्री गजाधरजी सोमानी की अध्यक्षता में राजस्थान रिलीफ सोसाइटी बनी है जिसने अपना कार्य राजस्थान के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में आरंभ कर दिया है। इसी के अतर्गत बम्बई सेन्ट्रल रिलीफ फण्ड को केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद् से ५ लाख रुपये की स्वीकृति मिल चुकी है। कल्याण के सम्पादक श्रद्धेय श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार भी इस सहायता कार्य में संलग्न हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि समस्त देश इस समय राजस्थान के अकाल पीड़ित गोवंश की सहायता के लिये कृतसंकल्प हो।

मैं एक छोटे से गोसेवक की हैसियत से देश की गोभक्त जनता एवं धनीमानी सज्जनों से अपील करता हूं कि वे इस कार्य में हर प्रकार की सहायता देने के लिये उद्यत हों। यह प्रश्न राजनीति का नहीं है। अत: दलबन्दी से इसे सर्वथा अलग रखना चाहिये और सब दलों को मिलकर यह सेवा कार्य करना चाहिये।

जो सज्जन अपना अमूल्य समय इस सेवा कार्य में देना चाहें वह मंत्री भारत गोसेवक समाज ३, सबर थाना रोड, दिल्ली—६ से सम्पर्क स्थापित करें।

सज्जन स्वभाव

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥

प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं मिलते। प्रत्येक हाथी के मस्तक पर मोती नहीं होते। तथा प्रत्येक वन में चन्दन नहीं होता, इसी प्रकार सज्जन भी सर्वत्र नहीं मिलते है।

—स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती

गोहत्या बन्द न हुई तो पुनः आन्दोलन आरम्भ हो जायगा

दशम आर्य महासम्मेलन का प्रस्ताव

हैदराबाद, १० नवम्बर ६८। आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के अन्तर्गत विनायक नगर के विशाल प्रांगण में सार्वदेशिक सभा के महा मन्त्री तथा संसत्सदस्य लाला रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में गोरक्षा सम्मेलन हुआ।

लाखों के जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव जी तीर्थ ने अपने उद्घाटन भाषण में धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक सभी दृष्टि से गाय के महत्व को बताया और कहा कि वैदिक साहित्य में सर्वत्र गोरक्षा को परमावश्यक एवं धर्म माना गया है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों के अतिरिक्त मुसलमानों के कुरान तथा ईसाइयों के बाईविल में भी गोहत्या का विधान नहीं है। यदि कोई यह प्रमाणित कर दे कि इनमें कहीं भी गोहत्या का विधान है तो मैं शंकराचार्य की गद्दी छोड़ने को तैयार हूं।

श्री शंकराचार्य ने हिन्दू धर्म में स्त्रियों के अधिकारों की चर्चा करते हुए कहा कि वैदिक धर्म सर्वत्र स्त्रियों के सम्मान तथा अधिकारों की चर्चा है। उन्होंने स्त्रियों को वैदिक धर्मानुसार समान अधिकार दिए जाने की घोषणा की। श्री शंकराचार्य ने चार मास के पश्चात् पुनः गोरक्षा आन्दोलन आरम्भ करने की भी बात कही।

विगत गोरक्षा आन्दोलन में आर्य समाज के सहयोग की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि गोरक्षा आन्दोलन में आर्य समाज का सहयोग सराहनीय रहा है और मैं उनके इस सहयोग का इस जीवन में तथा अगले जन्मों में भी ऋणी रहूंगा।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा संसद सदस्य लाला रामगोपाल जी शाल वाले ने कहा कि आर्य समाज ने गोरक्षा के लिए अनेक बलिदान दिए हैं। यदि भारत सरकार ने ४० करोड़ जनता की भावनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया तो उसके गंभीर परिणाम होंगे।

श्री शालवाले ने आगे कहा कि केन्द्रीय सरकार गोरक्षा के प्रश्न को प्रान्तीय सरकारों का प्रश्न बता कर टालना चाहती है। इसलिए मेरा आन्ध्र प्रदेश की श्री रेड्डी सरकार से अनुरोध है कि वह अपने राज्य में कानूनन गोवंश की हत्या पर पाबन्दी लगाये अन्यथा कहीं आर्य समाज को इसी हैदराबाद में, जिस प्रकार निजाम को गद्दी से उतारने के लिए महान आन्दोलन करना पड़ा था उसी प्रकार रेड्डी सरकार के विरुद्ध भी आन्दोलन करना पड़ेगा। इसलिए प्रदेश सरकार को शीघ्रातिशीघ्र कानूनन गोहत्या पर पाबन्दी लगानी चाहिए।

अन्त में लाला रामगोपाल जी शालवाले ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि शीघ्र गोरक्षा के प्रश्न को हल न किया गया तो पुनः देश में एक गठित उग्र आन्दोलन आरम्भ हो जाएगा और यह आन्दोलन पहिले सभी आन्दोलनों से अधिक प्रभावशाली एवं विशाल होगा।

स्वागत मन्त्री श्री छगनलाल विजयवर्गीय ने प्रस्ताव रखा जिसमें केन्द्रीय सरकार से अपने पूर्व वचनानुसार गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की और भावी आन्दोलन के प्रारम्भ होने पर आर्य समाज के सामूहिक सहयोग का विश्वास दिलाया।

समाचार संसार

प्रधान जी सभा के कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान पं. विश्वम्भर प्रसाद जी शर्मा ने नवम्बर मास में सभा कार्यालय के लिये लगभग १५ दिन का समय दिया। आपने कार्यालय के कार्य का निरीक्षण किया तथा सभा के प्रमुख कार्यों पर आदेश प्रदान किये।

धमतरी का दौरा

प्रधान जी सभा, दिनांक १६ नवम्बर को धमतरी पधारे तथा वहां सभा द्वारा निर्माण की जा रही ६ दूकानों का निरीक्षण किया। तथा अपना प्रतिवेदन कार्यालय को दिया।

गुरुकुल होशंगाबाद का निरीक्षण

दिनांक २६ नवम्बर को प्रधान जी गुरुकुल होशंगाबाद पधारे तथा वहां नये बनाये गये कमरों का निरीक्षण किया। गुरुकुल होशंगाबाद में इस समय श्री सुकुमार जी पगारे आदिवासी बालकों में शिक्षा प्रचार तथा अन्य प्रवृत्तियां प्रारम्भ कर रहे हैं। शासकीय सहायता प्राप्त करने का भी प्रयत्न किया जा रहा है।

आर्य समाज जरीपटका का निरीक्षण

आर्य समाज जरीपटका के मंत्री श्री संगतराम जी आर्य के गृह पर उनकी कन्या कु. सुमेधा के जन्म दिवस के उपलक्ष में दिनांक ३० नवम्बर को यज्ञ का आयोजन किया गया था जिसमें आ. प्र. सभा के प्रधान पं. विश्वम्भर प्रसाद जी शर्मा और उनकी धर्मपत्नि श्रीमती शान्ति देवी शर्मा पधारीं। प्रधान जी ने कु. सुमेधा के दीर्घायुष्य के लिये अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया तथा बतलाया कि आर्य माता पिता की सन्तान भी निस्संदेह अपने कुल के अनुसार विदुषी निकलेगी। आपने कहा कि इस प्रकार के समारोह के आयोजन सन्तान पर प्रभाव डालते हैं। इस अवसर पर आर्य समाज नला बाजार अजमेर के मंत्री श्री दयालदास जी आर्य तथा महिला आर्य समाज की मंत्राणी चन्द्रकांता जी भी पधारी थीं।

संस्कार समारोह के पश्चात प्रधान जी ने दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय, आर्य समाज मंदिर एवं आर्य बाल मंदिर जरीपटका का निरीक्षण किया। समाज की प्रगति देखकर आप बहुत प्रभावित हुए तथा यहां के निष्ठावान कार्यकर्ताओं की भूरि भूरि प्रशंसा की।

सभा उपदेशकों द्वारा प्रान्त में वैदिक प्रचार

श्री शंकरलाल जी आर्योपदेशक

सभा के आर्योपदेशक श्री शंकरलाल जी आर्य ने मास अक्तूबर १९६८ में निम्नलिखित स्थानों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार यज्ञ, संस्कार तथा ईसाइयत के खतरे से सावधान रहने के लिए जनता को जागरूक किया। १० ईसाई व्यक्तियों की शुद्धि कर उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश किया—

बिलासपुर, पत्थलगांव, रामानुजगंज, बगरा, बरतरिहापारा, कसरा, बड़गांव आनी और मनेन्द्रगढ़।

श्री सत्यदेव जी वानप्रस्थी

सभा के दूसरे उपदेशक श्री सत्यदेवजी वानप्रस्थी ने मास सितम्बर और अक्तूबर १९६८ में छत्तीसगढ़ के ईसाई प्रभावित जिला रायपुर में रहकर आसपास के इलाकों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्य समाज रायपुर के तत्वावधान में कोटा में ५५० उड़िया समाज के व्यक्तियों को ईसाई होने से बचाया तथा ईसाइयों के एजेन्टों से सावधान रहने के लिये आदिवासियों एवं अन्य ग्रामीण जनता को समझाया। ४ व्यक्तियों के उपनयन संस्कार किये तथा २ यज्ञों में उपदेश दिया। भ्रमण कार्यक्रम निम्नप्रकार रहा—

रायपुर, टाटीबंद, हसदा, कोटा, जर्वाहा, दयानन्दनगर, खरोदा, भिलाई, भन्डारपुरी, चण्डी, गुधेली, बागबहरा, नरतोरा। इनमें से अनेक स्थानों पर कई बार जाना आना हुआ।

श्री रामाश्रय उपदेशक का कार्य

सभा के तीसरे उपदेशक श्री रामाश्रय जी ने मास अक्तूबर १९६८ में विन्ध्यप्रदेश के सतना और रीवां जिले के निम्नलिखित स्थानों में भ्रमण एवं प्रचार किया।

कुसेदर, देवरा, रायपुर बाघेलान, रीवां, झिगोदर, कूंद, करही और झण्ड।

आर्य समाज सागर

आर्य समाज सागर का वार्षिक उत्सव बड़े धूम धाम से दिनांक २७-१०-६८ से दिनांक २९-१०-६८ तक मनाया गया। नगर कीर्तन का जुलूस १॥ मील लम्बा था। उनमें अखाड़ों का प्रदर्शन विशेष सराहनीय बात थी।

श्री वाचस्पति जी ने श्राद्ध पर एक नया दृष्टिकोण रखा तथा सांख्य दर्शन की बड़े सरल शब्दों में व्याख्या की।

भजनीक हरवंशलाल हंस जी के नये तर्जो के गीत नगर के लोगों के कण्ठ पर झूमते रहे। राजपाल चिमटा भजन मंडली द्वारा जो उपदेश होते थे वे हंसाकर लोट पोट कर देने वाले होते थे। लोग चुटकुले सुनने के लिये रात भीगे तक बैठे रहते थे। ब्रम्हचारी रामप्रसाद जी ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ बड़े ही विधि विधान से सम्पन्न करवाया।

इस अवसर पर सभा के उप-प्रधान योगाचार्य श्री दालचंद भी उपस्थित रहे। वार्षिक उत्सव की सफलता का श्रेय स्थानीय कार्यकर्ताओं का अदम्य उत्साह है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

आर्य समाज खंडवा में दिनांक २१-१०-६८ को श्री. डॉ. रघुनाथसिंह जी वर्मा प्रधान जिला आ. स. की अध्यक्षता में ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व मनाया गया। पर्व पद्धति के अनुसार वृहद्‌यज्ञ प्रार्थना के बाद श्री डॉ. साहब ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन पर एवं पर्व की विशेषता पर भाषण दिया। तत्पश्चात् संगीतमय भजन हुए।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ में दि. १७-११-६८ को साप्ताहिक सत्संग में श्री हकीम वीरूमल जी आर्य प्रेमी के निधन पर हार्दिक शोक प्रगट किया गया। श्री रामचन्द्र जी आर्य ने आर्य प्रेमी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई।

मैं भारत हूं का प्रकाशन

प्रयास प्रकाशन के सातवें पुष्प के रूप में छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय प्रतिनिधि कवियों के देश प्रेम कविताओं का एकलौता मूल्यवान संग्रह प्रकाशित होगा। कवि बंधु श्री विनयकुमार पाठक पत्रकार पचरीघाट, जूना बिलासपुर के पते पर पत्र व्यवहार करें।

पुस्तक समीक्षा

नल-दमयंती

रचयिता–सोहितराम साहू "राही"
प्रकाशक–प्रयास प्रकाशन बिलासपुर (म.प्र.)
मुद्रक–मधुकर प्रेस मध्यमेश्वर, वाराणसी
मूल्य लागत मात्र ५० पैसे। पृष्ठ संख्या ४०

प्रस्तुत पुस्तक छंदोबद्ध हिन्दी लघु प्रबन्ध काव्य है। "नल-दमयंती" का हिन्दी एवं मराठी साहित्य में पर्याप्त प्रचार है। परिणाम स्वरूप इस संबंध में मराठी में तो अनेक कृतियां उपलब्ध है। किंतु उपरोक्त हिन्दी पुस्तक की अपनी विशेषता है। एक बार पढ़ना शुरू करने पर पाठक इसे पूरी पढ़े बिना नहीं रह सकता। गहरे अध्ययन के बाद कवि ने उक्त रचना का निर्माण किया जिसमें नवीनता लाने का सफल प्रयास हुआ है। भाषा ओजस्वी, स्फूर्तिदायक, सरल एवं आकर्षक है जो उपमा, अलंकार, लय आदि से सुसज्जित है। जहां इसके पढ़ने से मनोरंजन होता है वहां "नल-दमयंती" के जीवन की अनेक घटनाओं का रसात्मक अनुभव भी होता है। रचना प्रसंग से अनुकूल होने से लुभावनी है। छोटे, बड़े सभी के लिए यह पुस्तक पठनीय एवं संग्रहनीय है।

TEN PRINCIPLES OF ARYA SAMAJ

1—God is the primary source of all true knowledge and of all that is known by its means.

2—God is Existent, Conscious, All-beatitude, Formless, Almighty, Just, Merciful, Unbegotten, Infinite, Unchangeable, Beginningless, Incomparable, the support of all, the lord of all, All-pervading, Omniscient and Controller of all from within, Evermature, Imperishable, Fearless, Eternal and Creator of the Universe. To Him alone is worship due.

3—The *Vedas* are the scriptures of all true knowledge. It is the paramount duty of all *Aryas* to read them, to teach them (others) and to hear them read, to recite them (others).

4—All persons should be ever ready to accept truth and renounce untruth.

5—All acts ought to be performed in conformity to Dharma i. e. after due consideration of right and wrong.

6—The prime object of Arya Samaj is to do good to the world, i. e. to ameliorate physical, spiritual and social condition of all men.

7—All ought to be treated with love, justice, righteousness and due regard to their merits.

8--Ignorance ought to be dispelled and knowledge disseminated.

9—No one should remain content with his own well-being but on the contrary, he should regard his well being lying in the well-being of others.

10--In matters affecting well-being of the society (all others), the individual should subordinate his personal likings, in matters affecting him alone, he is to enjoy the freedom of action.

सभा की सूचनाएं

संख्या २९८–अंतरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के अंतरंग सदस्यों तथा पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि, रविवार, दिनांक २२ दिसम्बर १९६८ को, मध्यान्ह २ बजे से अंतरंग सभा की एक बैठक, महर्षि दयानन्द भवन, दयानन्द मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर में होगी। बैठक की सूचना व विषय सूची प्रथक से प्रेषित की जा रही है। कृपया पधारें तथा आगमन की सूचना दें।

आध्यात्मिक आर्य शिविर में

आप सादर आमंत्रित हैं।

क्या आप अपनी तथा आर्य समाज की प्रगति चाहते हैं ?

यदि हां तो क्या आप आर्य समाज के प्रशिक्षित कार्यकर्त्ता हैं ?

यदि हैं तो बधाई के पात्र हैं। नही तो आज ही निश्चय करिये कि मई माह के शिविर में आप होशंगाबाद अवश्य पधारेंगे।

वहां आपके भोजन तथा आवास की समुचित व्यवस्था रहेगी।

धर्म चर्चा होगी, संगठन के बारे में चर्चा होगी, तथा आध्यात्मिक मिलन होगा।

इन सब बातों के लिये केवल आप का आने का निश्चय चाहिये।

यह आध्यात्मिक आर्य शिविर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के तत्वावधान में गुरुकुल होशंगाबाद में आयोजित किया जायेगा।

—संयोजक

संख्या [illegible]–कार्यालय का संचालन

सभा मंत्री [illegible] कृष्णजी गुप्त के अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण, [illegible] प्रधानमंत्री सभा के आदेश दिनांक २९-११-६८ के अनुसार नागपुर संभाग के उपमंत्री श्री संगतरामजी आर्य को कार्यालन संचालन का भार सौंपा गया है। तदनुसार दिनांक ३० नवंबर १९६८ से प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल सभा कार्यालय के समस्त कार्यों को निपटाया जा रहा है।

संख्या ३००–मंत्री जी सभा का स्वास्थ्य

सभा के मंत्री श्रीकृष्ण जी गुप्त गत २५ अक्तूबर १९६८ से रक्त दबाव तथा शीत के कारण अचानक अस्वस्थ हो गये थे। मेडीकल कालिज अस्पताल में १५ दिन चिकित्सा कराने के उपरान्त आप वापस घर आ गये हैं। इस समय आप प्रभु कृपा से पूर्ण स्वस्थ है परन्तु काफी कमजोरी आ जाने से डाक्टरों ने मानसिक श्रम करने की उन्हें मनाई कर दी है और पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी है।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. ३०-११-१९६८

संगतराम आर्य, उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नाग

License No. 33, D/ 28-4-1

Licensed to—

POST WITHOUT PREPAYMENT

३४ · श्री संस्थापकजी,
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला, जिला रोहतक
(पंजाब)

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नाग

मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२ है।

प्रकाशक–बि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। सम्पादक–विश्

वयं जयेम्

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्यसेवक

ARYASEWAK

वार्षिक मूल्य ५ रुपया

एक प्रति २५ पैसे

जनवरी] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, पौष शुक्ल १३ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४४ } वर्ष ६९ अंक १ [१९६९

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

२३ दिसम्बर १९६८ को जिनका बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया ।

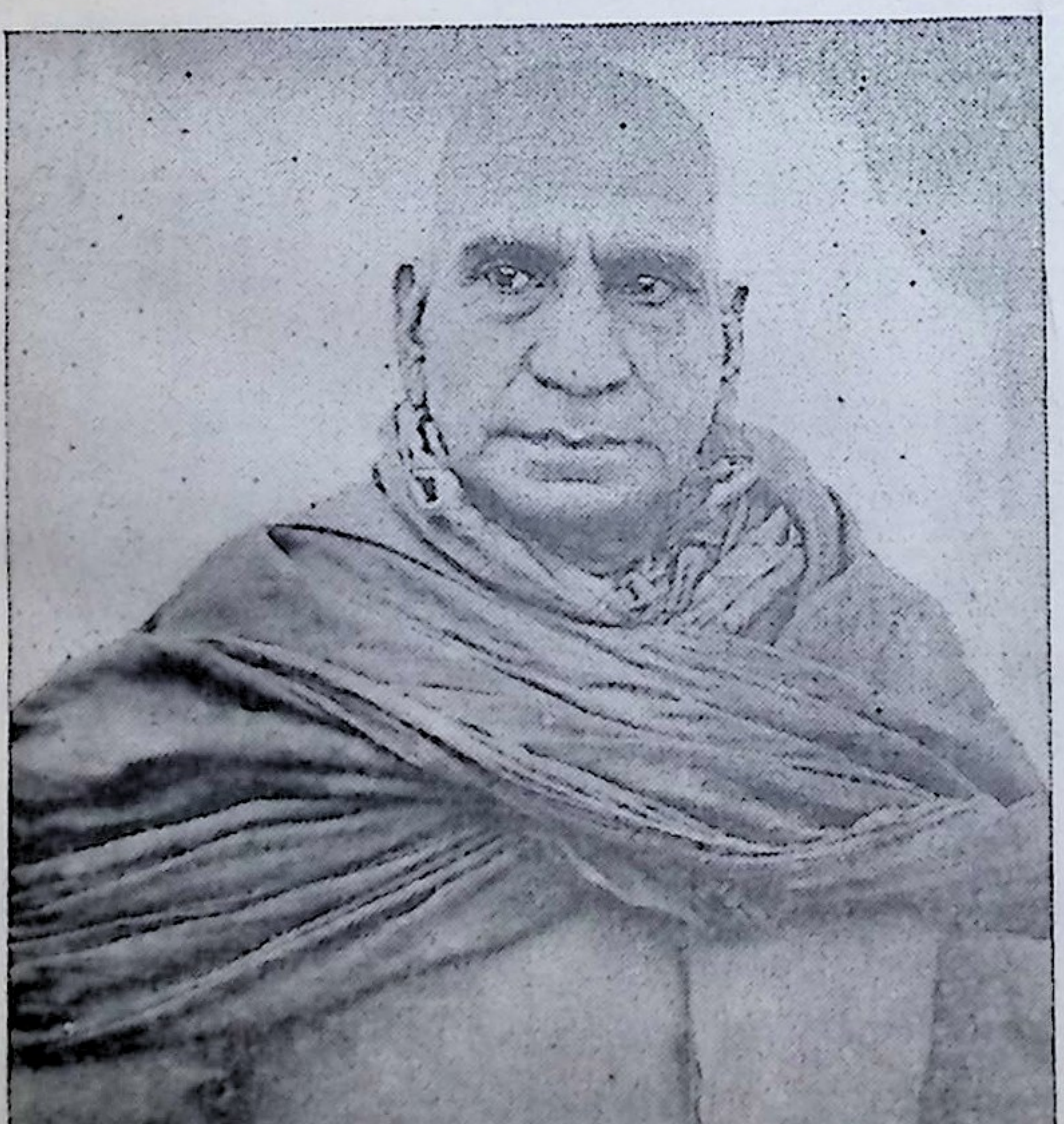

यह हर्ष का समाचार है कि दिल्ली नगर निगम के विशाल भवन (घंटा घर) के प्रांगण में अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज का भव्य स्मारक बनाया जा रहा है। आर्य संसार को यह विदित ही है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इस योद्धा ने १३ मार्च १९१९ को, विदेशी सरकार की संगीनों के सामने सीना तान कर भारत माता का मस्तक ऊंचा किया था ।

जीवेम् शरदः शतम्

श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध नेता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के भूतपूर्व प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त की ८४ वीं वर्ष–गांठ २२ दिसम्बर १९६८ को तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय, दुर्ग में बड़े समारोहपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय की अध्यापिकाओं और छात्राओं के अतिरिक्त नगर के अनेक गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थे। संसद सदस्य श्री तामस्कर एवं अन्य सज्जनों ने श्री गुप्त जी की मूल्यवान दीर्घकालीन राष्ट्रीय और सामाजिक सेवाओं की प्रशंसा करते हुए उनका अभिनंदन किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान पं. विश्वम्भरप्रसाद शर्मा ने इस अवसर पर तार द्वारा भेजे गये अपने संदेश में माननीय गुप्त जी के शतायु होने की कामना की और उनका श्रद्धापूर्वक अभिनन्दन किया।

धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक मासिक

आर्य-सेवक

सम्पादक – विश्वम्भरप्रसाद शर्मा

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, पौष शुक्ल १३, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४४ | वर्ष–६९ अंक– १

वेद मंत्र–

भगवान से मिलन

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षु,
उपो एमि चिकितुषो वियृच्छम।
समानमिन्मे कवयश्चिद् दाहु,
अयं हतुभ्यं वरुणो हृणीते ।।
ऋ० ७.८६.३

मैं ब्रह्म के दर्शनों का अभिलाषी हूं। अपनी जिज्ञासा को लेकर पूछता पूछता मैं स्थान स्थान पर घूम रहा हूं। मैं जानता हूं कि मेरा कौनसा दोष है जिसके कारण ब्रह्म के दर्शन की मेरी अभिलाषा अभी तक पूर्ण नहीं हो सकी। जिस किसी विद्वान के पास जाती हूं, बस वह केवल यही उत्तर देता है यह वरुण ब्रह्म तेरे प्रति निरादर–अस्वागत का भाव रखता है।

पूर्णमदः पूर्ण मिदं पूर्णात पूर्णमुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

वह सम्पूर्ण है और यह भी सम्पूर्ण है। सम्पूर्ण में से सम्पूर्ण निकाल लेने से भी सम्पूर्ण ही बच रहता है।

यह इनफिनिटी का सबसे प्रथम आविष्कार "ईषोपनिषद" के प्रणेता हमारे ऋषि ने लाखों वर्ष पूर्व किया था, जबकि यूरोपीय विद्वानों ने अब किया है।

आपके द्वारा इसकी प्राप्ति की सूचना मुझे दीजिये।

घनश्यामसिंह गुप्त
दुर्ग (म. प्र.)

सम्पादकीय—

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का पुण्य स्मरण

आर्य समाज के महान कर्णधार और राष्ट्र की दिव्य विभूति पूज्यपाद, स्वामी श्रद्धानंदजी महाराज को दिवंगत हुए ४२ वर्ष बीत गये। २३ दिसम्बर १९२६ को एक धर्मान्ध आतताई मुस्लिम गुंडे की गोली सीने पर खाकर स्वामीजी का बलिदान हुआ। वैदिक धर्म की पुनीत परम्परा के अनुरूप स्वामीजी ने रुग्ण अवस्था में भी अपने हत्यारे से मिलने में संकोच नहीं किया। यद्यपि उनके शुद्धि और संगठन के आंदोलन से भारत के धर्मान्ध मुसलमान स्वामीजी से बड़े रुष्ट थे और उनके विरूद्ध मुस्लिम नेता, संस्थाएं और अखबार निरन्तर विष वमन करते रहते थे परन्तु स्वामीजी कभी उनकी धमकियों और आक्रोश से विचलित नहीं हुए। उन्होंने सदा निर्भीकता के साथ अपने विचारों का उद्घोष किया और देश में भ्रमण करके लाखों मलकानों, मेवों तथा हिन्दुओं से मुसलमान बने हुए लोगों को शुद्ध करके पुनः हिन्दु धर्म में सम्मिलित किया। करांची की असगरी बेगम मुस्लिम महिला को भी स्वामीजी ने शुद्ध कर के हिन्दु बनाया। इस से मुस्लिम जगत में खलबली मच गई और अब्दुल रशीद नामक एक आतताई के हाथों स्वामीजी का बलिदान हुआ।

यद्यपि स्वामी श्रद्धानंदजी का बलिदान हुए ४२ वर्ष गुजरे गये परन्तु उनके वीरोचित उद्गार और दिव्य निर्भीक वाणी आज भी हमारे कानों में गूंज रही है। महर्षि स्वामी दयानंदजी का उपदेशामृत पान करके स्वामी श्रद्धानंदजी वैदिक धर्मावलंबी बने और राष्ट्र तथा समाज के अभ्युत्थान में उनका सर्वश्रेष्ठ योगदान रहा। गुरूकुल कांगडी की स्थापना करके स्वामी श्रद्धानंदजी ने देश की शिक्षा प्रणाली में यथेष्ठ सुधार का सूत्रपात किया ताकि देश की शिक्षा संस्थाओं द्वारा स्वाभिमानी, सुयोग्य, चरित्रवान, धर्म और संस्कृति में दीक्षित कर्मठ नागरिक प्राप्त हो सकें। अंग्रेज सरकार ने बार बार प्रयत्न किया कि गुरूकुल को सरकार द्वारा प्रदत्त अनुदान स्वीकार करना चाहिये परन्तु स्वामीजी नें उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने गुरूकुल को सरकारी सम्पर्क से मुक्त रखकर प्राचीन ऋषि मुनियों के आदर्श के अनुसार एक स्वतंत्र विद्यापीठ बना के राष्ट्र के समक्ष अनुकरणीय आदर्श रखा। स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने गुरूकुल कांगडी की भांति राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की प्रेरणा दी। स्वामी श्रद्धानंदजी ने इसी प्रकार की शिक्षण संस्था जालंधर में भी कन्याओं के लिये आर्य कन्या महाविद्यालय जालंधर के नाम से स्थापित कराई। इन दोनों विद्यापीठों ने देश को अनेक पुरूष और स्त्री रत्न दिये जिन्होंने विविध क्षेत्रों, राष्ट्र और समाज के उत्थान का प्रशंसनीय कार्य किया।

स्वामी श्रद्धानंदजी महर्षि स्वामी दयानंदजी के अनन्य अनुयायी थे। महर्षि ने राष्ट्र के उत्थान और हिन्दू समाज की उन्नति के लिए जो जो निर्देश दिये उन सब का स्वामी श्रद्धानंदजी ने प्रचार किया और स्वयं उनके अनुसार आचरण किया। स्वामीजी ने दलितोद्धार का आंदोलन चलाया और दलित जाति के हजारों छात्रों को उन्होंने गुरूकुल में शिक्षा दी और उन्हें हिन्दु समाज का अभिन्न अंग बताया। उनके साथ उच्चवर्णीय हिन्दुओं की कन्याओं के विवाह हुए। स्वयं अपने गृह में अछूतों को आश्रय दिया। इसी प्रकार ऋषि दयानंदजी के उपदेशानुसार देश में चारों वर्ण और आश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाने और जन्म मूलक जांति पांति की घातक प्रथा को नष्ट करने के लिए स्वामीजी ने स्वयं अपने पुत्र पुत्रियों के जाति पांति तोड़कर विवाह किये। स्वामीजी ने पंजाब में उर्दू अंग्रेजी के स्थान पर राष्ट्र भाषा हिन्दी को प्रतिष्ठित किया। हिन्दी में अनेक ग्रंथ लिखे, समाचार पत्र निकाले। इन सेवाओं के कारण स्वामीजी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षासन प्रदान कर सम्मानित किया गया।

स्वामी श्रद्धानंदजी महात्मा गांधी के भारत में आने से पूर्व ही राष्ट्रीयता का प्रचार तथा स्वराज्य प्राप्ति के लिये प्रयत्न कर रहे थे। महर्षि स्वामी दयानंदजी नें सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य प्राप्ति के लिये जो प्रेरणा दी उसे आर्य समाजियों ने अपने जीवन में भली प्रकार चरितार्थ करके दिखाया। गांधीजी द्वारा असहयोग का सूत्रपात करने से पूर्व भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय आदि नेता देश में स्वाधीनता प्राप्ति का निर्भीकता के साथ शंखनाद कर रहे थे और श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे मेधावी आर्य राजनीतिक क्रान्ति की देश-विदेशों में तैयारी कर रहे थे। स्वामी श्रद्धानंदजी तो वस्तुत: गांधीजी के प्रेरणास्रोत थे। जब गांधीजी ने दक्षिण आफ्रिका में सत्याग्रह आरंभ किया तब सबसे पहले स्वामी श्रद्धानंदजी ने ही उनकी सहायता की। गुरूकुल से आर्थिक मदद भिजवाई और पत्रों द्वारा उन्हें प्रेरणा देते रहे। गांधीजी जब १९१५ में भारत लौटे तब स्वामी श्रद्धानंदजी ने ही उन्हें गुरूकुल में रहने और देश की स्थिति का अध्ययन करने के लिये निमंत्रित किया था और गांधीजी ने वहां रह कर बहुत कुछ सीखा और समझा। गांधीजी स्वामीजी को बड़ा भाई मानते थे और आजीवन उनके प्रशंसक बने रहे।

स्वामी श्रद्धानंदजी ने स्वाधीनता आंदोलन में देश का नेतृत्व किया। दिल्ली के घंटाघर के पास गुरखा सैनिक की संगीनों के सामने अपना सीना खोल दिया और जुलूस का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़ते रहे। उन्होंने सैनिकों से कहा कि हिम्मत हो तो गोलियां चलाओ। पंजाब में मार्शल-ला का तीव्र विरोध किया और जलियान वाला बाग हत्याकांड के बाद जब अमृतसर में कांग्रेस हुई तो उसके स्वागताध्यक्ष बने और सारी व्यवस्था की। स्वामी श्रद्धानंदजी असहयोग आंदोलन में जेल गये। स्वामीजी ने भारतीयों को सदा एक समान समझा। पंजाब में सिखों पर जब अत्याचार हुआ तो वे उनकी मदद को दौड़े गये और गुरू के बाग में सत्याग्रह किया।

१९२३ में जब कांग्रेस ने मुसलमानों के तुष्टीकरण की नीति अपनाई और हिन्दुओं के प्रति उपेक्षा करनी शुरू की तो स्वामी श्रद्धानंदजी कांग्रेस से अलग हो गये। काकनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से जब मौ. मुहम्मद अली ने ८ करोड़ हिन्दु अछूतों में से ४ करोड़ को मुसलमानों को दे देने की बात कही तो स्वामीजी ने उसका कड़ा विरोध किया परन्तु जब देखा कि कांग्रेस मुसलमान और ईसाईयों को अनुचित रूपसे संतुष्ट करने में संलग्न है और हजारों हिन्दु, मुसलमान व ईसाई बन रहे हैं तो उन्होंने शुद्धी व संगठन का शंखनाद किया।

स्वामी श्रद्धानंद सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माता थे। वह महर्षि दयानंदजी के सच्चे शिष्य थे और ऋषि के सिद्धान्तों का बड़ी दृढ़ता के साथ प्रचार किया। उनका मुसलमानों से द्वेष नहीं था। खिलाफत के समय स्वामीजी ने हिन्दु मुस्लिम एकता का प्रबल प्रचार किया। जामा मस्जिद के अन्दर उन्होंने हिन्दू मुस्लिम ऐक्य पर भाषण दिया और वेद की शिक्षा का प्रचार किया। देश के आर्य नर नारियों का कर्तव्य है कि वे स्वामी श्रद्धानंदजी के आदेशों का अनुकरण कर अपने जीवन को धन्य बनावें। यही हमारी उस महान विभूति के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सांप्रदायिकता का भूत

१९२३ से कांग्रेस के नेताओं के सिर पर सांप्रदायिकता का जो भूत चढ़ा है खेद है कि वह अभी तक नहीं उतरा। कांग्रेस नेताओं को सारा समाज ही सांप्रदायिक नजर आता है। हिन्दुओं की कोई भी स्वतंत्र प्रवृत्ति उन्हें खटकती है। हिन्दु संगठन और समाज सुधार की कोई हलचल उन्हें सहन नहीं है। पं. जवाहरलाल ने सदा हिन्दुओं की निंदा की और हिन्दु समाज को पुनर्गठित होने तथा धर्म और पद्धति का उत्थान और प्रसार करने से रोकने का प्रयत्न किया। उन्हें तो हिन्दु शब्द से चिढ़ थी। गोरक्षा, धर्म शिक्षा, शुद्धी और संगठन के नाम से ही उन्हें नफरत थी। स्वराज्य प्राप्ति के बाद तो कांग्रेस ने खुले आम हिन्दुओं की उन्नति के कार्यों की उपेक्षा ही नहीं किन्तु विरोध करना शुरू किया। कांग्रेस की इस नीति का ही फल है कि देश का विभाजन हुआ और आज देश में लाखों पाकिस्तानी एजन्ट बैठे हैं। आसाम में लाखों मुस्लिम पाकिस्तान से आ घुसे और काश्मीर का एक बड़ा

हिस्सा पाकिस्तान ने दबा लिया। इतना ही नहीं वह काश्मीर को हड़पने के लिये तैंय्यार बैठा है।

कांग्रेस को एक सांप्रदायिक शब्द ऐसा मिल गया है कि वह उसकी आड़ में हिन्दुओं की प्रगति को अवरूद्ध करने पर कटिबद्ध हो जाते हैं। जिन स्वामी श्रद्धानंदजी ने गांधीजी के असहयोग आंदोलन में जीवन फूंका और उन्हें स्वाधीनता के आंदोलन को यशस्वी बनाने की प्रेरणा दी, अपना सीना अंग्रेज संगीनों के सामने खोल दिया। उनके इस वीरोचित कार्य की झांकी सरकार गणतंत्र दिवस के प्रदर्शन में नहीं रखना चाहती। स्वामी श्रद्धानंदजी ने राष्ट्र के उत्थान के लिये जो महान कार्य किया है उसे देश कभी नहीं भूल सकेगा और कांग्रेस की हिन्दू विद्वेष संकुचित नीति उल्टी उसे ले डूबेगी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व भारतीय जनसंघ को भी कांग्रेस नेता सांप्रदायिक बताकर उसकी निंदा करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना राष्ट्र की स्वतंत्रता और समाज की रक्षा के लिये की गई है और यह कार्य हिन्दु ही कर सकते हैं जो भारत वर्ष को अपनी मातृ भूमि मानते हैं और जिस भूमि की स्वतंत्रता एवं सम्मान की रक्षा के लिये उनके पूर्वजों ने सदा रक्त दान किया है। देश का दुर्भाग्य है कि आज ऐसे लोगों के हाथों में शासन का सूत्र है जो राष्ट्र हितैषियों और राष्ट्र शत्रुओं में कोई भेद नहीं समझते। हिन्दु संस्थाओं को सांप्रदायिक बताकर कांग्रेस नेता भले ही अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति करलें परन्तु उनका यह कृत्य राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये महंगा पड़ रहा है। हमें विश्वास है कि हिन्दु संस्थाएं कांग्रेस की इस संकुचित एवं स्वार्थ पूर्ण नीति से हतोत्साहित नहीं होगी बल्कि हिन्दु समाज को कांग्रेस के राष्ट्रवाद के छद्म से सचेत कर उसके भीतर हिन्दुत्व का स्वाभिमान एवं राष्ट्र रक्षा की शक्ति का संचार करती रहेंगी।

महर्षि का निर्वाण स्थल

(श्री मूलचंद आर्य, सम्पादक "अभय घोष" अजमेर)

इन दिनों समाचारपत्रों तथा संसद में भी महात्मा गांधी के निर्वाण स्थल बिड़ला भवन के राष्ट्रीयकरण एवं अधिग्रहण की बड़ी चर्चा है। एक कांग्रेसी सदस्य ने इस हेतु बिड़ला भवन पर अनशन तक किया।

महान राष्ट्रोन्नायक महर्षि दयानंद का निर्वाण अजमेर में मिलाप हाउस में हुआ था। अभी तक आर्य समाज तथा हिन्दू संस्थाओं के अन्य नेताओं द्वारा उस स्थान का अधिग्रहण करके ऋषि के उपयुक्त राष्ट्रीय स्मारक नहीं बनाया जा रहा है। आर्य समाज की स्थापना सम्बन्धी शताब्दी समारोह की तैयारी के अवसर पर उसका अधिग्रहण एवं राष्ट्रीयकरण अत्यावश्यक है।

मैं उक्त स्थान पर बलपूर्वक अधिकार के पक्ष में नहीं हूं। उस स्थान का समुचित मूल्य देकर ही अधिग्रहण का समर्थक हूँ। इस समय यह स्थान महर्षि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के पास बंधक है। परोपकारिणी सभा के प्रधान लाला हंसराज गुप्त हैं तथा उसके मन्त्री श्रीकरण जी शारदा हैं। इस सम्बन्ध में भी हिंदू महासभा, जनसंघ, कांग्रेस व रामराज्य परिषद आदि सभी राष्ट्रवादी, समाजवादी और धार्मिक संस्थाओं के नेताओं को आवश्यक जनजागरण करके समुचित कदम उठाना चाहिए।

('वीर अर्जुन' से साभार)

स्वतंत्रता, स्वदेशी–आन्दोलन और स्वदेशभक्ति के जनक, राष्ट्र पितामह

महर्षि दयानंद और उनकी राष्ट्रीय विचारधारा

—श्री जगन्नाथ शास्त्री

यद्यपि १८५७ से १८५९ तक जबतक भारत में प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध लड़ा जा रहा था तब महर्षि दयानंद सरस्वती कहां और क्या करते रहे, इसका कहीं लिखित उल्लेख नहीं है। स्वयं महर्षि ने भी अपनी आत्म कथा में इन तीन वर्षों को छोड दिया है,

परन्तु महर्षि दयानद के प्राप्य ग्रथों और भाषणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वामीजी उन दिनों अत्यधिक सक्रिय रहे और उस युद्ध में विभिन्न सूत्रों को या तो संगठित करते या स्वदेशभक्ति, स्वराज–सुराज्य का मंत्र फूंकते रहे।

सन् १८८५ में बनी कांग्रेस मंच से दादाभाई नौरोजी, गोखले, तिलक, मालवीय, सुभाष और गांधी आदि ने भी इस क्षेत्र में कार्य किये परन्तु इन सबके प्रेरणा स्रोत महर्षि ही थे। श्रीमती एनी विसेण्ट ने स्वामीजी को स्वराज्य का प्रथम मंत्रदाता स्वीकार किया है और अनन्तशयनम् आयंगर तो उन्हें राष्ट्र पितामह मानते हैं।

पूर्ण स्वतंत्रता की मांग

१८७३ में लार्ड नार्थ ब्रुक गवर्नर व वायसराय से स्वामीजी ने जो वाक्य कहे, वे उनकी स्वदेश भक्ति के पूर्ण द्योतक हैं। उन्होंने कहा था–यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबोध राजनीतिक उन्नति और संसार के राज्यों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये, श्रीमान जो, ईश्वर से नित्य सायं, प्रातः उसकी अपार कृपा से इस देश की दासता से मुक्ति की ही प्रार्थना करता हूं।

स्वामीजी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेद भाष्य, आदि में राज्य, राजा, न्याय, दंड, संपत्ति का अधिकार आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम

कांग्रेस निर्माण से भी तीन वर्ष पूर्व १८८२ में सत्यार्थप्रकाश में आपने लिखा कि, जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य सुखदायक नहीं है; विदेशी राज्य चहे कितना ही अच्छा हो अपने राज्य की तुलना नहीं कर सकता।

स्वामीजी देश की पराजय का कारण आपस की फूट, अब्रह्मचर्य, अविद्या, बाल–विवाह, अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषण, वेद–विरहितता मानते थे और इसीलिए उन्होंने समाज में से इन कुरीतियों को दूर करने के लिए जीवनपर्यंत न केवल प्रयास किया वरन् आर्यसमाज की स्थापना भी इसी उद्देश्य से की। यही कारण है कि अंग्रेजों के लिए

आर्य समाज सदा सिर दर्द रहा है और आर्यसमाज क्रान्तिकारियों का जनक बन गया।

स्वदेशी आन्दोलन

लोग शायद बंगभंग या गांधीजी के चर्खायज्ञ से स्वदेशी आन्दोलन का आरंभ मानते हैं परन्तु १८७५ से ही आर्यसमाज ने स्वदेशी वस्त्र और स्वदेशी वेशभूषा का आन्दोलन शुरू कर दिया था।

स्वामीजी की ये पंक्तियां स्वदेशी आन्दोलन को चिरस्थाई बनाये रखेंगी—जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति, तन-मन-धन से सब मिल कर प्रीति से करें।

स्वामीजी अंग्रेजों द्वारा हिन्दु धर्म परिवर्तन से अत्यन्त दुखी थे। उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा था कि यह बड़े शोक की बात है कि जयपुर में अनेक गिरजाघर बन गये और पादरी, राम, कृष्ण आदि भद्र पुरुषों की निरंतर निंदा करते हैं और सैकड़ों को बहका कर भ्रष्ट कर रहे हैं। उनको हटाने को पंडित और राजा आदि राज पुरुषों ने कुछ भी प्रयत्न नहीं किया।

इसीलिए स्वामीजी ने शुद्धि आन्दोलन का संदेश दिया। यदि वे न होते तो शायद आज देश में शिखा-सूत्र का नामोनिशान न मिलता। स्वामी जी का यह दृढ़ मत था कि धर्म परिवर्तन से न केवल संस्कृति और धर्म परायणता बदल जाती है अपितु राष्ट्रीयता भी बदल जाती है।

स्वामीजी एकात्मक शासन के समर्थक थे। किंतु वह किसी एक प्राणीको राजा बनाने के विरुद्ध थे। उनका मत था कि एक को स्वातंत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये किन्तु राजा, जो सभापति, तदाधीन सभा के अधीन, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन; प्रजा राजसभा के अधीन रहे। तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिये, एक मनुष्य को कभी नहीं। उनकी राय में तीन सभाएं—राजसभा, विद्यासभा और धर्म सभाएं होनी चाहियें, जिनके विद्वान और धार्मिक पुरुष सदस्य हों। वे धर्म सहित राजनीति के समर्थक थे।

स्वामीजी ने भारत के किसान आदि परिश्रमी व्यक्तियों को ही राजाओं का राजा घोषित किया। उन्होंने राजा व राजपुरुषों को स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे प्रजा की साधारण सम्मति के विरूद्ध न हों। परन्तु सम्मति देने का अधिकारी स्वामीजी केवल उसी को मानते थे जो सुशिक्षित और धार्मिक हो। उनकी राय थी कि जो मूर्खों के कहे हुये धर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे सैंकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं।

यद्यपि स्वामीजी कड़े से कड़े दण्ड के समर्थक थे परंतु उनका मत था कि जैसे धान्य का निकालने वाला छिलकों को अलग कर धान्य की रक्षा करता है अर्थात् टूटने नहीं देता, वैसे राजा डाकू, चोरों को मारे और राज्य की रक्षा करे।

स्वामीजी ने स्वराज्य के लिए और अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य, नीति, पराक्रम और बल आदि को उत्तम गुण माना।

अनिवार्य शिक्षा

स्वामीजी अनिवार्य शिक्षा के मतदाता भी हैं। उनका मत है कि ५ वें ८ वें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला में अवश्य भेज देवे उन्होंने जो न भेजे वह दण्डनीय हो। वे माता को प्रथम, पिता को द्वितीय और आचार्य को तृतीय शिक्षक मानते थे। इसलिए वे नारी शिक्षा के समर्थक थे। शिक्षा, के लिए और ऋषि, राजा, दरिद्र सबको समान रूप से एक जैसा व्यवहार करने के लिए लिखा है। इसके अतिरिक्त वे कलाकौशल, शिल्प कला को अधिक उपयोगी मानते थे और कहते थे कि यदि जर्मनी भी जाना पड़े तो जायें।

हिन्दी

गुजराती होते हुये भी स्वामीजी ने अपने ग्रंथ हिंदी और कुछ संस्कृत में लिखे थे। वे मानते थे कि हिंदी के साथ सभी देशी भाषाओं को प्रोत्साहन देना चाहिये। उनका मत था कि जब पांच-पांच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।

(शेष पृष्ठ १० पर)

धर्म निरपेक्ष राज्य की अनोखी उपज

(डॉ. रघुनाथसिंह वर्मा, एम. बी. बी. एस., प्रधान, आर्य समाज, खंडवा)

भारतवर्ष भूमंडल का वह भाग है जिसे संस्कृति तथा ज्ञान रूपी मरीचिमाली भगवान भास्कर ने सर्व प्रथम आलोकित किया और यहां के ज्ञानवान ऋषि मुनियों ने संसार के भिन्न-भिन्न भागों में जाकर संस्कृति तथा ज्ञान का विस्तार किया, इसे फैलाया। इसी कारण जब पृथ्वी के अन्य भागों के वासी नितान्त अज्ञान में जंगली हालत में रहकर अपना जीवन यापन कर रहे थे, उस वक्त इस देश के लोग सब तरह से संम्पन्न और सुखी थे। यहां का जन जीवन वर्णाश्रम धर्म के अनुसार बड़े बड़े चार भागों में विभाजित होकर अपने अपने कर्मों द्वारा संसार की सेवा कर रहा था– संस्कृति तथा ज्ञान का प्रसार कर रहा था। ज्ञान रूपी धन ही एक ऐसी वस्तु है जिसको जितना बाटों उतनी ही बढ़ती है। उनके सम्मुख कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का महान ध्येय था, जिसकी पूर्ती में वे तन मन से लगे हुये थे। इस महान् कार्य में उनको कई सदियां लगी, और तब कहीं पूर्व और पश्चिम के अन्य देशों में संस्कृति का विस्तार जो देख रहे हैं- देखने को मिला। उन्नति दो प्रकार की होती है, एक भौतिक और दूसरी आध्यात्मिक। भारतवर्ष धर्म प्रधान देश होने से यहां आध्यात्मिक उन्नति जन जीवन में रमी हुई है। परन्तु अन्य देशों में भौतिक उन्नति अपना घर कर गई। खाओ पिओ- और मौज करो का ही ख्याल रहा। इन्द्रिय सौष्ठव तथा इन्द्रिय लम्पटता में ही ये लोग लगे हुये हैं। धार्मिक भावना जागृत नहीं है। नैतिकता की बहुत कमी है। यही कारण है कि ऊपरी चमक धमक से चका-चौंध होकर सचाई के सच्चे मार्ग से दूर रहे और अनैतिकता, दुराचार पनपता रहा, बढ़ता रहा।

भारतवर्ष में स्वतंत्रता के पश्चात् राज्य द्वारा धर्म निरपेक्षता होने से लोग धार्मिक भावना से दूर होते गये और आने वाली पीढ़ी पढ़ लिखकर भी उद्दंड और नैतिकता से दूर चली गई। धार्मिक भावनाएं और मर्यादा शनैः शनैः अस्त होती गई और इनमें की अनैतिकता जड़ें जमने लगीं। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव को बिलकुल भूल कर आज स्वतंत्रता के ठीक २० वर्ष पश्चात् यह पीढ़ी हमारे सामने निर्भय रूप से स्वच्छंद होकर देश के एक छोर से दूसरे छोर तक हुडदंग मचा रही है।

देश में कई वर्षों से नियमानुसार आदर्श रूप में चलने वाले अनेकों विश्वविद्यालय आज छात्र हुडदंग के केन्द्र बन गये हैं। जन जीवन त्रसित हो गया है। शासक और अभिभावक आज इनके इस तरह के कारनामे देखकर दातोंतले उंगली दे रहे हैं। धर्म निरपेक्ष राज्य की यह उपज सबों को हैरान कर रही है और वे चिन्ता में पड़ गये हैं कि इन उच्च शिक्षित वयस्क लड़के लड़कियां को क्या हो गया जो ये अपने देश ही की बहुमूल्य वस्तुओं को नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं, आग लगा रहे हैं, तोड फोड कर रहे हैं, इनका विवेक कहां गया। देश के मान्य बुजुर्गों वा और माननीय आचार्यों का और अधिकारियों का इनको कुछ भी ख्याल नहीं है। जो सनक में आता हैं वही ये करने लगते हैं - कोई इन्हें रोकने की दृढ़ता नहीं कर सकता और रक्षक अधिकारी वर्ग की ये मुखालफत करके उनका सामना बांधते है। असली कारण यह है कि धार्मिक शिक्षा के अभाव में ये नैतिकता खो चुके हैं। मानापमान ये भूल गये हैं। अपने आगे ये किसी को भी कुछ नहीं समझते, ये पूर्ण रूप से उश्रृंखल हैं। मर्यादा नाम की कोई चीज इनके मगज में नहीं है। विद्या का अजीर्ण हो गया है इन्हें मानो सन्निपात हो गया है। इनके इस तरह के व्यवहार का एक मात्र कारण धार्मिक शिक्षा का अभाव, नैतिकता का अभाव, इन्हें जीवन संग्राम की भीषणता भी सता रही है। पढ़ लिख कर भी जीवन से ये निराश हो गये हैं। इनका भविष्य सचमुच अंधकार में है। देश के कर्णधारों को सोचना चाहिये, विचार करना चाहिये और इनके भविष्य श्रेयस्कर का रास्ता

अविलम्ब ढूंढ़कर इनके सामने रखना चाहिये । तब ही इनका भविष्य सुधरेगा । देश के क्षेत्र में धर्मोपदेश का स्थान सर्वोपरी है । वह स्थान हमको पुन. प्रदान करना चाहिये । धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः–

अतः आवश्यक है कि धार्मिकता की पृष्ठ भूमि पर ही शिक्षा का विस्तार किया जावे ताकि आदमी नैतिकता के महान आदर्शों को अपना के अपना व्यवहार ईमानदारी पर आधारित करे तब ही भ्रष्टाचार और बेइमानी का विनाश होगा– जन जीवन सुखी होगा । शंकर और दयानंद, सरसैयद अहमद और महामना मालवीय, गुरूदेव और गांधी के देशवासी छात्र आज कैसे निरंकुश दिखलाई देते हैं ।

गांधी शताब्दी के पुनीत अवसर पर हमारे देश के कर्णधार और शासक इस विषय में चिंतन करें और जनता के श्रेय और सिद्धी का मार्ग प्रशस्त करें क्योंकि - विद्या धर्मेण शोभते - ।

शिक्षा तथा ज्ञान का प्रचार नवीन विकसित होने वाले नन्हें बालकों के मन पर ही स्थाई असर डाल सकता है । बड़े बूढ़े जो विकृत हो चुके हैं उनका सुधार कठिन हैं असंभव ही समझो । आगे आने वाली पीढ़ियों को सुधारो, जो कमी पाई गई है उसे दृढ़ता से पूरा करो और देश के नवयुवकों की शिक्षा में नया मोड़ दो । तुरन्त आशान्वीत फल प्राप्त होगा, देश का भविष्य सुधरेगा ।

Let knowledge grow from more to more
But more of reverence in us dwell;

ज्ञान की खूब वृद्धि करो परंतु आदर मर्यादा को भी अपने अंदर स्थान दो ।

विद्या ददाति विनयम्, विनयात् याति पात्रताम्
पात्रतात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम्

(पृष्ठ ८ का शेष)

स्वामीजी हिंसा और चोरी, विश्वासघात और छल कपट रिश्वत आदि से प्राप्त भोग को अभक्ष्य मानते थे । व्यवहार तथा खान-पान में समानता के पक्षपाती थे । उन्होंने एक व्याख्यान में कहा था कि हमारे यहां पूर्व से ही ऋषि-मुनि, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते थे ।

गो–हत्या बंदी

गो-हत्या बंदी के लिए स्वामीजी ने करोड़ों भारतवासियों से हस्ताक्षर कराकर गर्वनर जनरल और महारानी विक्टोरिया को भेजे थे । उनका मत था कि एक गाय को मारने और मरवाने से ४२०००० मनुष्यों के सुख की हानि होती है ।

मूर्ति भंजक नहीं

मूर्ति पूजा विरोधी होते हुये भी वे मूर्ति–भंजक नहीं थे । बरेली का शिव मंदिर इस बात का सजीव प्रमाण है । जिलाधिकारियों ने उन्हें कहा कि यदि वे सड़क के इस शिव मंदिर को हटा दें तो जनता का क्रोध नहीं उभरेगा । स्वामीजी ने बड़े बड़े शब्दों में कहा था कि मैं मूर्ति पूजा विरोधी अवश्य हूं परन्तु मूर्ति भंजक नहीं, यदि मंदिर पर प्रहार किया गया तो दयानंद पहला व्यक्ति होगा जिस पर पहला प्रहार होगा । समाज सुधार के नाते उन्होंने शुद्धि आन्दोलन, विधवा विवाह चलाये दूसरी ओर बाल विवाह का विरोध किया ।

आज उनके निर्वाण दिवस पर आइए विचार करें कि क्या हम उनके बताए मार्ग पर सही अनुसरण कर रहे हैं ।

आइये संध्या करें ।

(श्री चंद्रपाल यादव, आर्य समाज, गंजीपुरा जबलपुर)

●

रमेश जिद्द कर रहा था कि आज संध्या पर नहीं बैठेंगे । उसकी मां जो कि गुरूकुल की स्नातिका है अड़ी हुई थीं कि देखूं कैसे संध्या न करेगा । यदि संध्या न करेगा तो भोजन भी नहीं मिलेगा । मैं अचानक पहुंच गया । मां ने पल्लू सम्हालते हुए कहा कि देखिये न, कहता है संध्या न करूंगा ।

मैंने कहा कि कृपया एक लोटा जल ला दें हाथ मुंह धो डालूं फिर बातचीत कर सकूंगा । मैंने हाथ मुंह धोकर एक आसनी मांग ली और संध्या करने बैठ गया । जब मैं बैठ गया तो बच्चा भी आ गया और बोला कि हम भी बैठेंगे । बस हम दोनों ने संध्या कर ली ।

बच्चे आपसे प्रेरणा लेते हैं । जब आप संध्या करने बैठें तो कृपया अपने बच्चे को बैठाना न भूलें अन्यथा वह नास्तिक हो जायेगा । आपके घर में कोई प्रतिमा तो है नहीं फिर आप ही सोचिये कि आपका बच्चा कैसे सीखेगा कि उसे क्या करना है ।

भारतीय संस्कृति का मेरूदंड है 'ईश्वर प्राणिधान' । इस ईश्वर प्राणिधान को कैसे जीवन में उतारा जावे तथा उतरवाया जावे यह अहम सवाल है ।

तो बच्चे तो नकल से सीखते हैं । उनके लिये तो यह काफी होगा कि आप संध्या करते समय उन्हें पास बुला लें । किंतु टेढ़ा प्रश्न उन लोगों के लिये है जो बचपन में संध्या न सीख सके ।

वयस्क लोग हमेशा हानि लाभ से तय करते हैं कि उन्हें क्या करना और क्या नहीं करना । अतएव आइये सोचें कि संध्या क्यों करें ।

संसार की रचना में प्रभू ने बड़े बड़े विलक्षण कार्य किये हैं । प्रथम तो वह हमारे चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देता, द्वितीय उसने दया करके हमें बुद्धि दी है ।

दिखाई नहीं देता इसीलिये तो उसे खोजना पड़ता है । इस खोज के लिये हमें एक सिद्धांत ध्यान में रखना होगा कि नियम बिना नियामक के ठहर ही नहीं सकता । बस इसीलिये संध्या में एक मंत्र है "ओ३म सूर्या चंद्रमसौधाता यथा पूर्वमकल्पयत . ." इसे जपो और नियामक को तलाशो । तलाशने के लिये बुद्धि का प्रयोग करना है ।

बस इसी खोज में आप को वह वस्तु प्राप्त हो जावेगी जिसे हम मोक्ष कहते हैं और कि जो मनुष्य जाति का परम पुरुषार्थ है ।

अतएव आइये हम सब संध्या करें । तथा एक स्वर से बोलें–वैदिक धर्म की जय ।

हैदराबाद आर्य महासम्मेलन की एक झलक

राष्ट्रीय समस्याओं पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित

(समालोचक – प्रा. देवदत्त तुंगार, नान्देड)

आर्यसमाज एक महान सुधारक तथा राष्ट्रवादी संगठन है। भारत में तथा विदेशों में भी इसकी अनेक शाखाएं है। इसके द्वारा कई स्कूल्स, गुरुकुल तथा अनाथालय चलाए जाते हैं। जब देश कभी विशेष विपत्तियोंसे गुजरता है, राष्ट्र के सम्मुख कोई गम्भीर समस्या उपस्थित होती है तो आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य महसम्मेलन का आयोजन करती है। हैदराबाद में नवम्बर मास के द्वितीय सप्ताह में दशम आर्य महासम्मेलन आर्यजगत के तपोवृद्ध सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की एक झलक तथा उसमें पारित कुछ महत्वपूर्ण प्रस्तावोंका संक्षिप्त परिचय इस लेख में मैं प्रस्तुत कर रहा हूं।

इस सम्मेलन के उद्घाटन के लिए सौभाग्य से मॉरिशस के उच्चायुक्त (हाइ कमिशनर) श्री रवीन्द्र घरभरन जी पधारे। महासम्मेलन के अन्तर्गत राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन आयोजित किए गये। गोरक्षा सम्मेलन का उद्घाटन पुरी के जगद्गुरू श्री शंकराचार्य जी ने किया।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता संसद सदस्य श्री बलराज मधोक ने की। आपने अध्यक्षीय भाषणमें बताया कि चीन तथा पाकिस्तान के साथ भारत में रहनेवाले पंचमांगियों से देश की सुरक्षा को गम्भीर खतरा है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थिति को देखते हुए अफगानिस्तान तथा फारमोसा से भारत को मित्रता करनी चाहिए। बिहार के रामनारायण शास्त्री ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि, कोरिया व्हिएतनाम तथा जर्मनी के एकीकरण (जुडानेका) का प्रयत्न हो रहा है, फिर अखण्ड भारत की योजना क्यों सफल नहीं हो सकती? भारत को फिर से अखण्ड बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। इस पर आपने बल दिया। संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने अपने भाषण में विदेशी एजेंटों का देश को बड़ा ही खतरा है यह दर्शाया। संसद के जनसंघीय सदस्य तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामगोपालजी शालवाले ने अपने सारगर्भित भाषण में 'आसाम' प्रदेश को 'काश्मीर' जैसा प्रश्न चिन्हांकित तथा उलझन में पड़ा हुआ प्रदेश नहीं बनने देंगे यह बलपूर्वक प्रतिपादन किया। आर्य वीर दल के नेता तथा संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने प्रचलित भाषावाद तथा जातिवाद की घोर विभर्त्सना की। सभी वक्ताओं ने राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता प्रतिपादन की।

वेद सम्मेलन

पं. धर्मदेवजी विद्यामार्तंड, पं. युद्धिष्ठिर मीमांसक, पं. शिवकुमार शास्त्री आदि ने वेदों की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए महर्षि दयानन्दजी के वेद भाष्य की विशेषताएं बतलायीं। डॉ. फ्लेमिंक जैसे पाश्चात्य तत्वचिन्तकों ने भी वेदों की महत्ता को स्वीकार किया है यह भी वक्ताओं ने बताया।

महिला सम्मेलन

श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालंकृता ने महिला सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए बताया कि वैदिक संस्कृति में स्त्री को दुर्गा, लक्ष्मी तथा सरस्वती के रूप में देखा जाता है। किन्तु आज तो पाश्चात्यों के प्रभाव से स्त्री को कामवासना की पूर्ति का साधन मात्र समझा जा रहा है। इस्लाम में तो उसे 'जायदाद' समझा जाता है। इस दूषित दृष्टिकोण को त्यागना चाहिए।

उद्घाटक का अभिभाषण

आर्य महा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मॉरिशस के उच्चायुक्त श्री रवीन्द्रजी घरभरन ने कहा कि आर्य समाज ने दलित, पीडित तथा अछूत समझे जानेवाले दुर्बल घटकों का विकास करने का भरसक प्रयत्न किया है। आज वर्गवाद, सम्प्रदायवाद को छोड़कर मानवता की सेवा को ही अपनाना चाहिए। भारत के ही लोग मॉरीशस से शताब्दिओं पूर्व जा बसे हैं। भारतियों ने ज्ञान की पुस्तकें मॉरीशस को ले गये जो भौतिक सम्पत्ति की अपेक्षा बहुत ही मूल्यवान है। मॉरीशस में आर्य समाज का पर्याप्त प्रचार है यह भी आपने बताया।

पंडित नरेन्द्रजी का भाषण

"दक्षिण के केसरी" तथा सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष पंडित नरेन्द्रजी ने अपने भाषण में देश की सांस्कृतिक एकता तथा भौगोलिक अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने की अपील की तथा केरल में मुस्लिम बहुल जिला बनाने की प्रस्तावित योजना की विभर्त्सना की। कुछ स्वार्थी तत्वों ने दक्षिण में भाषिक समस्या को पैदा किया है यह भी आपने स्पष्ट कर दिया।

कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव

इस सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पारित हुए। हिन्दु जाति को खण्ड खण्ड करके निर्बल बनाने तथा विघटित करने के प्रयास को देशघातक बताते हुए एक प्रस्ताव में अछूतोद्धार के कार्य को फिर से मिशनरी स्पिरिट से अपनाने का आव्हान किया गया। ईसाई तथा मुसलमान, परिवार नियोजन का विरोध कर रहे हैं जब कि एक करोड़ हिन्दुओं ने उसे अपनाया है, इसलिए हिन्दु जाति की जनसंख्या पर दुष्प्रभाव हो रहा है इस तथ्य की ओर अन्य एक प्रस्ताव द्वारा ध्यानाकर्षण किया गया है। अन्य एक प्रस्ताव में मध्यप्रदेश तथा उडीसा धर्म परिवर्तन विषयक विधेयक के निर्माण पर वहां के प्रशासकों को बधाई दी गयी है और विदेशी ईसाई मिशनरी और चीनी पंचमांगियों के अराष्ट्रीय कार्यों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है।

महाराष्ट्र सरकार ने पादरी फादर फेरर को अराष्ट्रीय कार्यों के लिए प्रचार करने पर पाबन्दी लगायी किन्तु आंध्रप्रदेश सरकार ने उसे धर्म (या अधर्म ?) प्रचार के लिए अनुमति दी इस पर सम्मेलन में क्षोभ तथा असंतोष प्रकट किया गया।

पंजाब के मध्यावधि चुनाव में हिन्दी समर्थकों को ही अपना मत देने का आर्य नर नारियों से एक प्रस्ताव द्वारा अनुरोध किया गया है। इस प्रकार विविध विषयों पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। इस आर्य महासम्मेलन ने आर्य समाज में आए हुए शिथिलता को दूर करके आर्यजनों को ज्वलन्त राष्ट्रीय समस्याओं का कड़ा मुकाबला करने का उत्साह दिया है। सम्मेलन में आफ्रिका, त्रिनिडाड, घाना, सिंगापूर, थाईलॅण्ड आदि देश विदेश के लगभग पांच हजार प्रतिनिधि उपस्थित थे। सम्मेलन द्वारा आयोजित प्रकट सभाओं में डेढ लाख से भी अधिक जन-समुदाय उपस्थित रहता था। सम्मेलन के अध्यक्ष महात्मा आनंद स्वामीजी का जो अति भव्य जुलूस चारमीनार से प्रदर्शनी मैदान तक निकाला गया वैसा जुलूस आधुनिक काल में संभवतः पहला ही था ऐसा जानकार सूत्र से ज्ञात हुआ। आम तौर पर हम यह कह सकते हैं कि हैदराबाद के दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन ने आर्य (हिन्दु) जाति में नया प्राण फूंक दिया है।

आर्य समाज का छटवां नियम

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर

भारतीय शूर वीरों की गौरव गाथा

(श्री मधुकर सदार, सिद्धांतालंकार, दयानन्द भवन, नागपुर)

संसार में भारत जननी सदा से धीर, वीर, शूर सुतों को ही जन्म देती रही है। हमारे देश का इतिहास वीरता की गाथाओं से भरा पड़ा है। इस भारत माता ने ऐसे निर्भय शूर-वीरों को जन्म दिया है जो राष्ट्र और देश के सजग प्रहरी रहे हैं। उन्हीं के तप, त्याग और चरित्र-बल पर हम आज एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम इस अवसर पर उन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लें जिससे हम स्वतंत्र भारत की रक्षा और उन्नति कर सकें।

भगवान श्रीराम, कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती, जैसे युग-निर्माता, प्रणवीर महाराणा प्रताप, छत्रपती शिवाजी जैसे राष्ट्र रक्षक, दुर्गावती, झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएं, सहस्त्र नारियों के साथ संसार में अनोखा जौहर करनेवाली महारानी पद्मिनी, राष्ट्र की स्वतंत्रता की अग्नि प्रदीप्त कर स्वराज्य के आंदोलन को चमकाकर विदेशी सत्ता का उन्मूलन करने वाले राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस, लाला लाजपतराय और भगतसिंग जैसे अमर शहीदों की भारत-माता जन्मदात्री हैं।

बड़े बड़े युद्ध भारत-माता ने देखा है फिर भी आज तक हम जीवित है। भगवान श्रीकृष्ण के विश्ववंद्य गीता का उपदेश यहां के वीरों ने सुना है, रावण जैसे राक्षस राज का जिन्होंने पराभव किया उन भगवान श्रीरामचंद्र का आत्मबल और दृढ़ निश्चय राष्ट्र निर्माता, एकता का मंत्रदाता महर्षि दयानन्द का दिव्य संदेश और वीर शहीदों का अमर बलिदान हमें प्रेरणा दे रहा है, फिर कौन माई का लाल है जिस में यह साहस हो जो हमारे देश को फिर से गुलाम बना सके।

भारतीय सैनिकों की गणना संसार के सर्व श्रेष्ठ योद्धाओं में की जाती है। पिछड़े हुए हथियारों और युद्ध सामग्री को लेकर भी भारतीय जवानों ने पाकिस्तान को १९६५ में पराजित किया जब कि पाकिस्तान ने अमरीकी शस्त्रास्त्र का प्रयोग किया था। किस साहस और उत्साह को लेकर भारतीय नौजवानों ने चुन-चुन कर आक्रमणकारियों का सफाया किया पाठकगण भली प्रकार जानते हैं। भारतीय जवानों ने जिस रणकौशल, शौर्य और आत्म बलिदान को प्रदर्शन किया है उसे हम ही नहीं सारा संसार जान गया है। समस्त भारतीयों को अपने सैनिकों की वीरता पर गर्व है।

विकृत अहिंसा के चक्कर में भारत आज तक पड़ा रहा और धूर्त के साथ सज्जनता का वर्ताव करता रहा। परिणाम यह हुआ कि विदेशी आक्रमणकारी भारत को लूटते रहे। इस अहिंसात्मक व्यवहार से भारत को बहुत क्षति उठानी पड़ी इसका इतिहास साक्षी है।

राष्ट्र की सीमाओं पर आक्रमण करनेवाले आततायी बर्बर शत्रु का वध करना पाप नहीं, पुण्य है, क्षात्र धर्म है। ऐसे शत्रु की शक्ति का विध्वंस करने के लिए बिना संकोच और बिना परिस्थितियों की चिंता किए शत्रु पर आक्रमण करना श्रेयकर है।

पाकिस्तान से अब हमें अच्छी प्रकार निबटना चाहिये, चाहे कितनी भी हानियां क्यों न उठानी पड़े, कितने भी बलिदान क्यों न करने पड़े। युद्ध सदा हानिकारक नहीं होता है। वह लाभ भी पहुंचाता है। अगस्त १९६५ में भारत को पाकिस्तान के साथ जो संघर्ष करना पड़ा, भारत को लाभ ही मिला, वह युद्ध हमारे लिए वरदान ठहरा। चीन से भी लड़ाई की

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नाम परिपत्र

भारत में विदेशी राज्यों के सहयोग और समर्थन से वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति के विरूद्ध बड़ा भारी षड़यन्त्र चल रहा है और सेवा व शिक्षा की आड़ में यहां के अनुसूचित एवं बनवासी बन्धुओं का लान् सामूहिक धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। सन १९६१ की जनगणना के अनुसार भारत में ईसाईयों की संख्या जहां ४७ लाख के लगभग थी वहां वह १९६१ में बढ़ कर देढ़ करोड़ के लगभग बन गयी। धर्म परिवर्तन की आड़ में राष्ट्र द्रोह को भी जन्म दिया जा रहा है। नागा तथा मिजो विद्रोह इस का ज्वलन्त प्रमाण है।

वर्तमान समय में रूस, चीन, अमरीका तथा पाकिस्तान मुख्यता: इन विदेशी षड़यत्रों के सूत्रधार बने हुए है. इन षड़यन्त्रों ने देश के धार्मिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक प्रत्येक ढांचे को खतरा उत्पन्न कर दिया है। आर्य समाज अपने जन्म काल से ही देश का प्रहरी रहा है। इस विनाशलीला को दर्शक के रूप में देखते रहना इस के लिए असम्भव है।

अत: आप से प्रार्थना है कि आप को अपने यहां सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चालित अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति की एक शाखा स्थापित कर अपने राज्य के हरिजन व वनवासी बन्धुओं की इन विदेशी षड़यन्त्रों से रक्षा करने की योजना बनानी चाहिए।

सूचनार्थ निवेदन है कि सार्वदेशिक सभा ने मुख्यत: उन क्षेत्रों में अराष्ट्रिय प्रचार विरोध के कार्य को करने का निश्चय किया है जहां आर्य समाज का अस्तित्व नहीं है अथवा जहां विशेष विषय परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, उ. प्र. के पश्चिमी जिले तथा आसाम आदि राज्यों में केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। अब तक हजारों की शुद्धियां की जा चुकी हैं।

इस लिए प्रार्थना है कि आप अपने राज्य में इस कार्य को अपने हाथ में लेकर इन विदेशी षड़यन्त्रों से वैदिक संस्कृति की रक्षा में योगदान दें और अपने द्वारा की जाने वाली कार्यवाही से हमें सूचित करने की कृपा करें।

तैय्यारी रखनी चाहिए और देश के भीतरी शत्रुओं तथा समस्त विरोधी तत्वों से भी लड़ना आवश्यक है। अधर्म का नाश, धर्म की रक्षा तथा राष्ट्र की सुरक्षा के लिये प्रत्येक भारतीय बालक-बालिका को, युवा-युवती को, वृद्ध-वृद्धा को तथा समस्त परिवार को राष्ट्ररक्षा के कार्य में अपना सहयोग देना चाहिए।

भारत पाकिस्तान के संग्राम में भारतीय वीरों के अदम्य साहस, अतुल धैर्य, अनुपम औदार्य और देश-भक्ति की गाथा सुनकर हमारा हृदय पुलकित हो जाता है। स्वतंत्र भारत की रक्षा के लिए जिन नवयुवकों ने अपनी पवित्र आहुति दी है, उनके नाम इतिहास में सदैव अमर रहेंगे। इन वीरों ने भारत-माता का नाम उज्जवल किया है। ऐसे वीर रत्न के पराक्रम की ज्योति से भारत-माता गौरवान्वित हुई है, आज समस्त भारत उनका ऋणी है। ऐसे वीरों को भारतीय गणतंत्र के सुअवसर पर हमारा शतश: प्रणाम, जिनके त्याग और तप से हम स्वतंत्र गणतंत्रात्मक राज्य संघ के आज भागी हैं। ईश्वर हमें प्रेरणा दे कि हम उनके सद्गुणों को अपना सकें और सदैव सदैव प्रत्येक वर्ष की २६ जनवरी को अपना गणतंत्र दिवस बड़े उल्लास और उत्साह के साथ बिना किसी भेद-भाव के मनाते रहें। गणतंत्र दिवस के पावन राष्ट्रीय पर्व पर हमारी यही हार्दिक आकांक्षा है। *

३० मार्च १९६९ को चांदनी चौक दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा लगेगी

श्री केदारनाथ साहनी अध्यक्ष दिल्ली नगर निगम की घोषणा

दिल्ली, २५ दिसम्बर।

आज यहां अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-जयन्ती पर आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा में नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री केदारनाथ साहनी ने घोषणा की कि ३० मार्च १९६९ को चांदनी चौक स्थित टाउनहाल के सामने स्वामी श्रद्धानन्द की प्रतिमा लगा दी जाएगी।

आपने कहा कि केन्द्र हमें २६ जनवरी की परेड में स्वामी श्रद्धानन्द की झांकी सम्मिलित करने से रोक सकता है, परन्तु हमें चांदनी चौक में उनकी प्रतिमा लगाने से नहीं रोक सकता। आपने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द के विचार देश की आत्मा के विचार थे। जो जातियां अपने महात्माओं को विस्मृत कर बैठती हैं वह कदापि जीवित नहीं रह सकतीं।

मुख्य कार्यकारी पार्षद प्रो. विजयकुमार मल्होत्रा ने इस अवसर पर अपने भाषण में कहा कि हमने केन्द्रीय सरकार को स्पष्ट शब्दों में लिख दिया है कि यदि हम २६ जनवरी की परेड में कोई झांकी शामिल करेंगे तो वह स्वामी श्रद्धानन्द की ही होगी। अन्यथा दिल्ली की ओर से कोई झांकी इस परेड में शामिल न होगी। आपने कहा कि वह दिन अविस्मरणीय है जिस दिन स्वामी जी ने अंग्रेज की संगीनों के समक्ष सीना ताना था।

श्री मल्होत्रा ने कहा कि हमने स्वामी जी के आदर्शों पर चलकर विद्यालयों में नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर दी है और ९० प्रतिशत काम हिन्दी में हो रहा है, जब कि केन्द्र ने इस काम में रुकावट डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

सभा में सर्वश्री क्षितीश विद्यालंकार, प्रो० श्यामराव, श्री इन्द्रदेव मेधार्थी एवं कुमारी पुष्पावती आदि के भी भाषण हुए।

विशाल जलूस

आज प्रातः ११ बजे से नया बाजार से एक विशाल जलूस भी निकाला गया था जिसमें दिल्ली की लगभग १२५ आर्य समाजों के अतिरिक्त आर्य विद्यालयों के छात्रों तथा छात्राओं ने भी भाग लिया। जलूस में हजारों लोग शामिल थे और यह नया बाजार से लालकुआं व चावड़ी बाजार, नई सड़क, दरीबा आदि होकर चांदनी चौक होता हुआ अपरान्ह ४ बजे के लगभग गांधी मैदान में सार्वजनिक सभा के रूप में परिणत हो गया। गत १५ वर्षों में आर्य समाज के द्वारा निकाले गए चल समारोहों से आज का चल समारोह विशालतम था। इसमें १२ बैंड, ११ घुड़सवार और अनेकों स्कूटर आदि भी शामिल थे।

वैदिक साहित्य

समस्त आर्य सामाजिक, वैदिक, धार्मिक, नवयुवक उपयोगी, बालोपयोगी, स्त्री उपयोगी एवं चरित्र निर्माण के उत्तम ग्रंथ निम्नलिखित पते से प्राप्त करें —

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ,
महर्षि दयानन्द भवन,
मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर.

धर्म और संस्कृति के उत्थान तथा राष्ट्र निर्माण में स्वामी श्रद्धानंद जी ने महान योगदान दिया !

दयानंद कन्या विद्यालय में सभा प्रधान श्री शर्माजी का उद्बोधन

आर्य समाज जरीपटका नागपुर द्वारा संचालित दयानंद कन्या विद्यालय में आयोजित श्रदानंद बलिदान दिवस के समारोह में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश-विदर्भ

के प्रधान पं. विश्वभर प्रसाद शर्मा ने स्वर्गीय हुतात्मा स्वामी श्रदानंदजी के जीवन पर विशद प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंदजी ने वैदिक धर्म और संस्कृति के उत्थान तथा राष्ट्र निर्माण के लिये महान योगदान किया उसे कभी नहीं भुलाया जा सकेगा।

आपने कहा कि स्वामी श्रद्धानंदजी महर्षि स्वामी दयानंदजी के परम भक्त थे। स्वामी दयानंदजी के उपदेशों से प्रभावित होकर ही वह कुमार्ग से बचे और अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार तथा राष्ट्र के अभ्युत्थान के लिये समर्पित कर दिया।

महर्षि दयानंदजी के सिद्धान्तों के आधार पर देश में सच्चे आर्य एवं वैदिक धर्मी तथा चरित्रवान नागरिक निर्माण करने की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानंदजी ने गुरूकुल कांगडी की स्थापना की और सब से पहले अपने दोनों पुत्रों श्री हरिश्चद्रजी ओर पं. इन्द्रजी को गुरूकुल में प्रविष्ट किया। आज गुरूकुल कांगडी भारत की एक महान विद्यापीठ है जहां से वेद वेदांग, ज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास और साहित्य का अध्ययन करके प्रति वर्ष हजारों छात्र निकलते हैं।

गुरूकुल कांगडी से निकले हुए सैकड़ों स्नातकों ने देशकी विभिन्न क्षेत्रों में मूल्यवान सेवा की है।

स्वामी श्रद्धानंदजी ने देश की महिलाओं में उच्च धार्मिक संस्कार तथा कर्तव्य परायणता उत्पन्न करने के लिये जालंधर में एक आदर्श आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना की जिसकी हजारों स्नातिकाओं ने विविध क्षेत्रों में योगदान कर के भारत की नारी जाति को गौरवान्वित किया है।

श्री शर्माजी ने कहा कि महात्मा गांधीजी को राष्ट्र सेवा में प्रोत्साहित करने वाले सब से पहले भारतीय नेता स्वामी श्रद्धानंदजी थे। जिस समय द. अफ्रीका में महात्मा गांधी भारतीयों के स्वाभिमान की रक्षा के लिये सत्याग्रह कर रहे थे। उस समय स्वामी श्रद्धानंद ने गुरूकुल की से ओर उन को काफी आर्थिक सहायता भेजी। महात्मा गांधी जब द. अफ्रीका से भारत आये और सेवा कार्य आरंभ करने का निश्चय किया तो सब से पहले उन्होंने गुरूकुल कांगडी में स्वामी श्रद्धानंदजी का आतिथ्य ग्रहण किया और उन के साथ अपने भावी कार्यक्रम के संबंध में चर्चा की। गांधीजी ने गुरूकुल कांगडी के नमूने पर ही साबरमती आश्रम की स्थापना की।

महात्मा गांधीजी ने जब १९१८ में पंजाब मार्शल-ला के विरुद्ध आंदोलन खड़ा किया तो

स्वामी श्रद्धानंदजी ने सब से पहले उनका साथ दिया। जलियान वाला बाग के हत्याकांड के बाद अमृतसर में जो कांग्रेस हुई उस के स्वागत अध्यक्ष भी स्वामी श्रद्धानंदजी बनाये गये थे। उस समय अंग्रेज सरकार के दमन से लोग आतंकित थे और बहुत कम लोग कांग्रेस के आंदोलन में भाग लेने की हिम्मत करते थे। १९२१ के असहयोग आंदोलन में स्वामी श्रद्धानंदजी ने गांधीजी का समर्थन किया और स्वयं जेल गये। महर्षि स्वामी दयानंदजी की शिक्षा से आर्य समाज के सदस्यों में देश भक्ति की भावना जागृत की। १९२१ के स्वाधीनता आंदोलन में ७५ प्रतिशत आर्य समाजी कार्यकर्ता कार्य करते थे। भाई परमानन्द और लाला लाजपतराय जैसे महान देश भक्त नेता आर्य समाज की देन थे। स्वामी श्रद्धानंदजी ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति स्वाधीनता आंदोलन में लगा दी थी। मुसलमानों के खिलाफत आंदोलन में कांग्रेस ने उनका समर्थन किया। स्वामी श्रद्धानंदजी उस समय हिन्दु मुस्लिम ऐक्य के प्रवर्तक माने जाते थे। आपने उन दिनों जामा मस्जिद में इमाम के स्थान से मुसलमानों को राष्ट्रीयता और वैदिक धर्म का उपदेश दिया था। स्वामीजी उन दिनों स्वातंत्र्य वीरों के प्रिय नेता थे। चांदनी चौक दिल्ली में स्वामीजी ने एक जूलूस का नेतृत्व किया जो अंग्रेज सरकार के विरुद्ध नारे लगाता हुआ आगे बढ़ रहा था, गुरखे सैनिक संगीनें ताने खड़े थे, मगर स्वामीजी ने उनकी पर्वा न की और निर्भीकता के साथ आगे बढ़ते गये। उन्होंने अपना सीना तान कर ललकारा कि हिम्मत हो तो उन के सीने पर गोली मारो।

स्वामी श्रद्धानंदजी ने राष्ट्र भाषा व हिन्दी के प्रचार के लिये भी बहुत बड़ा योग दिया। वह अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बनाये गये। अस्पृश्यता निवारण के लिये स्वामीजी ने दलितोद्धार सभा की स्थापना की और गुरुकुल कांगडी में अस्पृश्य जातियों के सैकड़ों बालकों को प्रविष्ट किया जो वेदालंकार, विद्यावाचस्पति आदि उपाधियों से विभूषित होकर हिन्दु समाज में सम्मानित बने तथा उच्च वर्णीय कन्याओं से विवाह किया।

आगे चल कर स्वामी श्रद्धानंदजी का कांग्रेस के नेताओं की मुस्लिम तुष्टी करण की नीति पर मतभेद हो गया। कांग्रेस मुसलमानों की उचित अनुचित सभी बातों को मानने लगी। काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से मुहम्मद अली जिन्ना ने तो यहां तक कह दिया कि हिन्दुओं में तो ८ करोड़ अस्पृश्य लोग हैं उनका कोई महत्व नहीं हैं। उन में से आधे मुसलमानों को सौंप दिये जावें और आधे हिन्दुओं के पास रहें। उस समय मुसलमान मुल्ला मौलवी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने में लगे थे।

स्वामी श्रद्धानंदजी ने उन में शुद्धि और समाज का शंखनाद कर के हिन्दु धर्म की रक्षा की। लाखों मुसलमान बने हिन्दु–मलकानों और मेनों को शुद्ध कर के पुनः हिन्दु धर्म में दीक्षित किया।

करांची की एक सुशिक्षित असगरी बेगम की भी शुद्धि की गई। इस पर मुसलिम जगत में बड़ा तूफान उठा और इसी कांड को लेकर एक मदान्ध मुसलिम युवक ने रूग्णावस्था में स्वामी श्रद्धानंदजी की हत्या कर दी। स्वामीजी के सीने पर तीन गोलियां लगीं और वे शहीद हो गये।

स्वामी श्रद्धानंदजी राष्ट्र की एक महान विभूति थे। वह वैदिक धर्म के लिये शहीद हो गये। उन्होंने राष्ट्र की मुक्ति, उन्नति और धर्म तथा संस्कृति के परिस्कार के लिये जो सेवाएं की वे सदा अमर रहेंगी। आर्य समाज ही नहीं समस्त देशवासियों का कर्तव्य है कि ऐसे महापुरुष के चरण चिन्हों पर चल कर अपने जीवन को धन्य बनावें।

समाचार संसार

प्रधानजी सभा का कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान पं. विश्वम्भर प्रसादजी शर्मा २१ दिसम्बर को दिल्ली से नागपुर प्रधारे और ३१ दिसम्बर १९६८ तक प्रतिदिन सभा कार्यालय में पधारकर कार्यालय निरीक्षण तथा प्रमुख कार्यो पर आदेश प्रदान किये और आर्य सेवक पत्र के लिये आवश्यक प्रेस सामग्री दी।

श्री त्रिलोकचंद्र शास्त्री के सुपुत्र दयानन्दजी एम. ए. लापता

यह समाचार जानकर अति दुःख होगा कि आर्य प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध महोपदेशक श्री त्रिलोकचन्द्रजी शास्त्री के सुपुत्र श्री दयानन्दजी एम. ए. गत २ नवम्बर १९६८ से लापता हैं। आज तक उनका कहीं भी पता नहीं चल सका, साधु आश्रम होशियारपुर से दयानन्दजी २ नवम्बर ६८ से गुम हैं। क्या हुआ, कहां गया, किस ओर गया, कुछ भी भेद नहीं चल रहा। शास्त्री जी रात दिन दौड़ धूप कर रहे हैं, सभी मित्र खोज में लगे हैं। सभा के सभी व्यक्ति इस दुःख से दुखी है। मेरा सभी आर्य बन्धुओं की सेवा में निवेदन है कि जिस भी बन्धु को श्री दयानन्द एम. ए. के बारे में कहीं से कोई भेद लगे तो तुरन्त सभा को सूचना दें। हम सभी उनको खोजने के प्रयत्न में लगे हैं। परमात्मा करे कि हमारा यह नौजवान कहीं सुखपूर्वक हो। आशा है सभी समाजों व संस्थाओं के अधिकारी हमारी इस कार्य में सहायता करेंगे। सभी बन्धु अपने-अपने आस-पास के स्थानों पर खोज करने का प्रयत्न करें। यही सभी से निवेदन है।

मंत्री, आर्य प्रादेशिक सभा, जालन्धर.

गोवा प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन पदाधिकारियों का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा के निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए हैं। गोवा प्रदेश में आर्य (हिन्दु) धर्म के प्रचार, प्रसार तथा ईसाई मिशनरियों के वैदिक धर्म विरोधी कार्यक्रमों को रोकने के लिए उक्त प्रतिनिधि सभा का गठन गत वर्ष किया गया था। इससे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री संसद सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले तथा श्री ओमप्रकाश त्यागी संसद सदस्य ने स्वयं जाकर गोवा प्रदेश का भ्रमण किया था और स्थानीय अधिकारियों तथा मुख्य मंत्री श्री बन्दोड़कर से भेंट कर उस प्रदेश की स्थिति का अध्ययन किया था।

वहां की हिन्दु जनता की स्थिति को लक्ष्य में रखते हुए उक्त प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन श्री शालवाले के अनुसार नितान्त उपयोगी और आवश्यक है।

निर्वाचित पदाधिकारी

प्रधान – श्री डा. अच्युत रिवणकर

उपप्रधान – श्री ना. भि. ना. गावंकर

– श्री शान्ताराम मोतीराम काम्बले एम. एल. ए.

मंत्री – श्री रामप्रसादजी सैनी

संयुक्त मंत्री – श्री एन. एल. मान्द्रेकर

कोषाध्यक्ष – श्री रामप्रकाशजी सरीन

इस प्रतिनिधि सभा के गठन में श्री रामप्रसादजी सैनी का विशेष योगदान रहा।

आर्य कन्या विद्यालय दुर्ग के प्राचार्य सम्मानित

तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय, दुर्ग के प्राचार्य श्री मन्नूलाल अग्रवाल को भारत सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट सेवा करने के उपलक्ष में देश के अन्य ९८ शिक्षकों के साथ राष्ट्रीय पुरस्कार एक विशेष समारोह में प्रदान किया। जिस में रुपये ५०० नगद तथा एक प्रमाण-पत्र सम्मिलित है।

आर्य समाज मन्दिर जरीपटका में गांधी व्याख्यान माला का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर जरीपटका, नागपुर की ओर से दिनांक ९ से ११ दिसम्बर १९६८ तक गांधी व्याख्यान माला का आयोजन किया गया था जिस की अध्यक्षता महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष श्री बालासाहेब भारदे ने किया। समारोह में महाराष्ट्र के उप मुख्य मंत्री श्री बालासाहेब देसाई, विकास मंत्री गोपालराव खेड़कर का स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिस की अध्यक्षता श्रीमती सुशीला बलराज एम. एल. ए. तथा अंजीकर एम. एल. सी. ने किया। यह तीन दिनों का भव्य समारोह उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। माननीय श्री व्ही. एस. पागे चेअरमेन विधान परिषद तथा अन्य विद्वानों ने गांधी जीवन तथा महर्षि दयानंद की देश को देन विषय पर दार्शनिक एवं विद्वत्तापूर्ण भाषण दिए।

ईसाई युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश

नागपुर की एक १९ वर्षीया शिक्षित ईसाई युवती कु. जाय इलिजाबेथ कोर्ट्स का उनकी इच्छानुसार आर्य समाज, दयानन्द भवन, सदर, नागपुर में श्री. मधुकर शास्त्री द्वारा उनको गायत्री मंत्र का उच्चारण कराके वैदिक धर्म (हिन्दु धर्म) की दीक्षा दी गई, जिसका नया हिन्दु नाम पुष्पादेवी रखा गया। शुद्धि के पश्चात् उसका विवाह संस्कार एक २३ वर्षीय शिक्षित हिन्दु युवक श्री. पद्मनाभनराव के साथ वैदिक रीत्यानुसार सुसम्पन्न हुआ। वर-वधु को विदर्भ के वयोवृद्ध कर्मठ हरिजन नेता श्री नानासाहेब गवई ने आशीर्वाद दिया। आर्य समाज की ओर से वर-वधु को कुछ वैदिक साहित्य भेंट कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

श्री जयसिंहजी गायकवाड़ कोषाध्यक्ष सभा का स्थानान्तर

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के कोषाध्यक्ष श्री जयसिंहजी गायकवाड़ जो सिहोरा जिला जबलपुर में विकास अधिकारी के पद पर कार्य कर रहे थे बालाघाट में स्थानान्तरित हो गये हैं। अब आपका पता निम्न प्रकार है–

श्री जयसिंहजी गायकवाड़,
सहकारिता निरीक्षक,
सहायक पंजीयक, सह. समितियां कार्यालय,
बालाघाट (म. प्र.)

योग प्रशिक्षण शिविर

गुरूकुल होशंगाबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन के अवसर पर आर्य जनों के हितार्थ एक योग सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

इस दिशा में रुचि रखने वाले सज्जन अभी से डायरी में नोट करलें कि मई १९६९ में होशंगाबाद पहुंचना है। नये सज्जनों को भी सिखलाने की सुविधा होगी।

दालचंद
संयोजक योग सम्मेलन

होशंगाबाद पधारिये

मई १९६९ में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की ओर से कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिबिर का आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों के भोजन तथा आवास की व्यवस्था रहेगी। आप केवल शुभ संकल्प लेकर आईये। विद्वान उपदेशकों के उपदेश होंगे और अच्छे विचारकों के विचार सुनने को मिलेंगे। आर्य समाज के मंतव्यों पर चर्चा होगी। तथा भावी कार्यक्रमों पर विचार विमर्श होगा। आइये और दूसरों को भी साथ लाइये। संपूर्ण विवरण की प्रतीक्षा कीजिये।

दालचंद संयोजक
प्रशिक्षण शिविर

स्वेच्छा से हिन्दु धर्म में प्रवेश और विवाह

दिनांक २-१२-६८ को तिरोड़ी जिला बालाघाट (म. प्र.) निवासीनी कु. फेलोमीन एन्थोनी नामक एक ईसाई नवयुवती का शुद्धि संस्कार उसकी स्वेच्छा से आर्य समाज गोंदिया की ओर से समाज के मंत्री श्री काशीनाथजी शास्त्री ने वैदिक पद्धति से कराकर उसे आर्य (हिन्दु) धर्म में प्रविष्ट किया और उसका नाम फेलोमीन के स्थान पर पुष्पादेवी रखा। शुद्धि संस्कार के बाद नवयुवती का विवाह तिरोडी के उत्साही नवयुवक श्री रमेशचन्द्र घोष के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार की विशेषता यह थी कि पाणी-ग्रहण के मंत्रों को वर-वधू से बुलवाने के साथ साथ शास्त्री जी ने उन मंत्रों का अर्थ भी उन्हें समझाया और वर-वधू के एक दूसरे के प्रति कर्तव्यों के पालन की उनसे प्रतिज्ञा करायी। उपस्थित लोगों पर संस्कार का अच्छा प्रभाव पड़ा। संस्कार की समाप्ति पर लोगों ने वर-वधू को सहर्ष आशीर्वाद दिया।

तत्पश्चात् श्री शास्त्रीजी, श्री लक्ष्मी नारायणजी भादूपोते, श्री रमन कुमार मेठी पत्रकार, श्री डॉ. जायसवाल ने दोनों संस्कारों पर अपने अपने विचार प्रकट किये। और वर-वधू को उनके कर्तव्य पालन का उपदेश दिया। संस्कारों की सम्पन्नता में श्री मोतीलाल जायसवाल, तिरोडी का प्रयत्न व सहयोग उल्लेखनीय है।

आल इंडिया कबडडी ऑलिम्पिक में आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा (गुजरात) की सफलता

इस वर्ष १४ से १७ दिसम्बर १९६८ तक आल इंडिया महिला कबड्डी ऑलिम्पिक का आयोजन महाराष्ट्र की दूसरी राजधानी नागपुर के चिटणीस पार्क स्टेडियम में किया गया था। इस आयोजन में देश के लगभग सभी प्रांत के खिलाडियों ने भाग लिया।

आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा ने अपने नगर में प्रथम स्थान प्राप्त कर गुजरात राज्य ऑलिम्पिक में प्रवेश किया। गुजरात की राजधानी अहमदाबाद में भी इन्होंने प्रथम स्थान पाया और इस प्रकार आल इंडिया कबड्डी ऑलिम्पिक में गुजरात राज्य की ओर से भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आल इंडिया कबड्डी ऑलिम्पिक में इस टीम नें क्रमशः पंजाब, विदर्भ, हैदराबाद (आंध्र) को अपनी कुशलता से पराजित कर विजय प्राप्त की, किन्तु अंत में महाराष्ट्र के साथ इन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा। इस बात का उन्हें खेद था। किन्तु महाराष्ट्र लगातार १४ वर्ष से चैम्पियन शिप ले जाता रहा है। अतः महाराष्ट्र के साथ हारने पर भी इन की सफलता प्रशंसनीय है।

इस टीम की सफलता का श्रेय टीम की मैनेजर आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा (गुजरात) की स्नातिका कु. नीलादेवी डी. दलाल को है जिन्होंने आखिर तक अपनी टीम की लड़कियों का साहस बनाये रखा जिनके सफल नेतृत्व से ही इस टीम ने काफी सफलता प्राप्त की।

नागपुर आगमन पर इन्होंने आर्य समाज, आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा, दयानन्द भवन, सदर नागपुर को दर्शन दिये। इन की सौजन्यता एवं वैदिक विचार धारा से सभी प्रभावित हुये।

आर्य समाज उमरखेड़ का नवनिर्वाचन

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव पर आर्य समाज उमरखेड़ का पुनरुत्थान किया गया तथा आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ।

श्री माधव विठ्ठल भोयर	– प्रधान
श्री विलास सखाराम मुडे	– उपप्रधान
श्री अमृतलाल सदाराम आर्य	– मंत्री
श्री मधुकर गोविंद पांडे	– उपमंत्री
श्री अरविन्द रामभाऊ नास्तिककर	– कोषाध्यक्ष
श्री अमृतलाल सदाराम आर्य	– पुस्तकाध्यक्ष

आर्य समाज द्वारा वैदिक ग्रंथालय की भी कुछ समय पूर्व स्थापना की गई थी जिसे शासकीय मान्यता प्राप्त हो चुकी है।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस और अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज अकोला

आर्य समाज अकोला की ओर से दि. २४-१२-६८ को अराष्ट्रीय प्रचार निरोध दिवस तथा २५-१२-६८ को स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मथुरा निवासी श्री कुंवर जोरावरसिंहजी एवं सौ. प्रभावतीदेवी के संगीत भजन उपदेशों द्वारा सार्वजनिक सभाओं के रूप में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन नगर के गांधी चौक में किया गया था। इस कार्यक्रम से आर्य समाज के प्रति लोगों की श्रद्धा बढ़ी है तथा श्रोता प्रभावित हुए हैं।

दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय, जरीपटका नागपुर

दिनांक २३ दिसम्बर १९६८ को प्रातः आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान, माननीय पं. विश्वम्भरप्रसादजी शर्मा की अध्यक्षता में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंदजी का बलिदान दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। कन्या विद्यालय की छात्राओं के सामूहिक संध्या, यज्ञ व ईश प्रार्थना के पश्चात् स्वामी श्रद्धानंदजी के जीवन पर आधारित कविताएं और उपदेश हुए। सभा प्रधान पं. विश्वम्भर प्रसादजी शर्मा ने स्वामी श्रद्धानंदजी के आदर्श, निर्भीक जीवन का बहुत सुन्दर ढंग से वर्णन किया, जिसका उपस्थित श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रधानजी ने शाला की प्रगति देख कर प्रसन्नता व्यक्त की और संचालकों को धन्यवाद दिया।

आर्य समाज, दयानंद भवन नागपुर

दिनांक २३ से २५ दिसम्बर १९६८ तक आर्य समाज तथा आर्य वीर दल की ओर से स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। शुद्धि आंदोलन के जनक स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस की अध्यक्षता मानसेवी दण्डाधिकारी श्री ग्यारसीलाल अग्रवाल ने की। श्री अग्रवाल नें अपने भाषण में कहा कि हिन्दु संस्कृति पर जब चारों ओर से आक्रमण हो रहे थे तब महर्षि दयानंद ने वेदों के माध्यम से उस संस्कृति की रक्षा कर देश पर जो उपकार किया वह चिर-स्मरणीय रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि यदि शुद्धि आंदोलन स्वामी श्रद्धानंदजी नें प्रारंभ न किया होता तो आज देश की हालत और असहनीय होती।

इस अवसर पर पं. दीनानाथ शर्मा, माता चंद्रकांता, मधुकर सदार, नरेन्द्रमोहन अग्रवाल ने श्रद्धाजंलियां अर्पित की। वेद पाठी छात्र छात्राओं को श्री ब्रह्मदत्तजी द्वारा प्रदत्त पुरस्कार श्री ग्यारसीलाल अग्रवाल द्वारा वितरित किये गये। आगंतों का स्वागत श्री मोहनलाल मेहताजी ने किया।

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती की जन्म भूमि टंकारा में प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी १३-१४-१५-१६ फरवरी १९६९ चार दिन तक यह उत्सव समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। यर्जुवेद पारायण यज्ञ का प्रारम्भ यज्ञ संचालक पूज्य श्री आनन्द भिक्षुजी महाराज दि. ७-२-६९ को करेंगे। विस्तृत कार्यक्रम की घोषणा शीघ्र होगी।

'आर्य सेवक' के ग्राहक बनाइये

आपका प्रिय पत्र आर्य सेवक, मध्यप्रदेश व विदर्भ, का सब से पुराना हिन्दी पत्र है। इसे इस प्रदेश का सब से लोकप्रिय, श्रेष्ठ एवं प्रगतिशील पत्र बनाने के लिये जनता से, विशेषतः आर्य जनता से हार्दिक अनुरोध है कि वह आर्य सेवक के नये ग्राहक बनायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, की अंतरंग सभा दिनांक २२ दिसम्बर १९६८, की संक्षिप्त कार्यवाही

(श्री संगतराम आर्य, उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर)

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ की अन्तरंग सभा की बैठक सभा प्रधान, पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा की अध्यक्षता में, महर्षि दयानन्द भवन, नागपुर में रविवार, दिनांक २२ दिसम्बर १९६८ को, मध्यान्ह में २ बजे हुई। प्रधानजी सहित १३ सदस्य उपस्थित थे। बैठक में निम्न प्रकार निश्चय किये गये -

१. गत बैठक की कार्यवाही का लेख शुद्ध लिखा प्रमाणित किया गया। इस सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि कार्यवाही रजिस्टर में टाईप की हुई प्रति चिपकाने के बजाय, कार्यवाही को स्याही से लिखा जाय।

२. अंतरंग सभा ने स्व. वेदमूर्ति सातवलेकर जी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, प्रो. ताराचन्द गाजरा, रिसर्च स्कालर पं. भगवद्दत्तजी, हकीम वीरूमल आर्य प्रेमी और स्वामी अखिलानन्दजी के प्रति शोक प्रगट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

३. स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के सम्बन्ध में जांच समिति के सदस्यों का प्रतिवेदन प्रस्तुत हुआ। समिति के ३ सदस्यों ने अपनी लिखित सम्मति में स्वामीजी के ऊपर लगाये गये आरोपों को ठीक बताया और २ सदस्यों ने उन्हें ठीक नहीं बताया। निश्चय हुआ कि यद्यपि प्रत्यक्ष प्रमाण के अभाव में कोई निश्चित निर्णय देना सम्भव नहीं हैं परन्तु स्वामी जी के संबंध में जो वातावरण प्रदेश में बन गया है उसे देखते हुए अंतरंग सभा समझती है कि स्वामी जी का सभा के साथ संयुक्त बना रहना हितकारी नहीं होगा, अतएव अंतरंग सभा स्वामी जी से अपेक्षा रखती है कि वे सभा के प्रथक रहकर स्वतंत्र रूप में कार्य करेंगे। स्वामी जी के अब तक के सेवा कार्य के लिये आभार प्रदर्शित किया गया।

४. धमतरी की दूकानों के संबंध में इंजीनियर महोदय के परामर्श से काम की जो व्यवस्था की गई थी, उसके संबंध में सदस्यों ने काम के ऊंचे रेट्स होने की आपत्ति की। इंजीनियर महोदय ने स्पष्टीकरण देते हुए बताया कि अब कार्य समाप्ति पर है और रुपया ४१,०००) के अन्दर सारा कार्य पूर्ण हो जायेगा। आपने विश्वास दिलाया कि मजदूरी आदि के भाव की दरों में और कमी की जायेगी। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री बालकृष्ण चड्ढा उपप्रधान सभा और श्री संगतकुमार आर्य उपमंत्री सभा धमतरी जाकर रेट्स के संबंध में इंजीनियर महोदय से परामर्श कर अंतिम निर्णय करेंगे और इस कार्य को पूर्ण करायेंगे।

५. सभा की ओर से प्रचारक नियुक्त करने पर चर्चा हुई। सर्व सम्मति से अस्थाई रूप से दो प्रचारकों की नियुक्ति स्वीकार की गई।

६. आर्य कन्या पाठशाला इटारसी की मरम्मत कार्य के लिये आवश्यक धन की स्वीकृति दी गई।

७. आर्य कन्या पाठशाला धमतरी की व्यवस्था के संबंध में निश्चय किया गया कि, उपमंत्री सभा, भविष्य में पाठशाला समिति के मंत्री रहेंगे और उसकी व्यवस्था का संचालन करेंगे तथा विद्यालय की प्रधान अध्यापिका उपमंत्री के रूप में आंतरिक व्यवस्था करेंगी।

८. भिमोरी ग्राम में उच्च माध्यमिक शाला की व्यवस्था के संबंध में निश्चय हुआ कि इस विद्यालय के सहायतार्थ सभा की कूम्ही स्थित २५ एकड़ भर्री भूमि ३ वर्ष के लिये प्रदान की जा सकती है।

९. निश्चय हुआ कि भविष्य में "आर्य सेवक" मासिक पत्र का सम्पादन माननीय प्रधान जी सभा सम्हालें और श्री डालचंद जी उपप्रधान सभा पत्र को स्वावलंबी बनाने के संबंध में अपनी योजना प्रस्तुत करें।

१०. गुरुकुल होशंगाबाद के संबंध में प्रधानजी का प्रतिवेदन और वहां की प्रगति के संबंध में श्री सुकुमार जी पगारे का वक्तव्य सुनने के बाद अन्तरंग सभा ने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि श्री सुकुमार जी पगारे के प्रयत्न से वहां सभा के तत्वावधान में अगले वर्ष से हरिजन बालक विद्यालय तथा (छात्रावास) प्रारम्भ हो जायेगा। गुरुकुल भवन की मरम्मत आदि कार्य पर जो व्यय किया गया है उसे स्वीकार किया जाता है और संडास, स्नानगृह तथा भोजनालय का बरामदा बनाने के लिये रुपया १,५००) का व्यय स्वीकार किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से होशंगाबाद के स्टेट बैंक में, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश के नाम से खाता खोलने का निश्चय किया गया जिसका संचालन श्री सुकुमार पगारे करेंगे।

११. दमोह स्थित अनाथ-आश्रम के संबंध में सभा के उपमंत्री श्री चन्द्रकांत वर्मा का प्रतिवेदन प्रस्तुत हुआ। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यदि अनाथालय के संचालक इसकी संपूर्ण सम्पत्ति और संचालन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आर्य प्रतिनिधि सभा को सौंपने के लिये तैयार हों तो सभा इस उत्तरदायित्व को लेने के लिये प्रस्तुत है।

१२. आर्य समाज मंदिर तात्या टोपे नगर, भोपाल, के मंदिर निर्माणार्थ रुपया ५००) की सहायता देना स्वीकार किया गया।

१३. श्रीमती घसीटीबाई जबलपुर के मकान के दानपत्र की रजिस्ट्री कराने में हुए व्यय रुपये ४०९=४० को स्वीकार किया गया।

१४. आर्य समाज खंडवा की प्रार्थना पर वहां बाल मंदिर निर्माण की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज से मिलने वाले दशांश रुपये ६०) को अनुदान के रूप में परिवर्तित करने की स्वीकृति दी गई।

१५. आर्य समाज गंजीपुरा जबलपुर के अंधेरदेव स्थित बाड़ा को, प्रधान आर्य समाज गंजीपुरा द्वारा प्रस्तावित मूल्य पर बिक्री करने की स्वीकृति दी गई और निश्चय किया गया कि इस संबंध में समाज का प्रस्ताव आने और विधिवत कार्यवाही पूर्ण की जाने पर बिक्री संबंधी आवश्यक कार्यवाही की जाय।

१६. सेण्ट्रल बैंक, नागपुर में धमतरी दूकान निर्माणार्थ खोले गये नये खाते की स्वीकृति दी गई तथा निश्चय हुआ कि धमतरी का कार्य समाप्त होते ही यह खाता बंद कर दिया जाय।

१७. पोष्ट आफिस दुर्ग का खाता नागपुर स्थानान्तरण करने का निश्चय किया गया।

१८. इलाहाबाद बैंक, नागपुर के करंट खाता को बंद करने का निश्चय हुआ।

१९. वैदिक ग्रंथालय निर्माणार्थ शासन से भूमि प्राप्त करने का अधिकार आर्य समाज उमरखेड़ को दिया गया।

२०. सभा कार्यालय में दूरभाष लगाने की स्वीकृति दी गई और उसके एग्रीमेण्ट फार्म पर हस्ताक्षर करने का अधिकार सभा उपमंत्री श्री संगतराम जी आर्य को दिया गया।

२१. सभा के कर्मचारियों को १ जनवरी १९६९ से मंहगाई में ५ प्रतिशत वृद्धि करने का निश्चय किया गया।

२२. कटनी में आर्य समाज के प्रारंभिक कार्य को चलाने की दृष्टि से सभा उपमंत्री श्री चन्द्रकांत वर्मा के सुझाव अनसार ६ माह तक १५) रुपया मासिक किराया देना स्वीकार किया गया।

२३. सम्पत्ति प्रबंधक के सुझाव के अनुसार निश्चय हुआ कि ग्राम कूरा में खलिहान के स्थान पर इस वर्ष पशुशाला निर्माण कर दिया जाय। इस संबंध में सभा के उपप्रधान श्री बालकृष्ण जी चड्ढा तथा उपमंत्री श्री संगतराम जी आर्य– कूरा जाकर स्थान का निरीक्षण कर अपना प्रतिवेदन सभा को प्रस्तुत करेंगे।

महर्षि दयानन्द के अगाध भक्त स्वामी श्रद्धानन्द

जिन्होंने महर्षि के दर्शनों से पवित्र होकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली थी

महर्षि स्वामी दयानन्द के प्रति स्वामी श्रद्धानन्द जी के कृतज्ञतापूर्ण उद्गार

ऋषि दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण

ऋषिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ (अब ८५) वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदयपट पर अब तक ज्यों की त्यों, अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है। परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है ? परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया ?

मैं क्या था इसे इस कहानी में मैंने छिपाया नहीं। मैं क्या बन गया और अब क्या हूं ? वह सब तुम्हारी कृपा ही का परिणाम है। इसलिए इससे बढ़कर मेरे पास तुम्हारी जन्म शताब्दी पर और कोई भेंट नहीं हो सकती कि तुम्हारा दिया आत्मिक जीवन तुम्हें ही अर्पण करूं। तुम वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तत्त्ववेत्ता ही न थे परन्तु जिन सच्चाइयों का तुम संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी तुम्हारा ही काम था। भगवान् कृष्ण की तरह तुम्हारे लिए भी तीनों लोकों में कोई कर्तव्य शेष नहीं रह गया था, परन्तु तुमने मानव संसार को सीधा मार्ग दिखलाने के लिये कर्म की उपेक्षा नहीं की।

भगवन् ! मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। इसलिए जिस परम पिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे।

विनीत—

कल्याण मार्ग का पथिक

श्रद्धानन्द संन्यासी

शोक समाचार

आर्य जगत के एक स्तम्भ
श्री पं. भगवदत्तजी रिसर्च स्कालर का निधन

यह समाचार देते हुए बड़ा दुःख होता है कि आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री पं. भगवद्दत्तजी रिसर्च स्कालर ने गत मास इस नश्वर शरीर को त्याग दिया है।

पं. जी अजीवन वैदिक धर्म तथा आर्य समाज की सेवा करते रहे। वह एक उच्च कोटि के विद्वान तथा रिसर्च स्कालर थे। अनेकों ग्रन्थ लिख कर उन्होंने वैदिक साहित्य की सेवा की। आर्य जगत उनकी सेवाओं को कभी भूल नहीं सकेगा। भारत विरोधी विद्वान मैक्समूलर, मैकडोनल्ड, ग्रीफिथ आदि ने जो वेद भाष्य किये थे, उन का मुंह तोड़ उत्तर देने वाले यही एक महान् विद्वान थे।

वह एक उच्च कोटि के वक्ता भी थे। उनके व्याख्यानों को लोग बड़े उत्साह से सुनते थे। वड़े प्रभावशाली ढंग से वह अपने विचारों को रखते थे। वह आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के अपूर्व भक्त थे, उन की सेवाओं का प्रारम्भ डी. ए. वी. कालेज में प्राध्यापक और रिसर्च स्कालर के रूप में हुआ था।

उन के निधन से जो आर्य समाज की क्षति हुई है उस की निकट भविष्य में पूर्ति होनी कठिन है, आर्य समाज की रत्नों की माला का एक मनका सदा के लिए टूट गया इस का हम सब को बड़ा दुःख है। दिवंगत आत्मा को शांति मिले यही प्रभु से प्रार्थना हैं।

भक्त काशीरामजी का निधन

आर्य समाज सतना ने अपने एक कर्मठ सदस्य श्री भक्त काशीराम की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए उनके परिवार के सदस्यों से सहानुभूति प्रकट किया है।

सभा की सूचनाएं

संख्या १– आगम-शोधन रजिस्टर

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वे अपनी समाज का लेखा सभा द्वारा प्रकाशित आगम शोधन रजिस्टर में ही लिखें। जिन समाजों ने अभी तक उक्त रजिस्टर प्रारम्भ न किये हों वे सभा कार्यालय से मंगा लें। रजिस्टर का लागत मूल्य रूपया ३।।) व डाक व्यय १।।) है।

संख्या २– धमतरी की दूकानों का निरीक्षण

मैं दिनांक ७ दिसम्बर १९६८ को प्रातः धमतरी पहुंचा तथा सभा द्वारा नव निर्माण की जा रही दूकानों का निरीक्षण किया। कार्य देखने पर मुझे संतोष नहीं हुआ। स्वीकृत एस्टीमेट की दरें अधिक लगाई गई हैं और प्रत्येक स्थान के निर्माण पर अनुचित लाभ उठाया गया है। बुनियाद पक्की नहीं है मैंने अपने निरीक्षण का प्रतिवेदन अंतरंग सभा के समक्ष नागपुर में २२ दिसम्बर को प्रस्तुत किया।

संख्या ३– आर्य कन्या पाठशाला धमतरी का निरीक्षण

दिनांक ८ दिसम्बर १९६८ को आर्य कन्या पाठशाला धमतरी में अध्यापकों तथा पाठशाला समिति के सदस्यों से चर्चा हेतु एक बैठक का आयोजन किया गया। मैंने विद्यालय को सुव्यस्थित तथा सुचारु रूप से चलाने के लिये अपने सुझाव प्रस्तुत किये तथा आर्य विचारों के अनुकुल विद्यालय में शिक्षा प्रसार की आवश्यकता व्यक्त की।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. ३१-१२-१९६८	संगतराम आर्य, उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965

Licensed to—

POST WITHOUT PREPAYMENT

28. श्री संस्थापकजी,
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोष्ट सांपला, जिला रोहतक

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२।
प्रकाशक–वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन–प्रत्येक मास की २८ तारीख को।

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

फरवरी] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, माघ शुक्ल ४ संवत् २०२४ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ } वर्ष ६८ अंक २ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य च्छयाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २५-१३)

चौपाई

आत्म ज्ञान के प्रभु हें दाता । भाग्य विधाता, सर्व सुज्ञाता ।।१।।
तन, समाज, आत्मिक बल देते । जिसको स्तुति से सब विद सेते ।।२।।
जिसका सत प्रत्यक्ष सुशासन । न्याय व शिक्षा माने हर जन ।।३।।
जिसका आश्रय ही दुख-नाशक । स्वर्ग, मोक्ष का प्रिय, सुख-दायक ।।४।।
न मानना या भक्ति न करना । जिसका; हे मानव का मरना ।।५।।
प्रभु-अमान्यता से दुख होते । संकट में फँस मानव रोते ।।६।।
सुख स्वरुप है वह जग-भाता । सकल ज्ञान का दयालु दाता ।।७।।
तस्य प्राप्ति हित भक्त उपासक । हम उसकी आज्ञा के पालक ।।८।।

– श्रीकृष्ण गुप्त, सिध्दान्त रत्न

वार्षिक मूल्य { सम्मानित – ५) साधारण – २) }

सम्पादक – दिव्यानन्द सरस्वती

एक अंक पचीस पैसे

विदेशी मिशनरियों का साहस

(प्रिंसीपल भगवानदास, डी. ए. वी. कालेज अम्बाला शहर)

विदेशी ईसाई मिशनरियों का साहस अब बढ गया है। वह भारतीय मतों के लिए बड़ा भारी खतरा तो है ही पर हमारे राष्ट्रिय सम्मान पर बडी भारी चोट है । अंग्रेज सरकार के होते हुए तो इनका इतना साहस न बढा पर अपनी सरकार ने इन विदेशियों पर कोई रोक नहीं लगाई तथा न ही करोडों रुपए का धन जो यह लोग विदेशों से ला ला कर निर्धन भारतीय जनता को बरगलाने के लिए लगा रहे हैं उस पर कोई भी रुकावट लगाई ।

गत ग्यारह नवम्बर को प्रातः कालेज कार्य के प्रारम्भ होने के पश्चात मेरे पास एक विद्यार्थी ने आकर बताया कि हमारे कालेज के गेट पर विदेशी ईसाई मिशनरी जोर-जोर से व्याख्यान दे रहें हैं । मैंने उसी समय कार्यालय के दो आदमियों को भेजा कि वे देखें । उन्होंने बताया कि उन्होंने बहुत से विद्यार्थी इकट्ठे करके सडक रोक रखी है तथा ईसाई मत का प्रचार कर रहे हैं तथा कई विद्यार्थियों ने जब उनको कहा कि यह आर्य समाज का कालेज है तब उन्होंने आर्य समाज के बारे में आपत्तिजनक बातें कहीं तथा मेरी भी खिल्ली उड़ाई । यह देख कर कि पादरियों ने कालेज के मुख्य-द्वारपर उधम मचाया हुआ है मैं भागा गया, देखा कि पांच विदेशी पादरी तथा उनकी कार सडक के बीच खडी थी तथा विद्यार्थियों को नौकरी के प्रलोभन, चर्च आने तथा बाईबल पढने की बातें चालू थीं । मैंने उन्हें हाथ जोडकर प्रार्थना की कि कालेज के सामने कभी कोई भारतीय मतवाले ऐसे नहीं आ सकते तो आप चले जाएं । मुझे बडी हैरानी हुई कि वह अकड पडे और कहा कि सडक पर ही खडे हम प्रचार करते रहेंगे । विद्यार्थियों में उनकी धमकियों से बहुत रोष फैल गया । तब मैंने क्लर्क से कहा कि वह कार का नम्बर नोट कर पुलिस को सूचना दे । इस पर वे कार में बैठ कर भाग गए पर मैंने पुलिस को, हरयाणा गृह सचिव को, केन्द्र के गृह सचिव को तथा आर्य समाजी लोक सभा सदस्यगण श्री रामगोपाल शालवाले जी, श्री ओमप्रकाश त्यागी जी, तथा प्रकाशवीर शास्त्री जी को लिखा । पुलिस के कहने पर पादरियों के लीडर मेरे पास आए तथा मौखिक क्षमा मांगी पर मैं नहीं माना तब उन्होंने लिखकर क्षमा मांगी ।

यह घटना विदेशियों की खरमस्तियों का दिग्दर्शन है आज तक आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने भारत के किसी ईसाई मतवाले कालेज, स्कुल के सामने इतना साहस नहीं किया बल्कि भारतीय धर्म प्रचारकों ने कभी किसी भी स्कुल, कालेज के सामने ऐसा कैम्प नहीं लगाया और चालू कालेज के सामने इस प्रकार ईसाई प्रचार का यह साहस हमारी धर्म निरपेक्षता का दुरुपयोग है । यह विदेशी मिशनरी तथा विदेशी धन हमारे राष्ट्रजीवन को समाप्त करने वाला है, अगर सरकार चुप है तो जनता ही सोचे कि क्या होगा ?

धार्मिक परीक्षायें

वैदिक सिद्धान्त परिषद् की सिद्धान्त प्रवेश, सिद्धान्त विशारद, सिद्धान्त भूषण, सिद्धान्तालंकार सिद्धांत शास्त्री तथा सिद्धान्ताचार्य परीक्षायें हिन्दी भाषा में आगामी अप्रिल-मई मास १९६८ में समस्त भारत में होंगी ।

सुन्दर व तिरंगा उपाधि पत्र दिया जाता है । सर्व प्रथम, द्वितीय और तृतीय को कक्षा का वर्ष भर का शुल्क पुरस्कार रूप में दिया जाता है । १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगाइये ।

आचार्य मित्रसेन, एम. ए., सिद्धान्तालंकार,
परीक्षा मंत्री, भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद,
सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़ (उ.प्र.)

फरवरी
ओ३म्
आर्य-सेवक
१९६८

आर्य संवत्सर
१,९७,२९,४९,०६८
नागपुर, माघ शुक्ल ४, संवत् २०२४ दयानन्दाब्द १४३
वर्ष–६८
अंक– २

स्वर्गीय डाक्टर मेहरचंदजी महाजन

लेखक – प्रो. वेदप्रकाश मलहोत्रा, मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, जालंधर।

डाक्टर मेहरचन्द महाजन के आकस्मिक देहान्त की खबर से सारे आर्य जगत में शोक छा गया है। डाक्टर महाजन आर्य समाज के उन चोटी के नेताओं में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण में महान योगदान दिया है। लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने देश और धर्म के लिए बलिदान दिये वैसे ही डाक्टर महाजन ने अपने देश की अमूल्य सेवायें अपने ही ढंग से कीं।

डी. ए. वी. कालेज मेनेजिंग कमेटी के प्रधान के रूप में उन्होंने आर्यसमाज की शिक्षा–संस्थाओं में एक नया जीवन डाला। उन्नीसवी शती के अन्तिम दशक में और बीसवीं शती के पहले आधे भाग में आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य उत्तरी भारत में किया था उसको देश के दुर्भाग्यपूर्ण बटवारे के कारण बहुत क्षति पहुंची थी। हमारी शिक्षा संस्थाओं ने पाकिस्तान में करोडों रुपए की चल और अचल सम्पत्ति खो दी थी। भारत सरकार ने इस सम्पत्ति के बदले में कोई सहायता नहीं दी। डी. ए. वी. कालेज कमेटी जो कि भारत की सब से बड़ी शिक्षा संस्था थी विभाजन के कारण बहुत ही नुकसान में रही। इस मुसीबत के समय डाक्टर मेहरचन्द महाजन ने अपनी शिक्षा संस्थाओं को फिर से खड़ा करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली। उनके नेतृत्व में न केवल कई पुरानी संस्थाओं को फिर खड़ा किया गया बल्कि कई नई संस्थाओं का निर्माण भी हुआ। विभाजन के पश्चात हम ने उनके नेतृत्व में कई वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा संस्थाओं की स्थापना भी की। ये सारी की सारी देश की तकनीकी तथा वैज्ञानिक उन्नति में बहुत योगदान दे रहीं हैं। डाक्टर मेहरचन्द महाजन उज्जैन में दयानन्द विश्व-विद्यालय की स्थापना के लिए प्रयत्न कर रहे थे। वह दिन दूर नहीं है जब उनका यह स्वप्न पूरा होगा और दयानन्द विश्वविद्यालय अखिल भारतीय स्तर पर कार्य करेगा।

पंजाब यूनिवर्सिटी की लॉ फैकल्टी ने १९३५ में डाक्टर महाजन को फेलो निर्वाचित किया। उसके कुछ वर्ष बाद सिण्डीकेट की कार्यवाही में उनका विशेष तथा महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे अपने निधन के समय भी पंजाब यूनिवर्सिटी सिण्डीकेट के सदस्य निर्वाचित हुए। देश के विभाजन के समय उन्होंने लाहोर में पंजाब विश्वविद्यालय के विभाजन का प्रस्ताव भी पास कराया पर केन्द्रीय सरकार के हस्तक्षेप के कारण यूनिवर्सिटी का विभाजन न हुआ और भारत में नयी पंजाब यूनिवर्सिटी का निर्माण हुआ। इस पुनर्निर्मित यूनिवर्सिटी के बनाने में डाक्टर महाजन का सराहनीय योगदान था।

कश्मीर के भारत में विलय के लिए डाक्टर महाजन ने बड़ी सेवा की। वे कश्मीर के प्रधान मन्त्री थे। उन्होंने देखा कि कश्मीर का भारत से विलय ही समस्या का उचित हल है। उन्होंने श्री जिन्ना के लाहौर आने के निमन्त्रण को ठुकरा दिया और कश्मीर के भारत के साथ विलय तथा उसके शासन के लोकतन्त्रीयकरण का निश्चय कर लिया।

डाक्टर महाजन एक जबरदस्त विधायक थे। जब भारत के विभाजन का तथ्य सामने आ गया तो यह प्रश्न उठा कि भारत को सुसंगठित और सुदृढ़ राज्य बनाने के लिए कौन से कदम उठाने चाहिए और उसका विधान कैसा होना चाहिए। उनका उत्तर था कि यूनिटरी विधान ही भारत को संगठित रख सकता है और प्रति दिन की उठने वाली विघटनात्मक लहरों से बचा सकता है।

डाक्टर महाजन कानून के अद्वितीय ज्ञाता थे किसी मुकदमे में विशेष-विशेष तथ्य कौन से हैं वे सीधे ही उन पर ऊंगली रख कर उस झमेले का उचित हल ढूंढ निकालते थे। उनके लिए कानून एक माननीय सामाजिक कार्य था। यह सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति का साधन था न कि अपने आप में कोई उद्देश्य। उनके न्यायाधीश के रूप में दिए हुए फैसलों में उनकी मानवीयता परिलक्षित होती थी।

एक न्यायाधीश, विधायक तथा शिक्षा शास्त्री होने के अतिरिक्त डाक्टर महाजन एक कृषिकार भी थे। उनको कृषी सम्बन्धी समस्याओं का ताजा ज्ञान होता था।

डाक्टर महाजन भारत के एक चोटी के नागरिक थे। उन्होंने विधान, शिक्षा, न्याय तथा कृषि के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया। उनके निधन से भारत को बड़ी हानि हुई है। हम परमपिता परमात्मा से उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

शिवरात्रि पर टंकारा में योग शिविर

इस वर्ष महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में तारीख २४,२५,२६,२७ फरवरी के दिनों में "ऋषि बोध उत्सव" धूम धाम से मनाया जाएगा। "महर्षि दयानन्द कीर्ति मन्दिर" में महर्षि दयानन्द सम्बन्धी ऐतिहासिक वस्तुओं की व्यवस्था की जा रही है।

आर्य समाज को ठोस कार्यकर्ता मिले, इसके लिए इस वर्ष "योग साधना शिविर" लगाया जा रहा है। इसके लिए ब्रह्मनिष्ठ योगाचारी पू० स्वामी मनुवर्य जी महाराज ने अपना कीमती समय इस शिविर के लिए देना स्वीकार किया है। शिविर में आए हुए साधकों की दीक्षा विधि आर्य जगत के प्रसिद्ध तपोमूर्ति महात्मा आनंदभिक्षु जी महाराज कराएंगे। इस शिविर में देश के प्रसिद्ध सात योग–विषय के जानकार व्यक्ति मार्गदर्शन देने टंकारा पधारेंगे।

शिविर के संचालक पंडित भगवानदेव शर्मा ने बताया कि यह शिविर आर्य समाज की दृष्टि से टंकारा में एक ऐतिहासिक कार्य होगा। इस शिविर में भाग लेने वाले जिज्ञासु जनों को १५ फरवरी तक संचालक महर्षि दयानन्द योग आश्रम टंकारा (गुजरात) से प्रवेश पत्र मंगाकर स्वीकृति लेनी होगी। उनके रहने तथा निवास की व्यवस्था संस्था द्वारा निःशुल्क की जाएगी।

तारीख २५ फरवरी को "आर्योदय" के सम्पादक श्री पं. भारतेन्द्रनाथ जी सिद्धान्तालंकार की अध्यक्षता में "आर्य युवक सम्मेलन" होगा।

तारीख २६ फरवरी को गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख श्री पंडित आनन्दप्रिय जी की अध्यक्षता में "आर्य सम्मेलन" होगा।

इन दिनों में "गायत्री महायज्ञ" का आयोजन रखा गया है। इस कार्यक्रम में अनेक विद्वान और संगीतकार भाग लेने वाले हैं।

*

साधू की कहानी

ले. :– आचार्य मित्रसेन, एम. ए., सिद्धान्तालंकार

एक दिन स्वामी ध्यानानन्द अपनी प्रचार-यात्रा को चल दिये। वे प्रचार करते हुये हिमालय पर्वत के पास पहुँचने वाले ही थे कि उन्हें कहीं से विचित्र ध्वनि सुनाई पड़ी। उन्होंने देखा कि धू धू करके जंगल जल रहा था। जंगल के निकट रहने वाले अपनी सम्पत्ति को बचाने का यत्न कर रहे थे। तभी सबका ध्यान एक आश्चर्यजनक घटना की ओर आकृष्ट हुआ।

सभी के मुख से निकल पड़ा–"हाय ! तनिक उस पेड़ की ओर तो देखो ! बेचारी चिड़िया अपने घोंसले के आस–पास कैसी चक्कर लगा रही है ! अरे ! आग की लपटें घोंसले के पास तक पहुच गई हैं, नन्ही सी चिड़िया, अहः ! वह कर ही क्या सकती है ? वह वहाँ से उड़ क्यों नहीं जाती ?"

सभी मनुष्य अपनी सम्पत्ति की चिन्ता छोडकर उसी चिड़िया की ओर देखने लगे। बहुत ही दर्दनाक दृश्य था, लपटें बढ़ते बढ़ते घोंसले के पास पहुंच गईं, तब चिड़िया ने जो कार्य किया उसको किसी को आशा तक न थी। वह शीघ्रता से घोंसले के पास उड़कर पहुंच गई पहले उसने घोंसले के ऊपर दो तीन चक्कर लगाये और जब कोई उपाय न दीख पड़ा तो उसने अपने दोनों पंख नन्हें––नन्हें मुन्नों पर फैला दिये। देखते ही देखते वह घोंसला, चिड़िया और उसके बच्चे जल मरे।

सारी जनता दंग रह गई, इतना प्यार, अद्भुत प्रेम ! और वह भी उस छोटी सी चिड़िया के हृदय में। साधु ध्यानानन्द भी हैरान थे, अचानक ही उनके मन में विचार आया जिसकी प्रेरणा से वे जनता की ओर मुड़े और बोलेः––भाइयों और बहिनों जिस चिड़िया के प्रेम को देखकर आप आश्चर्यचकित हो रहे हैं, शायद आपको पता नहीं कि इससे भी अधिक प्रेम का प्रदर्शन आपके लिये हो चुका है, इस बलिदान से बढ़कर भी एक और ने हमारे, लिये अपनी बलि दे दी। वह हमें इससे भी अधिक प्यार करता था।"

कुछ क्षण रुककर उन्होंने फिर कहा––हम लोगों को अज्ञान और पाप के मार्ग से बचाने के लिये किस तरह प्रभु ने अपना एक पुत्र भेजा। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि किस तरह यह ईश्वर का बेटा उच्च घराने में पैदा हुआ और एक महान योगी, सुधारक उपकारक का जीवन बिताया। परन्तु अज्ञानी लोगों ने उसे एक बार नहीं १४ बार जहर पिलाया और अन्त में किस-क्रूर ढंग से दूध में शीशा पिलाकर समाप्त कर दिया। आज से लगभग ८० वर्ष पूर्व यह घटना राजस्थान में घटी थी।

फिर भी उस विश्वोपकारी महर्षि ने सदियों से रोगी विश्व को चंगा किया, अज्ञान के कारण अन्धे मानव को ज्ञान चक्षु दिये, नाना रोग ग्रसित तथा छुआछात के कोढी भारत को स्वस्थ किया यहाँ तक कि जीवन्मृत लोगों में भी चेतना के प्राण फूंके। परन्तु क्या वह अपने जीवन को नहीं बचा सकता था ? हाँ, उसने १३ बार मृत्यु को पीछे धकेल दिया और १४ वीं बार यह सोचकर कि पिता प्रभु को उसके जीवन की आवश्यकता है, उसकी यही इच्छा है तो उसने प्रभु की इच्छा पूरी की। इसी हेतु उसने सारे शरीर पर विष से निकले रोगों के कष्ट सहन किये और मरते मरते भी अपने हत्यारे को धन की थैली देकर कहा था––"जा विदेश भाग जा नहीं तो तुझे पुलिस मृत्यु दण्ड दे देगी।" एक बार उसने कहा था––"मैं संसार को कैद कराने नहीं आया बल्कि कैद से छुड़ाने आया हूँ।" क्योंकि वह बेड़ियां तोड़ने आया था बेड़ियाँ डालने नहीं।

उस साधु जिसका नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती था, ने इतनी दया क्यों की क्योंकि उन्हें मानवता से

समाचार संसार

संकलनकर्ता—श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

श्री सत्यदेवजी वानप्रस्थी का प्रचार कार्य

श्री सत्यदेवजी ने दिसम्बर ६७ में दमोह, तरपुर, जबलपुर, अतरिया, सनना, देवरा, बैकुण्ठपुर, अंबिकापुर, बुढ़ार, बरतरीपारा, आदि स्थानों में वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार कार्य किया। जगह २ पर यज्ञ प्रार्थना, यज्ञोपवित संस्कार, गौरक्षा, ईसाई निरोध, हिन्दु संगठन आदि आयोजनों द्वारा आप वैदिक धर्म का प्रचार कार्य बड़े ही धूमधाम से करते हैं। ईसाईयों की शुद्धी कर उन्हें फिर से वैदिक धर्म में प्रवेश दिलाना आदि कार्य आप बड़े ही लगन एवं आत्मियता से करते हैं। सरगुजा जिले में अनाड़ी, गरीब, असहाय व्यक्तियों को ईसाई कुचक्र से बचाने में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। आपका जीवन सादगी, नम्रता व सरलता से भरपूर है। आप आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ के अंतर्गत प्रचार कार्य कर रहे हैं।

—एक संवाददाता

हिन्दू बाल सेवा सदन, खंडवा

गुरुवार दि. ४ जनवरी १९६८ को हिन्दू बाल सेवा सदन का स्थापना समारोह दिवस उत्साह

असीम प्रेम था, उन्हें दया में ही आनन्द आता था करुणा की वह साक्षात् मूर्ति ही था। उसे यह भी ज्ञान था कि मानव जानते और न जानते हुये अनेक पाप करते हैं, वे इस भयङ्कर अपराध के दण्ड को नहीं जानते और चूंकि वह हमसे बेहद प्यार करता था इसलिये उसने हमें पापाग्नि की लपटों से बचाया, चाहे स्वयं को इस हेतु शहीद कर दिया यह हमारी मुक्ति के लिये ही था, यदि वह हमें पापों से बचाने को न चेताता तो समाधि का आनन्द ही भोगता। मानवता की रक्षा के लिये उसने आर्य समाज की स्थापना की, जो उसके निर्वाण प्राप्ति के बाद विश्व की रक्षा करता आया है।

पाप पुण्य क्या हैं ? लोग अब भी नहीं जानते यही कारण है कि वे निरन्तर पाप कर रहे हैं, उसका भयंकर दण्ड भी उनको भोगना पड़ता है इसीलिये सबका पतन हो गया और मानव ईश्वर की महिमा से वञ्चित हो गये हैं।

दृष्टान्त में कही गई उस वफादार चिड़िया की मृत्यु की भाँति महर्षि दयानन्द विश्व के उपकार को बलिदान दे गया आज उसका उत्तराधिकारी आर्य समाज और ग्रन्थ उस अधूरे कार्य को पूर्ण कर रहे हैं। इस प्रकार वह अब भी जीवित है और इसीलिये जीवित है कि हम भी जीवित रह सकें तथा अनन्त काल तक के लिये नया आध्यात्मिक जीवन तथा अन्त में मुक्ति प्राप्त कर सकें परन्तु ये सभी हमें उसी समय प्राप्त हो सकती हैं जब हम स्पष्ट रूप से आर्य समाज की शरण में आ जावें और उसके सिद्धांतों के अनुसार उसे मुक्तिदाता स्वीकार कर लें।

उस मुक्तिदाता साहित्य की प्राप्ति, जानकारी, परीक्षा तथा अन्य विवरणों के लिये निम्न पते से सम्पर्क स्थापित करें।

परीक्षा कार्यालय :—

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्

सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़ (उ. प्र.)

पूर्वक संपन्न हुआ जिसके प्रमुख अतिथि माननीय श्री गोविन्दनारायण सिंहजी, मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश शासन थे।

भवन निर्माण कार्य साधारण रूप में शुरू किया गया था, जो इस समय १,२५,०००) की लागत का हो गया है। इस संस्था ने अब तक १५४५ अनाथ व असहायों का पालन किया है। इस सदन के आश्रम वासियों की दिनचर्या गुरुकुल पद्धति पर संचालित है। बालकों को सब प्रकारकी आधुनिक सुविधायें प्राप्त हैं और बाल सेवा सदन का कार्य बड़े ही सुचारु रूप से चल रहा है।

खण्डवा– आर्य समाज खंडवा–डा. रघुनाथसिंह जी वर्मा, प्रधान, जिला आर्य समाज खंडवा, की अध्यक्षता में एक आम सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य समाज खंडवा के प्रचारक सुखराम आर्य सि. शास्त्री एवं श्री सूरजबलीसिंह जी आर्य का जो गोरक्षा आन्दोलन सत्याग्रह में एक माह का कारावास भुगत के आये थे, आ. स. खंडवा, गौ रक्षण समिति, सिन्धी नवयुवक मंडल एवं नगर की अन्य संस्थाओं ने पुष्पमालाओं द्वारा भव्य स्वागत किया।

श्री रामचन्द्र जी आर्य उपप्रधान, श्री लक्ष्मी नारायण जी गुप्ता, डा. अक्षय कुमार वर्मा मंत्री आ. स. एवं अध्यक्ष महोदय श्री डा. वर्मा जी के जोरदार भाषण हुए।

तत्पश्चात् सूरजबलीसिंह जी आर्य एवं सुखराम आर्य सि. शास्त्री ने गौ रक्षा आन्दोलन सत्याग्रह की गति विधियों पर सारगर्भित भाषण दिया। अन्त में श्री कैलाशचन्द्र जी पालीवाल प्रचार मंत्री ने उक्त विषय पर प्रकाश डालते हुए सबका आभार प्रदर्शन किया। शान्ति पाठ के बाद सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

रायपुर

रायपुर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव दि. ४-१-६८ से ६-१-६८ तक संपन्न हुआ जिसमें आर्य जगत के वीतरागी सन्यासी महात्मा आनंद स्वामी सरस्वती, स्वामी दिव्यानंदजी सरस्वती, पं. देशराजजी आदि महानुभाव पधारे थे। इनके प्रवचन, व्याख्यान और भजनों का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा।

चुनाव

गोरखपुर जबलपुर

श्री प्राणनाथ कुमार	– प्रधान
,, जयकिशन ग्रोवर	– उपप्रधान
,, ब्रजलाल सेठ	– ,,
,, आनन्दस्वरुप चावला	– मंत्री
,, सुन्दरदास बत्तरा	– उपमंत्री
,, जगन्नाथ आर्य	– ,,
,, विश्वंभरलाल खुराना	– कोषाध्यक्ष

खंडवा

श्री प्रेमनाथजी कपूर	– प्रधान
,, सेठ कन्हैयालालजी खण्डेलवाल	– उपप्रधान
,, रामानुजप्रसादजी ओझा	– ,,
,, डा. अक्षयकुमार वर्मा	– मंत्री
,, मास्टर वामनरावजी नालकर	– उपमंत्री

दयानन्द कालेज, शोलापुर

शोलापुर के समस्त दयानन्द शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यों, अध्यापकों, अन्य कार्यकर्त्ताओं तथा विद्यार्थियों ने श्री डा. मेहरचंदजी महाजन के देहावसान पर शोक सभा करके अपनी श्रद्धांजलो समर्पित की तथा दुखित परिवार से सहानुभूति प्रकट की गई।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (अलीगढ़)

इस विद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। श्री प्रो. शेरसिंह, राज्य शिक्षा मंत्री, भारत सरकार द्वारा नव स्नातिकाओं को दीक्षान्त भाषण हुआ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चौधरी चरणसिंहजी द्वारा गुरुकुल की सहायतार्थ ५,०००) पांच हजार रुपये की सहायता की घोषणा की गई।

उत्सव में अनेक गणमान्य नेता, विद्वान, साधु सन्यासी पधारे थे। गुरुकुल के स्नातिकाओं के आकर्षक विविध कार्यक्रम हुए जिसमें व्यायाम और कला प्रदर्शनी का समावेश था।

वेद प्रचार मण्डल हिसार

हिसार के कुछ उत्साही युवकों ने वेद प्रचार मंडल हिसार की स्थापना की है जिसका मुख्य ध्येय है ग्रामों में आर्य समाज का प्रचार करना जो उत्सव, यज्ञ तथा साहित्य वितरण के साथ-साथ विधवा तथा निर्धन रोगियों बाढ़ एवं भूकम्प पीड़ितों की सहायता द्वारा किया जायेगा। इस मंडल द्वारा ऋषि निर्वाणोत्सव, गौभक्त रामचद्रजी वीर के व्याख्यानों का प्रवंध आदि आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुये।

इस मंडल के पदाधिकारी निम्न प्रकार हैं :—

श्री सत्यप्रिय शास्त्री	—	प्रधान
„ सहेसारामजी	—	उपप्रधान
„ मातुरामजी कालीरापन	—	„
„ सीतारामजी आर्य	—	मंत्री
„ प्रेमचंदजी बालसमन्द	—	उपमंत्री
„ अमरसिंहजी रावलवास	—	कोषाध्यक्ष

वर चाहिये

पंजाबी आर्य परिवार की एक मेढ़ राजपूत उन्नीस वर्षीय बी. ए. पास कुमारी के लिये सुयोग्य वर की आवश्यकता है। पत्र व्यवहार करें। श्री जय, द्वारा आर्य सेवक, दयानन्द भवन, नागपुर-१ (महाराष्ट्र)।

बैकुण्ठपुर

दिनांक १४-१-६८ को बैकुण्ठपुर में विकास मंत्री श्री विरेन्द्र बहादुर सिंहजी पधारे। एक सभा की गई। आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, की ओर से प्रचारक श्री शंकरलालजी ने एक आवेदन पत्र दिया जिसमें ईसाई होने पर भी जो सुविधायें उपलब्ध होती रहती हैं, वह न्यायानुकूल नहीं हैं ऐसा लिखा था। मंत्री महोदय ने श्री शंकरलालजी को कहा कि इस मामले की जांच करने लिये शासन ने एक समिति नियुक्त कर दी है। वे अपनी शिकायतें उस समिति के सामने प्रस्तुत करें।

धर्म परिवर्तन अपराध घोषित

उड़ीसा की सरकार ने अपने प्रांत में किसी भी प्रकार के प्रलोभनों अथवा बलात् धर्म परिवर्तन को कानूनी रूप से अपराध घोषित कर दिया है।

समालोचना संसार

आर्य संसार (आर्य समाज कलकत्ता का मासिक पत्र) ने अभी एक विशालकाय विशेषांक प्रकाशित किया है। संपादक महोदय व अन्य कार्यकर्त्तागण बधाई के पात्र हैं। लेखों का चयन बड़ी ही उत्तमता से किया गया है। लेख पठनीय हैं। मुद्रण सुंदर है। कागज भी बढ़िया है। स्वर्गीय श्री श्यामलजी कृष्ण वर्मा का विस्तृत एवं प्रामाणिक जीवन चरित्र गहरे अध्ययन के बाद लिखा गया है व बड़ा ही प्रभावशाली है। महर्षि दयानन्द सरवस्वती जी महाराज से उन्होंने जो दीक्षा व देश सेवा की शपथ ली उसे आजीवन निभाया। ऐसे सुंदर प्रकाशन के लिए संपादक जी की भूरी २ प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जाता।

—श्रीकृष्ण गुप्त,

ओ३म्

परिशिष्ठ

आर्य सेवक–फरवरी, १९६८

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज के

सामवेद के ऐन्द्र काण्ड का पद्यानुवाद

पद्यकर्ता :––श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य–प्रदेश व विदर्भ

महर्षि दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, सदर, नागपुर–१ (महाराष्ट्र)

●

३७० उत्तम शोभा सँग में स्थायी। क्रिया शीलता हित प्रभु न्यायी ॥
सेना विजयी, चमू–विनाशक । सकल विरोधी का संहारक ॥
वेगवान अति, और निरालस । खल अरि को जो करता निज बस ॥
परम वीर, तेजस्वी, भयङ्कर। ऋषि, मुनि, यति, स्त्री का सङ्कट हर ॥
इन्द्र देव को नेता करते। सब जन आपद से हैं बचते ॥

३७१ इन्द्र वजधारी परमेश्वर ! । मम श्रद्धा तव कुपित रुप पर ॥
दुष्टों, रिपुओं को तू हनता । पूर्ण न्याय तू स्थापित करता ॥
प्रजा हेतु तू सुख–जल बनता । स्वर्ण, धान्य तू विपुल बरसता ॥

दोहा– द्यौ, भू तव अनुकूल हो, गति को लेते धार ।
इति हो कम्पन भूमि का, यदि तव वज्र प्रहार ॥

३७२ प्रजाजनों ! है द्यौ का अधिपति। इन्द्र महा बल धर अरु शुभ मति ॥
सभी एक स्थल पर प्रिय ! आओ । सह श्रद्धा तत स्तुति को गाओ ॥
अतिथि तुल्य पूजा–अधिकारी । वही मात्र है; वज्र प्रहारी ॥
अरि–जय के नव इच्छा धारी । नव योद्धा वीरों का हितकारी ॥

इन्द्र अकेला ही बन नेता । विजय–केतु ले सेना खेता ॥
३७३ इन्द्र ! अत्यधिक धन के धारी । वहुतों से स्तुत, मङ्गल कारी ॥
तुम को हम प्रतिपल स्मरते । तव आश्रय ले कारज करते ॥
तुम हो प्रिय; हम भक्त तुम्हारे । तव स्तुति गाते हम तव प्यारे ॥

दोहा– तुम्हें छोड़ कोई न है, स्तुति अरु पूजा पात्र ।
महा प्रशंसित इन्द्र ! हम, स्तुतते तुम को मात्र ॥

यथा धरा सब को स्वीकारे । जो भी सब ही ठोकर मारें ॥
तथा हमें प्रभु ! तुम स्वीकारो । दया–दान कर हमें उबारो ॥
३७४ पावन वचनों द्वारा आहुत । ऐश्वर्य–धनी, बहुजन से स्तुत ॥
प्रजा–पाल अरु प्रतिपल उन्नत । जिसको झुकता सब का मस्तक ॥
सदा स्तुत्य, पूजित, अविनाशी । व्योम, धरा, भू–तल का वासी ॥
पहुँचें ऐसे इन्द्रेश्वर को । मम आहुतियाँ धरणी–धर को ॥
इन्द्र सुने मम श्रुति–गायन को । पाऊँ तत शुभ पद पावन को ॥
ऐश्वर्य, स्वर्ण, वैभव सारे । आकर घर में बसें हमारे ॥

दोहा– निज रक्षण हित ज्यों स्त्रियाँ, ऐश्वर्यी, बलवान ।
पति को आलिङ्गन करें, जो विज्ञ व धनवान ॥

३७५ त्यों ही सब विचार–धाराएँ । परमानँद के प्रति जो जाएँ ॥
इन्द्र ! प्रभो ! तव स्तुति को करतीं । ओम नाम को प्रति पल भजतीं ॥
तुझे प्राप्त हों यह अभिलाषा । पूर्ण करो चिर वांछित आशा ॥
३७६ उस बहु स्तुत अरु सुख के वर्षक । धन के सागर, जन के पालक ॥
ज्ञान, शक्ति का जो भण्डारी । जिसे ऋचाएँ हैं अति प्यारीं ॥
ऐसे इन्द्रेश्वर हित गाओ । श्रुति–स्तुति, उसको हृद में पाओ ॥
तन–प्रयत्न ना उस तक जाएँ । आत्म–यत्न, बल से नर पाए ॥
उस महिमा शाली को पूजो । आत्मिक बल हित मानव जूझो ॥

दोहा– जिन भक्तों के शुद्ध हों, हृद, मन के सँग गात्र ।
वेही उसके बास के, होते हैं सत पात्र ॥

३७७ उस प्रभु परमानँद प्रापक का । इन्द्रेश्वर सब सुख वर्षक का ॥
हे नर ! विधिवत उसको नित स्मर । बहु आदर कर, पावन हृद धर ॥
स्तुतियाँ जो हैं जनता गाती । एक साथ ही उसको जातीं ॥
इन्द्र शत्रु से स्पर्धा करता । भक्तों के घर स्वर्ण बरसता ॥
रथ सम इच्छित स्थल ले जाता । वेगवान अश्वों सम धाता ॥
यज्ञ स्थान पर हवि को लेने । हव्य देव गण को त्वर देने ॥
इन्द्र दया कर तब ही आता । भक्त वेद जब उसे सुनाता ॥
सो नर ! स्तुति, यश उसके गाओ । बार बार ढिग उसे बुलाओ ॥

दोहा– भक्तों ! केवल इन्द्र को, स्मरो, रहो तत नाम ।
भरे रहें जिससे सदा, धन सुख से तव धाम ॥

३७८ द्यौ भू जल को धारण करते । प्राणी गण तत आश्रय रहते ॥
दोनों ही विस्तीर्ण महा हैं । जिस पर मीठा आप बहा है ॥
श्रेष्ठ रूप है जिनने धारा । नभ तक निज तन को विस्तारा ॥
प्रभु के धारक बल पर रहते । जरा रहित हैं; जो ना मरते ॥
श्रेष्ठ वीर्य को निज मे रखते । प्राणी व अ प्राणी को जनते ॥
३७९ यथा प्रकाश उषा का पसरे । सब स्थल का अँधकार हरे ॥
तथा इन्द्र ! तव तेज प्रकाशित । हो कर करता जग को दीपित ॥
पृथिवी, भू तक वह है जाता । स्वछटा अरु तव बल प्रकटाता ॥

दोहा– तव प्रकाश विस्तृत परम, पहुँचे सब ही देश ।
महिमा गाएँ सन्त, ऋषि, तेरी इन्द्र महेश ॥

३८० सरल ज्ञान से जिसने काटा । पाप–कुमति की जड़ को छाँटा ॥
उस आनँद दा इन्द्रेश्वर की । मङ्गल दायक, धरणी धर की ॥
श्रुति–मन्त्रों से स्तुतियाँ गाओ । उसको हृद–आसन बैठाओ ॥
उसको पालक सम आदर दो । उसे तुष्ट सेवा से करदो ॥
करें प्रार्थना वह हो रक्षक । हम सब का प्रिय, वर्धक, पालक ॥
वह समर्थ अरु साधन–धन है । उससे थापित हर कण कण है ॥

उसी इन्द्रहित यज्ञ रचाएँ । उसे मित्र हम सभी बनाएँ ।।
विमल विचार हमें वह देगा । मन वांछित फलदान करेगा ।।

दोहा– सुख, वैभव का इन्द्र ही, अधिपति, मानव !, मान ।
शुभ व अशुभ सब कर्मका, फल–दाता पहिचान ।।

३८१ आत्मे ! जब तू होती ज्ञानी । उर में धरती श्रुति की वाणी ।।
आत्मोन्नति तू तब ही करती । ईश–चरण पावन को धरती ।।
महा इन्द्र के दर्शन पाती । पाप–मुक्त हो धन्य कहाती ।।
३८२ उसी इन्द्र की स्तुति को गाओ । तत पूजा में यज्ञ रचाओ ।।
जो है बहुतों से स्मृत अरु स्तुत । जिसकी गति है विद्युत समद्रुत ।।
३८३ अदम्य ! हम तव परमानँद का । जो पोषक रण में तन, मन का ।।
शत्रु–विजय में जो हितकारी । विज्ञों हित जो आश्रय भारी ।।
ऐसे प्रभु की ही स्तुति गाएँ । दुःख, पाप को दूर भगाएँ ।।

दोहा– आनँद के रस की मधुर, धारा प्रभु में व्याप्त ।
कठिन साधना अरु योग से, जो हों यति को प्राप्त ।।

३८४ ऋषि, मुनियों में वह रस बहता । इन में वस तू रस को चखता ।।
उस रस को चख मुझ में बस कर । कृपासिन्धु हे प्रभु इन्द्रेश्वर ! ।।
३८५ वीर श्रेष्ठ जो उन्नति में रत । प्रभु से माँगे केवल शुभ मत ।।
भक्ति रूप रस साधक ! सींचो । पापों के प्रति आखों को मींचो ।।
भक्ति सदा ही हर्षित करती । तन, मन की चिंताएँ हरतीं ।।
३८६ ईश–प्राप्ति हित ज्ञान जुटाओ । विज्ञों ! फिर प्रभु निज में पाओ ।।
शान्ति–मधुरता रस वह पीता । उसे स्मरे वह मर भी जीता ।।
इन्द्र विपुल धन का है दाता । उससे जन सब वैभव पाता ।।

दोहा– महिमा उसकी वेद से, गाना जन–कर्तव्य ।
जिस से रसको ध्रुव मिले, सकल जगत–ऐश्वर्य ।।

३८७ श्रेष्ट कर्म जो जनता करती । वेदों के जो पथ पर चलती ।।
इन्द्र देव है उनका शासक । आर्यों, भक्तों का प्रतिपालक ।।

मित्रों ! आओ ! तत स्तुति गाओ । तत पूजन में यज्ञ रचाओ ।।
३८८ इन्द्र प्रभू है श्रुति–उपदेशक । विविध रूप में तुष्टि–प्रदायक ।।
ज्ञान, कर्म शाली वह भारी । उसकी शिक्षा जन हितकारी ।।
इन्द्र–भक्त हे ! प्रिय श्रोताओं । विस्तृत कीर्तन उसका गाओ ।
३८९ है अजेय वह इन्द्र अकेला । उसे न कोई पीछे ठेला ।।
वही सभी का है अधिष्ठाता । जग–निर्माता, निर्बल–त्राता ।।

दोहा– जो जन अपने को करे, उसके पद में दान ।
उसको दे ऐश्वर्य, धन, इन्द्र देव भगवान ।।

३९० इन्द्र सभी साधन का धन है । वहाँ बसे वह जो पावन है ।।
वेदों से हम तत स्तुति करते । पावनता को निज मन धरते ।।
उस अजेय प्रभु पुरुषोत्तम का । जो है जाता नभ, भू, यम का ।।
तव हित मैं तत वर्णन करता । आत्मोन्नतिहित निज हृद धरता ।।
३९१ इन्द्र ! हमें कर तू आनन्दित । ज्ञान–रश्मियाँ तुझ में व्यापित ।।
परम शौर्य निज से तू हनता । महा विघ्न–राक्षस को दलता ।।
उस तव बल की मैं कर चर्चा । करता तेरा पूजन, अर्चा ।।
श्रेष्ठ दिव्यता जिससे आए । पवित्रता को मुझ में लाए ।।

दोहा– जिस पर तेरी हो दया, उसका हो कल्याण ।
बिना कष्ट, दुख भोग के, करता महा प्रयाण ।।

३९२ इन्द्र ! दिव्यता का जो पूजक । हर्षानँद का तुझ से याचक ।।
तत पथ में जो विघ्न खड़े थे । सङ्कट–गिरि जो बीच अड़े थे ।।
उनको तुमने हटा दिया है । भक्त गले निज लगा लिया है ।।
ऐसे तपसी, योगी पर कर । दया, कृपा हे प्रभु जगदीश्वर ! ।।
मङ्गल, आनँद, सुखकर, हितकर । प्रियकर तव कर तत सर नित धर ।।
३९३ प्रियेन्द्र ! कभी नहीं तुम छिपते । सब्र अरियों को तुम जय करते ।।
हो विशाल तुम पर्वत के सम । तेज लोक में चमको हर दम ।।
निकट हमारे प्रभु वर ! आओ । तव प्रकाश हम में प्रकटाओ ।।

दोहा– प्रमुदित, परमानन्द युत, तुम हो नित हे ईश ! ॥
ऐसा तव प्रिय सुमुख लख, नमे हमारा शीष ॥

विमल रूप तुम चेतनता के । इन्द्र ! वीर भी हो तुम बाँके ॥
अन्यों का जो धन खल खाता । तत सुख हर स्वयँ है पनपाता ॥
निज बल से तुम उसको हनते । अतः दुष्ट जन तुम से डरते ॥
इस परमानँद बल को तेरे । पहचाने हम तव प्रिय चेरे ॥
३९५ हे प्रिय आदित्यों तेजस्वी ! । जग–उपकारी इन्द्र मनस्वी ! ॥
वंश–वृद्धि हित मम सब जाए । तव प्रिय, दीर्घ आयु को पाएँ ॥
३९६ शोध लगाने वाला जाने । चोरों के पद को पहचाने ॥
वज्र हस्त ! त्यों दुर्मति जानो । गुप्त स्थलों को तत पहचानो ॥

दोहा– दूर करो आदित्य गण !, सभी हमारे रोग ।
नष्ट, दुष्ट मति सङ्ग कर, हम भोगें जग–भोग ॥

३९७ पाप–वृत्तियाँ प्रभु ! मिट जाएँ । आध्यात्मिक मति, गुण प्रकटाएँ ॥
३९८ आत्मे ! परमानँद को पीओ । हर्षित होकर वर्षों जीओ ॥
दिया समाधी ने यह प्रिय रस । हुआ योग से यह तेरे बस ॥
यथा अश्व साधक–कर चलता । स्वामी को वह प्रमुदित करता ॥
तथा परम आनँद–रस तू गह । इन्द्र–पदों की सुख–सरि में बह ॥
३९९ इन्द्र ! प्रकट होने के पल से । अजात अरि तू है निज बल से ॥
बंधु–बान्धवों बिन तू नेता । प्रेम हेतु जग तुझ को सेता ॥
मित्र रहित तू, रहे अकेला । किए न तूने चेली, चेला ॥

दोहा– योग, समाधी जो करे, पहुँचे तेरे पास ।
उनसे तू मैत्री करे, यह है जन विश्वास ॥

४०० जिसने हम को प्रथम बनाया । भोग हेतु यह जगत रचाया ॥
उसको अपने हृद में धरने । उपदेश सुनो आगे बढ़ने ॥
४०१ नियंत्रणी अरु दृढ़ता धारी । बलिष्ठ तन के श्रेष्ठ विचारी ॥
मरुतों ! निकट हमारे आओ । हमें हानि तनिक न पहुँचाओ ॥

बली शत्रुओं के दृढ़ नाशक । उत्साही वीरों जय के दायक ।।
तजो क्रोध, दुख आगे बढने । जय सुख गहने, पूर्ण पनपने ।।
मरुतों ! आओ ! मेल बढ़ाओ । तव हित–कर्ता हमको पाओ ।।
काटें कन्टक सुख के मग के । हम हों अति प्रिय, सुखदा, जग के ।।

दोहा– ज्ञान, कर्म, इन्द्रिय पते !, सिद्धि, सफलता–धाम ।
यश–दाता साधक परम, हे प्रभु ! इन्द्र ललाम ! ।।

४०२ ओम सोम रस के अधिष्ठाता । तुमको पा जन सब कुछ पाता ।।
परमानँद सुख–रस को पाने । सोम उदर में निज पहुँचाने ।।
इन्द्रेश्वर प्रभु ! मम ढिग आओ । अङ्ग तुम्हारा मुझे बनाओ ।।
४०३ ज्ञान–सुवर्षक हे इन्द्रेश्वर ! । तुझे हमारा सखा बना कर ।।
ज्ञानी जन के सँघ में जाएँ । देह–धरों ढिग तव गुण गाएँ ।।
४०४ मनन–शक्तियाँ सर ने जाईं । सकल इन्द्रियाँ देह–रचाईं ।।
सजातीय दोनों को जानो । सगे वन्धु सो इनको मानो ।।
ये जब आपस में हैं मिलतीं । कर्म हेतु तब काया हिलती ।।

दोहा– बुद्धि, कर्म के मेल से, करें इन्द्रियाँ भोग ।
होता जब इन्द्रिय–दमन, जानों सिद्ध सुयोग ।।

४०५ शत शत प्रज्ञा वाले ईश्वर । सब लोकों के दृष्टा, हित कर ।।
हमें वीरता–धायक, नेता । करदो प्रभुजी ! शत्रु–विजेता ।।
वीर्य, शौर्य, बल हम में भरदो । प्रजा–पाल दिग्विजयी करदो ।।
४०६ इन्द्र ! जलों में जल ज्यों मिलता । एक रूप हो तत गुण धरता ।।
कमनीय लक्ष्य निज हम पाने । तेरा मेरा भेद भुलाने ।।
हम सु भक्त तव प्रिय तव ढिग आएं । तेरे तन में पूर्ण समाएँ ।।
४०७ तव स्वभाव हम अनुभव करते । ज्ञान-सुनिधि तुम यह हम स्मरते ।।
प्रसन्नता, मधु के तुम दाता । सुन्दरता अरु आनंद–जाता ।।

दोहा– तेरी स्तुति कर, कीर्ति गा, हम हो धन भगवान ! ।
कर युत करते प्रार्थना, हमें मिले वरदान ।।

४०८ हे अपूर्व ! हे अति बलशाली । खल–हन्ता, पर यतिपाली ।।
निज रक्षा हित तुमको भजते । पुष्ट, तुष्ट सेवा से करते ।।
कृषक वृषभ को ज्यों है सेता । तुमको हम सेवें प्रिय नेता ! ।।
४०९ सिद्ध किया जो परमानँद रस । तृप्ति प्रदा; जन पीते हँस हँस ।।
प्रमुद इन्द्रियाँ उसको पीतीं । साथ इन्द्र के, बल धर, जीतीं ।।
ऐश्वर्यमयी हो शासन करतीं । विमल तेज गह शोभा धरतीं ।।
४१० हे बलिष्ठ !, दँडधर !, इन्द्रेश्वर !। सोमादि यथा औषधि गुणधर ।।
उत्साह परम तन में जाते । हर्ष, तेज सँग शक्ति बढ़ाते ।

दोहा– तथा आप निज राज्य से, दस्यु भगाओ दूर ।
हिंसक, पापी, दुष्ट, खल, कर दो भगवन ! चूर ।।

फिर स्वराज को स्थापित करके । यती सती, गुण–धर–दुख हरके ।।
ऋद्ध वृद्ध कर शान्ति रचाओ । प्रजा सुखी लख हर्ष मनाओ ।।
४११ विघ्न–विनाशक, इन्द्र प्रजापति । गहने आनँद के सँग द्रुत गति ।।
स्व साथियों सह उन्नति करता । सिद्धि–मार्ग के अरि–गढ़ ढहता ।।
ज्ञान–यज्ञ में रक्षक बनता । सुखद सुरस सँग सँग स्रवता ।।
उसी इन्द्र को सङ्कट, रण में । स्मरें, पुकारें हम क्षण क्षण में ।।
भक्तों हित वह दौड़ा आता । विपदा से वह हमें बचाता ।।
वेद, यज्ञ–प्रिय उसको स्मरना । ओम नाम तव पावन जपना ।।

दोहा– बुद्धि–कुशलता इन्द्र ! तव, देखें हम प्रत्यक्ष ।
दया–सिन्धु तुम, साथ ही, समर नीति में दक्ष ।।

४१२ मेघ. अद्रि सम दुर्गों वाले । अस्त्र, शस्त्र सँग धारे पाले ।।
स्वाभाविक गुण इन्द्र ! तुम्हारा । जिसको केवल तुमने धारा ।।
जिस बल से तुम खल को मारो । छली, धूर्त, अरिगण सँहारो ।।
बुद्धि–चतुरता निज दिखलाते । मृगवत रिपु को धरा गिराते ।।
४१३ मुक्ति हेतु हे आत्मे ! प्यारी !। दृढ़ता से बढ़, कर तैयारी ।।
विघ्न, विरोधों पर तू जय धर । महा शक्ति निज में सँग्रह कर ।।

(क्रमशः)

उरांव सम्मेलन–अराष्ट्रीय प्रचार के विरोध में

दिनांक २५–१२–६७ को बैकुन्ठपुर तहसील के ग्राम बुडार परसाबहरो, में उरांव जाति का एक सम्मेलन अराष्ट्रीय ईसाइयत के विरोध में बड़े ही धूम धाम से सम्पन्न हुआ। सरगुजा जिले के अनेक दूर दूर गांव से लोगों ने बड़ी ही उत्सुकता के साथ सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने हेतु पुलिस इन्सपेक्टर श्री तिवारी पटना तथा कुछ सिपाहियों का रहना यह सिद्ध करता है कि इस क्षेत्र में अराष्ट्रीय ईसाई मिशनरी का धोखे-धड़ी (जालसाजी) का काम अब अधिक दिनोंतक नहीं रह सकेगा।

सम्मेलन का कार्य प्रातः ८॥ बजे ध्वजारोहण से आरंभ हुआ तथा बृहद् यज्ञादि के पश्चात ४॥ बजे सायंकाल शान्ति पाठ, तथा "आर्य समाज"–अमर रहे, के नारे लगाने के पश्चात समाप्त हुआ। सम्मेलन में विभिन्न गांवों से आये हुए उरांव जाति के लोग, जो इसी वर्ष ईसाइयों के कुचक्र में पड़कर भारतीयता ईसाई हो गये थे, जिनकी संख्या दस है, उनका शुद्धी संस्कार सम्मेलन में ही शंकर लाल आर्योपदेशक ने किया, तथा उन्हें वैदिक धर्म दोक्षा दी। ईसाइयत के विषय पर चर्चा करते हुए जनता को सावधान किया कि उरांव जाति संगठित होकर अराष्ट्रीय ईसाइयत का विरोध करे और अपने भूले भटके भाइयों को बिना किसी हिचकिचाहट के हृदय से लगावें।

सम्मेलन में श्री सत्यदेव वानप्रस्थी, श्री बाबूलाल जी, मंत्री आर्य समाज बैकुन्ठपुर, श्री श्यामलालजी उरांव, श्री हरिलाल जी उरांव नरकेली, श्री गोपीलाल तथा श्री नन्दूसिंह, सोंस, श्री एतवाराम जी उरांव, राजपुर, श्री चंदारायजी, एन. सी. डी. सी. बैकुन्ठपुर, श्री पं. द्वारकाप्रसाद जी भूतपूर्व सरपंच ग्राम बुड़ार तथा श्री मंगलप्रसादजी सिन्हा नरसिंहपुर, इन सभी व्यक्तियों ने अराष्ट्रीय व अभारतीय विचारों के विरुद्ध संगठित होने की सलाह अपने व्याख्यान में दिया। व्याख्यान में लोगों ने बताया कि विदेशी ईसाई मिशनरी धर्म के नाम पर लोगों को ईसाई बनाकर अपनी संख्या बढ़ाकर इस 'भारत' देश को पुनः गुलाम बनाने का षड़यंत्र कर रहे हैं, अतः ऐसी स्थिति में ईसाई धर्म स्वीकार करना देश के प्रति गद्दारी होगी।

उक्त सम्मेलन को सफल बनाने के लिए श्री चंदाराम जी उरांव, परसाबहरी का उत्साह तथा कठिन परिश्रम बड़ा ही सराहनीय था। साथ ही विशनाथ भगत परसाबहरी का, उरांव भाषा में भजन बड़ा ही सुन्दर तथा मनभावन रहा। इस माह दिसम्बर में शंकरलाल आर्योपदेशक अनेक ईसाई प्रचारकों के बावजूद भी शुद्धी आन्दोलन में बेधड़क कार्य करते रहे। सम्मेलन की तैयारी तथा मार्गदर्शन के अतिरिक्त ६७ सठसठ ईसाइयों की शुद्धी जो विभिन्न गांवों के हैं किया। शुद्धी आन्दोलन में गांव के श्री श्यामलाल जो उरांव, श्री अमरसाथ जी उरांव, श्री चंदाराम जी उरांव, श्री मंडलराम जी उरांव, श्री मोहनलाल जी उरांव, श्री तपेश्वरराम जी उरांव, श्री हरिलाल जी उरांव, श्री बाबूलाल जी उरांव, श्री ठुंइया उरांव, श्री बुचरू उरांव आदि का सहयोग बहुत ही सराहनीय रहा। —संवाददाता।

सन्यासियों एवं उपदेशकों से निवेदन

वर्तमान आर्य सन्यासियों, उपदेशकों, उपदेशिकाओं, विद्वानों, विदुषियों एवं नेताओं के सचित्र जीवन चरित्र भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़, २१ सुप्रसिद्ध आर्य विद्वानों से सम्पादित कराके प्रकाशित कर रही है। "आर्योपदेशक रत्न माला" नामक इस ग्रन्थ का विमोचन प्रो. शेरसिंह राज्यमन्त्री करेंगे तथा श्री पं. रामचंद्रजी देहलवी को वह ग्रन्थरत्न भेंट किया जावेगा। अबतक जिन उपदेशकों आदि से परिषद सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकी है कृपा करके वे शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित करने का अनुग्रह करें।

—आचार्य चित्रसेन, एम्. ए.
संयोजक

सभा की सूचना

संख्या २६८-सभा का बृहदधिवेशन

निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का वार्षिक बृहदधिवेशन, रविवार, दिनांक ११ अप्रिल १९६८, मध्यान्ह २ बजे से आर्य समाज अकोला, के वार्षिकोत्सव के समय होवेगा। इस अधिवेशन में निम्न कार्यवाही की जाएगी :-

(१) सन् १९६६ व १९६७ के वार्षिक वृत्तान्त व आडिटर द्वारा जांचे गये हिसाब की स्वीकृति।

(२) सन् १९६८ के लिए पदाधिकारियों और अंतरंग सभा के सदस्यों का निर्वाचन।

(३) सन् १९६८ के लिये सभा के अनुमानित आय व्यय की स्वीकृति।

(४) समय बचा और यदि प्रधानजी ने स्वीकृति दी तो अन्य आवश्यक विषय।

२. आप अपनी समाज की ओर से यदि सभा के इस बृहदधिवेशन के समय कोई महत्वपूर्ण प्रस्ताव व सुझाव रखना चाहें तो दि. २९-२-१९६८ के पूर्व सभा कार्यालय को भेज दें।

३. आपसे यह भी नम्र प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज का वार्षिक वृत्तान्त १९६६ और १९६७, दोनों वर्षों की समस्त आय का दशांश, आर्य सेवक का वार्षिक मूल्य और अपने योग्य (क्वालीफाइड) प्रतिनिधियों के नाम यथा संभव शीघ्र से शीघ्र सभा कार्यालय को भेजकर अनुग्रहीत करें।

४. समाज की ओर से प्रतिनिधि भेजते समय इस बात का आप अवश्य ध्यान रखें कि आपका भेजा हुआ या भेजे हुये प्रतिनिधि नियमानुसार हैं और उन्हें मान्यता मिलने में नियमों की बाधा न होगी। समाज में जितने सदस्य हों उन पर प्रथम ९ सभासदों पर २ प्रतिनिधि, ४९ सभासदों पर ३ प्रतिनिधि, ६९ सभासदों में ४ और ८९ सभासदों में ५ प्रतिनिधि होंगे, परंतु प्रथम प्रतिनिधि को छोड़कर २० से कम पर कोई दूसरा प्रतिनिधि नहीं हो सकेगा। ये सदस्य शतांश मासिक चंदा देनेवाले व नियमित उपस्थित रहने वाले होना चाहिये, तथा प्रतिनिधि को भी नियमानुसार अपनी आय का शतांश व २५ प्रतिशत उपस्थिति वाला होना आवश्यक है।

५. इस बृहदधिवशेन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की स्वीकृति बृहदधिवेशन से पूर्व होनेवाली सभा की अंतरंग में होगी। अतएव आपसे निवेदन है कि आप अपने प्रतिनिधि के नाम शीघ्र भेजें। अतरंग सभा द्वारा स्वीकृत प्रतिनिधि ही सभा की साधारण सभा में (बृहदधिवेशन) में भाग ले सकेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. २४-१-१९६८	श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965

Licensed to—

POST WITHOUT PREPAYMENT

श्री. संस्थापकजी
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला
जिला रोहतक।

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक-घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम. कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक-वि ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन-प्रत्येक अंग्रेजी मास की २ री तिथिको।

वयं जयेम्
आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्
आर्यसेवक
ARYASEWAK

वार्षिक मूल्य ५ रुपया
एक प्रति ४० पैसे

दूरभाष : ३१४३५

फरवरी] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६९ } नागपुर, माघ शुक्ल १४ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४४ { वर्ष ६९ अंक २ [१९६९

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का नागपुर में भव्य स्वागत !

दिनांक १९ जनवरी १९६९ को आर्य प्रतिनिधि सभा, म० प्र० व विदर्भ, स्थानीय आर्य समाजों तथा अन्य संस्थाओं की ओर से, महर्षि दयानन्द भवन में, महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का भव्य स्वागत किया गया। समारोह में ५०० से अधिक आर्य जन उपस्थित थे। श्री संगतराम आर्य, उपमंत्री सभा, स्वागत भाषण दे रहे हैं।

आर्य नेता स्वामी समर्पणानन्द जी का स्वर्गवास

आर्य समाज के मूर्द्धन्य संन्यासी व वेदों के धुरंधर विद्वान स्वामी समर्पणानन्द (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) का १४ जनवरी की मध्यरात्रि को सर गंगाराम अस्पताल में ७४ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया।

अन्त्येष्टि में केन्द्रीय राज्य शिक्षामंत्री प्रो. शेरसिंह, दिल्ली के महापौर लाला हंसराज, अनेक संसत्सदस्य और आर्यनेता तथा आर्य समाजी स्त्री-पुरुष भारी संख्या में उपस्थित थे।

लगभग दो सप्ताह पूर्व उनका हर्निया का आपरेशन हुआ था। तब से वे अस्पताल में ही थे।

स्वामी जी का सारा जीवन आर्य समाज और वैदिक वाङ्मय की सेवा में ही बीता। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी से स्नातक बनने के पश्चात् वहीं वे संस्कृत साहित्य के प्राध्यापक का काम करते रहे और कई वर्ष तक उपकुलपति रहे। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से ही उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार को अपना जीवन लक्ष्य बनाया था।

जहां वे व्याख्यान कला के आचार्य थे वहां लेखनी के भी धनी थे। अनेक सुशिक्षित युवक उनकी प्रेरणा से सांसारिक प्रलोभन को त्याग वैदिक धर्म की सेवा में जुट गए। उनकी पुस्तकें विद्वानों में भी समहृत थीं। 'काया कल्प', 'सप्त सिन्धु', 'पंचयज्ञ प्रकाश', 'मत्रि सूत्र' 'पाणिनि-प्रवेशिका'-- उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। अपने अंतिम दिनों में वे शतपथ ब्रह्मण का भाष्य कर रहे थे। उनकी प्रतिभा और वेद मर्मज्ञता की धाक थी।

वर्णाश्रम संघ के संस्थापक होकर भी वे जातपांत के कट्टर विरोधी थे। वे गुण कर्म-परक वर्णव्यवस्था के इतने आग्रही थे कि जन्मना ब्राह्मण होते हुए भी उन्होंने अपनी दोनों कन्याओं का विवाह जातपात तोड कर किया था। केन्द्रीय राज्य शिक्षामंत्री प्रो. शेरसिंह उनके दामाद हैं और उनकी पुत्री श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालंकार एम. ए., हरियाणा गांधी स्मारक निधि की अध्यक्षा हैं।

हैदराबाद रियासत के भारत में विलय से पूर्व उन्होंने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का और पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन का नेतृत्व किया। वे पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष भी रहे थे।

श्री गणकर जी का देहान्त

आर्य समाज, अमरावती के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ की अन्तरंग सभा के सदस्य श्री विश्वनाथराव जी गणकर का दिनांक १७ जनवरी १९६९ को लम्बी बीमारी के बाद नागपुर के मेडीकल अस्पताल में देहावसान हो गया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार १८ जनवरी को किया गया। इस अवसर पर उनकी छोटी बहन शालिनी देवी भी खामगांव से आ गई थीं।

श्री गणकर जी कट्टर आर्य समाजी तथा स्पष्ट वक्ता थे। आपके निधन से आर्य जगत की एक बड़ी क्षति हुई है। खास तौर पर आर्य समाज अमरावती ने तो अपना एक अनमोल रत्न ही खो दिया है।

"आर्य सेवक" दिवंगत नेताओं के प्रति अपनी शोकांजलि प्रगट करता हुआ, शोक संतप्त परिवार को शक्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करता है। —सम्पादक, आर्य सेवक

धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक मासिक

आर्य-सेवक

सम्पादक – विश्वम्भरप्रसाद शर्मा

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६९ } नागपुर, माघ शुक्ल १४, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४४ { वर्ष–६९ अंक– २

वेद मंत्र–

हमारा मार्ग

सदा सुगः पितुमां अस्तु पन्था
मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त ।
भगो मे अग्ने सख्ये न मृध्या
उद् रायो अश्यां सदनं पुरुक्षोः ।

ऋग्वेद मं. ३, अ. ५, सू ५४

हम जिस मार्ग से भी जायें वह मार्ग सरलता से जाने योग्य और कांटों तथा विघ्नों से रहित हो। हम जहां भी और जिस मार्ग से भी जायें, वहां हमें भरपूर अन्न मिले तथा हम जिस अन्न को खायें, वह मधुरता से भरा हुआ हो। हम अग्नि की मित्रता को प्राप्त करें, ताकि हम धन और उत्तम स्थान को प्राप्त कर सकें।

दिव्य दीप दयानन्द

वह राही अपनी राह का, था दीवाना अपनी चाह का ।
वह संगी नदी पहाड़ों का, था वह खेवट कर्म प्रवाह का ।

वह आया तूफान गति से उठा गया नव तूफान ।
वह मस्ती से सुना करता कोई अलौकिक अलक्षित गान ॥
कहने को बस कहा करता था वेद अनुकूल प्रमाण ।
विरोधी जन को भी देना पड़ता था बरबस उस पर ध्यान ॥

शत शत हृदय कर रहे आज उसी का घोष ।
आतताई कांप उठे थे लख कर उसका मधुर रोष ॥
वेदामृत पियें सब इसी से उसको था परितोष ।
बलि उसकी लेकर सुलभ अमृत, उसे परम सन्तोष ॥

दीवाली के दिवस तू छोड़ गया यह द्वार ।
वह दिव्य दीप न आया रे कैसा यह छली व्यवहार ?
जानते नहीं कोटि कोटि हृदय कर रहे उसी की पुकार ?
कौन बताये वेदज्ञान अब, सूना यह संसार ॥

– कु. पुष्पावती, एम.ए.,पी.एच.डी.
आचार्य
संचालिका मातृमन्दिर, वाराणसी

सम्पादकीय –

आर्य समाजें योजनाबद्ध कार्य करें

आर्य समाज का कार्य क्षेत्र कभी संकुचित नहीं रहा। उसे आर्य समाज की चार दीवारी तक सीमित समझना बहुत गलत है। जो व्यक्ति यह समझते हैं कि साप्ताहिक सत्संग (अधिवेशन) करके ही आर्य समाज का कार्य पूर्ण हो जाता है वे आर्य समाज के उद्देश्यपूर्ति के संबंध में अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ हैं। आर्य समाज के समक्ष "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का महान लक्ष्य है। यह लक्ष्य कैसे पूर्ण हो इसका आर्य बंधुओं को सदैव ध्यान रखना चाहिये। निश्चय ही इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बहुत बड़ी शक्ति और साधनों की आवश्यकता है। यह शक्ति और साधन हमें अपने यहां से ही प्राप्त करने होंगे और इसके लिये सबसे बड़ी आवश्यकता है हमें अपनी स्थानीय शक्ति को सुदृढ़ बनाने की। स्थानीय शक्ति की वृद्धि जब तक नहीं की जायेगी तब तक आर्य समाज की सामूहिक शक्ति नहीं बढ़ेगी।

आर्य समाजों की स्थानीय शक्ति कैसे बढ़ेगी ? यह एक समस्या अवश्य है। इसके लिये प्रत्येक आर्य समाज को निम्नलिखित कार्यक्रम को हाथ में लेना होगा—

१. आर्य समाज की सदस्य संख्या बढ़ाई जाय। आर्य समाज में नये रक्त का प्रवेश हो।

२. आर्य समाज का वार्षिकोत्सव प्रति वर्ष हो।

३. समय समय पर विशेष उत्सव और पर्व मनाये जावें जिनमें आर्य समाज से सहानुभूति रखने वाले विद्वानों और विशिष्ट महानुभावों को अपने यहां आदरपूर्वक निमंत्रित किया जाय, उनके व्याख्यान कराये जायें और इन आयोजनों का यथेष्ट प्रचार किया जाय ताकि उसमें अच्छी उपस्थिति हो।

४ पारिवारिक सत्संग किये जायें। विविध मुहल्लों में रहने वाले आर्य बंधुओं के घरों पर प्रत्येक अमावस्या और पूर्णिमा को हवन और सत्संग के आयोजन हो। उनमें सुन्दर उपदेश तथा भजन हों। इन आयोजनों में मुहल्ले के परिवारों को भाग लेने के लिये निमंत्रित किया जाय। आग्रहपूर्वक उन्हें बुलाया जाय।

५. प्रतिवर्ष ५० परिवारों में सुलभ और सुबोध आर्य साहित्य पहुंचाया जाय और उन्हें उसे पढ़ने के लिये प्रेरित किया जाय। इन परिवारों में प्रति वर्ष नये आर्य सभासद बनाये जायें।

६. हरिजन बंधुओं से संपर्क स्थापित किया जाय। उनके मुहल्लों में सफाई की योजना की जाय, उनके बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था की जाय। समय समय पर सत्संग, कथा, हवन, आदि का आयोजन किया जाय तथा वर्ष में एक बार सहभोज किया जाय जिसमें हरिजन भाईयों को निमंत्रित किया जाय और उनके हाथ से भोजन की परोसगारी कराई जाय। इससे हरिजन भाईयों में हिन्दु धर्म के प्रति निष्ठा बढ़ेगी। उन्हें विधर्मी पथभ्रष्ट न कर सकेंगे और वे अपने को हिन्दु धर्म का अंग समझेंगे। आर्य महिलाओं को इस कार्य में विशेष योगदान करने की प्रेरणा दी जाय।

७. अस्पृश्यता निवारण के लिये आर्य समाज को हरिजनों में शिक्षा का प्रचार करना चाहिये। आर्य समाज के विद्यालयों और गुरूकुलों में हरिजन बालकों को निःशुल्क प्रवेश मिलना चाहिय। होनहार बालकों को छात्रवृत्ति देकर शिक्षित बनाना चाहिये। आर्य समाज ने तीस वर्ष पूर्व इस दिशा में काफी काम किया था। इसके फलस्वरूप हजारों अंत्यज और हरिजन बालक उच्च शिक्षा प्राप्त कर हिन्दु समाज में सम्मानित बने और उनके विवाह उच्च वर्गीय हिन्दुओं की कन्याओं से हुए। आज पुनः इस कार्य को जारी करना चाहिये और हरिजनों में हिन्दु समाज के प्रति अपनत्व और स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास की भावना जागृत करनी चाहिये। ईसाईयों की राष्ट्र

विरोधी प्रवृत्तियों का विरोध किया जाय और अस्पृश्य तथा दलित भाईयों को ईसाई बनने से रोका जाय।

८. आर्य समाजों के साथ आर्य कुमार सभाएं भी स्थापित हों जिनमें हमारे बालक ८ वर्ष के आयु से लेकर २० वर्ष तक की आयु के सदस्य रहें। उन्हें आर्य सिद्धांतों की शिक्षा दी जाये। आर्य समाज के सत्संगों, उत्सवों, में सेवा कार्य किया जाय। इन्हें आर्य समाज की सैद्धांतिक परीक्षाएं दिलाई जायें। आर्य कुमार सभाएं अपना पृथक संगठन बनायें, अधिवेशन करें, अपनी व्यायाम शालायें चलायें, प्रतियोगिताएं रखें, वादविवाद सभाएं करें। इस प्रकार हमारे युवकों में आर्य समाज के प्रति निष्ठा पैदा होगी और वे आगे चलकर आर्य बनेंगे। प्रत्येक आर्य परिवार के बालक आर्य कुमार सभाओं के सदस्य बनें। इनका आर्य वीर दल से संबंध हो और उन्हें आर्य वीर दल के अनुशासन में संगठित किया जाय।

९. वर्ण और आश्रम व्यवस्था। आर्य समाज ने अपने आरंभिक काल में वर्ण-आश्रम व्यवस्था पर काफी बल दिया था। फलस्वरूप हिन्दु समाज में वर्ण व्यवस्था का प्रचार बढ़ा, जन्म मूलक जाति पांति का प्रभाव घटा। आर्य समाज में वानप्रस्थी और संन्यासी पैदा हुए परंतु अब आर्य समाज का इस ओर से ध्यान हट गया। आर्य समाजी स्वयं जाति पांति के झगड़े में पड़ गये। आर्य समाजियों में बहुत कम अंतर्जातीय विवाह होते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज ने कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया है परंतु आर्य समाज आज उस पर अमल नहीं कर रहा है। हिन्दु समाज की शक्ति तबतक क्षीण होती रहेगी हमारे और अस्पृश्य भाई विधर्मी बनते रहेगें जब तक हम जाति पांति के भेदभाव को दूर करके गुण कर्म के आधार पर चारों वर्णों की स्थापना नहीं करते हैं। हमारे जो बन्धु विधर्मी बनाये गये हैं उन्हें शुद्ध करके पुनः हिन्दु धर्म में दीक्षित किया जाय।

१०. आर्य बन्धु अपनी शक्ति को आपसी संघर्ष में न लगाकर अपने को सच्चा आर्य बनाने में लगायें। इसके लिये स्वाध्यायशील बनें और आर्य समाज के सिद्धांतों तथा नियमों को अपने जीवन में चरितार्थ करें।

११. आर्य परिवारों में आर्य समाज के सिद्धांतों पर दृढ़ता के साथ अमल हों। युवक युवतियों के विवाह संस्कार वैदिक विधि से हों। आर्य परिवारों में प्रतिदिन संध्या व हवन हों तथा आर्य ग्रंथों का पठन पाठन हो। विशेष रूप से महिला और बच्चों में आर्य सिद्धांतों के प्रति निष्ठा पैदा की जाय।

हमने संक्षेप में आर्य समाज के नव निर्माण एवं पुनर्गठन के लिये उक्त कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। हम चाहते हैं कि सारे देश में इस प्रकार से योजनाबद्ध कार्य आर्य समाजों द्वारा हों। हम अपने प्रदेश की आर्य समाजों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे अविलंब उक्त कार्यक्रम को क्रियान्वित कर आर्य समाज के संगठन को यशस्वी बनायेंगे।

स्वामी समर्पणानन्द जी का शोकपूर्ण निधन

आर्य जगत के यशस्वी विद्वान स्वामी समर्पणानन्दजी (भूतपूर्व पं. बुद्धदेवजी विद्यालंकार) का हाल ही में अल्पकालीन रुग्णावस्था के पश्चात् निधन हो गया। स्वामीजी के निधन से आर्य समाज ही नहीं सारा देश एक तेजस्वी वैदिक विद्वान की सेवाओं से वंचित हो गया है। स्वामी समर्पणानन्दजी ने बड़ी निःस्पृहता और मनोयोग के साथ आर्य शताब्दी तक आर्य समाज की महान सेवा की। आप वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। गत हैदराबाद आर्य महा सम्मेलन में वेद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य समाज को वेदों के प्रचार के लिये बलवती प्रेरणा दी थी। स्वामीजी अपने जीवन में हमेशा वेद विरोधियों और भारतीय संस्कृति के शत्रुओं को ललकारते रहे। आपने वेदों का गंभीर अनुशीलन करके अनेक रहस्यों का उद्घाटन किया था। आपके व्याख्यानों में अमृत वर्षा होती थी और आप बड़े सरल रूप से कठिन विषयों को श्रोताओं को हृदयंगम कराने में सफल होते थे।

स्वामी समर्पणानन्दजी गुरूकुल कांगड़ी के मेधावी स्नातक थे और अपनी प्रतिभा एवं पांडित्य के कारण अनेक वर्षों तक गुरूकुल के प्रधान आचार्य पद को सुशोभित करते रहे। आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन में आपने प्रमुख भाग लिया। इसी प्रकार हिन्दी आंदोलन में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपने उन लोगों को अनेक बार शास्त्रार्थ के लिये चुनौती दी जो वेदों में गोमांस भक्षण की बात कहते हैं।

मध्यप्रदेश में स्वामीजी महाराज का अनेक वार पदार्पण हुआ। आर्य समाज के अनेक उत्सवों में आपकी ओजस्वी वाणी गूंजती रही और आप आर्यजनों में श्रद्धा और विश्वास की ज्योति जगाते रहे। स्वामीजी महाराज का सारा जीवन सक्रिय और आर्य समाज के सिद्धांतों का ज्वलन्त रूप था। आप केवल सभा मंच पर व्याख्यान देने वाले या सारगर्भित लेख लिखने वाले ही महारथी न थे किन्तु उन सिद्धांतों के अनुकूल आचरण करने वाले भी शक्तिपुंज थे। आपने अपनी दोनों सुशिक्षित पुत्रियों के जाति पांति तोड़कर विवाह किये और आर्य समाजियों के समक्ष सच्ची वर्ण व्यवस्था का आदर्श रखा।

हम मध्यप्रदेश व विदर्भ के समस्त आर्य बंधुओं, आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत स्वामीजी महाराज को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हमें विश्वास है कि आर्य समाजें और आर्य बंधु स्वामी समर्पणानन्दजी के पद चिन्हों पर चलकर तथा उनके उपदेशों के अनुरूप आचरण करके अपने जीवन को धन्य बनायेंगे।

ऋषि बोधोत्सव का संदेश

प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव एक पावन संदेश लेकर प्रस्तुत होता है। यह पावन संदेश है कि आर्य बंधु अपने जीवन को महर्षि दयानन्दजी महाराज के सिद्धांतों के अनुसार ढालें, और अपने को सच्चा आर्य बनाने का प्रयत्न करें। शिवरात्रि के अवसर पर महर्षि को सत्य के दर्शन हुए थे और उनके हृदय में सच्चे ईश्वर की प्राप्ति की भावना प्रकट हुई थी। अपने जीवन में महर्षि ने उस सत्य के दर्शन किये और ईश्वर के संबंध में संसार में फैले हुए भ्रम और अंध विश्वास को अपनी दिव्य वाणी द्वारा दूर किया। आर्य बंधुओं का कर्त्तव्य है कि वे इस पुण्य पर्व के अवसर पर अपने को महर्षि दयानन्द का सच्चा अनुयायी बनने का संकल्प लें, और एक ईश्वर की उपासना में तल्लीन होकर अंध विश्वास और धर्मान्धता के तिमिर को छिन्न भिन्न करके वैदिक धर्म की दिव्य ज्योति से अपने हृदय को आलोकित करें।

मूषक—वृत्ति

चूहा बड़ा क्रूर होता है। अनेक बिल बनाता है, एक पर बस नहीं करता, जैसे धनी लोग अपने सुख सुविधा के लिये अनेक स्थान (कमरे) बनाते हैं। चूहा जब भी बिल खोदेगा बड़ी दूर तक सुरंग बनायेगा और जो शुद्ध मिट्टी होगी उसे ही खोदकर बाहर फेंकेगा। उसे चूहे-केर कहते हैं। इस जैसी मिट्टी और कोई नहीं होती। निरर्थक हानि करता है कागज, कपड़ा कतर कतर बारीक करके फेंक देता है। स्वयं भी उससे लाभ नहीं लेता। जो व्यर्थ में दूसरों की हानि करे वह बड़ा दुष्ट होता है। चूहे का क्रोध और ईर्ष्या भी बड़ी है, हठी है।

कल शिवरात्रि है। ऋषि दयानन्द के सामने तो नकली शिव और असली चूहा था। जिससे उनको ज्ञान हुआ। हमारे पास न तो नकली शिव है-न असली। न असली चूहा है-न नकली। हम किसकी खोज करेंगे। जब तक हम यह न समझें हमारे शिवालय में भी कोई चूहा शिवजी का निरादर कर रहा है, तब तक खोज हो ही नहीं सकती।

— प्रभु आश्रितजी महाराज

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन— इत्तक बत्तक थम्

— श्री. जयसिंह गायकवाड़ बालाघाट

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन ७ वर्षों बाद हुआ। सम्मेलन के आयोजकों को आशा थी कि यह सम्मेलन आर्य समाज के भावी कार्यक्रम को निर्धारित करने में मार्गदर्शक सिद्ध होगा। इस आशा के अनुरूप यह सम्मेलन सफल हुआ। सम्मेलन के सम्बंध में कुछ खट्टी मीठी चर्चा इस लेख का उद्देश्य है। इसे आलोचना नहीं समझा जावे।

इस में सन्देह नहीं कि सम्मेलन स्थल का चुनाव तथा उस स्थल का उचित से उचित उपयोग कैसे हो इस सम्बंध में आयोजकों द्वारा योजनाबद्ध प्रयास किए गए। आवास व्यवस्था संतोषजनक रही। पिछले सम्मेलन में आगन्तुकों को शहर भर में यहां वहां ठहरा दिया गया था। इस से वे पूरा पूरा लाभ तो उठा ही नहीं पाए साथ ही परिवहन की भी कठिनाई हुई थी। यदि सुरक्षा की ओर और अधिक ध्यान दिया जा सकता तो सोने में सुगन्ध वाली बात हो जाती। खुले अधिवेशन का स्थल, सम्मेलनों का पंण्डाल, विषय निर्धारिणी स्थल, यज्ञवेदी, भोजनशाला प्रत्येक अलग अलग थे परन्तु इतने दूर नहीं कि किसी को परेशानी हो सके। प्रकाश व्यवस्था त्रुटिहीन एवं उत्तम रही। प्रकाश व्यवस्था के महान कार्य का अन्दाज इस बात से हो सकता है कि लगभग ४०० टयूब लाईट्स, ६००० डेकोरेशन बल्ब्स्, ३०० बडे बल्ब २५ सर्च लाइटस आदि लगाए गए थे। इन्हें लगाने के लिए मेन लाईन ही लगभग ४००० गज तथा छोटी लाइनें लगभग ७००० गज थीं। लाउडस्पीकर के ३ उम्दा सैट थे। दो तीन माइक्रोफोन कार्य करते रहे। लगभग ३० हार्न लगाए गए थे। साउन्ड की उचित व्यवस्था थी। बिजली एवं लाउडस्पीकर की इतनी बड़ी व्यवस्था में कहीं कोई व्यवधान या शिकायत नहीं हुई यह आश्चर्यजनक दक्षता का परिचायक है। परन्तु खुले अधिवेशन के स्थल पर प्रकाश की कमी थी। इस बात का उल्लेख सम्मेलन के उद्घाटन कर्ता श्री घरवरन ने टीस भरे शब्दों में की थी। काश इसकी उपेक्षा न की गई होती।

उत्तम भोजन व्यवस्था के लिए प्रबंधक बधाई के पात्र हैं। आशा से अधिक अतिथियों के आ जाने पश्चात् भी उन्होंने अपने हाथ ऊंचे नहीं किए। यदि अतिथियों को कुछ असुविधा हुई है तो वह जनता की अनुशासनहीनता के कारण हुई समझी जानी चाहिए।

महा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए पधारने वाले श्री आनन्द स्वामीजी महाराज का हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत हुआ। परन्तु उसी हवाई जहाज से उतरने वाले श्री स्वामी समपर्णानिन्दजी महाराज का स्वागत काफी विलम्ब से हुआ। यह अखरने वाली बात रही।

महा सम्मेलन के अवसर पर यजुर्वेद परायण महायज्ञ आयोजित था। आचार्य श्री कृष्ण जी इसके ब्रह्मा थे। बड़ा शान्त वातावरण रहा। कहीं कोई उतावला पन दृष्टव्य नहीं हुआ। यज्ञ मण्डल में यज्ञ के दौरान समा सा बन जाता था। वेद मंत्रों का उच्चारण भी अच्छी ढंग से किया जाता रहा। परन्तु पूर्णाहुति डालने का सौभाग्य सामान्य यज्ञ प्रेमियों को प्राप्त नहीं हुआ। यद्यपि सैकड़ों व्यक्तियों ने पूर्णाहुति के लिए अपनी व्यवस्था कर रखी थी। आर्य समाजों द्वारा, सनातनियों द्वारा या गायंत्री परिवार द्वारा आयोजित यज्ञों में श्रद्धालू जनता अपनी आहुति पूर्णाहुति के अवसर पर डाल कर अपने को कृतकृत्य समझती रही है। मैं कर्मकाण्ड का ज्ञाता नहीं अतः यह नहीं कह सकता कि पूर्णाहुति में सामान्य यज्ञ

श्रद्धालू जनता को अपनी आहुति डालने की रोक है या नहीं।

उद्घाटन भाषण, अध्यक्षीय भाषण, विभिन्न सम्मेलनों के प्रमुख भाषण, खुले अधिवेशन के भाषण, उपदेश, भजन आदि प्राय: सभी टेप रिकार्ड करवा लिए गए हैं। इसी प्रकार सम्मेलन की विभिन्न गतिविधियों को मूवी फिल्म पर उतार लिया गया है। यह प्रशंसनीय एवं उत्साहवर्धक बात रही। सम्मेलन के अनेक फोटो लिए गये एवं उन्हें तत्परता से प्रकाशित भी किया गया। यह भी प्रशंसा की बात है। प्रकाशन "दैनिक मिलाप" (हिन्दी एवं उर्दू) के संचालक श्री युद्धवीरजी द्वारा तत्परता से किया गया जो कि एक आर्य नेता के अनुरूप कार्य है। सम्मेलन के द्वारा पारित प्रस्ताव व तत्सम्बंधी समाचारों के प्रसारण की विशेष व्यवस्था करना अपेक्षित है। कुछ बुलेटिन बनाकर साइकलोस्टाइल करवा कर पत्र-प्रतिनिधीयों के स्थल पर तथा देश विदेश के अन्य समाचार पत्रों या समाचार एजेन्सियों को एक्सप्रेस डिलीवरी से भेजना चाहिए था। यदि ऐसा किया जाय तो सम्मेलन को उपलब्धियां प्रकाश में आ जावें। सम्मेलन के बाद प्राय: गैर आर्य समाजी पत्रों में इस सम्बंध में समाचार नगण्य ही देखने को प्राप्त हुआ। यह एक अखरने वाली बात है। क्यों कि लगभग १लाख रुपया तो हमनें सम्मेलन पर व्यय किया। हजारों व्यक्ति जो देश के कोने कोने से इस में आए उनका खर्च इस में समिलित नहीं है। यदि इतना खर्च कर के, परिश्रम कर के एवं समय लगा कर सामान्य जनता तक सम्मेलन की जानकारी प्रभावकारी ढंग से नहीं पहुंच सके तो "जंगल में मोर नाचा" वाली बात ही कहलाएगी।

सम्मेलन के पूर्व हैदराबाद तथा आस पास के नगरों में काफी प्रचार किया गया। पोस्टर आदि भी लगवाए गए। उत्तर भारत के आर्य पत्रों द्वारा भी सूचनाएं प्रकाशित की गई। परन्तु ऐसा लगता है कि प्रचार की और गुंजाइश थी। गत आर्य महा सम्मेलन का प्रचार उत्तर भारत के सामान्य समाचार पत्रों तथा रेडियो समाचार बुलेटिनों द्वारा काफी किया गया था। इस बार उतना नहीं हुआ प्रतीत होता।

स्पेशल ट्रेन दिल्ली से हैदराबाद के लिए आई। इसका स्थान स्थान पर स्वागत हुआ। हैदराबाद में भी स्वागत हुआ। इस ट्रेन के यात्रियों ने जुलूस को काफी बल दिया। यदि प्रयत्न किया जावे तो इस प्रकार की ट्रेन देश के हर कोने से सम्मेलन स्थल पर आ सकती है। परन्तु ऐसी स्पेशल ट्रेन का मुकाम सम्मेलन स्थल पर अधिक होना चाहिए अन्यथा जैसा कि इस बार हुआ, यात्री महत्वपूर्ण कार्यक्रम के लाभ से वंचित रह जाते हैं।

विषय निर्धारिणी सभा की कई बैठकें हुई। प्रथम बैठक में शोक प्रस्ताव के पश्चात् जब प्रथम विषय उपस्थित हुआ तब प्राय: सभी ने आर्य जगत् के अन्दर चल रहे वादविवादों को समाप्त करने सम्बंधी चर्चा हुई। प्राय: उस समय सबके हृदय में एक टीस देखी गई। अध्यक्ष श्री आनन्दस्वामी महाराज ने तो यहां तक कह दिया कि स्थिति इतनी विकराल हो गई है कि "हमें अपने को आर्य समाजी कहने में लज्जा आती है।" श्री आचार्य विश्वश्रवा, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री शिवकुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्रजी आदि ने आर्य जगत् में सामंजस्य पूर्ण निष्कपटपूर्ण वातावरण निर्माण करने के लिए प्रेरणा की। यह तय हुआ कि अन्य विषयों पर विचार करने के पूर्व पहले इसी विषय पर विचार किया जावे। काफी विचार विमर्श के उपरांत श्री आनन्दस्वामी महाराज को पंजाब एवं सार्वदेशिक सभा आदि के विवाद समाप्त करने का अधिकार दिया गया। यह भी प्रस्ताव पास हुआ कि भविष्य में आर्य समाजों के विवाद न्यायालयों में न भेजे जावें। यदि कोई ऐसा करे तो उसे सदस्यता आदि से प्रथक कर दिया जायेगा। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न था। यदि इस पर अमल हुआ तो देश के उत्तर पश्चिम का जहां से आर्य समाज को जन धन एवं बल प्राप्त होता रहा है, वहां सामंजस्य हो जावेगा और कार्य आगे बढ़ सकेगा। शेष आर्य जगत में इस के दूरगामी परिणाम होंगें। श्री आनन्दस्वामी महाराज ने खुले अधिवेशन में यह कह कर इस उत्तरदायित्व को गृहण करना स्वीकार किया "मैं फकीर ठहरा पर साधना का क्या लाभ यदि समाज की हानि होती

रहे।" उन्होंने सर्व साधारण से अपील भी की कि इस प्रस्ताव का उल्लंघन करने वालों को वह दण्ड दे।

विषय निर्धारिणी में एक प्रस्ताव लेखक की ओर से भी प्रस्तुत किया गया जिस के द्वारा आर्य समाज को दृश्य श्राव्य (Audo vissual) प्रणाली से प्रचार करने के लिए निर्देश था। प्रचार की इस क्रान्तिवादी शैली को अंगीकार करने की प्रेरणा श्री आनन्द स्वामीजी महाराज के अध्यक्षीय भाषण में थी ही। अतः प्रस्ताव उन्हें तो पसन्द आया ही और सभी को भी। इसे स्वीकार किया गया।

सम्मेलन द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव अन्यत्र प्रकाशित हो चुके हैं, होंगे। अतः उनका दोहराया जाना अनावश्यक है।

विषय निर्धारिणी के कार्य के प्रति सदस्यों में उत्साह का अभाव ही दीख पड़ा। प्रतिनिधि सभाओं के अनेक पदाधिकारियों एवं अतरंग सदस्यों को इस बात का ज्ञान ही नहीं था कि वे विषय निर्धारिणी के सदस्य हैं। इस का ज्ञान कराना आवश्यक है। पुनश्च सभा में उपस्थिति भी निराशाजनक रही। मेरे अनुमान में सार्वदेशिक सभा एवं सारी प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य लगभग २०० अवश्य होंगे परन्तु प्रथम बैठक में उपस्थिति केवल ३६ ही थी जो बाद में बढ़ अवश्य गई परन्तु कालान्तर में शायद वह उतनी भी नहीं रही।

खुले अधिवेशन में जाने वाले प्रस्ताव पहले विषय निर्धारिणी में स्वीकृत किए जाते हैं। कुछ अधिकृत प्रस्ताव (Official) प्रस्ताव होते हैं तथा कुछ अन्य जो सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किए जा सकते हैं। अधिकृत प्रस्ताव जो प्रस्तुत किए गए उन की भाषा एवं भावना आदि सभी में काफी परिवर्तन हुए। यदि ये प्रस्ताव स्वयंपूर्ण (Self contanied) होते और भाषा मंजी हुई होती तो समय की अनावश्यक हानि नहीं हुई होती। इस ओर काफी ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्री आनन्द स्वामीजी महाराज का अध्यक्षीय भाषण पहले ही छपा हुआ था। समाचार पत्रों में भी वह छपा। उनका समारोप भाषण भी उतना ही महत्वपूर्ण था। था यद्यपि वह बहुत ही छोटा। इस भाषण में आपने समस्त आर्यों से अपील की " आप आर्य शहीदों की भूमि में आए हो। अपना आना सार्थक करो। वह सार्थक होगा यदि हम अपनी ब्रह्म शक्ति एवं क्षात्र शक्तिका सामंजस्य करें, आध्यत्मिक एवं आधिभौतिक विचारधारा में एकरूपता लाने का प्रयत्न करें। प्रभु भक्ति करें एवं उस पर श्रद्धा तथा विश्वास बढ़ाएं। दिन भर के २४ घंटों में से एक घंटा निकाल कर उस के पास बैठें। आज की राजनीति मानव को दानव बना रही है। महर्षि की ओर देखो, उन्होंने राजनीति को धर्म के आधीन किया था। हमें धर्म को ही महत्व देना है। क्यों कि वह सीमाओं से तो बंधा नहीं है हमें आर्य समाज का सार्वभौम प्रचार करना है। आर्यो तुम्हें बाहर निकलना होगा। विदेशों में करोडों व्यक्ति वेदों का नाम तक नहीं जानते विभिन्न विदेशीय भाषाओं में वेदों के भाष्य कराने होंगे। पहले हम घरों से बाहर निकलें तब तो बात आगे बढ़े। पहले आर्य समाज के क्षेत्र में सन्यासी काफी थे परन्तु अब उन की भी कमी आ गई है। ५० वर्ष की आयु से ऊपर के व्यक्तियों से मैं पूछता हूं कि वे क्या कर रहे हैं। क्या आश्रम व्यवस्था का पालन नहीं करना है? मैं प्रत्येक को आर्य समाज के प्रचार के क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए आहवान करता हूं"। हमें विचार करना है और देखना है कि इन शब्दों का सन्यासी महानुभाव के आदेशों का क्या प्रभाव होता है।

'आर्य सेवक' के ग्राहक बनाइये

आपका प्रिय पत्र आर्य सेवक, मध्यप्रदेश व विदर्भ, का सब से पुराना हिन्दी पत्र है। इसे इस प्रदेश का सब से लोकप्रिय, श्रेष्ठ एवं प्रगतिशील पत्र बनाने के लिये जनता से, विशेषत: आर्य जनता से हार्दिक अनुरोध है कि वह आर्य सेवक के नये ग्राहक बनायें।

फल-त्याग की फिलॉसफी

फलत्याग का अर्थ– अपने पुरुषार्थ और प्रभु कृपा से प्राप्त फल को ईश्वर की अमानत समझकर बर्तना है। मात्र ट्रस्टी का भाव रखना और जो कुछ आवश्यकता से अधिक है, उससे गरजमन्दों की खुशी-खुशी सहायता करना, यही फलत्याग की फिलॉसफी का रहस्य है। एक कुलीन गृहणी जैसे किसी उत्तम पदार्थ का स्वयं उपभोग नहीं करती, परन्तु कुटुम्ब के सब सदस्यों को खिला-पिलाकर खाने में आनन्द मानती है, उसी प्रकार प्रभुकृपा से प्राप्त अमानत से, अपने आसपास के लोगों को यथाशक्ति सुखी करके आनन्द मनाना, फलत्याग है। अमानत का रक्षण सर्वप्रयत्न से करना आवश्यक है, यह तो ठीक है, परन्तु अमानत संभालकर रखने वाला कोई, यदि अहंकार या लोभ करे तो यह निरी मूर्खता होगी। अमानत लेने वाला जब प्रस्तुत हो जाय, तो ट्रस्टी का काम यही है कि जरा भी लोभ या ममत्व बताये बिना, खुशी-खुशी अमानत सौंप दे।

फल सैकड़ों के सहयोग से– हमें मिला उत्कृष्ट फल या प्रभूत धन-सम्पत्ति, अमानत नहीं तो क्या है? इसे अपने पुरुषार्थ ही का फल मान लेना, मिथ्या अहंकार है। प्रभु प्रसाद बिना अथवा स्पष्ट शब्दों में कहो तो, अपने अड़ोस-पड़ोस के सैंकड़ों सहयोगियों के सहकार के बिना, किसी उत्कृष्ट कार्य में सिद्धि संभव है क्या? यदि नहीं तो यह स्पष्ट है कि हमें जो बहुत सा फल मिल गया है, उस में सैंकड़ों व्यक्तियों का भाग है। जिस का जितना भाग है उसे उतना सौंप देना ही ईमानदारी हैं।

सवाल ईमानदारी का है– किस-किस का कितना भाग, यह सब ठीक-ठीक निर्णय करना असंभव ही हो तो सीधा सरल रास्ता क्या यह नहीं है कि जो कोई दुःखी द्वार पर आ जाय अथवा अड़ोस-पड़ोस में जहाँ कहीं कोई गरजमन्द दिखाई दे, उसे ही जरूरत के अनुसार, अमानत को सौंपने को तैयार रहने में मनुष्य ईमानदार मान ले? यह दान की बात नहीं है, ईमानदारी का सवाल है, देवों (प्रजाजनों) का भाग देवों को सौंप देने की बात है। पुण्य की नहीं, आवश्यक कर्तव्य की बात है। इसे दया नहीं, दयानतदारी कहिये। गीताकार के शब्दों में इसे फल त्याग कह लीजिए।

फलत्याग से शान्ति– देवों का भाग देवों को सौंपने में न कुछ अहसान है, न उपकार है। इसीलिए अहंकार बिलकुल फिजूल है। लोभ और स्वार्थ की सब बातें बेईमानी या खयानत की बातें हैं। फलत्याग की फिलोसोफी से दुनियादारों के दिल और दिमाग में यही बैठाना है। इतनी सी बात हृदय में बैठ गई और स्वार्थ, लोभ व अहंकार आदि के बन्धन ढीले हो गए, तो फिर मुक्ति ही है। चित्त की अत्यन्त शुद्धि को अनामय नाम दीजिये या फिर अक्षय शांति कहिए।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः
जन्मबन्धं विनिर्मुक्ता पदं गच्छन्त्यनामयम्

कर्म से उत्पन्न फल को सर्वभूतों के हित में अर्पण करके, मनीषी लोग सब दुःखों और क्लेशों से छूट जाते हैं : और भी––

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।

संयमी पुरुष, अपने कर्म का, धन-संपत्ति आदि फल समाज या सब प्राणियों के हित के लिये दान करके, पूर्ण शान्ति अनुभव करता है।

शास्त्रों ने कहा है– धन-सम्पत्ति, जोड़ने के लिये अथवा भोग-विलास के लिये नहीं है। वह धर्म के लिये अर्थात् गरीबों और गरजमन्दों में यथाशक्ति बाँट देने के लिए है और इस प्रकार उनका और अपना सुख बढ़ाने के लिए है–धनाद्धर्मस्ततः सुखम्।

धन-संपत्ति इस प्रकार सुख का बड़ा साधन हो सकता है। विपरीत इसके यदि इसे जोड़-जोड़कर

भोले–भाले आदिवासियों के धर्म परिवर्तन हेतु मिशनरियों की अनुचित रीतियों का आचार्य विनोबा भावे द्वारा रहस्योद्घाटन

अम्बिकापुर, सोमवार। इस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों के कार्यकलापों के सम्बन्ध में जनता द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में विगत दिवस यहां आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि जनता की निर्धनता से लाभ उठाकर उसका धर्म परिवर्तन करने के कार्य का स्वयं प्रभु ईसा ने ही तीव्र विरोध किया है। विनोबाजी ने कहा कि भूदान आंदोलन के सम्बन्ध में पदयात्रा करनेवाली कार्यकर्त्रियों ने उन्हें एक ऐसे प्रकरण की सूचना दी है जिसमें एक ईसाई मिशनरी ने धर्मान्तर के कार्य में आदिवासियों के भोलेपन और अज्ञान से लाभ उठाया है।

इस मिशनरी ने राम, कृष्ण और ईसा की एक ही आकार और रंग की तीन मूर्तियां तैयार करायी और आदिवासियों के मन में यह भावना दृढ़ कर दी कि केवल ईसाई धर्म ही सच्चा धर्म है और केवल वही उन्हें इस लोक और परलोक में मोक्ष दे सकता है। अपने इस तर्क के समर्थन में इस मिशनरी ने एक आदिवासी जनसमूह के सामने राम, कृष्ण और ईसा की ये तीनों प्रतिमाएं नदी में डाल दीं और आदिवासियों ने आश्चर्य से देखा कि राम और कृष्ण की मूर्तियां तो डूब गई पर ईसा की मूर्ति तैरती रही। केवल इतने से ही भोले आदिवासियों को विश्वास हो गया कि ईसाई धर्म में ही उन्हें मोक्ष दिलाने की शक्ति है।

इस प्रयोग में यह चालाकी की गई थी कि राम और कृष्ण की मूर्तियां तो पत्थर की थीं पर ईसा की मूर्ति काष्ट की और वे एक जैसी दिखती थीं। इस कारण राम और कृष्ण की मूर्तियां नदी में डूब गई और ईसा की मूर्ति तैरती रही। आचार्य भावे ने कहा कि वे इन अनुचित रीतियों से धर्मान्तर के विरूद्ध हैं। उन्होंने हिन्दु धर्म प्रेमियों से अनुरोध किया कि आदिवासी भाइयों की निस्वार्थ सेवा में किसी से पीछे न रहें।

अपनी तिजोरी भरी जाय, तो मनुष्य का हृदय भी तिजोरी में बन्द हो जाता है—

> For where your treasure is,
> There will your heart be also.

धन-सम्पत्ति के प्रति इस लोभ और प्रीति के प्रमाण में ही मनुष्य का हृदय संकुचित हो जाता है। वह अपने और अपने कुटुम्ब में बन्द हो जाता है। यदि धन-सम्पत्ति को अमानत समझते हुए, आसपास के अड़ोसी-पड़ोसियों में, गरीबों और गरजमन्दों में विभक्त कर दिया जाय, तो शनैः-शनैः उन सबसे प्रीति बढ़ चलती है। कहा है न, जहां तिजोरी होगी वहीं हृदय होगा।

कहना यह है कि फल को अमानत मानें, तो वह प्रीति-विस्तार का बड़ा साधन बन जाता है। प्रीति-विस्तार का नाम ही हृदय विकास या जीवन-विकास है। सच्चा सुख, जिसकी शोध सबको है, हृदय-विकास के साथ-साथ बढ़ता है,–भूमा वैतत्सुखम्' सम्पत्ति और सुख का अटूट सम्बन्ध हो, जैसा प्रायः समझ लिया जाता है, ऐसा बिलकुल नहीं। सुख का अटूट सम्बन्ध यदि किसी के साथ है, तो वह धर्म के साथ। धन धर्म के वर्द्धन में सहायक हो या न हो, यह धन के हाथ में है। जितने अंश में वह सहायक होगा, उतने अंश में वह सुख का साधन होगा। 'धनाद्धर्मंस्ततः सुखम्' में इसी सत्य का प्रतिपादन है।

(तपोभूमि से साभार)

भारत पर तीन प्रकार के आक्रमण

(श्री प्रकाशवीर शास्त्री, संसद-सदस्य)

हमारे देश में तीन प्रकार के आक्रमण हो रहे हैं। एक धार्मिक या सांस्कृतिक, दूसरा साहित्यिक और तीसरा राजनैतिक।

धार्मिक आक्रमण पिछले १०० वर्ष से चल रहा है। पहले मुसलमानों ने तलवार के जोर से हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया। स्थान-स्थान पर मुसलमान बनाये गये। हिन्दू उस समय संगठित नहीं थे। इसके बाद अंग्रेज भारत में आये। उन्होंने धीरे-धीरे ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रेम से भारतीयों को ईसाई बनाना प्रारम्भ किया। उन्होंने स्थान-स्थान पर स्कूल, अस्पताल आदि खोले, और यहां की पिछड़ी जातियों को हिन्दू देवताओं की भद्दी तस्वीरें दिखा कर तथा ईसा की दैविक शक्तियों का बखान करके, ईसाई बनाने का काम प्रारम्भ किया। यहां तक कि जिस समय महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में थे उनको भी ईसाई बनाने का प्रयत्न किया गया।

स्वामी दयानन्द ने इस स्थिति को देखा और हिन्दुओं को ईसाई बनने से रोकने के लिये वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। उन्होंने सारे देश का भ्रमण किया और लोगों को ईसाई बनने से रोका।

जिस समय भारत स्वतन्त्र हुआ उस समय ईसाई मिशनरियों ने भी अपने अड्डे कम करने प्रारम्भ कर दिये, क्योंकि उनको शासन की ओर से मदद मिलने वाली नहीं थी। कितने ही स्थानों पर ईसाईयों ने अपनी जमीन जायजाद बेच दी। परन्तु जब उन्होंने देखा कि भारत तो एक धर्म निरपेक्ष राज्य है, यहां हर धर्मावलम्बी आराम से रह सकता है तो ईसाई मिशनरियों ने भारत छोड़ने का इरादा बदल दिया, और यहां अपने पैर मजबूती से जमा लिये। स्वतन्त्र भारत में इन ईसाई मिशनरियों के लिये अस्पताल, स्कूल, कपड़ा, दवा आदि के लिये साढ़े सात अरब रुपया विदेशों से आता है। यह आंकड़े आंखें खोलने वाले हैं।

परन्तु इससे भी भयानक बात यह है, कि ईसाई मिशनरी सेवा के बहाने यहां की राष्ट्रियता में परिवर्तन कर रहे हैं। नागालैंड, मिजो पहाड़ी, केरल इसके उदाहरण हैं। परन्तु हमारी सरकार इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दे रही है।

मध्य प्रदेश सरकार ने श्री नियोगी के नेतृत्व में एक कमीशन नियुक्त किया था। उसकी रिपोर्ट के अनुसार स्वतन्त्रता से पहले सरगुजा स्टेट में एक भी ईसाई नहीं था, परन्तु स्वतन्त्रता के बाद वहां ८० हजार व्यक्ति ईसाई बना दिये गये।

१९६१ की जनगणना के आंकड़े और भी चौंका देने वाले हैं। १९५१ से १९६१ तक १० वर्ष में भारत की कुल आबादी २४ प्रतिशत बढ़ी है और गैर हिन्दू ३२ प्रतिशत बढ़े हैं।

सीमावर्ती क्षेत्र में मुसलमानों की आबादी कहीं ५० प्रतिशत कहीं ८० प्रतिशत और कहीं-कहीं तो १०० और २०० प्रतिशत तक बढ़ गई है। एक स्थान पर तो जहां एक मुसलमान था वहां १२५० मुसलमान हो गये हैं।

भारत सरकार ने सीमावर्ती इलाकों में मुसलमानों की इस बढ़ती हुई आबादी के लिए कोई प्रबन्ध नहीं किया जब कि पाकिस्तान में बसे हिन्दुओं को सीमा से २०-२० मील पीछे हटा दिया गया है।

आज पाकिस्तान के एजेन्ट सारे भारत में फैले हुए हैं। वे हर प्रकार का वेश बना कर साधु बनकर अपना प्रचार कर रहे हैं। यदि भारत और पाकिस्तान में दुबारा युद्ध होता है तो ये लोग क्या गुल

खिलायेंगे यह देखने की बात है। सरकार सीमावर्ती इलाकों की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं कर रही।

हमारे ऊपर जो दूसरा आक्रमण चल रहा है, वह है साहित्यिक पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं के रूप में आ रहा है, वह हमारे नवयुवकों, हमारी नई पीढ़ी का चरित्र बिगाड़ रहा है। हमारे देश में भी बहुत सी ऐसी पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकायें छप रही हैं जो नैतिक चरित्र का ह्रास कर रही हैं। उनको विदेशों से रुपया मिलता है।

इससे बचने के लिये हमारे लेखकों को अच्छा साहित्य लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जो लोग गन्दा साहित्य लिखते हैं उनको सामाजिक रूप से ऐसा न करने को विवश किया जाना चाहिए।

तीसरा आक्रमण राजनैतिक है। राजनैतिक आक्रमण देश के लिये एक भारी समस्या है। हमारे शत्रु देश चीन और पाकिस्तान बराबर अपनी सैनिक ताकत बढ़ा रहे हैं। चीन ने दुर्गम पहाड़ियों में सड़कें और हवाई अड्डे बनाये हैं। जहां से वे भारत पर बड़ी आसानी से आक्रमण कर सकते हैं। पाकिस्तान में नौजवानों को सैनिक शिक्षा दी जा रही है। जो लड़कियां बुर्के में ढकी रहती थीं, वे भी अपने कन्धों पर बन्दूकें लेकर चल रही हैं। रूस की नियत भी डिगी मालूम पड़ती है।

इसमें आशा की किरण हमारे सैनिक अधिकारी तथा जवान हैं। जो बड़ी मुस्तैदी से अपनी सीमाओं पर हर प्रकार के मौसम में डटे रहते हैं। मैं उनके उत्साह की सराहना करता हूं। उनको उस समय बड़ा अफसोस होता है जब सरकार जीते हुये इलाके भी वापिस कर देती है।

इस वर्ष गांधी जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। कहा जा रहा है गांधी जी की जन्म शताब्दी मनानी है तो शांति से काम लो, हथियार कम करो, सेना कम करो। गांधी जी के नाम पर जो लोग ऐसा करते हैं वे उनके साथ अन्याय करते हैं। जो लोग देश को कमजोर करना चाहते हैं, वे ही ऐसी बातें करते हैं। १९४७ के पाक आक्रमण के समय गांधी जी ने पाक का मुकाबला सैनिक ताकत से करने की सलाह दी थी। यदि आज गांधी जी जीवित होते तो स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये एटम बम बनाने की भी सलाह दे देते।

हमारे यहां छात्र बल का बड़ा अभाव है। क्या शहर, क्या गांव सब जगह छात्र बल का ह्रास हो रहा है। हमारे नौजवान, गदा, मुद्गर, दण्ड, बैठक लगाने के बजाय सिनेमा जाना अधिक पसन्द करते हैं। इस बार यदि पाकिस्तान से लड़ाई होती है तो सीमा के साथ जनता को देश के अन्दर की लड़ाई लड़नी पड़ेगी। परन्तु जिन व्यक्तियों के दिमाग सोते जागते हर समय चुनाव और कुर्सी के चक्कर में लगे रहते हैं, वे देश की क्या रक्षा कर सकते हैं? वे लोग अपनी कुर्सी को बचाने के लिये अपनी पार्टी, अपना देश तक बलिदान कर देते हैं।

आज जो व्यक्ति यह सोचते हैं कि व्यक्ति से बड़ी पार्टी है, पार्टी से बड़ा देश, है, यदि देश पर आक्रमण होता है तो देश के हर व्यक्ति पर आक्रमण होता है वही देश की रक्षा का काम कर सकेंगे।

आज अराष्ट्रियता के आक्रमण का मुकाबला करने की शक्ति देश की राजनीतिक पार्टियों में नहीं है। अराष्ट्रीयता का मुकाबला धार्मिक संस्थायें कर सकती हैं। आप लोग दयानन्द के सैनिक हैं, बलिदानी वीरों की सन्तानें हैं, कमर कस लो कि देश और धर्म पर किसी प्रकार की आंच नहीं आने देंगे।

[आर्यसमाज थापरनगर के वार्षिकोत्सव पर ७ दिसम्बर को दिये गये भाषण का मुख्य अंश। श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी द्वारा संग्रहीत]

मतमतान्तरों के पाटों में पिसता मानव

(श्री विनयकुमार पाठक, बिलासपुर)

आर्यावर्तीय मत के खंडन-मंडन के बारे में महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में प्रकाश डाला है। प्रत्येक मानव अपने कथन की पुष्टि के लिये वैज्ञानिक या दार्शनिक नियमों का विश्लेषण और पुष्टि करते हैं किंतु, स्वामी जी ऐसी प्रस्थापना नहीं चाहते। इसीलिये उन्होंने विश्लेषण से अधिक मान्यता समन्वयवादिता को ही दिया है। विश्लेषण एकांगी होता है अतः महर्षि ने समन्वित रूप को ग्रहण करने में नव-सुख-शांति का संचार किया है। हिमालय, विंध्याचल, और ब्रह्मपुत्रा नदी और जहां तक उनका विस्तार है उसके मध्य का देश आर्यावर्त्त कहलाता है। यह सुवर्ण देश विद्याओं की उन्नति में सबसे आगे था। सृष्टि से लेकर पांच सहस्त्र वर्षों पूर्व समय पर्यन्त तक आर्यों का पूरे पृथ्वी पर अपना आधिपत्य था। धीरे धीरे उनमें परस्पर विरोध, ईर्ष्या, एक दूसरे को नीचा दिखाने की भावना जागृत हुई। इसी का भयंकर परिणाम हुआ– महाभारत का युद्ध ! जिसमें करोडों मानवों की दुर्गति हुई तथा 'जिसका बल वही राजा' का क्रम जारी हुआ। "इस तरह विनाश काले विपरीत बुद्धिः" के अनुसार लोग अज्ञानता की गर्त में प्रवेश करते गये तथा वेदादि का दीप भी मंद पड़ने लगा। दुर्भाग्यवश इसी संक्रमण काल में अनेक मतमतान्तरों के जाल बिछने लगे और लोभवश जनता भी बराबर फंसती रही। ऐसे ठग मत वाले, साधारण मत वाले को मूर्ख बनाकर अपना स्वार्थ साध कर ऐश आराम का जीवन व्यतीत करने लगे। उनके स्वार्थी शिष्य उनके मरण के पश्चात् आचार्यत्व के लिये लड़ने-झगड़ने लगे। एक ने वाम मार्ग चलाया और शिव उवाच, भैरव उवाच कहकर लोगों को मूर्ख बनाया। इसी तरह जैन और बौद्ध मत प्रचलित हुआ। मूर्तिपूजा का आरंभ एवं तीर्थादि का प्रारंभ कर वेद विरोधी कर्मकांडों में लिपटा हुआ मानव-मन हिंसावृत्ति की ओर मुड़ने लगा। इधर शंकराचार्य ने भी जैनियों से शास्त्रार्थ कर उन्हें बुरी तरह परास्त किया। लोग व्यास का नाम रखकर पुस्तकें लिखने लगे। अब तो कई छोटे-बड़े मत उत्पन्न हो गये और लोग भी अलग अलग बंटकर आंख मूंदकर उनका अनुकरण करने लगे। पोप-लीला के समान श्रीमद्भागवत, गरुण पुराण लिखा गया। चोली मार्ग, बीज मार्ग, गोकुल का मत, नारायण स्वामी का मत तो अपना विचित्र स्वरूप लेकर सामने आये। तिलक लगाने का वर्णन, अंडबंड तथ्य से पुष्टि करना आदि द्वारा अपना भी मत बनाने लगे। माध्वी मतवाले काला तिलक इसलिये लगाते थे कि कृष्ण जी इसी रंग के थे। तो क्या सचमुच वे देह में कालिख पोतकर कृष्ण जी बन जावेंगे ? इसी तरह भक्तमाल में एक कथा है, एक आदमी पेड़ के नीचे सो रहा था। एक कौआ उस पेड़ पर आकर विष्ठा कर दिया। जो कि ठीक उसके मस्तक पर तिलकाकृति अंकित हो गया। उस आदमी की एकाएक मृत्यु हो जाने से वह दुष्ट होता हुआ भी स्वर्ग को गया। ऐसा गप्प हांककर लोगों को वे भ्रम जाल में डाले रहे। कबीर पंथी को मानकर वे उसी को देवतादि कहने लगे। निष्पक्ष देखिए—

"अंत में मैं सर्वपारखी संतरूप सद्गुरु श्री कबीर साहब को साष्टांग दंडवत या बंदगी करता हूं। मेरे सभी अपराधों को आप क्षमा कीजिए और इस दीन पर दया दया दृष्टि रखिये। यही मेरी अंतिम याचना है। दादू और नानक भी अपना नया मत लेकर आये और देवता के समान पूजे जाने लगे। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज ने आर्यावर्त्त को निरामूर्ख एवं अंग्रेजों और ईसाइयों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस तरह अनेक ठग महात्मा बन कर नये-पुराने ढोंग-ढ़ोंल बजाकर जनता को लूटने लगे। इस तरह नये नये कुकृत्यों और अत्याचारों का जन्म और विकास हुआ और लोग मत मतान्तरों के पाटों में पिसते रहे।

ईश्वर और सत्य

गांधीजी कहा करते थे सत्य ही परमेश्वर है। यहां इस विषय पर उनके विचार दिये गये हैं। गाँधी शताब्दि वर्ष में यह लेख सामयिक और पठनीय है।

सत्य ही परमेश्वर है, यह बात मेरी सब से अमूल्य निधि रही है। मेरी कामना है कि यह सब की अमूल्य निधि हो। इस सच्चाई पर विश्वास करना ही हमारे अस्तित्व का एक मात्र औचित्य है।

अब सवाल यह पैदा होता है, सच्चाई क्या है?

यह एक कठिन प्रश्न है, लेकिन मैंने इसका यह हल निकाला है कि आत्मा की आवाज सत्य है। आप पूछ सकते हैं फिर विभिन्न लोग अलग अलग विरोधी बातों को सच क्यों समझते हैं?

मानव मस्तिष्क अनगिनत तरह से काम करता है और सभी के मस्तिष्क का विकास एक तरह से नहीं होता। इसका अर्थ यह है एक के लिए जो सत्य हो, वह दूसरे के लिए असत्य हो। अत: जिन लोगों ने इस संबंध में प्रयोग किये हैं, वे इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इन प्रयोगों को करते समय कुछ प्रतिबंधों के अनुसार आचरण करना आवश्यक है। जिन लोगों ने यह प्रयोग किये हैं वे जानते हैं कि हरेक आदमी का यह दावा उचित नहीं है कि उसे आत्मा की आवाज सुनायी देती है। इस समय ऐसे अनेक लोग, जो किसी प्रकार के अनुशासन में नहीं है, आत्मा की आवाज सुनने का दावा करते हैं। इस कारण कि कर्तव्य विमूढ़ संसार में अनेक असत्यों का प्रसार हो रहा है। मैं नम्रता के साथ केवल यह कह सकता हूं, कि जिस व्यक्ति में पर्याप्त विनय नहीं है उसे सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। अगर आप सत्य के सागर में तैरना चाहते हैं तो आपको सभी कुछ त्याग देना पड़ेगा।

मैं भगवान को एक व्यक्ति नहीं मानता हूं। मेरे लिए सत्य ही भगवान है और वास्तव में भगवान के नियम और भगवान उस तरह पृथक नहीं हैं, जिस तरह कोई भौतिक राजा और उसके नियम पृथक है। मेरे लिए सत्य और प्रेम भगवान है, नीति शास्त्र और नैतिकता भगवान है और निर्भयता भगवान है। मेरा यह विश्वास रहा है और मैं यह कहता रहा हूं कि प्रेम ही भगवान है पर सब से ऊपर सत्य ही भगवान है। सच्चाई पर पहुंचने का सबसे निकट रास्ता प्रेम का है।

सत्य ही ईश्वर है

सत्य की खोज निकालने की अपनी तीव्र इच्छा में अनीश्वरवादियों ने ईश्वर के अस्तित्व से ही इन्कार कर दिया है। उनके अपने दृष्टिकोण से यह उचित ही है। यह कहने की अपेक्षा कि भगवान सत्य है मैं यह कहूंगा कि सत्य ही भगवान है। लेकिन जब तक हम इस नश्वर काया से बंधे हैं हमारे लिए चरम सत्य को पा लेना असंभव है। हम केवल उसकी कल्पना कर सकते हैं। हम इस क्षणभंगुर शरीर के माध्यम से शाश्वस्त सत्य को अपने सामने नहीं देख सकते। यही कारण है कि अंत में हमें अपनी आस्था पर भरोसा करना पड़ता है।

सच्चाई अपने आप जाहिर हो जाती है। इसको घेरनेवाले अज्ञान रूपी जालों को साफ करते ही सच्चाई चमकने लगती है। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी विश्व को प्रकाशित कर देती है उसी प्रकार सच्चाई का प्रचार भी होता जाता है।

मानव जीवन अत्यन्त जटिल है। सत्य और अहिंसा ऐसी समस्याएं पैदा करते हैं जिनका अवसर समाधान और विश्लेषण नहीं हो सकता। केवल शान्त प्रयत्न और मूक प्रार्थना द्वारा ही सत्य की खोज की जा सकती है और सत्याग्रह अथवा आत्मबल द्वारा ही इस पर अमल किया जा सकता है। मैं मित्रों को विश्वास दिलाता हूं कि सच्चाई पर पहुचने के लिए मैं निरन्तर प्रयत्न करता हूं और इस काम में निरन्तर प्रयास और मूक प्रार्थना मेरे विश्वस्त साथी हैं।

(शेष पीछे)

गोरक्षा की मांग अपराध

श्री भारतेन्द्रनाथ को ७ दिन की कडी सजा या ५००) जुर्माना

पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि भारत सरकार की दृष्टि में गोरक्षा की मांग करना आज भी गम्भीर अपराध है। क्यों कि १८ दिसम्बर को दिल्ली के प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट श्री जे. के. दीक्षित ने अपने एक निर्णय द्वारा पं. भारतेन्द्रनाथ को ७ दिन की कड़ी कैद या ५००) अर्थ दंड सुना कर दंडित किया।

सभी को यह ज्ञात ही होगा कि दिसम्बर १९६६ में श्री पं. भारतेन्द्रनाथजी ने कुछ पोस्टर गोरक्षा के सम्बंध में प्रकाशित किए थे। जिन में से एक का शीर्षक था "कसाई की छुरी के नीचे कटती गाय रक्षा के लिए आपको पुकारती हैं।"

इस पोस्टर को प्रकाशित करने के अपराध में १५ दिसम्बर १९६६ को पंजाब सुरक्षा कानून के अन्तर्गत पं. भारतेन्द्रनाथ को गिरफ्तार किया गया था। तभी से यह केस निरन्तर चलता रहा। ५० से अधिक पेशियां इस केस में लगीं और २ वर्ष तक निरन्तर केस चलाने के बाद माननीय मजिस्ट्रेट महोदय ने उक्त निर्णय सुनाया। इसी निर्णय में पोस्टर में छापने वाले प्रभात प्रेस के स्वामी श्री विनोदकुमार को भी यही दंड दिया गया।

इस निर्णय ने एक बार फिर यह प्रमाणित कर दिया कि गोरक्षा की समस्या आज भी उतनी ही उलझी हुयी है जितनी ब्रिटिश शासन में थी। भारत मां का भाग्य आज भी उसी तरह सिसक रहा है। आर्य रक्त से वीरता विदा हो गयी प्रतीत होती है अन्यथा ४५ कोटि व्यक्ति की माता प्रतिदिन सुबह सूर्य की किरणें निकलने से पहले ही हजारों की संख्या में कट न जाती।

काश कि कुछ सच्चे आर्य आज भी गम्भीरता पूर्वक स्थिति पर विचार करते और अपने स्वार्थ के लिए नहीं–गो-माता के प्राण बचाने के लिए रचनात्मक पग उठाते। हम सार्वदेशिक सभा के मंत्री ला. रामगोपाल संसद सदस्य के आभारी हैं जिन्होंने आरंभ से अंत तक सम्पूर्ण केस में व्यक्तिगत रुचि ली। श्री सोमनाथ मरवाहा एडवोकेट, श्री बी. एस. छिब्बर श्री बलजीत सिंह, श्री सुदर्शनकुमार भल्ला और श्री लवदेव अरोड़ा ने पूरी शक्ति से केस की पैरवी की, उनका धन्यवाद करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। निर्णय के विरूद्ध सैशन कोर्ट में अपील दायर कर दी गयी है। देखिए क्या होता है?

(जनज्ञान से उद्धृत)

मैं महान शक्ति को अल्लाह या खुदा अथवा ईश्वर के नाम से नहीं, वरन् सत्य के नाम से पुकारता हूं। मेरे लिए सत्य ही परमेश्वर है और सत्य सब से ऊपर है। पूर्ण सत्य केवल महान शक्ति के हृदय में निवास करता है। एक महान अंग्रेज ने मुझे इस बात पर विश्वास करना सिखाया कि भगवान अज्ञेय है। उन्हें उसी सीमा तक जाना जा सकता है जिस सीमा तक हमारी सीमित बुद्धि पहुंचती है।

लाखों व्यक्तियों ने भगवान के नाम पर असंख्य अत्याचार किये हैं। ऐसा नहीं है कि वैज्ञानिक सत्य के नाम पर अत्याचार न करते हों। सभी जानते हैं विज्ञान और सत्य के नाम पर पशुओं पर किस कदर नृशंस अत्याचार किये जाते हैं।

मनुष्य अधिक नहीं सोच सकता और सर्वशक्तिमान के विषय में सोचते समय उसकी कठिनाईयां और अधिक बढ़ जाती हैं। हिन्दू दर्शन के अनुसार केवल भगवान शाश्वत है और सभी नश्वर हैं। संस्कृत में सत्य के लिए "सत्' शब्द है, जिसका अर्थ है वह जो विद्यमान रहता है। इन सब कारणों से मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सत्य ही परमेश्वर है। इस तथ्य से मुझे बहुत संतोष मिला है। परमेश्वर को पाने का एक मात्र रास्ता प्रेम और अहिंसा का है। ❋

ईश्वर, आत्म विश्वास और भ्रातृभाव से मनुष्य जन्म सफल बनावें

महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज का भव्य स्वागत

नागपुर १९ जनवरी ६९।

आर्य जगत के तपस्वी सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामीजी सरस्वतीजी ने महर्षि दयानन्द भवन, नागपुर में रविवार, दिनांक १९-१-१९६९ को आयोजित स्वागत समारोह में उपदेश देते हुए कहा कि वेद के अन्दर जीवन को सफल बनाने की समस्त सामग्री मौजूद है। वेद ज्ञान के पश्चात् आत्म विश्वास, मनोबल, और ईश्वर पर दृढ़ आस्था जागृत हो जाती है। मानव जीवन की सफलता का श्रेय आत्म विश्वास है। जिसमें यह विद्यमान है वह ही विश्व में कुछ कर सकता है। आपने कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने आर्य समाज के छटे नियम में लिखा है कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है", अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। आर्य समाज इस ओर सदा प्रयत्नशील रहा है।

आत्मविश्वास से काम करें

स्वामीजी ने कहा कि मनुष्य को अपनी सहायता के लिये दूसरों का मुंह नहीं ताकना चाहिये। हमें स्वयं ही सबल बनना होगा। अपने देश को सबल बनाना होगा। अपनी भुजाओं में बल, मस्तिष्क में बुद्धि, ब्रह्म शान्ति और छात्र शक्ति को मन में रखना होगा। इस प्रकार के आत्मविश्वास से मनोबल ऊंचा होगा और हमारी हर क्षेत्र में विजय होगी।

पुरूषार्थी बनें

अपने उपदेश में महात्माजी ने कहा कि मनुष्य को अपने ऐश्वर्य पर अभिमान नहीं करना चाहिये। अभिमान को नष्ट करने के लिए परमात्मा की स्तुति आवश्यक है। प्रभु दर्शन इन आंखों से नहीं हो सकते, इसके दर्शन अंतरात्मा के नेत्र से ही होते हैं। भगवान विद्यमान है इस सबंध में अनेक दृष्टांत स्वामीजी ने बताये जो कि मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक थे। आपने कहा कि मनुष्य को प्रभु ने हाथ पांव प्रदान किए हैं वह चुपचाप बैठने के लिये नहीं हैं परन्तु प्रभु पर विश्वास रखते हुए पुरूषार्थ करते रहें और फल की कामना न करें आपका जीवन उन्नत होगा और सफलता आपके चरण चूमेगी।

प्रभु विश्वास से जीवन रक्षा

स्वामीजी ने लाहोर की एक आप बीती घटना सुनाई। देश का बटवारा हो गया था। आपके अखबार 'मिलाप' के प्रेस तथा घर में आततायियों ने अंगार लगा दी तथा २५-३० व्यक्ति घर को घेर कर आवाज देकर बाहर बुलाने लगे। सब के हाथ में अस्त्र शस्त्र मौजूद थे। जीवन रक्षा का कोई उपाय नहीं था

मैंने घरवालों से कहा कि दुश्मनों की तलवार से मरने के बजाय स्वयं घर में लगी अग्नि में मरना अच्छा है। इससे पूर्व घर में सबसे मैंने परमात्मा का एक भजन गाने के लिये कहा– "पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो"। हमारा यह भजन चल ही रहा था कि मिलिट्री की एक जीप जिसमें मेरे सुपुत्र के दोस्त लैफ्टीनेंट थे घर को इस प्रकार घिरा देखकर उन्होंने उन पर गोलियां चला दीं, जिस में कुछ तो वहीं मारे गये और शेष भाग खड़े हुए। इस प्रकार प्रभु विश्वास ने पुनः जीवन प्रदान किया।

भ्रातृभाव स्वर्ग से भी बढ़कर है

स्वामीजी ने महाभारत की एक घटना का वर्णन करते हुए कहा कि हमारे अन्दर भ्रातृभाव की भावना जागृत होनी चाहिये। युधिष्ठिर को स्वर्ग से भी भाई अधिक प्यारे थे। इस प्रकार दूसरे के सुख दुख में सरीक होना चाहिये। वेद हमें यही सिखाता है। महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती के प्रादुर्भाव के पूर्व यह स्थिति नहीं थी। आर्य समाज ने अकाल, भूकम्प, बाढ़ के समय पीड़ितों की सेवा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अंत में स्वामीजी ने कहा विज्ञान हमें सिखाता है कि सृष्टि कैसे बनी ? परन्तु यह सृष्टि क्यों बनी ? इस का विज्ञान के पास कोई समाधान नहीं। यह ज्ञान केवल वेद से ही हमें मिल सकता है। अस्तु वास्तविक सुख शान्ति की प्राप्ति के लिए भौतिक उन्नति के साथ साथ आध्यात्मिक उन्नति भी आवश्यक है।

इस स्वागत समारोह का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ की ओर से किया गया था जिसमें समस्त आर्य सभाओं एवं आर्य संस्थाओं के अतिरिक्त विश्व हिन्दु परिषद, हिन्दु नवयुवक संघ, ने भी स्वामीजी महाराज का पुष्पहारों से स्वागत किया। साधारण जनता भी बहुत संख्या में उपस्थित थी।

सभा में एक प्रस्ताव द्वारा आर्य जगत के विद्वान सन्यासी स्वामी समर्पणानन्दजी महाराज (भूतपूर्व पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) के निधन पर शोक प्रस्ताव पास कर शोकाकुल परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई।

नागपुर में व्यस्त कार्यक्रम

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज १८ जनवरी को रात्रि में मद्रास से वायुयान द्वारा नागपुर पधारे। १९ को प्रातः दयानन्द भवन में आपका अपूर्व स्वागत किया गया।

मध्याह में ४ बजे से आर्य समाज, दयानन्द भवन, के प्रधान श्री राजेन्द्रपालजी के निवास स्थान पर पत्रकार परिषद का आयोजन किया गया। नागपुर टाइम्स के संवाददाता जिन्होंने स्वामीजी महाराज की अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया है, अनुरोध किया कि मराठी भाषा में भी साहित्य का सृजन किया जाय। रात्रि में ८ बजे स्वामीजी का राजेन्द्रपालजी के यहां प्रवचन हुआ जिसमें नगर के अनेक आर्यजन पधारे थे।

सोमवार दि. २० जनवरी को प्रातः ८ बजे से आर्य कन्या विद्यालय जरीपटका की ओर से स्वामीजी महाराज का विद्यालय के संचालक, अध्यापिकाओं तथा आर्य समाज, जरीपटका की ओर से स्वागत किया गया। इस अवसर पर स्वामीजी महाराज के विद्वत्तापूर्ण उपदेश हुए। २० जनवरी को मध्यान्ह में स्वामीजी भिलाई के लिए प्रस्थान कर गये।

नागपुर में स्वामीजी महाराज दयानन्द भवन के प्रधान श्री राजेन्द्रपालजी के निवास स्थान पर ठहरे थे। वहां आपकी समुचित व्यस्था थी। इतने अल्प समय में नागपुरवासी स्वामीजी महाराज के उपदेशों का पूर्ण लाभ न उठा सके। स्वामीजी से प्रार्थना की गई है कि भविष्य में नागपुर प्रदेश के लिए और अधिक समय देनेकी कृपा करें जिससे नगरवासी उपदेशों का लाभ उठा सकें।

समाचार संसार

अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सप्ताह की राष्ट्रव्यापी धूम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में प्राप्त सैकड़ों पत्रों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि सभा के निर्देश पर सम्पूर्ण देश की ३००० से अधिक आर्य समाजों ने उत्साह पूर्वक अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सप्ताह मनाया।

इस सप्ताह में आर्य समाजों ने प्रचार के सभी संभव साधनों का प्रयोग कर नागरिकों तक अराष्ट्रीय तत्वों के षड़यन्त्र की विभीषिका से परिचित कराया।

आर्य समाज का अराष्ट्रीय प्रचार निरोध आन्दोलन समस्त अराष्ट्रीय तत्व, विदेशी ईसाई पादरी, चीनी एजेन्ट, पाकिस्तानी व राष्ट्र विरोधी तत्वों के विरुद्ध चुनौती है। सभा के मन्त्री लाला श्री रामगोपाल संसद सदस्य ने अपने एक वक्तव्य में राष्ट्र भक्त जनता से एक होकर इस पवित्र कार्य में आर्य समाज को सहयोग देने की अपील की है। आपने बताया कि आर्य समाज देश को विदेशी षड़यन्त्रों से मुक्त कराने में पूरी शक्ति लगा देगा अतः सभी को चाहिए कि देश की स्वतन्त्रता को बचाने के लिए इस महान कार्य में आर्य समाज के हाथ सुदृढ़ करें।

आदिवासी, वनवासी तथा पिछडे बन्धुओं के उत्थान के लिए किये गये सेवा कार्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति द्वारा संचालित केन्द्रों पर सुचारू रूप से वनवासी, आदिवासी तथा पिछड़े वर्ग के बन्धुओं के लिए उत्थान के कार्य काफी दिनों से चल रहे हैं। यह केन्द्र कई प्रान्तों में चल रहे हैं इस समय समिति द्वारा राजस्थान, मध्यप्रदेश, आसाम, त्रिपुरा तथा उड़ीसा आदि प्रान्तों में यह केन्द्र चल रहे हैं।

अभी समिति कुछ नये केन्द्र आसाम तथा अण्डमान निकोबार आदि स्थानों पर खोलने का विचार कर रही है जिससे कि सीमावर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में अराष्ट्रीय गतिविधियों में संलग्न विदेशी मिशनों की गतिविधियों को समाप्त किया जा सके। इन केन्द्रों पर विदेशी ईसाई मिशनों की भान्ति निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा तथा छात्रावास आदि चल रहा है। अब तक के चल रहे केन्द्र से कार्य का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :-

उड़ीसा-पानपोष-खरिहारी आदिवासी मुण्डा बच्चों के लिए स्कूल व छात्रावास, पीड़ित बन्धुओं के लिए ४ औषधालय जिस में लगभग १५००० हजार रोगी प्रति वर्ष निःशुल्क चिकित्सा प्राप्त करते हैं तथा ५ पाठशालायें चल रही हैं जिन में १० अध्यापक निःशुल्क शिक्षा दे रहे हैं।

मध्यप्रदेश-थांदला (झाबुआ) रायपुरा (उज्जैन) थांदला के केन्द्र पर वनवासी छात्रों के लिए निःशुल्क शिक्षा, वस्त्र तथा भोजन की व्यवस्था की गयी है जिनमें निर्धन वनवासी परिवारों के बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इस समय छात्रावास में लगभग ३५ बच्चे नि शुल्क वस्त्र तथा भोजनादि की सुविधायें प्राप्त कर रहे है। रायपुरा के केन्द्र पर वनवासी बच्चों के लिए निःशुल्क एक पाठशाला चल रही है जिसमें ४० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

राजस्थान बांसवाड़ा- २ पाठशालायें चल रही है, छात्रावास भी है जहां ३५ से ४० तक छात्रों को निःशुल्क शिक्षा तथा भोजनादि दिया जाता है।

त्रिपुरा–बिलोनियां– निःशुल्क दवाई देने के लिए एक डिस्पेन्सरी चल रही है जहां प्रति वर्ष हजारों को दवाई दी जाती है।

आसाम–डोफू तथा शिलांग– एक, सेवाश्रम की व्यवस्था कर दी गयी है और छात्रावास तथा स्कूल को चलाने की योजना है जिस पर लगभग १० लाख रूपये व्यय करने का अनुमान है। शिलांग में भी दयानन्द सेवाश्रम की स्थापना कर दी गयी है जिस के भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है यहां पर भी चिकित्सालय, पाठशाला आदि चलाने की व्यवस्था होगी।

पादरी फ़ेरर

गन्टूर के ११ नगर पिताओं ने (कम्युनिस्ट दल ५, कांग्रेस ४, भारतीय जनसंघ २) तथा जिले के प्रमुख व्यवसायियों और समाजसेवियों ने आंध्र के मुख्य मन्त्री को एक विरोध पत्र भेज कर मांग की है कि पादरी फ़ेरर को गन्टूर में काम करने की अनुमति न दी जाय।

अपने विरोध के प्रथम पग के रूप में फ़ेरर बहिष्कार कमेटी ने एक बड़ा जलूस निकाला।

ज्ञापन में कहा गया है कि फ़ेरर को। ७६ लाख की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई थी। उसने लगभग ३० हजार व्यक्तियों को ईसाई बनाया था और २६४ किलोग्राम डाइनामाइट का संग्रह किया और मनमाड में स्थानीय राजनीति में हस्तक्षेप किया था।

आंध्र और भारत सरकार को समय रहते पादरी फ़ेरर के आंध्र निवास पर प्रतिबन्ध लगा कर जनता के असन्तोष को दूर करना चाहिए। दुःख इस बात का है कि हमारी सरकार को जनता की भावनाओं की अनुभूति नहीं होती और जनता को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करने के लिए विवश होना पड़ता है। जब इस दिशा में राज्य कोई समाधान कारक कार्यवाही करता है तो उसकी महत्त्व की शोभा समाप्तप्रायः हो जाती है।

अन्तर्जातीय विवाह कर देश से जात पांत समाप्त करें।

सार्वदेशिक आर्य वीरदल ने एक विज्ञप्ति में कहा है कि जो युवक अन्तर्जातीय विवाह कर देश में एकता स्थापित करने में योग दान देना चाहते हैं वह अपने नाम तथा पते सार्वदेशिक आर्य वीरदल, महर्षि दयानन्द भवन, राम लीला मैदान, नयी दिल्ली–१ के पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

विज्ञप्ति में आगे कहा गया है इस समय विदेशी शत्रुओं का तो देश में निरन्तर खतरा बना ही हुआ है इससे भी अधिक खतरा आन्तरिक शत्रुओं का है जो इस समय सक्रिय रूप से देश के विघटन में बड़े जोर शोर से सक्रिय हो गये हैं। विशेष रूप से यह सब शक्तियां जात पांत के नाम पर ही देश को विघटित करने में संलग्न हैं। इस कार्य के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने यह कार्य अपने हाथ में लिया है कि देश में जात पांत को समाप्त करने के लिए एक आंदोलनात्मक पग उठाया जाए। इसके लिए सार्वदेशिक आर्य वीरदल का आर्य युवकों को आह्वान है कि वह अपने आपको अन्तर्जातीय तथा अन्तर्प्रान्तीय विवाह के लिए प्रस्तुत कर जनता का मार्ग प्रशस्त करें।

हमें अपने व्यक्तिगत स्वार्थों में फंस कर देश को नहीं भूलना चाहिए। ऐसा कोई कार्य जिससे देश का हित होता हो आर्य युवकों को अग्रसर होना चाहिए जिससे कि देश के अन्य नवयुवकों में देशभक्ति की प्रेरणा जागृत हो और वह देश के विघटन को रोकने में अपना योग दे सकें।

देश से इस छूतछात तथा जात पांत के अभिशाप को मिटा कर ही आर्यवीरों को दम लेना चाहिए जिससे कि देश में महर्षि स्वामी दयानन्द के बनाये मार्ग का प्रचार तथा प्रसार हो। आज भी महर्षि दयानन्द के उस समय के विचार उतने ही प्रभावशाली तथा देशहित में हैं जितने कि उस समय थे। इस लिए महर्षि स्वामी दयानन्द के विचारों का प्रचार तथा प्रसार करना प्रत्येक आर्य के लिए बहुत आवश्यक कार्य है।

स्टेट बैंक द्वारा हिन्दी में हस्ताक्षर स्वीकार न करने की उप-प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा भर्त्सना

भारत के उप-प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने संसद-सदस्य श्री रामगोपालजी शालवाले को एक पत्र द्वारा सूचित किया है कि भविष्य में स्टेट बैंक के कर्मचारियों द्वारा किसी भी व्यक्ति को हिन्दी में हस्ताक्षर होने के कारण परेशान नहीं होना पड़ेगा।

विदित हो कि पिछले दिनों दिल्ली के वयोवृद्ध विद्वान और वैद्य श्री रामगोपाल शास्त्री को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के कारण स्टेट बैंक के एक कर्मचारी ने उन्हें हिन्दी हस्ताक्षर प्रमाणित कराने के लिए कहा था और दो घण्टे तक उन्हें परेशान किया था जिस पर श्री रामगोपालजी शालवाले संसद सदस्य ने उप-प्रधान व वित्त मन्त्री श्री मोरारजी देसाई को पत्र लिख कर शिकायत की थी कि हिन्दी के हस्ताक्षर करने पर आपति करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। उन्होंने अपने पत्र में यह भी मांग की थी कि भविष्य में हिन्दी के हस्ताक्षरों को भी वही मान होना चाहिए जैसा कि अंग्रेजी हस्ताक्षरों का है।

प्रसन्नता की बात है कि उप प्रधान मन्त्री ने श्री रामगोपालजी संसद सदस्य को पत्र लिख कर यह आश्वासन दिया है कि भविष्य में हिन्दी के हस्ताक्षर करने के कारण किसी को भी कोई कष्ट न होगा। इसके साथ ही उक्त अप्रिय घटना के लिए बैंक के अधिकारियों ने रामगोपालजी वैद्य से क्षमा मांगी है।

संकुचित विचारधारा राष्ट्र के लिए घातक

नान्देड १४ जनवरी

मुस्लिम, ईसाई तथा अन्य अल्पसंख्यकों ने भारतीय संस्कृतिके विशाल और व्यापक जीवन प्रवाह में एक रूप होना चाहिए और संकुंचित भाषावाद एवं प्रान्तीयता को त्यागना चाहिए अन्यथा 'राष्ट्रीय एकता' स्थापित करना अत्यन्त कठिन है इस प्रकार के विचार नान्देड के यशवन्त महाविद्यालय के प्राध्यापक देवदत्त तुंगार ने व्यक्त किए। जमाते इस्लामी की ओर से बड़ो दर्गा में आयोजित 'राष्ट्रीय एकता' परिसंवाद में आप प्रमुख वक्ता के रूप में बोल रहे थे।

जमाते इस्लामी यह संघटन भी देश के विघटनकारी तत्वों को प्रोत्साहन देती है। यह कहकर प्रो. तुंगार ने 'जमाते इस्लामी' के नेताओं से कुछ प्रश्न पूछे। अरब इज्रायल युद्ध में 'पॅलेस्टाइन फंड' स्थापना किया जाता है लेकिन 'जमाते इस्लामी' भारतीय मुस्लिम फौजी भाईयों के परिवारों के लिए इस प्रकार की निधि क्यों नहीं इकठ्ठा करती? 'शरीयत' में रक्तदान को मान्यता न होने से भारत पाक युद्ध के समय 'जमाते इस्लामी' ने रक्तदान आंदोलन का विरोध किया। क्या इसीसे राष्ट्रीय एकता कायम हो सकती है? यह प्रश्न पूछकर विघटनकारी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन न देने की अपील प्रो. तुंगार ने की। प्रा. नरहरी कुरून्दकर तथा प्रा. गो. रा. म्हैसेकर ने कहा संविधान और संसद को, सभी नागरिकों ने चाहे वे हिन्दु हों, मुस्लिम हों, या अन्य कोई भी हो, सर्वोपरी मानना चाहिए तथा सभी नागरिकों के लिए एक ही समान नागरिक कानून लागू किया जाना चाहिए, इसीसे ही राष्ट्रीय एकता स्थापित होगी।

अन्त में 'जमाते इस्लामी' हिन्दु के संयुक्त मंत्री (दिल्ली) मौलाना सय्यद हम्मीद हुसेन ने अध्यक्षीय भाषण किया। राष्ट्रीय जीवन प्रवाह की व्याख्या करना संभव नहीं है यह कहकर स्वराष्ट्र मंत्री यशवन्तराव चौहान के वक्तव्य का खण्डन किया। 'जमाते इस्लामी' धर्म निरपेक्ष नीतिका (सेक्यूलॅरिझम का) विरोध करती है अतः उस हद तक वह अराष्ट्रीय संस्था है यह विधान श्री चौहान ने किया था। उसका जबाब देते हुए मौलाना ने कहा कि भारत के संविधान में कहीं भी धर्म निरपेक्षता (सेक्युलॅरिझम) शब्द नहीं आया है। अतः सेक्युलॅरिझम का विरोध करना अराष्ट्रीयता है। श्री यशवन्तराव चौहान का वक्तव्य पूर्णतया संविधान विरोधी तथा गैर जिम्मेदारी का है।

'जमाते इस्लामी' की ओर से आयोजित यह परिसंवाद का कार्यक्रम शांति पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। दो दिन के अधिवेशन में दूसरे कार्यक्रम भी हुए।

मातृ मन्दिर कन्या गुरूकुल वाराणसी का ८ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १३ से १७ जनवरी १९६९ तक मातृमन्दिर (कन्या गुरुकुल) वाराणसी का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रमुखतः वैदिक मिशनरी पं. नन्दलालजी द्वारा मैजिक लैंटर्न का प्रदर्शन, श्री विष्णुसहायजी द्वारा साधना शिविर का संचालन, तीस लाख गायत्री-मंत्र के जप का अनुष्ठान किया गया। वार्षिकोत्सव के साथ महिला सम्मेलन, वेद व दर्शन गोष्ठी, संस्कृत सम्मेलन, आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। सम्मेलन में पधारने वाले प्रमुख अतिथियों में श्री डॉ. सिद्धेश्वरजी भट्टाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग काशी विश्व-विद्यालय, माननीय राजाराम जी शास्त्री उप-कुलपति काशी विद्यापीठ, श्री पं. गोपालजी दर्शन काशी तथा अन्य विद्वत् मंडली और विदुषी महिलाएं पधारी थीं।

शोक-प्रस्ताव

दिनांक १९-१-१९६९ रविवार के साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित आर्य समाज बुरहानपुर के आर्यजनों की इस सभा को आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री पं. बुद्धदेवजी विद्यालंकार, वर्तमान स्वामी समर्पणानन्दजी सरस्वती के आकस्मिक निधन को जानकर अत्यंत आघात पहुंचा है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर उनके शोक संतप्त परिवार को, इस दारूण दुख को सहन करने की शक्ति देवे।

श्री सावलारामजी बाघ का निधन

आर्य समाज, हंसापुरी, नागपुर के भूतपूर्व प्रधान श्री सावलारामजी बाघ का ८२ वर्ष की आयु में दिनांक १४ जनवरी १९६९ को स्वर्गवास हो गया। आप पिछले दो मास से अस्वस्थ थे। आप नगर के सबसे पुराने आर्य समाजी थे। श्री बाघजी के निधन से आर्य समाज हंसापुरी पुरानी पीढ़ी के अपने एक कर्मठ आर्य विभूति को खो बैठा। परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री बाघजी की दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा उन के परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

सार्वदेशिक धार्मिक परीक्षाएं

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परिक्षाएं गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सारे देश में आगामी जुलाई ६९ के अन्तिम सप्ताह में होंगी। केन्द्र-स्थापना फार्म, पाठविधि तथा आवेदन पत्र आदि के लिए महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१ से पत्र व्यवहार करें।

संस्कृत विश्व शान्ति का सन्देश देती है!

संस्कृत सीखने का पताः —

मातृ मन्दिर संस्कृत प्रचार समिति

डी. ४५।१२९, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी।

ओ३म्

कार्यालय :—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली—१
१-१-१९६९

आर्य पर्व-सूची

(सम्वत् २०२५–२०२६, सन् १९६९)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाजों की सूचना के लिए प्रतिवर्ष स्वीकृत पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है। सन् १९६९ की सूची निम्न प्रकार है :—

क्रम सं० नाम पर्व	सौर तिथि	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी तिथि	दिन
१—मकर संक्रान्ति	१-१०-२०२५	माघ कृ० ११ सं० २०२५	१४-१-६९	मंगलवार
२—वसन्त पंचमी	९-१०-२०२५	माघ शु० ५ सं० २०२५	२२-१-६९	बुधवार
३—सीताष्टमी	२८-१०-२०२५	फा० कृ० ८ सं० २०२५	१०-२-६९	सोमवार
४—दयानन्द बोधोत्सव (शिवरात्रि)	४-११-२०२५	फा० कृ० १४ सं० २०२५	१५-२-६९	शनिवार
५—लेखराम तृतीया	८-११-२०२५	फा० शु० ३ सं० २०२५	१९-२-६९	बुधवार
६—वसन्त नवसस्येष्टि (होली)	२०-११-२०२५	फा० शु० १४ सं० २०२५	३-३-६९	सोमवार
७—नव संवत्सरोत्सव एवं आ० स० स्थापना दिवस	६-१२-२०२५	चैत्र शु० १ सं० २०२६	१९-३-६९	बुधवार
८—राम नवमी	१४-१२-२०२५	चैत्र शु० ९ सं० २०२६	२७-३-६९	बृहस्पतिवार
९—हरि तृतीया	२३-४-२०२६	श्रावण शु० ३ सं० २०२६	१६-८-६९	शनिवार
१०—श्रावणी उपाकर्म, सत्याग्रह बलिदान दिवस	११-५-२०२६	श्रावण शु० १५ सं० २०२६	२७-८-६९	बुधवार
११ - कृष्ण जन्माष्टमी	१९-५-२०२६	भा० कृ० ८ सं० २०२६	४-९-६९	बृहस्पतिवार
१२—विजयादशमी	४-६-२०२६	आ० शु० १० सं० २०२६	२०-१०-६९	सोमवार
१३—ऋषि निर्वाणोत्सव (दीपावली)	२४-७-२०२६	का० कृ० ३० सं० २०२६	९-११-६९	रविवार
१४—श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	९-९-२०२६	पौ० कृ० ९ सं० २०२६	२३-१२-६९	मंगलवार

इन पर्वों को उत्साहपूर्वक ससमारोह मनाकर इन्हें आर्य समाज के प्रसार और वैदिक धर्म के प्रचार का महान् साधन बनाना चाहिये।

नोट:—देशी तिथियों में घट-बढ़ हो जाने से तारीखों में परिवर्तन हो सकता है।

रामगोपाल शालवाले
सभा-मन्त्री

सभा की सूचनाएं

संख्या ४– निर्वाचन और वार्षिक चित्र

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक निर्वाचन [illegible] लें और उसकी सूचना सभा कार्यालय को भेजें। समस्त समाजों को कार्यालय द्वारा शीघ्र ही वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं। इन्हें भरकर कार्यालय को [illegible] अप्रैल से पूर्व भेज दें ताकि हिसाब की जांच होकर प्रतिनिधि स्वीकार कर उनके नाम समाज को सूचित किये जा सकें।

संख्या ५– दशांश और आर्य सेवक का मूल्य

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वे १९६८ की अपनी सम्पूर्ण आय का दशांश तथा सभा के मुख्य पत्र आर्य सेवक का वार्षिक मूल्य रुपया ५) सभा कार्यालय को भेजने की कृपा करें।

संख्या ६– सभा का नया टेलीफोन

समस्त पाठकों की जानकारी हेतु निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, महर्षि दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर के नाम से नया टेलीफोन मिल गया है, जिसका नम्बर ३१४३५ है।

संख्या ७– धमतरी में दूकानों का निर्माण

अंतरंग सभा दिनांक २२ दिसम्बर १९६८ के निश्चयानुसार उपप्रधान श्रीबालकृष्णजी चड्ढा के साथ मैंने ५ जनवरी १९६९ को धमतरी जाकर निरीक्षण किया, निर्माण कार्य असंतोषजनक था। निरीक्षण से पता लगा कि ठेकेदार की कुछ भी पूंजी नहीं लगी है। समस्त सामान तथा मजदूरी तक के व्यय की पूर्ति, सभा के पैसे से अग्रिम लेकर किया जा रहा है। अतः यह निर्माण कार्य विभागीय समझा जाय। भोयर ठेकेदार को कहा गया कि ऐसी स्थिति में वे वर्तमान मजदूरी की दरों पर कार्य करें। परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया। अतः विवश होकर माननीय प्रधानजी सभा के आदेश दिनांक १९-११-१९६८ के अनुसार भोयर ठेकेदार का ठेका रद्द किया गया और सभा द्वारा विभागीय रूप से सभा के सम्पत्ति प्रबंधक रामराजजी शर्मा की देखरेख में कारीगर और मजदूर लगाकर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। ऐसी सूचना श्री इंजीनियर महोदय को दी गई।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. ३१-१-१९६९	संगतराम आर्य, उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

38. श्री सम्पादकजी, आत्मशुद्धि आश्रम, पोष्ट सापला, जिला-रोहतक (पंजाब)

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२।
प्रकाशक–वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन–प्रत्येक मास की २८ तारीख को।

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

मार्च] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ { नागपुर, फाल्गुन शुक्ल ३ संवत् २०२४ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ } वर्ष ६८ अंक ३ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २३-३)

चौपाई

विना प्राण अरु प्राणधरों का । दृष्य जगत का, चराचरों का ।।१।।
निज अनन्त महिमा के कारण । नृपति-मुकुट जो करता धारण ।।२।।
जो इस मानव, गौ, पशु-तन की । रचना करता जड़ कण कण की ।।३।।
सुख स्वरूप उस विश्वंभर की । ऐश्वर्य सकल दा ईश्वर की ।।४।।
निज सब सामग्री उत्तम को । जो अति हित कर अरु प्रिय हम को ।।५।।
प्रभु की आज्ञा के पालन में । करें समर्पित बिन दुख मन में ।।६।।
उपासना भक्ति विशेष करें । उस प्रभु की; वह जग दुःख हरे ।।७।।
ईश दया का अनुपम सागर । सुख वर्षाए हम भक्तों पर ।।८।।

— श्रीकृष्ण गुप्त, सिध्दान्त रत्न

वार्षिक मूल्य { सम्मानित - ५) साधारण - २)

सम्पादक — विद्यानन्द सरस्वती

एक अंक पचीस पैसे

आर्य सेवक, नागपुर

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पेपर्स (सेंट्रल) रूल्स, १९५६ नियम के अनुसार निम्नलिखित सूचना प्रकाशित की जाती है :--

१. प्रकाशित होने का स्थान –	नागपुर ।
२. प्रकाशित होने का समय –	मासिक ।
३. मुद्रक का नाम –	घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम. ।
राष्ट्रीयता –	भारतीय ।
पता –	कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर । (१० अप्रेल १९५७ से)
४. प्रकाशक का नाम –	विलायतीराम (विश्वबन्धु) कौशिल ।
राष्ट्रीयता –	भारतीय ।
पता –	आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नागपुर ।
५. सम्पादक का नाम –	स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ।
राष्ट्रीयता –	भारतीय ।
पता –	आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नागपुर ।
६. पत्र के संस्थापकों के नाम –	आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानन्द भवन, नागपुर (विदर्भ) ।

नागपुर
दिनांक १-३-१९६८

विलायतीराम (विश्वबन्धु) कौशिल
प्रकाशक के हस्ताक्षर ।

मैं विलायतीराम (विश्वबन्धु) कौशिल घोषित करता हूं कि उपरोक्त दिए हुए विवरण मेरे ज्ञान और विश्वास में सत्य हैं ।

दिनांक १-३-१९६८

विलायतीराम (विश्वबन्धु) कौशिल
प्रकाशक, आर्य सेवक,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ
दयानन्द भवन, नागपुर ।

ओ३म्
मार्च **आर्य-सेवक** १९६८

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, फाल्गुन शुक्ल ३, संवत् २०२४ दयानन्दाब्द १४३ | वर्ष—६८ अंक—३

अज्ञान तिमिर विनाशक ग्रंथ—

• सत्यार्थ प्रकाश •

ले. — विनयकुमार पाठक, बिलासपुर (म. प्र.)

अंध विश्वासों से ग्रसित, सीमित विचारधारा वाले संतों के पथ पर आंख मूंदकर अनुकरण करने वाले, आडम्बर से युक्त, सत्पथ से कोसों दूर विलग छोटी छोटी टुकडियाँ बनाकर रहने वाले, स्वतंगता के वंधनों में जकड़े एवं अपनी ही मुर्गी की एक टांग जैसे हठ पर अडिग रहने वाले ऐसे थे उस समय के लोग जबकि ढोंग के ढोल का डंका ही सर्वत्र पीटा जा रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में अभिमानों का दमन करने वाले, सज्जन तारक, सत्पथ प्रेरक, सन्मार्ग निर्देशक, परोपकारक, उपदेशक एवं वेद का प्रकाश ले अज्ञान तिमिर विनाशार्थ स्वामी श्री दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश का सृजन कर भारतवासियों को एक सूत्रता में बांधने, प्रेमामृत पान कराने, मत-मतान्तरों के कंटकाकीर्ण पथ से विलग करने, भ्रम-भ्रांतियों का निवारण करने एवं वेद का डंका बजाने का प्रयास किया। चूंकि व्यापकता की चरम सीमा को स्वामी जी ने लांघ लिया था, उनका ही प्रभाव का विस्तार हो पाया। कवि रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में—"मेरा सादर प्रणाम उस गुरू दयानन्द को है जिसके उद्देश्य भारत को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। आधुनिक भारत के मार्गदर्शक महर्षि दयानंद सरस्वती को मैं सादर श्रद्धांजलि

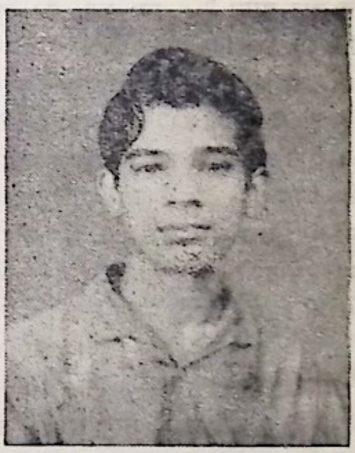

समर्पित करता हूं।" प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक रोम्यांरोला ने महर्षि दयानन्द को याद करते हुए कहा था—"ऋषि दयानंद ने भारत के शक्ति-शून्य शरीर में अपनी दुर्घष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम के के नव प्राण फूंक दिये हैं। राष्ट्रीय भावना और जन जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे प्रबल शक्ति उसी की थी।"

लगभग दो अरब वर्ष पूर्व वेदों का मंथन कर सारभूत सिद्धांतों को चारों वेदों के ज्ञाता ब्रम्हा जी ने अपने शिष्यों और पुत्रों को दिया। अगली पीढ़ी के ऋषि मुनियों ने पश्चात् प्राप्त किया। इस तरह यह

वेद ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी जाकर महाभारत के युद्ध से नष्ट हो गई। बस इसी का पुनरुद्धार ऋषि दयानन्द ने किया।

सत्यार्थ प्रकाश इस तरह "सार-सार को गहि रहै थोथा देह उड़ाय" पर आधारित एक महान ग्रंथ है। इस ग्रंथ द्वारा सचमुच ही कितने पतितों का कल्याण हुआ, हो रहा है एवं होगा, जिसकी गणना करना असंभव है। सत्यार्थ प्रकाश को चौदह समुल्लासों अथवा विभागों में विभक्त किया गया है। प्रथम दश समुल्लासों में तो मंडन एवं अंत के चतुर्थ समुल्लासों में खंडन है। महर्षि दयानंद के सम्पूर्ण साहित्यों पर दृष्टिपात करने से यह विदित होता है कि उनमें निन्यान्वे प्रतिशत मंडन एवं एक प्रतिशत मात्र खंडन रहता है। चिंतन में ही महानपुरूष रत रहते हैं। वेद को महर्षि ने सार माना है। अतः हम यह कहने में संकोच नहीं कर सकते कि वेदाध्ययन में मुनि व्यास के पश्चात् स्वामी जी को ही श्रेय है। उन्होंने ढोल पोल को ज्ञान चक्षु से परखकर ही सत्यार्थ प्रकाश को जन्म दिया। एक गुरू जीते तक ही शिष्य बना सकता है मृत्यु के पश्चात् नहीं, किन्तु साहित्यकारों का साहित्य युगों-युगों तक अंकित रहता है और उनके शिष्य स्वरूपी पाठकों को शिक्षायें व प्रेरणायें प्रदान करते रहता है। ऐसे ही सतसाहित्यों में सत्यार्थ प्रकाश का एक विशिष्ट स्थान है। इस ग्रंथ की भूमिका के अंतर्गत लिखा है :— मेरा इस ग्रंथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किंतु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना कहाता है। जो मनुष्य सत्य होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिये विद्वान लोगों का यही काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दे पश्चात स्वयं वे अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनंद में रहें। मनुष्य की आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथा अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य की ओर झुक जाता है परन्तु इस ग्रंथ में ऐसी बात नहीं रखी गई है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि पर तात्पर्य है किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। आगे और भी स्पष्टीकरण के आधार पर अंकित है–

"सर्वदा सत्य की विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है ···· मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने के लिये है, न कि वादविवाद, विरोध करने कराने के लिये।" स्पष्ट है कि यह ग्रंथ सच्चे अर्थों में प्रकाश देने वाला है। इस महाग्रंथ के सघन वृक्ष पर आश्रय लेकर अज्ञान से थका पथिक सुखद छांव के साथ सुस्वादिष्ट फल भी प्राप्त कर सकता है। फिर भी इस पर कई लोग आश्रय लेने में संकोच करते हैं, संशय करते हैं। वे सोचते हैं कि शायद यह उनका अपमान होगा किंतु वास्तविकता कुछ और ही है। कुछ भी हो, यह अपने आप में अनुपम व बेजोड़ ग्रंथ है जो कि मननीय है। पठनीय है।

स्वातन्त्र्य योद्धा तथा महान्त सन्त

योगिराज श्री अरविन्द

– श्री वीरेन्द्र

मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए जिन्होंने आग्नेय जीवन का व्रत धारण कर स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के श्रीचरणों में अपना मदमाता यौवन समर्पित करने की सिद्धता प्रदर्शित कर राष्ट्र की सुप्त जवानी को जगाया और उसके ठण्डे रक्त को उष्णता प्रदान की उन स्वातन्त्र्य योद्धाओं में योगिराज श्री अरविन्द का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय स्वतन्त्रता दिवस के रूप में १५ अगस्त इतिहास का महत्त्वपूर्ण दिवस बन गया है। १९४७ ई. से ७५ वर्ष पूर्व अर्थात् १५ अगस्त १८७२ को भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध के महान सेनानी श्री अरविन्द का जन्म कलकत्ता की महानगरी में हुआ था। उनके पिता थे सुप्रसिद्ध सिविलसर्जन श्री कृष्णधन घोष।

बड़े अफसर ने अपने बेटे को भी उच्च शिक्षा दिलाकर अंग्रेजी सरकार में कोई बड़ा पद दिलाने का एक सपना संजोया था। अतएव जब श्री अरविन्द केवल सात वर्ष के ही थे तभी उन्हें अध्ययन हेतु इंग्लैण्ड भेज दिया गया था। बाल्यावस्था से ही प्रतिभा और मेधा के धनी थे श्री अरविन्द। अतः केवल १८ वर्ष की आयु में ही आपने सिविल सर्विस की परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर उत्तीर्ण होकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अपनी किशोर अवस्था में ही आप अंग्रेजी के अतिरिक्त लैटिन, फ्रेंच और ग्रीक भाषाओं में पारंगत हो गए थे।

सिविल सर्विस की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सफलता प्राप्त करने वाले इस मेधावी युवक के सामने अंग्रेजी राज्य के उच्च पद तो रिक्त पड़े थे, किन्तु जिसने अपने जीवन का उद्देश्य ही राष्ट्र को बन्धन मुक्त करना बना लिया था, वह राजकीय सेवा के बन्धनों में अपने-आपको भला कैसे बंधवाता? उन्होंने तो इंग्लैण्ड के स्वतन्त्र वायुमण्डल में जीवन यापन कर स्वतन्त्रता के वरदानों को स्वतः निहारा था। अतः जब वे भारत आए तो आई. सी. एस. अफसर बनकर अंग्रेजों की नौकरशाही के चक्के का एक पूर्जा बनने की नहीं अपितु दासता के तौक को भारतमाता के गले से तोड़कर उतार फेंकने के लिए कृतसंकल्प एक स्वातन्त्र्य योद्धा के रूप में।

उनकी प्रतिभा से प्रभावित बड़ौदा नरेश ने उन्हें अपने राज्य में शिक्षा शास्त्री के रूप में नियुक्त कर दिया और वे १३ वर्षों तक वहां रहकर प्रधान अध्यापक, वाइस प्रिंसिपल और महाराजा के निजी सचिव के रूप में अपनी योग्यता का प्रदर्शन करते रहे। किन्तु इन दिनों में भी भारत की तरुणाई के मन में स्वतन्त्रता की लगन जगाने के सभी यत्न उन्होंने किए और सैंकड़ों युवकों के हृदय में स्वतन्त्रता के लिए तड़फन उत्पन्न की।

इंग्लैण्ड से वापस आते ही शस्य श्यामला बंग भूमि में उन्होंने स्वतन्त्रता के मतवालों को संगठित कर क्रान्ति की ज्वाला धधकाने का पुनीत कार्य आरम्भ कर दिया था। क्रान्ति की ज्योति जगाने को उन्होंने बम्बई की अंग्रेजी पत्रिका इन्दुप्रकाश को भी माध्यम बनाया और राष्ट्र की तरुणाई का आह्वान् किया। तरुण संघ की स्थापना कर क्रान्तिकारियों के लिए एक मिलन केन्द्र का निर्माण किया। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए उन्होंने अपने लक्ष्य को क्षण-भर के लिए भी विस्मृत नहीं किया। वे चाहे 'वन्देमातरम्' के सम्पादक रहे अथवा 'युगान्तर' के संचालक किन्तु क्रान्ति ही उनका लक्ष्य रहा। अनुशीलन समिति का गठन भी उन्हीं के परिश्रम का परिणाम था। वस्तुतः उन दिनों वे ही क्रान्ति आन्दोलन के संचालक थे।

क्रान्तिकारी आन्दोलनों में उन्हें अनेक बार कारागार की काली कोठरियों में भी रहना पड़ा, एकान्तवास

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा

श्याम जी कृष्ण वर्मा सन् १८७५ में महर्षि दयानन्द के संपर्क में तब आए जब वह बम्बई में थे। वर्मा जी की आयु उस समय १८ वर्ष के लगभग थी। वह मेधावी छात्र थे और संस्कृत में अच्छा प्रवेश रखते थे। बम्बई में स्वामी जी की विद्वत्ता और आत्मिक शक्ति से वह विशेष प्रभावित हुए। उन्हें अपनी शिक्षा के लिए सहायता की आवश्यकता थी। वह विदेश भी जाना चाहते थे। उन्हीं दिनों उन्होंने नासिक में समाज सुधार पर भाषण दिये। इस समय वह स्वामी जी के शिष्यों और बम्बई के आर्य भाईयों से अपना मेलजोल बढ़ा रहे थे। आर्य पुरुष उनकी शिक्षा में सहायता कर रहे थे। वे इसे ऊँचा उठा रहे थे। पं. गोपाल राय हरि देशमुख ने भी स्वामी जी के सम्बन्ध में सूचित कर दिया था। स्वामी जी ने लाहौर से लिखे एक पत्र में देशमुख को कहा था "मेरी इच्छा है कि आक्सफोर्ड जाने से पहले श्याम जी मेरे पास रहता। मैं उसे वेद के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण संकेत देना चाहता हूं जो उसके लिए आवश्यक हैं।"

श्री स्वामी जी की प्ररणा से देशमुख ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक और महर्षि परिचित डा. मोनियर विलियम्स को श्याम जी कृष्ण वर्मा की सिफारिश में एक पत्र लिखा। डा. विलियम्स ने मई १८४७ के पत्र के अनुसार श्यामजी को अपना सहायक बनाना स्वीकार कर लिया।

श्याम जी अपने साथी से रुपया लेकर इंगलैंड चले गए। स्वामी जी ने इसे फिर लिखा "वहां यही कहें कि मैं तो आर्यावर्त्त देश का एक छोटा विद्यार्थी हूं। और कोई बात या काम ऐसा न हो कि जिससे अपने देश का अपयश हो।" इंगलैंड से लौटकर श्याम जी १२ वर्षों तक विभिन्न रियासतों के दीवान रहे, पर अब स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज से उनका संबन्ध टूट चुका था।

श्याम जी दोबारा इंगलैंड गये। वहाँ उन्होंने भारतीयों के ठहराने के लिए एक "भवन" भी किराये पर चलाया। अब उनके विचार क्रांतिकारी हो गये। लाला हरदयाल इनके सम्पर्क में आये। वे भी क्रांतिकारी बन गये। वहां इन्होंने एक पारसी महिला से विवाह कर लिया था जिसका नाम मेडम कामा था। श्याम जी अप्रत्यक्ष रूप से विप्लववादियों की सहायता करते रहते थे। इनकी मृत्यु के बाद मेडम कामा पैरिस आ गयीं। विप्लववादियों का सम्पर्क इनसे कई वर्ष तक बना रहा। राष्ट्र को जगाने में इनका महत्वपूर्ण योग रहा।

भी सहना पड़ा। एकान्त जीवन के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि "एकान्त में रहने वाला या तो सन्त बन जाता है या शठ।" परन्तु वे तो कारागार भोगने के उपरान्त सन्त ही बने और जीवन के उत्तरार्ध में उन्होंने पाण्डिचेरी को केन्द्र बनाकर आध्यात्मिकता की पुनीत गंगा बहाई। उनका निधन ५ दिसम्बर १९५० को हुआ। इस महान् मनीषी ने भारत के उज्जवल भविष्य के प्रति अपनी अडिग आस्था इन शब्दों में व्यक्त की थी--

"भारत ही विश्व का नेतृत्व करेगा। यहां की आध्यात्म विचारधारा विकसित होकर समस्त संसार को सुख शान्ति का सन्देश देगी और मानव जीवन का उसी से कल्याण होगा।" ✻

सभा के प्रधान पंडित विश्वंभरप्रसादजी शर्मा का सार्वजनिक अभिनंदन

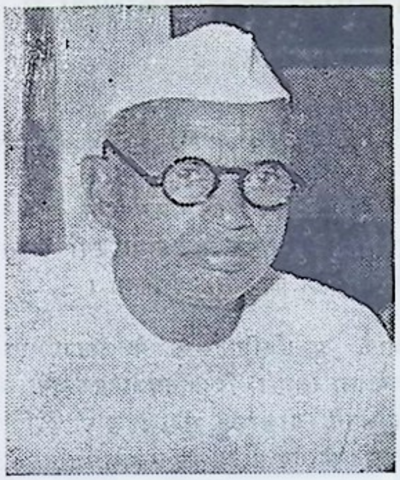

मध्यप्रदेश व विदर्भ के माननीय प्रधान पंडित विश्वंभरप्रसाद जी शर्मा का गत २१ जनवरी १९६८ को आर्यसमाज महाराजपुर के वार्षिक उत्सव पर आर्य बंधुओं तथा अन्य नागरिकों द्वारा सार्वजनिक अभिनंदन किया गया । लगभग एक दर्जन संस्थाओं की ओर से प्रधान जी को पुष्पहार अर्पित किये गये । एक मुद्रित अभिनंदन पत्र भी आप को भेंट किया गया। यह अभिनंदन समारोह लौण्डी के सुप्रसिद्ध आर्य नेता एवं लोकप्रिय राष्ट्र सेवक ठा. रामसिंहजी की अध्यक्षता तथा आर्यप्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी दिव्यानंद जी सरस्वती की सन्निधि में सम्पन्न हुआ।

प्रधान जी की मूल्यवान बहुमुखी सेवाएं

अभिनंदन पत्र में प्रधान जी की मूल्यवान और विविध क्षेत्रीय सेवाओं का निम्न प्रकार से उल्लेख किया गया—

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित आप न केवल हमारे आनंद अपितु गौरव का भी कारण हैं। यह प्रदेश पिछले २० वर्षों से आपसे अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की प्रेरणा लेता रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ से आपका हार्दिक संबंध रहा है। समय समय पर उसके अनेक पदों को आप सुशोभित करते रहे हैं तथा इस संस्था की विविध प्रवृत्तियों एवं कार्यक्रमों के संचालन में आपका हार्दिक एवं कर्मठ योगदान रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित पंजाब में राष्ट्र भाषा सुरक्षा आंदोलन को प्रदेश में सफल बनाने के लिये आपका अथक प्रयत्न सराहनीय है।

निष्काम कर्मयोगी के रूप में विगत ४० वर्षों से आप आर्य समाज के निष्ठावान, उत्साही तथा कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार एवं प्रसार करने में आशातीत सफलता प्राप्त करेगी।

निष्ठावान गोभक्त के रूप में आपकी सेवा सदा स्मरणीय रहेंगी। आप गोरक्षा आंदोलन के प्रमुख लोकप्रिय कार्यकर्ता हैं। भारत की केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों की गोसंवर्धन परिषदों के आप सम्मानित सदस्य रहे हैं तथा भारत गो सेवक समाज के मंत्री भी हैं। दिल्ली में, ७ नवंबर १९६६ को निकलने वाले गोरक्षा जुलूस एवं विशाल ऐतिहासिक प्रदर्शन का आप ने १५ लाख भाई बहनों को लेकर नेतृत्व किया तथा अपनी सहधर्मिणी के सहित कारागार यातनाएं भोगीं। आपकी गोभक्ति प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। देश के स्वाधीनता यज्ञ में भी आपका योगदान रहा है। राष्ट्र को दासत्व की श्रृंखलाओं से मुक्त कराने के लिये आपने कारागार की कठिन यातनाएं अनेक बार भोगीं। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से आपने राष्ट्र सेवा का पावन व्रत लिया जिसमें पूर्ण निष्ठा से आज भी संलग्न हैं। आपकी राष्ट्रीय सेवाएं स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगी।

आप राष्ट्रभाषा हिन्दी के यशस्वी लेखक, निर्भीक पत्रकार एवं ओजस्वी वक्ता रहे हैं। आपने हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद, महारथी लाला लाजपतराय,

(शेष पृष्ठ ९ पर)

भारत के नव-निर्माण और स्वातंत्र्य प्राप्ति में आर्य समाज का योगदान

आर्य समाज महाराजपुर और छत्तरपुर आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवों में पं. विश्वंभरप्रसाद शर्मा का उद्बोधन

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के प्रधान पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने आर्य समाज महाराजपुर के वार्षिकोत्सव में भाषण देते हुए कहा कि भारतीय जनता में स्वाधीनता और स्वराज्य प्राप्ति की भावना जागृत करने का श्रेय महर्षि स्वामी दयानंदजी सरस्वती को है। स्वामीजी ने सब से पहले स्वराज्य शब्द का उद्घोष किया और विदेशी शासन के खिलाफ जन मत जागृत किया। महर्षि ने भारत को एक स्वतंत्र और प्रगतिशील राष्ट्र बनाने की दृष्टि से उसे एक सूत्र में संगठित करने के लिये एक धर्म, एक भाषा और एक संस्कृति का विकास करने पर जोर दिया। उन्होंने वैदिक धर्म का सार्वभौमिक स्वरूप विश्व के समक्ष रखा और मानव समाज के कल्याण के लिये लोगों से वैदिक धर्म को अपनाने और वेदों की शिक्षा के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करने की प्रेरणा दी। प्रधानजी ने आर्य बंधुओं से अनुरोध किया कि वे अपने को सच्चा आर्य बनायें। उनके स्वयं क्रियाशील आर्य बने बिना "कृणवन्तो विश्वमार्यम्" का उद्देश्य कभी पूर्ण नहीं हो सकेगा।

इस अवसर पर प्रधानजी ने छत्तरपुर जिले के आर्य समाजी कार्याकर्ताओं की सभा में भी भाषण दिया। आपने कार्यकर्ताओं को सबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के ऊपर जहां वैदिक धर्म के प्रचार की जिम्मेदारी है वहां राष्ट्र के चरित्र को ऊंचा उठाने और अराष्ट्रीय तत्वों से देश की संस्कृति का और स्वाधीनता की रक्षा करने का भी उत्तरदायित्व है। इसके लिये आवश्यक है कि अधिक लोगों के पास आर्य समाज का संदेश पहुंचे और आर्य साहित्य के प्रचार द्वारा नये नये लोगों को आर्य समाज में प्रविष्ट कर उसकी शक्ति को बढ़ाया जाये।

प्रधानजी ने बुंदेलखंड के शौर्य भरे इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि इस क्षेत्र की जनता में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति अनुराग है। आर्य समाज का संगठन यहां जल्दी लोकप्रिय हो सकता है और वैदिक धर्म के प्रसार में जन सहयोग मिल सकता है। आपने आर्य समाजियों से सुसंगठित होकर कार्य करने का अनुरोध किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और मुख्याधिष्ठाता स्वामी दिव्यानंदजी सरस्वती ने तीन दिन तक अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा वैदिक धर्म और संस्कृति के गूढ़ तत्वों पर प्रकाश डाला। आपने महर्षि स्वामी दयानंदजी के महान जीवन तथा विश्व के लिये उनके महान संदेश पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज के संगठन द्वारा देश देशांतर में की जानेवाली सेवाओं की चर्चा की। आपने विंध्य क्षेत्र के आर्य बंधुओं और आर्य समाजों से आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुशासन में कार्य करने का अनुरोध किया।

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध उपदेशक पं. देशराजजी ने इस अवसर पर अपने ओजस्वी व्याख्यान तथा भजनों से तीन दिन तक महाराजपुर की जनता को वैदिक धर्म का उपदेश दिया।

महाराजपुर से आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं. विश्वंभरप्रसाद जी ने आर्य समाज छतरपुर कें वार्षिकोत्सव में भाग लिया और राष्ट्र के नव-निर्माण में आर्य समाज के योगदान तथा गोरक्षा विषयों पर सुंदर व्याख्यान दिये। स्वामी दिव्यानंदजी और पं. देशराजजी भजनोपदेशक के भी दो दिन तक लगातार उद्बोधक प्रवचन हुए। छतरपुर बुन्देलखंड का प्रमुख केन्द्र स्थान है। यहां आर्य समाज भवन का निर्माण हो रहा है। आशा है आगे चलकर आर्य समाज छतरपुर वैदिक धर्म प्रचार का एक महत्व पूर्ण केन्द्र बनेगा।

मातृ मन्दिर (कन्या गुरुकुल) वाराणसी

का

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१३ और १४ जनवरी ६८ को मातृ मन्दिर वाराणसी का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक समाप्त हुआ। उत्सव के अन्तर्गत श्री बृजमोहन निडर की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन, श्रीमती लीलावती सूद पटना की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन, श्री मुरलीधर जी उपाध्याय की अध्यक्षता में संस्कृत सम्मेलन और श्री द्वारका प्रसाद जी की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुए।

अध्यक्षा मातृ मन्दिर वाराणसी ने राष्ट्र की बदलती हुई परिस्थितियों में महिलाओं को उनके उत्तरदायित्व से अवगत कराया और बताया कि माताओं को यह समझना चाहिये कि बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं और इसी दृष्टि से उनका पालन-पोषण करना चाहिये।

श्री मुनि कनक विजय ने वेद व दर्शन गोष्ठी में "मुक्ति से जीव लौटता है या नहीं" विषय प्रस्तुत किया जिसका समाधान श्री विष्णुसहाय जी ने किया।

'संस्कृत का अध्ययन कितना आवश्यक है' विषय पर श्री वासुदेव द्विवेदी व श्री कृष्णमोहन ठाकुर के विद्वत्तापूर्ण भाषण हुए। छात्राओं ने संस्कृत में भावगीत, श्लोक तथा अभिनय आदि प्रस्तुत किये।

छात्राओं द्वारा प्रस्तुत 'मूर्ख दल' तथा 'लौट के बुद्धू घर को' नामक प्रहसन बहुत पसन्द किये गये। जानकी देवी बालिका सदन के बच्चों द्वारा आकर्षक लोक-गीत प्रस्तुत किये गये।

भवन निर्माण में सहायता प्रदान करने की अपील पर उपस्थित सज्जनों से १२२७) रु. प्राप्त हुए। ※

(पृष्ठ ७ का शेष)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और राष्ट्र निर्माता लौह पुरुष सरदार पटेल आदि अनेक महापुरुषों के जीवन चरित्र लिखे हैं। नागपुर के लोकप्रिय हिन्दी दैनिक नवभारत, आलोक आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं के आप यशस्वी सम्पादक एवं प्रकाशक रहे हैं। इस रूप में आपने राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक जागरण का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है।

इस महाराजपुर (विंध्यप्रदेश) के निवासी आप जैसे त्यागी, कर्मठ एवं महापुरुष को अपने बीच पाकर अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का अनुभव कर रहे हैं। अपने हृदय के श्रद्धा प्रसूनों के द्वारा हम आपका स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए परमानंद का अनुभव कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपको शतायु बनायें जिससे आप राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान में योगदान देते हुए वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में सतत निरत रह सकें।

टंकारा के पास जीवापुर ही ऋषि की जन्म-भूमि है

लेखक—जालमसिंह जाडेजा 'वेदवित्' प्रधान पुरुष जीवापुर

(आर्य समाज के इतिहास प्रेमियों के लिए यह लेख विचारणीय है। वे इस लेख पर अपने विचार यदि जनता के सामने लाएं तो वास्तविकता जानने में सहायता होगी। —सम्पादक, आर्य सेवक)

मेरे पास अनेक प्रमाण हैं जिनमें अति संक्षिप्त कुछ बातें लिख रहा हूं। स्वामी दयानन्द का जन्म भाद्रपद शुक्ल नवमी को हुआ था। जीवापुर में हमारे पास ही यह प्रमाण है। हमारे पुराने खातों में लिखा है कि—

मूलशंकर के जन्म पर २५) झभले (वस्त्रों) के लिये दिये गये। प्राप्तिकर्त्ता के हस्ताक्षर हैं—

कर्षनजी त्रवाड़ी भा. शु.

कर्षन जी उस समय जीवापुर में कामदार थे। स्वामी दयानन्द के भागने के पश्चात् जब उनकी नौकरी टंकारा लगी थी— तब वे अपने खास मामा के पास ही टंकारा में रहने लगे थे। कर्षन जी प्रभावशाली पुरुष थे। इसलिये उस मुहल्ले का नाम ही "जीवापुर शेरी" हो गया था। शेरी गुजराती में मुहल्ले को ही कहते हैं। इसी जीवापुर शेरी के धोखे में लोग 'जीवापुर ग्राम' को भूल गए।

(२) एक प्रबल प्रमाण यह भी है कि स्वामी दयानन्द ने अपने हस्तलिखित जीवन चरित्र में बताया है कि मैं सामवेदी था परन्तु बहुत आग्रह पूर्वक मैंने अपने गांव से ३ कोस पर जाकर यजुर्वेद पढ़ा। जीवापुर सामवेदियों का गढ़ था। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि मेरे १५ घर सामवेदियों के हैं। जिनमें ४ आज भी शेष हैं। जीवापुर से ठीक ३ कोस पर टंकारा है। टंकारा यजुर्वेदियों का गढ़ था। आज भी यजुर्वेदी हैं। यदि 'टंकारा' जन्मभूमि थी तो यजुर्वेद पढ़ने ३ कोस पर कहाँ गये? स्पष्ट उत्तर है कि जीवापुर से टंकारा ही पढ़ने गये थे। और कोई कल्पना करना व्यर्थ है।

(३) सबसे पक्की बात एक और है कि जीवापुर से जब मूलशंकर (दयानन्द) भागे थे, ठीक १० कोस पर स्थित चोंटीला के हनुमान मन्दिर में रात को ठहरे थे। ऐसा स्वयं उन्होंने लिखा है। क्या चोंटीला टंकारा से १० कोस पर है। जीवापुर से तो ठीक १० कोस पर है। क्या कोई इस प्रमाण को बदल सकता है? आशा है आर्य जनता पौराणिकों की तरह पक्षपात में न पड़ी रहेगी। पार्टीबाजों से पीछा छुड़ाकर 'जीवापुर' की ज्योति को जगमगा देंगे। विशेष जानने के लिये हम से जीवापुर में आकर मिलिये। हम आपको बतायेंगे सप्रमाण कि ५० बीघा भूमि जीवापुर के शिवालय में लगी थी। कैस कैस वड़े पेड़ों से जीवापुर का मंदिर घिरा था। शिवालय के पास कौनसी पीरजी की समाधि है।

महर्षि दयानन्द की वास्तविक जन्मभूमि जीवापुर की जांच करने वाले परिव्राजकाचार्य वेदस्वामी मेधारथी सरस्वती एम. ए., सामवेदमार्तण्ड, पालिरत्न, आयुर्वेद शास्त्री, एल. टी., विद्यालंकार, व्याख्यान वाचस्पति — आचार्य-सामवेदी आर्य पाठशाला, जीवापुर (टंकारा)।

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

नागपुर– महा शिवरात्रि के शुभ अवसर पर आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा नागपुर की ओर से २४ से २६ फरवरी १९६८ तक "निराला हाय स्कूल के मैदान", सेण्ट्रल ऐवन्यू रोड पर विविध मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया–जिसमें सुमधुर संगीत, बालक बालिकाओं की वाद विवाद प्रतियोगिता, तथा विद्वानों के धार्मिक व्याख्यान हुए।

मध्यप्रदेश गौरक्षा सम्मेलन

गोपाल कृष्ण गौशाला के तत्वाधान मन्दसौर (म. प्र.) में दि. ६ ७ ८ फरवरी ६८ को राजस्थान गोसेवा संघ के उपाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण जी बजाज की अध्यक्षता में मध्यप्रदेशीय गोरक्षा सम्मेलन एवं गोपाल कृष्ण गौशाला, मन्दसौर, की हीरक जयंती समारोह, बड़े ही धूमधाम से मनाया गया जिसका उद्घाटन भारत गौसेवक समाज के मंत्री, श्री जयंतीलाल ना. मानकर जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूज्यपाद जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी स्वामी निरंजनदेव तीर्थ शुभाशिर्वाद देने हेतु पधारे थे। सम्मेलन के साथ ही गौ प्रदर्शनी तथा गौसंवर्धन का भी आयोजन था।

आर्य प्रचारकों से निवेदन

आर्य बंधुओं की सुविधा के लिए एक विशेष योजना बनाई गई है, जिसके अंतर्गत सन्यासियों, आर्य प्रचारकों एवं आर्यजनों, जो पर्यटन में लगे हुए हैं, बिना मूल्य ठहरने और भोजन का प्रबंध आदि व्यवस्था की गई है। उक्त व्यक्तियों को यदि सीतापुर (सरगुजा) क्षेत्र में आने का मौका मिले तो निम्न पते पर संपर्क स्थापित करें, जहां ठहरने व भोजन का प्रबंध मुफ्त किया जायेगा चंद्रिकाप्रसाद गुप्त, स्थान चलता, पोस्ट सीतापुर, जिला सरगुजा, (म. प्र.)

वैदिक साहित्य भंडार

श्री चंद्रिका प्रसाद जी गुप्त ने स्थान चलता, पोस्ट सितापुर, जिला तरगुजा, (म. प्र.) में वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार हेतु तथा आर्यजनों की सुविधा के लिए उपरोक्त स्थान पर वैदिक साहित्य भंडार की दूकान खोली है। अतः विशेषकर सरगुजा क्षेत्र की जनता से प्रार्थना है कि इस अवसर का लाभ उठायें। यहां वैदिक साहित्य संबंधी सभी पुस्तकें उपलब्ध होंगी।

इटारसी– आर्य कन्या पाठशाला में मकर संक्रांती पर्व बड़े ही समारोह पूर्वक मनाया गया और उसी दिन श्री लेख राज जी के घर में नामकरण संस्कार संपन्न हुआ जिसमें समाज को ११) रु. दान में मिले।

उन्मादित ईसाई प्रचारकों का कुकृत्य

हिन्दू धर्म प्रचारक को धमकी

बैकुण्ठपुर (सरगुजा)– ईसाइयों के अराष्ट्रीय कार्यों की गति पुनः बढ़ती जा रही है। इनके दुष्कृत्यों पर अंकुश लगाना बहुत जरूरी है। अभी २९ जनवरी की घटना है– श्री शंकरलाल जी आर्य बैकुण्ठपुर से डूमरबहरा जा रहे थे। मार्ग में करीब १०–१२ ईसाई प्रचारकों का समूह बैठा हुआ था। इनमें से एक व्यक्तिने उन्हें बुलाया और ईसाई धर्म के खिलाफ प्रचार का आरोप लगाते हुए धमकी दी कि "तुम उरांव जाति तथा ईसाइयों के बीच में हिन्दू धर्म की बात नहीं कर सकते अन्यथा तुम्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

श्री शंकरलाल हिन्दू धर्म के प्रचारक हैं और प्रचार हेतु उन्हें विविध स्थानों में जाना पड़ता है। धार्मिक प्रचार कार्य में बाधा डालने का प्रयास ईसाई प्रचारकों द्वारा डरा धमकाकर और प्रलोभन से सदा किया जाता है। जिला अधिकारीगण कृपाकर ईसाइयों की हरकतों पर ध्यान देकर उनके अराष्ट्रीय प्रचार को रोकने का यत्न करेंगे ऐसी आशा है।

कच्छ की धरती पुकार रही है

हिन्दू धर्म रक्षक प्रसारक मंडल, बड़ोदा, ने पिछले ३० वर्षों से कच्छ में १॥ लाख लोगों को हजारों रुपये मासिक खर्च कर शुद्धि करके वैदिक धर्म में प्रवेश दिलाया है। शुद्धि समारंभ में प्रीती भोजन, यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि पर खर्चे के साथ ही गरीब लोगों को आर्थिक व सभी प्रकार की उपलब्ध सहायता दी जाती है।

अब भी शुद्धि चक्र चल रहा है। कच्छ में और ५०,००० शुद्ध होने की आशा है। अतः आर्थिक सहयोग के साथ ही यहां के लोगों को आर्य समाज में दीक्षित कराने के लिये हर आर्य समाजियों से प्रार्थना है कि हर प्रकार का सहयोग देकर भारतीय संस्कृति की गरिमा को बढ़ाने के लिए आगे बढ़ें। धन निम्न पते पर भेजें– निवेदक आनंदप्रिय, प्रमुख हिन्दू धर्म रक्षा प्रचारक मंडल, बड़ौदा (गुजरात)।

आसाम को बचाओ

देशवासियों से मार्मिक अपील करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने गंभीर चेतावनी दी है कि विदेशी पादरियों को करोड़ो रुपयों की सहायता अमरीका, चीन, रूस, पाकिस्तान आदि देशों से हो रही है, जिसके आधार पर भारत के राजनीतिक ढांचे को अपने अनुकूल बनाने का सिरतोड़ प्रयत्न हो रहा है। वैदिक धर्म और संस्कृति का सर्वनाश कर अपने ईसाई धर्म और संस्कृति का ध्वज फहराने का कुचक्र चल रहा है। आसाम के नागालैण्ड व मिजो क्षेत्र जहां सशस्त्र विद्रोह हो रहा है, वह विदेशी ईसाई मिशनिरियों के मस्तिष्क की ही उपज है।

धर्म की आड़ लेकर अकाल के नाम पर लाखों हिन्दूओं को ईसाई बनाया जा रहा है और भारत सरकार अपनी दुर्बल नीति के कारण कुछ नहीं कर पा रही है। आसाम ही नहीं अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में भी ईसाई मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियां चल रही हैं।

ईसाई मिशनरियों के कुचक्र को रोकने का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, ने निश्चय किया है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं तथा आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि सार्वदेशिक सभा को सक्रिय सहयोग देकर कर्तव्य का पालन करें।

जन्म शताब्दी महोत्सव

आर्य कन्या महा–विद्यालय, बड़ौदा, के प्रांगण में राजरत्न, राजमित्र. पं. आत्मारामजी अमृतसरी की जन्म शताब्दी दि. ४–२–६८ वसंत पंचमी के अवसर पर बड़े ही समारोह पूर्वक मनाई गई।

इस अवसर पर सारे देशके संस्कृति प्रेमी गणमान्य नेताओं ने बड़ौदा पधार कर अंजलि प्रदान की।

धार्मिक परीक्षायें

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाएं इस वर्ष जुलाई १९६८ के अन्तिम रविवार को होंगी। परीक्षाओं की नई पाठविधि, आवेदन पत्र, तथा केन्द्र स्थापना के लिए श्री पं. देवव्रतजी धर्मेन्दु, परीक्षा मंत्री, दयानंद भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–१ से पत्र व्यवहार करें।

अखिल भारतीय आर्य सन्यासी मंडल

शिवरात्रि के अवसर पर दि. २० से २६ फरवरी तक टंकारा में अखिल भारतीय आर्य सन्यासी मंडल की ओर से "आर्य सन्यासी साधना शिविर" उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ जिसमें स्वामी व्रतानंदजी के अध्यात्म पर, स्वामी दिव्यानंदजी के आर्य राष्ट्र निर्माण पर खोज पूर्ण व्याख्यानों के साथ ही स्वामी मेधार्थी सरस्वती का शास्त्रीय विधि से सामगान हुआ। सन्यासियों को सद्गृहस्थों की ओर से भोजन का प्रबंध था।

हाथरस

इस मास में कन्या गुरूकुल हाथरस के भवन निर्माण के लिये विशेष दान दाताओं से प्राप्त हुआ। जिसमें प्रमुख श्री बालकृष्ण गुप्त, ऐडवान्स ग्लास वर्क्स फिरोजाबाद से २२५१ रु., एक गुप्त दान फिरोजाबाद से २००० रु., चौ. टीकारामजी हटाना से १००० नगद तथा १००० का वचन, १००० रु. सेठ भगवती प्रसाद पुरदिलपुर (अलीगढ) १००० रु. वोहरे नवलकिशोर, मंगोरा (मथुरा), श्री रमेशचन्द्र पालीवाल शिकोहाबाद १०००) रु. तथा अन्य २००० रु. प्राप्त हुए।

आर्य युवक परिषद् दिल्ली

१९६८ के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए--

श्री पं. देवव्रत जी धर्मेन्दु,	—	प्रधान
श्री आश्चर्यलाल जी	—	उप-प्रधान
श्री रामदेव जी	—	उप-प्रधान
श्री ओम प्रकाश जी	—	मंत्री

पं. ज्ञानेन्द्रदेव सूफी का प्रचार कार्य

पं. ज्ञानेन्द्रदेव सूफी आर्योपदेशक ने दिसम्बर और जनवरी मास में नागपुर में अनेकों संस्कार कराये तथा समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों एवं प्रत्येक शनिवार को महिला आर्य समाज में धर्मोपदेश दिये। समाजों के अतिरिक्त नगर के मोहता विद्यालय तथा विश्वपुनर्निर्माण संघमें भी आपके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए। आपने ४ विवाह संस्कार, १ नामकरण तथा १ मृतक संस्कार कराया। श्री सूफी जी ने आर्य समाज गोंदिया के वार्षिकोत्सव में भाग लिया तथा व्याख्यान दिये।

स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, अधिष्ठाता व उप-प्रधान सभा के नेतृत्व में दुर्ग जिले में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। श्री स्वामी जी महाराज के साथ सभा के प्रचारक श्री सत्यदेव जी आर्य तथा श्री रामाश्रय जी भी हैं। तहसील बालोद, ग्राम पैरी व गोरइयां के मेले में आपका प्रचार कार्य सुव्यवस्थित रूप से चल रहा है।

मंगलमय हो मिलन

बिलासपुर के श्री ठा. महेशचंद्रसिंह मौनस के सुपुत्र लोकप्रिय कवि श्री चंद्रेश शोला का शुभ विवाह दिनांक ९।२।६८ को ठा. रामचंद्रसिंह की सुपुत्री सौ. कां. मृदुलादेवी नागपुर के साथ संपन्न हुआ।

नागपुर के सुपरिचित सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ता श्री गयादीन जी पेन्टर गंगोत्री के यहां १९ और २१ फरवरी ६८ को दो शुभ विवाह संस्कार सम्पन्न हुए--

१) श्री राजेन्द्रप्रसाद गंगोत्री — सौ. कां. निर्मलाबाई
सुपुत्र श्री गयादीन पेन्टर — सुपुत्री गेंदलालजी हुलापी

२) सौ. कां. शांतिबाई — श्री रतनलाल जी
सुपुत्री श्री गयादीन पेन्टर — सुपुत्र श्री नत्थूलाल गोर अमरावती

२१ फरवरी को विवाह संस्कार पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर स्वामी जी ने वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए संस्कार के महत्व पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिये।

'आर्य सेवक' नव-दम्पत्ति को बधाई देते हुए उनके दीर्घायुष्य की कामना करता है।

सत्यदेवजी आर्योपदेशक का प्रचार कार्य

सभा के उपदेशक श्री सत्यदेवजी आर्य ने ५ फरवरी से १५ फरवरी ६८ तक दुर्ग जिले में बालोद तहसील के अन्तर्गत ग्राम पैरी, गुरंइया, तथा इनके निकटस्थ लगने वाले बड़े मेले में, वैदिक धर्म का प्रभावशाली प्रचार कार्य किया।

ठगों से सावधान

श्री आनन्द प्रिय जी ने सूचित किया है कि ठगों की एक टोली "ऑरफनेज चैरिटी बोर्डिंग" नामक नकली संस्था जिसकी रसीद बुकों में मैनेजर आनन्दप्रिय, कारेली बाग, आत्माराम रोड, बड़ौदा छपा हुआ है धन संग्रह कर रहे हैं। इस संस्था से उनका कोई संबंध नहीं है। कोई सज्जन इन लोगों को धन न दें। पता लगने पर पुलिस के सिपुर्द करें।

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचंद्रजी देहलवी चिरनिद्रा में

आर्य जगत के विद्वान नेता, शास्त्रार्थ महारथी, पं. रामचंद्रजी देहलवी का ८७ वर्ष की आयु में दि. ३-२-६८ रात्रि ६।। बजे आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली, में स्वर्गवास हो गया। पंडितजी बहुत दिनों से बिमार चले आ रहे थे।

निगम बोध घाट पर वैदिक विधि से उनका दाह संस्कार किया गया। शव यात्रा में हजारों लोगों ने भाग लिया। संसदसदस्यों में श्री रामगोपाल शालवाले, श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री विजयकुमार मलहोत्रा, श्री प्रो. रामसिंह श्री जगदेव सिद्धांती, श्रीं सोमनाथ मरवाहा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

शाम को दीवान हाल दिल्ली में शोक सभा हुई जिसमें आर्य जगत के विद्वान तपस्वी, महात्मा आनंद स्वामी जी महाराज, महात्मा आनंद भिक्षु, श्री स्वामी विज्ञानानंदजी, आदि, वरिष्ठ सन्यासियों ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

पंडित रामचंद्रजी देहलवी हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू पारसी, आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे। कुरान और बाईबिल उन्हें पूर्ण रूपेण कंठस्थ था। उन्हें मालूम था कि विधर्मियों के पक्ष में कहां कमजोरी है। शास्त्रार्थ के मैदान में उनके मुकाबले में कोई खड़ा नहीं रहता था। जहां जहा भी उनका मुकाबला हुआ उन्होंने मैदान मारा। उन्हें वैदिक सिद्धांतों पर दृढ़ विश्वास था। शास्त्रार्थ में बड़े बड़े पादरियों और मौलवियों का मूंह तोड़ कर रख दिया। पंडितजी का नाम सुनकर ही विपक्षियों का दिल दहल जाता था। आज वे हमसे सदा-सर्वदा के लिए अलग हो गये। असत्य का खंडन कर संसार के सामने सत्य प्रस्तुत करना पंडितजी का उद्देश्य था। आर्य समाजियों को तो उनके निधन पर महान शोक है, किन्तु हर धर्म के सच्चे अनुयायी को भी उनके स्वर्गवास पर दु:ख होगा।

"आर्य सेवक" परिवार अपने महान नेता, जिन्होंने आर्य समाज को गौरवान्वित किया है, पंडितजी को भाव पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर परम पिता प्रभु से प्रार्थना करता है कि स्वर्गवासी पंडितजी को सद्गति प्रदान कर कुटूंबिजनों को धैर्य प्रदान करें।

दिव्यानंद सरस्वती,	**विश्वंभरप्रसाद शर्मा,**	**श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री**
संपादक	प्रधान सभा	प्रबंध सम्पादक

नागपुर, दिनांक ७-२-१९६८

आर्यसमाज गनकॅरिज फॅक्टरी, जबलपुर– आर्यजगत के महान मनीषी पं. रामचंद्रजी देहलवी के शोकपूर्ण निधन पर प्रान्त की निम्नलिखित आर्यसमाजों ने शोकप्रस्ताव पारित उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रभु से कामना की है तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट की है।

बालाघाट– पं. रामचन्द्र जी देहलवी के निधन पर आर्य समाज, बालाघाट ने शोक प्रस्ताव पारितकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

गोरखपुर, जबलपुर– आर्य समाज में वसंत पंचमी पर्व बड़े ही समारोह पूर्वक मनाया गया और आर्य समाज के नेता, शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचंद्र जी देहलवी तथा हिन्दी के प्रख्यात साहित्यिक श्री माखनलाल जी चतुर्वेदी के निधन पर शोक सभा कर २ मिनट की मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

खण्डवा– आर्य समाज खण्डवा की साधारण सभा ने पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी के निधन पर हार्दिक खेद प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति तथा शोकसंतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

ओ३म्

परिशिष्ठ

आर्य सेवक-मार्च, १९६८

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज के

सामवेद के ऐन्द्र काण्ड का पद्यानुवाद

पद्यकर्ता :--श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य-प्रदेश व विदर्भ

महर्षि दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, सदर, नागपुर-१ (महाराष्ट्र)

●

तू अजेय है; प्रगति करेगी। वैभव के सँग सिद्धि गहेगी ॥
अज्ञान मिटा तू निज बल से। प्रिय ! बचना दुर्गुण-दलदल से ॥

दोहा- स्वार्थ, मोह, अभिमान छल, हे ! आत्मे ! कर त्याग।
स्वर्ग, शान्ति, प्रभु-पद मिलें, यदि धारे वैराग ॥

४१४ संघर्षों में जो जीवन के। काटे कन्टक विपदा, धन के ॥
धन, धान्य उसे ही ध्रुव मिलता। उसके बल से खल-दल कँपता ॥
ज्ञान धार जब कर्मी होती। तब तू आत्मे ! हो विद्योती ॥
तभी इन्द्रियाँ सेवक बनतीं। सुप्त शक्तियाँ जाग पनपतीं ॥
कष्ट, व्याधि, भय, सङ्कट हटते। इन्द्र देव ऐश्वर्य बरसते ॥
४१५ ज्ञान, कर्म-सु शक्तियाँ तेरी। आत्मे ! जब सब हों तव चेरी ॥
संकल्प व प्रज्ञा से युत हो। मन बल, मेधावी, अद्भुत हो ॥
तब ही तू अरु तव सम अन जन। रहें मग्न आनँद में हर क्षण ॥

दोहा- कुटिल भावनाएँ सकल, वे फेंकें अति दूर।
तेज प्रकाशें आप में, गहें तोष भरपूर ॥

४१६ ऐश्वर्यी, हे प्रभु ! इन्द्रेश्वर । भक्त–प्रार्थनाओं को उर धर ॥
सुनी, अनसुनी ना कर देना । सफलतया मम जीवन खेना ॥
माँग हमारी पूर्ण करोगे ? । ऋतुगामी बल तुम कब दोगे ? ॥
ज्ञान, कर्म इन्द्रिय गण मेरे । जब बनें नियंत्रण के चेरे ॥
तब ही हों हम सब ऋतुगामी । नित्य स्मरें प्रभु अन्तर्यामी ॥
प्राण अपान हमारे वश हों । मन, विचार, हृद में भी कस हो ॥
वाचा में हो सत सह मृदुता । आचार सदा हो श्वेत पुता ॥
जब इच्छाएँ हों मङ्गल करणी । तब धरना सर जीवन–तरणी ॥

दोहा– जब उच्चारूँ प्रणव नित, कर सब देव न गण्य ।
तभी सफल हो ऋतु गमन, अरु मम जीवन धन्य ॥

४१७ सभी निश्चयों, सन्देहों में । प्रसन्न आत्मा सब कर्मों में ॥
इन्द्रेश्वर ढिग दौड़ी जाती । समुचित अरु शुभ मति नित पाती ॥
प्रकृति दृष्यवर हमें लुभाता । यथा स्वर्ण लख मन ललचाता ॥
उसे अज्ञ जन तनिक न जानें । जग–ललामता ना पहिचाने ॥
प्राण, अपान ! विनय मैं करता । तव चरणों में निज सर धरता ॥
अभिराम पना प्रभु रचना का । विश्व वृक्ष–सौन्दर्य लता का ॥
यह रहस्य गुरु मुझे बताओ । प्रकृति–जनक का भक्त बनाओ ॥
उसी देव का रहूँ उपासक । माँगू धी, धन बन तत याचक ॥

दोहा– जग–सुन्दरता का जनक, एक मात्र है ओम ।
तत ललामता को लखूं, नित कर सन्ध्या, होम ॥

४१८ ज्ञान, कर्म वल ! गति से व्यापक । तन रथ के तुम हो नित चालक ॥
महा क्रान्त दर्शी, हे पालक !। तुम हो अति प्रिय अरु सुख–वर्षक ॥
ऐश्वर्य सकल के दृढ़ साधक । करे विनय तव हो नत मस्तक ॥
हे प्रिय ! मधु–दाता तुम आओ । मम स्तुति सुन सुख, धन बरसाओ ॥
४१९ अनल ! अजर तुम; हम को भाते । सह श्रद्धा हम तुम्हें जलाते ॥
तुम तेजस्वी; द्यौ में चमको । प्रकाश वर निश्चय दो हम को ॥

अन्न–दान दो स्तोताओं को । स्वर्ण–दान दो होताओं को ।।
स्तुत्य ज्योति तव हे अग्नेश्वर !। सदा रहे हम सब भक्तों पर ।।

दोहा– यह जीवन अरु जगत सब, हो होता को प्रेय ।
धन, सुख, सुत तत घर बसें, और मिले प्रिय श्रेय ।।

४२० अग्ने ! तुमको हम वर नमते । पाप–वासनाएँ तुम हनते ।।
स्तुत्य अनल ! तुम शान्ति प्रदायक । पावनता की विमल प्रसारक ।।
दिव्य ज्योति नित तव सँग बसती । शीतलता को जो है हरती ।।
४२१ ऊषा का है जन्म सुशोभित । किया उसी ने तिमिर तिरोहित ।।
वरण योग्य जो सत्य स्वरूपा । प्रसन्न वदना, श्रेष्ठ अनूपा ।।
तत वाणी ने किया सुप्रेरण । सत्य ज्ञान उपजा मम मन ।।
वही प्रकाशमयी सुज्ञानी । ऊषा, धरने सत मम वाणी ।।
परमानँद ऐश्वर्य दिलाने । भगवन ! आए हमें जगाने ।।

दोहा– परमानँद के प्राप्ति हित, हम सब तजें प्रमाद ।
यत्नवान हो भक्ति धर, मन में हो आल्हाद ।।

४२२ मम विचार–शक्ति चतुर मन को । कर्म–शक्ति सँग तन धन को ।।
कल्याण सुपथ पर प्रेरित कर । सोम प्रभो ! मम चिन्ताएँ हर ।।
प्राप्ति हेतु हम परमानँद के । शुभ विचार, कर्मी हो मन के ।।
ज्यों गौएँ तृण हित हो प्रमुदित । त्यों तव पावन मैत्री के हित ।।
हे प्रभु ! हम नित हो लालायित । करें भावनाएँ शुभ विकसित ।।
अन्न–भूत हो तुम जगदीश्वर । तुमको जग नमता विश्वम्भर ।।
४२३ इन्द्र, कर्म से, महान नेता । भय से वह कम्पित कर देता ।।
स्वभाव से ही बल आचरता । स्वभाव वश नित बल को धरता ।।

दोहा– महा शक्तिधर इन्द्र है, वह हरता अरि–प्राण ।
सकल वाहिनी शक्तियाँ, तस्य दासियाँ जान ।।

शत्रु हनन से जो यश फैले । इन्द्र सहज ही उसको लेले ।।
ज्ञान, कर्म के वह निज दो कर । सदा धार कर रखता प्रस्तर ।।

४२४ ज्ञान, कर्म की इन्द्रिय गण की। योग–युक्ति को, सँग स्थिति मन की ।।
पूर्णतया जो साधक जाने। सिद्धि प्राप्ति की दृढ़ता ठाने ।।
वह ही इस सुख–वर्षक तन का। है अधिष्ठाता हृद का, मन का ।।
तत तन रथ है तेज–प्रदाता। निज सब इन्द्रिय वश कर पाता ।।
४२५ उसे मानता मैं प्रभु ईश्वर। जो दे हर जन को निज कृत घर ।।
जिसका आश्रय ज्ञानी लेता। कृपा, दया हित उसको सेता ।।
ज्यों गाएँ, द्रुतगामी घोड़े। थान, अस्तबल के प्रति दौड़ें ।।

दोहा– इन्द्र ! करो ऐश्वर्यमय, साधक जो तव भक्त।
उन्हें प्रेरणा नित्य दो, जो हों तव अनुरक्त ।।

४२६ मित्र–भाव अरु विघ्नापहरण। न्याय, सत्य का दृढ अवलंबन– ।।
–दिव्य शक्तियाँ हैं हितकारी। नर को करतीं शुभ आचारी ।।
विघ्न–सरी से पार उतारे। उसको पूजें मानव सारे ।।
पाप, दुष्टता अरु कपटी पन। कभी न व्यापें उसके हृद, मन ।।
४२७ सोम देव ! तुम मृदु, प्रिय रस हो। यज्ञी, श्रुति–पाठी के वश हो ।।
मित्रों पुष्टि सु कर्ताओं हित। वर्षाओ आनँद रस समुचित ।।
४२८ परमैश्वर्य प्रदाता ईश्वर !। सुख रस वर्षाओ हम सब पर ।।
विघ्न विनाशो, वैभव–वर दो। स्वर्ण, धान्य से ममघर भरदो ।।

दोहा– शत्रु–विनाशक बल बसे, हम भक्तों में नित्य।
चमकें हम शुभ कर्म से, ज्यों नभ में आदित्य ।।

४२९ सब आनन्दों के तुम निधि हो। पाप, पुण्य–फल हित प्रभु ! विधि हो ।।
दिव्य गुणों के तुम हो जाता। जन के हित में उनके दाता ।।
द्रवो सभी के हृदयों के प्रति। खल प्रति भी तुम द्रवदो शुभ मति ।।
४३० शुद्ध रूप तुम प्रभु ! अविकारी। विद्युत के सम अति बल धारी ।।
बहु बल, धन, यश, सुख पाने हित। हमको करदो पावन सुमुचित ।।
४३१ चारु ईश ! कल्याण–प्रदाता। पिता पुत्र का तव मम नाता ।।
ऐश्वर्य सकल प्रभु ! हम पाएँ। तेरी महिमा श्रुति से गाएँ ।।
पावनता हो मम कर्मों में। ना प्रमाद हो निज धर्मों में ।।

सभा की सूचना

संख्या २६९-सभा का बृहदधिवेशन

सब समाजों का ध्यान सभा द्वारा दि. २४-१-६८ को आर्य सेवक फरवरी १९६८ की सभा की सूचना संख्या २६८, दिनांक २४-१-१९६८, की ओर आकर्षित किया जाता है। उसमें मुद्रणालय की भूल से बजाय १४ अप्रैल के ११ अप्रैल छप गया है। समाजें उसे १४ अप्रैल पढ़ने की कृपा करें। अर्थात् सभा का वृहदधिवेशन रविवार, दिनांक १४ अप्रैल अकोला समाज के उत्सव के दिनों में होगा। उसी सूचना की कंडिका ४ को प्रथम चार लाइनों के बाद निम्न प्रकार पढ़ा जाय--

"सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार प्रत्येक समाज प्रथम ९ आर्य सभासदों पर १ प्रतिनिधि; २९ सभासदों पर २ प्रतिनिधि; ४९ सभासदों पर ३ प्रतिनिधि; ६९ सभासदों पर ४ प्रतिनिधि; और इसी प्रकार प्रत्येक २० पर १ प्रतिनिधि भेज सकता है।"

संख्या २७०-अंतरंग सभा की बैठकें

आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सभासदों को सूचित किया जाता है कि सभा की अंतरंग की एक बैठक वृहदधिवेशन से एक दिन पूर्व, शनिवार, दिनांक १३ अप्रैल १९६८, को अकोला में समाज मंदिर में की जायेगी जिसमें गत वर्ष का आय-व्यय लेखा, सभा और समाजों का वार्षिक वृत्तान्त उपस्थित किया जायेगा। अन्तरंग सदस्य समय पर पधारने की कृपा करें। बैठक का समय-मध्यान्ह में २ बजे का रहेगा।

संख्या २७१-नव-निर्वाचित अंतरंग सभा की बैठक

प्रतिनिधियों को सूचित किया जाता है कि उनमें से निर्वाचित पदाधिकारी और अंतरंग सदस्यों की एक बैठक अकोला में बृहदधिवेशन के बाद समाज मंदिर में की जायेगी। बैठक का समय वहीं घोषित किया जायेगा।

संख्या २७२-आर्य समाजों का लेखा, लेखे की जांच और शतांश

सभा की ओर से आर्य समाजों का वार्षिक लेखा नियमित रूप से प्राप्ति के लिए एक सूचना दोपरतवाली (डुपलीकेट) पंजी में छपवाकर दी गई है। कुछ समाजें नियमित रूप से इस पंजी में लेखा रखती हैं और प्रतिमास उसकी एक प्रति सभा कार्यालयको भेज देती हैं। कुछ समाजें ऐसी भीं हैं जो अभी तक इस पंजी का या तो उपयोग नहीं करती हैं अथवा उसकी प्रति सभा को नहीं भेजती हैं। ऐसी सब समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वह अपनी समाज का लेखा नियमित रूप से रखें और प्रति-मास लेखे की एक प्रति सभा को भेजनेकी कृपा करें। यह ध्यान में रखने की नितान्त आवश्यकता हैं कि सब समाजों का वार्षिक लेखा (आय-व्यय) और (शेषपत्रक) ऐसे दो फार्मों में शासन को भेजना अनिवार्य है। लेखा का नहीं भेजना सार्वजनिक न्यास अधिनियम की धाराओंके अनुसार एक अपराध है और जिसके लिए उत्तरदायी अधिकारियों को शासन दण्डित कर सकता है और लेखा आदि के लिए विवश भी कर सकता है।

२. सब आर्य समाजों का लेखा शासन द्वारा प्रमाणित लेखापाल (चार्टर्ड अकौटेंट) के द्वारा अंकेक्षित होना अनिवार्य है। अतएव जिन समाजों की आय पर्याप्त है और जिन्हें सब अभिलेख अंकेक्षण के लिए भेजने में कठिनाई होवे तो स्वतः अपने लेखे का अंकेक्षण कराकर सभाकार्यालय को भेज सकती हैं; परन्तु जो समाजें स्वयं लेखा अंकेक्षण नहीं कराती हैं उन्हें अनिवार्य रूप से अपना समस्त लेखा सभा कार्यालय में भेजने की व्यवस्था करने में किसी प्रकार का प्रमाद नहीं करना चाहिए, अन्यथा उसका उत्तरदायित्व उन्हीं पर होगा।

३. समाजों के वार्षिक लेखे और वार्षिक वृत्तान्त से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि अधिकतर सदस्यगण अभी भी नाम मात्र ०-२५ पच्चीस पैसे मासिक चंदा देते हैं, जो आर्य समाज के उप नियम के सर्वथा प्रतिकूल और अव्यवहारिक है। इसलिये आर्य समाजों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि वह आर्य समाज

के उप नियम अनुसार प्रत्येक सदस्य से उसकी आय का शतांश देने के लिये आग्रह करें और शतांश प्राप्त करें। यदि कोई सज्जन शतांश देने में असमर्थ हों अथवा न देना चाहें तो उनका नाम आर्य सभासदों की सूची से पृथक सहायक आर्यो की सूची में रखा जाए और उन्हें स्पष्ट निवेदन कर दिया जाय कि वह आर्य समाज की किसी भी प्रकार की व्यवस्थापक समिति व व्यवस्था में भाग न ले सकेंगे।

सभा को भेजे गये प्रतिनिधियों की स्वीकृति के समय सभाकी अंतरंग सभा भी शतांश न देनेवाले प्रतिनिधि को अस्वीकार करने के लिए विवश हो जाती है। इसलिये सब आर्य सभासदों और आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे शतांश देने के नियम को दृढ़ता से पालन करें और प्रतिनिधि सभा के लिए उन्हीं सदस्यों को भेजें जो शतांश देते हों और समाज के सत्संगों में जिनकी उपस्थिति कम से कम २५% रही हो जिससे कि सभा को प्रतिनिधि स्वीकार करने में कठिनाई न होवे।

संख्या २७३-आर्य युवक सम्मेलन

सभा का आगामी वृहदधिवेशन दि. १४ अप्रील १९६८, अकोला समाज के उत्सव के अवसर पर आर्य युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया है। साथमें राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, समाज के प्रधान और मंत्रियों का सम्मेलन (प्रान्तीय स्तर पर), राष्ट्रभाषा, आदि अनेक सम्मेलनों का आयोजन है। आर्य युवक सम्मेलन १४ अप्रील को होगा। सम्मेलनों की अध्यक्षता आर्य जगत के उच्चकोटि के नेता करेंगे। अनेक संसद सदस्यों और विद्वान सन्यासियों के पधारने की संभावना हैं। युवक सम्मेलन में आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभाओं की समाजों में स्थापना तथा प्रान्तीय स्तर पर दल एवं कुमार सभाओं के संगठन पर विचार किया जायेगा। अतः प्रदेश के समस्त समाजों के पदाधिकारियों से प्रार्थना है कि अपनी अपनी समाज की ओर से एक ऐसे युवक को भेजें जो समाज के सिद्धांतों को मानता हो और जिसमें इस कार्य को संपन्न करने की क्षमता हो।

अतः ऐसे युवक जो सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक हैं, उनके नाम और पता सभा कार्यालय को सूचित करें। सम्पन्न समाजें मार्गव्यय युवक को देने का अनुग्रह दर्शावें जो यह भार वहन न कर सके।

संख्या २७४-श्री पं. ज्ञानेन्द्रदेवजी सूफी

श्री. पं. ज्ञानेन्द्रदेवजी सूफी को दि. १ फरवरी १९६८ से आर्य समाज, हंसापुरी, नागपुर में उपदेशक व पुरोहित नियुक्त किया गया है। जो समाजें श्री. सूफीजी की सेवाओं से लाभ उठाना चाहें व सभा कार्यालय को सूचित करें।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. २४-२-१९६८	श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

2-3-68

३४ श्री संस्थापकजी,
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला, जिला रोहतक (पंजाब)

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक-घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम. कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक-वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन-प्रत्येक अंग्रेजी मास की २ री तिथिको।

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

अप्रैल] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, चैत्र शुक्ल ४ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ } वर्ष ६८ अंक ४ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३२–६)

दोहा

जिस प्रभु ने धारण किए, रवि, भू–, तीक्ष्ण स्वभाव ।
दु.ख रहित, सुख मोक्ष को, उसे नमे सह चाव ।।

चौपाई

अन्तरीक्ष में वह है रचता । लोकों को; उनमें गति धरता ।।१।।
पक्षी गण सम उन्हें उड़ाता । निज बल–दर्शन हमें कराता ।।२।।
परम ब्रह्म ऐसे सुख–दायक । प्राप्ति हेतु हम बनें सुयाचक ।।३।।
योग्य कामना के है ईश्वर । सब बल उर धर उसको वर नर ।।४।।
भक्ति प्रेम से पा उस पति को । पर पहिले कर शुभ निज मति को ।।५।।

– श्रीकृष्ण गुप्त, सिध्दान्त रत्न

वार्षिक मूल्य { सम्मानित – ५) साधारण – २) } सम्पादक – विद्यानन्द सरस्वती } एक अंक पचीस पैसे

ओंकार की महिमा

लेखक–विनय कुमार पाठक, पत्रकार, बिलासपुर (म. प्र.)

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में भी ईश्वर के ओंकारादि नामों की व्याख्या की गई है। समस्त प्रकाशमय पदार्थों का प्रकाशक, ब्रह्म शस्त्र रूप, अभिलषित फलों को देने वाला, चिंतामणि सदृश, आत्मा का अमृतमय भोज्य, अचूक, अद्वितीय, अनुपम औषधि, कुकर्मों पर विजेता, दिव्य प्रकाश घन, अत्यधिक उदार, जगदाधार, अद्भुत महात्म्य है ओंकार का। 'अ', 'उ' और 'म' से मिलकर एक समूह 'ओम' की रचना हुई है। इस एक ही नाम से परमेश्वर के बहुत से नाम आते हैं। एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् "अर्थात् ओंकार को जानकर कोई भी इच्छित फल को प्राप्त कर सकता है। यह एक ऐसा औजार है जिसके पास होने से भयादि दूर हो जाते हैं और उत्साह बढ़ता है। भगवद्-गीता, मनुस्मृति आदि अनेक स्थानों पर ओंकार का वर्णन है। पातञ्जल योग सूत्रों में कहा है कि परमेश्वर का प्रमुख वाचक शब्द 'ओंकार' ही है और ओंकार के जप और अर्थ के चिंतन से आध्यात्म मार्ग पर चलने वाला सरलता से एकाग्रता तथा अन्तर्-मुखता प्राप्त करता है और उनके मार्ग व्यवधान स्वयं नष्ट हो जाते हैं। ओम का विशेष महत्व है। जिस तरह ओम शांतिः शांतिः शांतिः मंत्र में तीन बार पृथक्-पृथक् प्रयोग हुआ है, वह त्रिविध ताप अर्थात् दुखों के निवारणार्थ उपयोग में आया है। महर्षि दयानंद जी महाराज ने तीन प्रकार के दुःख बतलाये हैं–दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। ओम के उच्चारण मात्र से ही दुख कोसों मील दूर हो जाता है। यह ऋषि मुनियों का अपना अनुभव है। इसे अतिशयोक्ति नहीं समझना चाहिए। ओम नाम लेने से ही मानव की मुक्ति संभव है। ओम ईश्वर की उपासना ऋषि, मुनि करते थे। अतः नियमपूर्वक प्रतिदिन ओम का उच्चारण करना ही सुखमय जीवन का प्रतीक है, मोक्ष का प्रतीक है। वेद ग्रंथ में भी ओंकारादि का विशेष महत्व प्रतिपादित किया गया है। "ओम क्रतो स्मर" हे जीव! ओम नाम का सुमिरन कर क्योंकि एक दिन तो तुझे जाना ही है। यजुर्वेद में कहा गया है–ओम खम्ब्रम्ह अर्थात् ईश्वर नभ के सदृश है। योगशास्त्र में 'प्रणव' शब्द ओम की जगह प्रयुक्त हुआ है, जो ओम का ही वाचक है। छन्दोपनिषद में तो यहां तक कहा गया है कि वस्तुतः ईश्वर 'ओम' ही है। उसी की उपासना करने योग्य है। इस तरह इस उपनिषद में अठारह बार ओम और तीन बार ओंकार शब्द समाविष्ट है। सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में वेदेश्वर विषय के अंतर्गत भी इसी नाम के महत्व को बतलाते हुए कहा गया है कि दोनों काल इसकी उपासना विशुद्ध होकर करनी चाहिए। क्या सिख पंथ, क्या जैन धर्म, क्या बौद्ध धर्म सभी तो ओम नाम से सहमत हैं। उसके महत्वों से भी सहमत हैं। स्वामी रामतीर्थ के अनुसार ईसाई, मुसलमान मत में प्रार्थना के अंत में "आमीन" व "एमन" पढ़ा जाता है। वह ओम का ही वास्तविक अर्थ है। बाइबिल में I am (I. A. M.) (ई. अ. म.) शब्द उद्धृत है। वह भी ओम शब्द का रूपान्तर है। आत्मबोध गीता या वैदिक गीता पर दृष्टिपात करने से (ओंकार का वर्णन पदाबद्ध होने से) सोने में सुगंध जैसा व आकर्षक बन पड़ा है। उसकी कुछ पंक्तियां दी जा रही हैं––

ज्ञान विज्ञान वृक्षस्य सुगंधि कुसुमं शुभम्।
ज्योतिषामापि मज्जमोतिरात्मनो भोज्यम मृतम॥
नाना संताप तप्तानां यच्चाप्योषधमुत्तमम्।
पापौघं भस्मसात कर्तु ब्रह्मस्त्रं ब्रह्मरादियाम्॥

अर्थः– ओंकार ज्ञान–विज्ञान वृक्ष का सुगंध युक्त पुष्प है। ओंकार का ही वास्तविक अर्थों में आत्मा का अमृत के समान भोज्य है। विभिन्न प्रकार के दुखों के निवारण का अचूक औषध है तथा मानव के अंदर के पापों की जड़ को विनष्ट करने वाला ब्रह्मास्त्र भी है।

(शेष कवर पृष्ठ ३ पर)

ओ३म्
अप्रैल **आर्य-सेवक** १९६८

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, चैत्र शुक्ल ४, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४३ | वर्ष–६८ अंक–४

मैं – आर्य समाज – ऋषि दयानन्द

श्री प्रिंसिपल भगवान् दास जी, डी. ए. वी. कालेज, अम्बाला नगर

इस लेख के शीर्षक में जो शद्व मैं' लिखा है वह साधारण अर्थो में प्रत्येक मनुष्य पर घटता है। बीस-पच्चीस वर्ष हुए, मैंने एक पुस्तक पढी थी, जिसका नाम था 'मैं आर्य समाज में कब गया।" उन व्यक्तियों ने जिन्होंने इस पुस्तक में लेख लिखे थे, उनके जीवनचर्या को देखकर मैं हैरान होता था। उसके पश्चात आर्य समाज के कुछ पत्र-पत्रिकाओं ने समय–समय पर ऐसे ही लेख छापे थे। कई भाइयों ने बड़ी रोचक कथाएं अपने आर्य समाज के प्रवेश के बारे में लिखी थीं जिनको मैंने शोक से पढा पर उसी तरह चकित रहा जैसे पहिले हुआ था। मुझे भी कई भाई यह पूछते रहते हैं कि मैं आर्य समाज में कब आया। मेरी कहानी रोचक तो है पर मैं सुनाता नहीं क्योंकि मेरे सामने यह प्रश्न नहीं कि "आर्य समाज में मैं कब आया।" अपितु सदैव मेरे सामने यह प्रश्न रहा है कि "आर्य समाज मुझमें कब आया।" आर्य समाज में जाने का अर्थ है प्रवेश-पत्र भरना, चन्दा देना; आर्य समाज के सत्संगों और जलसों में जाना अथवा अधिक से अधिक संस्थाओं के लिए दान देना या आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द की प्रशंसा के लेख लिखना या लेक्चर देना। इन्हीं बातों से हम आर्य समाज में प्रवेश करते हैं और इस पर हम फखर करते हैं और इसके बदले आर्य समाज से बहुत कुछ आशा करते हैं। सब भाई बहन इन बातों को पढ़कर यह सुगमता से समझ सकेंगे कि यह सब बातें मिलाकर भी आर्य समाजीपना नहीं है। यह तो क्रियाएं हैं अथवा अधिक से अधिक आर्य समाजी बन सकने के साधन हैं। कई भाई आजकल यह भी कहते दिखाई देते हैं कि यात्रा करना भी आर्य समाजीपना है और बस। मेरा मत आरम्भ से भिन्न रहा है। मनुष्य को आर्य समाज में प्रवेश लेना चाहिए पर महत्व का दिन किसी के जीवन में वह है जिस दिन कि आर्य समाज उसके अन्दर प्रवेश करे।

मैं अपने जीवन में बहुत भाग्यशाली रहा हूं और ईश कृपा से संतोष का सुखमय जीवन व्यतीत किया है और करूंगा। पर झूठे, फरेबी और देश के शत्रुओं से युद्ध भी लड़े हैं और सफलता भी प्राप्त की है। पर अभी मैं यह डींग नहीं लगा सकता कि आर्य समाज मेरे अन्दर प्रवेश कर गई है। इस कहानी को पूरा करने के लिए वर्षों की आवश्यकता है और भले ही जन्मों की भी। और जो मेरे लिए है वह बहुत बड़े-छोटे सब भाई-बहिनों के लिए भी है। मेरा इस जीवन का सबसे बड़ा मानसिक दुःख यही है कि जो सेवा त्याग तथा बलिदान आर्य समाज के लिए मुझे करना चाहिए था, वह अभी बिलकुल किसी मात्रा में नहीं हुआ। नैतिक आधार पर हम देशवासी इतने गिरे जा रहे हैं कि शायद आर्यसमाज का प्रवेश कभी भी न होने पावे। आर्यसमाजियों के जीवन का यह सबसे

बुरा और दुःख का तथ्य है । इससे भले ही किसी को गुस्सा लगे पर यह सबको मानना पड़ेगा । जब तक आर्य समाज, आर्य समाजियों में प्रवेश नहीं करती आपस के झगड़े नहीं मिट सकते । ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास ग्यारह में यह शब्द लिखे हैं :–

"इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके आदेश के अनुसार आचरण स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा······जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है ऐसा दूसरा नहीं हो सकता ।'

महर्षि ने थोड़े शब्दों में दो बड़ी भारी बातें कहीं हैं । एक तो यह कि जब तक हमारा आचारण आर्य समाजो नहीं होता, कुछ हाथ नहीं लगेगा । जितनी मर्जी ऊंची-ऊंची डींगे मारें हम ऊंचे नहीं उठ सकते । आर्य समाजियों की जन-संख्या का प्रश्न हमारे सामने नहीं । उनके ऊचे चरित्र का होना अधिक महत्व की बात है । आओ हम सब इस भूल में न रहें कि आर्य समाज में प्रवेश लेने से ही संतोष मिलता है अथवा इसमें हमारे जीवन के महत्व का कार्य हो जाता है । महत्व इस बात में हैं कि आर्यसमाज हम में प्रवेश करे ।

दूसरी बात जो ऋषि ने कही है, वह यह कि देश की उन्नति आर्य समाज से ही होगी । यह भी सच्ची बात है, अगर आर्य समाज हमारे अन्दर प्रवेश कर गई तो देश का भी भला होगा । दयानन्द यह नहीं कहते कि आर्य समाज का प्रवेश-पत्र भरने से ही देश का भला होगा । अगर करोड़ों भाई आर्य समाज का प्रवेश-पत्र भर देवें तो भी यह देश ऊंचा नहीं होगा । देश को जन-समूह ऊंचा और शक्तिशाली नहीं करता । देश को तो जनता का चरित्र ऊंचा करता है । आज देश का नैतिक पतन हो चुका है । आर्य समाजी भी चुप बैठे देख रहे हैं । समाचार पत्रों में पढ़ा कि दिल्ली में शराब रेहड़ियों पर बिकती है । कालेजों में, स्कूलों में शराब, जुआ चालू है । ग्रीन नाइट्स और डार्क नाइट्स का बोल-बाला है । आर्य समाजी भी सब बातें देख रहे हैं और फिर भी हम सब आर्य समाजी हैं । ऋषि दयानन्द की आत्मा क्या कहती होगी । आओ सब मिलकर वीर हकीकत महाराणा प्रताप, शिवाजी मराठा, गुरु गोविंदसिंह, ऋषि दयानन्द, वीर लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द को याद करें और आर्य समाजी बनें ।

आर्य समाज की–

पाखंड खण्डिनी पताका

धर्म का मार्ग सतत् जागरूक रहने का मार्ग है । पाखंड धर्म का सबसे बड़ा शत्रु है जो कि धर्म का बाना पहन कर—धर्म के मार्ग पर प्रस्तुत व्यक्तियों को धर्म के मार्ग से पथभ्रष्ट करता है और धर्म के नाम पर पारस्परिक मिथ्या कल्हों को जन्म देता है, मत-मतान्तर के अड्डे खड़ा करता है और धर्म के क्षेत्र में स्वतंत्र एवं बुद्धि संगत विचारधारा को अवरुद्ध करता है, धर्म के नाम पर ढोंग एवं मिथ्याचरण को प्रोत्साहन देता है ।

—महर्षि दयानन्द

आर्य जनता सावधान रहे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मामला

–श्री ओमप्रकाशजी त्यागी, एम. पी. की विज्ञप्ति

सार्वदेशिक न्याय सभा ने पंजाब सभा के सम्बन्ध में जो निर्णय दिया है नियमानुसार उसके क्रियान्वन का अधिकार सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को है। उन्होंने इसके लिए एक समिति बना दी है जिसके कार्यकर्त्ता प्रधान, श्री ओमप्रकाश त्यागी हैं:–

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आगामी चुनाव के सम्बन्ध में कुछ बातें अभी हाल में समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई हैं जिनसे भ्रान्ति फैलने की संभावना है, अतः श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने इस भ्रम के निवारणार्थ निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है:–

"आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णय के विरुद्ध कई कोर्टों की शरण ली और सब में वह हारती गई। अन्त में सार्वदेशिक न्याय सभा में गई और फिर उसके खिलाफ भी कचहरी में केस दाखिल किया। उसमें भी उसको हार ही खानी पडी। सार्वदेशिक न्याय सभा ने अपना निर्णय घोषित किया और उसके अनुसार पाकस्मा आदि में हुए चुनाव अवैध हैं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा और सभी अधिकारी आदि अवैध तथा अपने पदों पर कार्य करने के अयोग्य ठहराये गए हैं। अतः इस अवैध अन्तरंग सभा और अधिकारियों को पंजाब सभा के आगामी चुनाव कराने का स्वयं को एवं कोई भी अधिकार किसी व्यक्ति को देने का अधिकार ही नहीं प्राप्त है। फिर वह अधिकार किसी को किस प्रकार दे सकती है। अभी भी वे कोर्ट में सार्वदेशिक न्याय सभा के केस के विरुद्ध जा चुके हैं।

सद्भावना का वातावरण उत्पन्न करने के प्रयास का हमारी सभा ने सदा स्वागत किया है और अब भी करती है। परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि नियम और विधान के अनुसार सार्वदेशिक न्याय सभा के निर्णय को कार्यान्वित करने का अधिकार एकमात्र सार्वदेशिक सभा के प्रधान को है जो उसकी अन्तरंग सभा के १४–१–६८ के निम्न प्रस्ताव से स्पष्ट है:–

"आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विवाद के सम्बन्ध में सार्वदेशिक न्याय सभा का दि. १६-११-६७ का निर्णय पढ़ा गया तथा श्री नारायणदास जी कपूर का दिनांक २-१-६८ का पत्र तथा संलग्न ३१-१२-६७ का निश्चय पढ़ा गया। सार्वदेशिक सभा के निर्णय को क्रियान्वित करने का अधिकार एकमात्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान को ही होते हुए भी आज की यह अन्तरंग सभा श्री पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज, श्री कपूर जी तथा सर्व हस्ताक्षर करने वाले महानुभावों के सद्भावना प्रयास का स्वागत करती है। इस पत्र पर विचार करने से पूर्व सद्भावना का वातावरण पूर्णतया निर्माण हो एतदर्थ आवश्यक है कि पंजाब प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वदेशिक न्याय सभा के निर्णय के विरुद्ध चलाए गए अभियोग को बिना शर्त न्यायालय से वापस लिया जाय।"

सभा प्रार्थना करती है कि श्री प्रधान जी महात्मा आनन्द स्वामी जी का मूल्यवान सहयोग प्राप्त करके इस विवाद को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करवा दें।

विदित रहे कि इस प्रस्ताव को भी ठुकराते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तथाकथित अन्तरंग सभा ने सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध चलाए गए अभियोग को वापस लेने से इन्कार कर दिया है। इसका तात्पर्य यह है कि वे सद्भावना का वातावरण नहीं उत्पन्न करना चाहते हैं।

भूल सुधार

बुझ न जाये दीप यह स्वातंत्र्य का

—श्री धर्मेन्द्र शर्मा, संपादक, "स्वर" साप्ताहिक, विराट नगर, जि. जयपुर (राजस्थान)

साप्ताहिक "स्वर" के सम्पादक कविवर पंडित धर्मेन्द्र शर्मा की यह कविता जो "पांचजन्य", "आदर्श हिन्दू", "प्रलयंकर", "ऊषा", 'किरण" और कवि के अपने संकलन "उठो हिन्दुओं" में छप चुकी है, श्री बलभद्र पाठक (तत्कालीन निवास मोहन नगर नागपुर एवं वर्तमान नियुक्ति क्षेत्रीय अभियन्ता, तार विभाग शिलांग, असम) ने "आर्य सेवक" में अपने नाम से प्रकाशनार्थ भेजी थी। "आर्य सेवक" के अप्रैल १९६७ के अंक में यह कविता श्री पाठक के नाम से छपी देखकर प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल ने हमें पत्र द्वारा सूचित किया कि यह कविता श्री पाठक की नहीं प्रत्युत पंडित धर्मेन्द्र जी की है। कालान्तर में पंडित धर्मेन्द्र जी ने भी हमें सूचित किया और एतद्-सम्बन्धी प्रमाण भी भेजे। यद्यपि श्री पाठक ने हमारे पत्र के उत्तर में अपना अपराध स्वीकार नहीं किया, किन्तु पंडित धर्मेन्द्रजी को लिखे गये पत्रों में उन्होंने अपराध स्वीकार करके क्षमायाचना की है। साहित्य की चोरी एक निन्दनीय कर्म है। एक प्रसिद्ध साहित्यकार की बहुचर्चित कृति 'आर्यसेवक' में एक अन्य व्यक्ति ने अपने नाम से प्रकाशित करायी, इसका हमें हार्दिक खेद है। हम श्री शिवकुमार गोयल के आभारी हैं कि उन्होंने हमें वस्तुस्थिति से अवगत कराया। साथ ही श्री पंडित धर्मेन्द्र शर्माजी को जो कष्ट हुआ उसके लिए हम खेद प्रकट करते हैं। कविता शुद्ध एवं सम्पूर्ण रूप में यहां पुनः प्रकाशित की जा रही है।

—प्रबंध संपादक, आर्य सेवक, नागपुर

घिर रही काली घटा है व्योम पर,
लग न जाये ग्रहण उज्वल सोम पर,
बुझ न जाये दीप यह स्वातंत्र्य का
देश का आह्वान है आगे बढ़ो !

●

स्तब्ध हैं आकाश अवनी क्लान्त है,
विश्व का वातावरण उद्भ्रान्त है,
मनुज की शोणित पिपासा देखकर,
हो उठा विक्षुब्ध सिन्धु प्रशान्त है।

●

चल रही है प्रबल अरि की गोलियां,
बढ़ रही हैं धूर्त रिपु की टोलियां,
लूट धन -- जन – धाम नर संहार कर,
शत्रु भरना चाहता है झोलियां।

●

मिट न जाये गर्वपूर्ण परम्परा,
कह रही है हो सभीत वसुन्धरा,
आज प्रभु की पुण्य भू को लीलने
बढ़ रहा शैतान है आगे बढ़ो !

●

त्रस्त उद्वेलित खड़ा नेपाल है,
ग्रस्त नेफा असम प्रान्त विशाल है,
आज अपने ही सुतों के रक्त से,
रंग गया मां भारती का भाल है।

●

शत्रु गंगा को सुखाना चाहता,
आग यमुना में लगाना चाहता,
तुंग हिमाचल शिखर पर रूढ़ हो,
विश्व से हमको मिटाना चाहता।
मिट न जाये कीर्ति गरिमा राम की,
मिट न जाये शौर्य महिमा श्याम की,
लुट न जाये लाज विक्रम गुप्त की,
शिव प्रताप सुभाष के शुभ नाम की।

●

लो उठा चिर सुप्त राजस्थान को,
लो जगा उत्तर प्रदेश महान को,
असम, उत्कल, वंग और बिहार को,
लो उठा प्रिय पंचनद बलवान को।
मध्यप्रदेश विदर्भ गुर्जर प्रान्त में,
दूर दक्षिण आंचलिक सीमान्त में,
फूंक दो उत्साह भर दो वीरता,
युग – युगों से सुप्त देश प्रशान्त में,

●

रूप राशि विलोक कर लद्दाख की,
बढ़ रही कुत्सा दनुज की आंख की,
एशिया के स्वर्ग सा कश्मीर वह,
रह न जाये मात्र ढेरी राख की।

●

बढ़ रही है शत्रु की दुर्वासना,
राज्य के विस्तार की दुष्कामना,
बन गया दुर्दान्त रिपु की भूख का,
लक्ष्य हिन्दुस्थान है आगे बढ़ो।

●

शत्रु रण की प्यास लेकर बढ़ रहा,
विजय का विश्वास लेकर चढ़ रहा,
पूर्वजों के कीर्ति गौरव केतु का,
हो रहा अपमान है आगे बढ़ो!

●

त्याग तंद्रा आत्म रक्षा हित उठो,
स्वत्व सस्कृति देश रक्षा हित उठो,
दनुज दल आक्रान्त जग की मनुजता,
चाहती बलिदान है आगे बढ़ो!

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

आर्य समाज स्थापना शताब्दि समारोह

सार्वदेशिक सभा के महत्वपूर्ण निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बम्बई मे आयोजित १३ जनवरी, १९६८ की अन्तरंग सभा ने, आर्य समाज स्थापना शताब्दि महोत्सव, सन् १९७५ में बम्बई नगर मे मनाने का निश्चय किया है। यह उत्सव सार्वदेशिक स्तर पर, आर्य समाज स्थापना दिवस से प्रारम्भ होगा।

मुख्य प्रस्तावों में महर्षि दयानन्द सरस्वती के अप्रकाशित ग्रन्थ तथा सत्यार्थ प्रकाश को विभिन्न भाषाओं में, विशेषकर दक्षिण भारत की भाषाओं में प्रकाशन की व्यवस्था करना। आर्य समाजों, प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं, आर्य संस्थाओं तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की डायरेक्टरी का प्रकाशन, वैदिक साहित्य के प्रकाशन को बढावा। २।३ वर्षो के भीतर अच्छे और अधिकतर ग्रंथों का प्रकाशन हो जो प्रचार की दृष्टि से हों और विदेशी आकर्षित हो सकें।

भिन्न भिन्न प्रान्तों में आर्य सम्मेलनों का आयोजन तथा विदेश में आर्य सम्मेलन की योजना करना। प्रान्तीय तथा स्थानीय स्तर पर शताब्दि समिति का गठन हो, जो सार्वदेशिक सभा द्वारा बनाये गये कार्यक्रम को क्रियान्वित करे। गैर आर्य समाजी बन्धुओं का सहयोग भी प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाय।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ५६ वां वार्षिकोत्सव ५–६–७ अप्रैल १९६८ को विशेष समारोह के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है। उत्सव में आर्य समाज के विद्वान, पंडित, सन्यासी, उपदेशक पधारेंगे। नये विद्यार्थियों का प्रवेश भी वार्षिकोत्सव से हो रहा है।

आर्य समाज अम्बिकापुर का निर्वाचन

श्री देवराज अग्रवाल	–	प्रधान
,, शिवबालक आर्य	–	उपप्रधान
,, राजेन्द्र प्रसाद जी आर्य	–	मंत्री
,, गिरजानन्दन शर्मा	–	उपमंत्री व प्रचारमंत्री
,, भगवानदास आर्य	–	उपमंत्री
,, पाकरमल जी आर्य	–	कोषाध्यक्ष
,, रोमेश्वर जी गुप्त	–	पुस्तकाध्यक्ष

आर्य समाज जरीपटका, नागपुर निर्वाचन

श्री रीझूमल कृपलाणी	–	प्रधान
,, सहजराम होतचंद	–	उपप्रधान
,, जशनागी संगतराम आर्य	–	मंत्री
,, चंदूलाल केवलरामाणी	–	उपमंत्री
,, कन्यालाल कुकरेजा	–	कोषाध्यक्ष
,, अर्जुनदास कुकरेजा	–	पुस्तकाध्यक्ष

आर्य समाज, भिलाई नगर

ऋषि बोधोत्सव

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में ऋषि बोध रात्रि पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। स्वामी जी के ओजस्वी भाषण से जनता प्रभावित हुई। इस अवसर पर बालकृष्ण शर्मा भजनोपदेशक, श्री चन्द्रभानु तिवारी, श्री जगवीरसिंह, श्री इन्द्रकुमार जी के भाषण तथा श्रीमती सन्तोष प्रभा भगोलीवाल ने प्रेरक भजन व गीत प्रस्तुत किये।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के आचार्यत्व में श्री प्रभुदयाल अग्रवाल सुपेला भिलाई, के निवास स्थान पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ १७ फरवरी को सुसम्पन्न हुआ। इसी दिन उनके सुपुत्र का मुण्डन संस्कार भी किया गया।

शिक्षा समिति का निर्वाचन

आर्य समाज भिलाई नगर की शिक्षा समिति का निर्वाचन २५ फरवरी को भूमित्र जी गुप्त की अध्यक्षता में हुआ—

श्री भूमित्र गुप्त	–	प्रधान
,, रविचन्द्र आर्य	–	उपप्रधान
श्रीमती गार्गी चड्ढा	–	मंत्री
,, सन्तोष भगोलीवाल	–	उपमंत्री
श्री भागवतशरण सिन्हा	–	कोषाध्यक्ष

तथा–जयदेव विरमानी, गुलाबचन्द्र बंसल, रमेशचन्द्र श्रीवास्तव व डॉ. विश्वभूषण पुरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

महा-शिवरात्रि पर्व

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती अधिष्ठाता एवं उपप्रधान सभा की अध्यक्षता में महाशिवरात्रि पर्व बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। सभा में बड़ी संख्या में नर-नारियों ने भाग लेकर उपदेशामृत का पान किया।

गोरखपुर, जबलपुर

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव २२ से २६ फरवरी तक धूमधाम से मनाया गया। सभा के प्रमुख वक्ता हिन्दी दैनिक 'युगधर्म' के सम्पादक श्री भगवतीधर जी वाजपेयी ने महर्षि द्वारा रचित वैदिक ग्रंथों का स्वाध्याय करने तथा अपने जीवन को उच्च बनाने का बोधप्रद भाषण दिया।

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी भी अपने दौरे के कार्यक्रम में जबलपुर पधारे और अन्तिम दिन आर्य समाज के नवनिर्माण के लिए आपके हाथों से शिला रखी गई। स्वामी जी की अध्यात्म कथा से आर्य जन मंत्रमुग्ध हो गये। सामवेद पारायण यज्ञ, आर्य कुमारों द्वारा विविध कार्यक्रम भी आयोजित हुए।

स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती द्वारा प्रांत में वैदिक धर्म का प्रचार

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग तथा उप-प्रधान सभा ने मास जनवरी और फरवरी १९६८ में निम्नलिखित १७ स्थानों का भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया, तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ, तथा अन्य संस्कार कराये।

भिलाई, महाराजपुर, छतरपुर, लौंडो, राजनगर, खजराहों, जबलपुर, अतरिया, बेलखेड़ी, गोटेगांव, बिलापुर, सुपेला (भि.न.) भिलाईनगर, रायपुर, पोरी गोरैया ग्राम, कोरबा, रायगढ़।

श्री सत्यदेव जी आर्य द्वारा वेद प्रचार

सभा के उपदेशक श्री सत्यदेव जी आर्य ने सुपेला बाजार भिलाई नगर, चाम्पा, कोरबा, चाम्पा, रायगढ़ में श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती तथा पं. रामाश्रय जी के साथ वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य किया।

श्री रामाश्रय जी द्वारा वैदिक प्रचार

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग की आज्ञा से आर्योपदेशक श्री रामाश्रय जी ने नरसिंहपुर, सतना, छतरपुर, महाराजपुर, दुर्ग, भिलाई, कोरबा, बिलासपुर आदि स्थानों में भ्रमण कर प्रचार कार्य किया। इस समय आप सूरजपुर, अम्बिकपुर में प्रचार कर रहे हैं।

आर्य समाज चेम्बूर

स्व. प. रामचन्द्र जी देहलवी तथा लोकनायक बापूजी अणे के निधन पर आर्य समाज चेम्बूर ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत नेताओं की स्मृति में सभा का आयोजन किया तथा उनके द्वारा किये गये महान कार्यों पर प्रकाश डाला।

खंडवा— पं. रामचन्द्र जी देहलवी तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय के आकस्मिक निधन पर आर्य समाज खंडवा ने शोक प्रस्ताव पास कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री सुखराम जी आर्य द्वारा वैदिक प्रचार

आर्य समाज खंडवा के प्रचारक श्री सुखराम जी आर्य सिद्धान्त-शास्त्री ने मार्च के प्रथम सप्ताह में बडगांव गुर्जर, बरुड़, भोजाखेड़ी, छैगांव माखन की सार्वजनिक सभाओं में मानव धर्म, ईश्वर भक्ति तथा भारतीय संस्कृति विषयों पर भाषण दिया। इन स्थानों की प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में श्री शास्त्री जी ने आदर्श विद्यार्थी जीवन तथा चरित्र निर्माण संबंधी उपदेश दिये।

भिलाई नगर– प्रान्त की अनेक आर्य समाजों ने इस वर्ष होली उत्सव समारोहपूर्वक मनाया–भिलाई में होली पर्वेष्टि यज्ञ के साथ संगीत एवं व्याख्यान के कार्यक्रम हुए।

अकोला– आर्य समाज के पुस्तकाध्यक्ष श्री दुर्गैय्या जी के निवास स्थान पर सामूहिक रूप से होलीकोत्सव पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ तथा उपदेश हुए।

श्री ज्ञानेन्द्रदेव जी सूफी का सकल प्रचार

आर्योपदेशक विद्वान पं. ज्ञानेन्द्रदेव सूफी ने बल्लारपुर की सार्वजनिक सभा में वेद और गीता विषय पर खोजपूर्ण व्याख्यान दिया– आपके व्याख्यानों को सुनकर लोग काफी प्रभावित हुए। इस सभा में आम जनता के अतिरिक्त शासन के उच्चाधिकारी भी विशेष रूप से पधारे थे। श्री हंसराज भाई दाना ने सभा को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री सूफी जी ने बल्लारपुर में एक सप्ताह तक कथा, प्रचार तथा यज्ञ का आयोजन कर जनता में जागृति पैदा की।

बल्लारपुर– आर्य समाज बल्लारपुर के वयोवृद्ध परन्तु कर्मठ सदस्य श्री हंसराज भाई दाना जी सभा कार्यालय में दिनांक १८ मार्च को पधारे और उन्होंने कहा कि श्री ज्ञानेन्द्र जी सूफी ने दिनांक ७ से १३ तक नवनिर्मित भव्य दयानन्द भवन में वैदिक धर्म का प्रचार किया और कुछ यज्ञ भी कराये। इनकी प्रचार शैली बड़ी ही मधुर और प्रभाव वाली रही। जनता इनसे बहुत ही प्रभावित हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा को इन्होंने अनेक धन्यवाद दिये क्योंकि यह पहला अवसर था जब कि नवनिर्मित भव्य समाज मन्दिर में वेद और गीता की कथा हुई।

महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्यवीर शिक्षण शिविर एवं आर्य समाज कार्यकर्ता सम्मेलन

सम्पूर्ण महाराष्ट्र के आर्य वीरों एवं आर्य कार्यकर्ताओं का एक विशेष शिविर, आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ओर से, अशोक विद्यालय, तिलक रोड, पूना में, १७ से ३१ मई १९६८ तक आयोजित किया गया है। अन्तिम तीन दिनों में सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें आर्य जगत के बड़े बड़े नेता, पदाधिकारी, विद्वान एवं उपदेशक पधार रहे हैं। सम्मेलन में, महाराष्ट्र में आर्य समाज के कार्य को प्रगति देने के लिए सुनियोजित एवं ठोस कार्यक्रम निर्धारित किये जायेंगे।

छः ईसाइयों द्वारा वैदिक धर्म स्वीकार

वैकुण्ठपुर (सरगुजा) के एक ईसाई परिवार ने जिसमें ६ सदस्य थे, १४ मार्च को आर्य (हिन्दू) धर्म स्वीकार कर लिया है। श्री सोनसाय (वर्तमान नाम) कुछ मास पूर्व ही ईसाइयों द्वारा प्रलोभन दिये जाने से ईसाई धर्म की दीक्षा ली थी परन्तु जब उन्हें अपनी भूल मालूम हुई तो उन्होंने अपने पूर्व धर्म में प्रवेश करने का निश्चय किया। यह शुद्धि संस्कार आ. प्र. सभा के उपदेशक श्री शंकरलाल जी आर्य द्वारा सम्पन्न किया गया।

नागपुर–आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा, नागपुर, द्वारा दिनांक २४, २५ और २६ फरवरी को हंसापुरी, आर्य समाज मंदिर के सामने के मैदान पर महाशिवरात्रि पर्व धूम-धाम से मनाया गया। इसे सफल बनाने में आर्यों का सहयोग सराहनीय है। इन तिन दिनों में पं. ज्ञानेन्द्रजी सूफी, संगतराम जी आर्य, माता चंद्रकांता जी, सरोजरानी श्रीवास्तव, भाई श्री प्रेमचंद अग्रवाल, श्री मधुकर सदार के साथ ही श्री नरेन्द्र मोहन अग्रवाल ने प्रभावशाली भाषण देकर देश में व्याप्त वैदिक धर्म के प्रति उदासीन जनता को वैदिक महत्ता समझाई।

ओ३म्

परिशिष्ठ – आर्य सेवक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज के

सामवेद के ऐन्द्र काण्ड का पद्यानुवाद

पद्यकर्ता :–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य-प्रदेश व विदर्भ,

महर्षि दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, सदर, नागपुर–१ (महाराष्ट्र)

●

दोहा– ज्ञान, कर्म सम्यक जहाँ, वहाँ तुम्हारी प्राप्ति ।
तब ही तव साक्षात हो, हृद जाने तव व्याप्ति ।।

४३२ निष्पन्न तुम्हारे होने पर । दया, कृपा के हे सागर ।।
राज्य जितेन्द्रियता का जमता । तब तव पद में यति आ नमता ।।
योगानँद–रस तब वह पीता । सामीप्य तुम्हारे में जीता ।।
सकल इन्द्रियों में तू रमता । व्यापकता में अनुभव करता ।।
तुझ को यों मैं जब हूँ पाता । पाना और न कुछ रह जाता ।।
४३३ व्यक्त, पथ–प्रदर्शक, ऊर्जस्वी । शस्त्र–सुसज्जित, पूर्ण मनस्वी ।।
उन्नति–यात्रा के सहचारी । कल्याणी, पूजा – अधिकारी ।।
स शक्ति रहते एक–स्थल पर । कौन ? देव है या मानव वर ? ।।

दोहा– मरण शील नर श्रेष्ठ है ?, या ये स्वर्ग–नरेश ? ।
मुक्तात्मा पुनि अवतरित ?, या विशेष योगेश ? ।।

सामर्थ्य महत हैं ये ऋत्विज । क्रिया यज्ञ–गुरु, योग यज्ञ–द्विज ।।
यही यज्ञ को सफल कराते । मन बांछित फल हमें दिलाते ।।
इनको पूजो अरु श्रुति गाओ । हृद में ओम सुदर्शन पाओ ।।
४३४ अग्ने ! हय सम तुम हो वाहक । लक्ष्य स्थान को त्वर गति धावक ।।

कल्याण–मार्ग के पथ–दर्शक । यज्ञी, भक्तों के शुभ चिन्तक ॥
यज्ञ हेतु हम तुम्हें बुलाते । योग्य सूक्तियाँ स स्वर गाते ॥
स्वागत हित दृग-पलक बिछाए । लखूं वाट कब मम प्रभु आए ॥
४३५ विज्ञ ! ईश के आदेशों पर । चलो, चलाओ सँग सँग हर नर ॥

दोहा– मुक्ति–लाभ–आनन्द को, ज्ञान–भक्त, प्रिय ! भोग ।
पी लो उत्तम मधुर रस, फिर न मिलेगा योग ॥

४३६ सोम ओम ! तू परमानँद रस । ज्ञान–कान्ति–निधि, यज्ञी के वश ॥
दिव्य श्रेष्ठता का तू धारक । महिमाशाली, सज्जन–पालक ॥
हृदय कलश में मेरे आओ । मम चिति–बल में दृढ़ता लाओ ॥
४३७ इन्द्र सभी दिक से बरसाते । विपुल दान, सब को भाते ॥
तस्य भाग कुछ हम को देना । मम गृहस्थ नौका डूबे ना ॥
शक्तिधरों में तुम सर्वोत्तम । तुम्हें पुकारें रक्षा हित हम ॥
४३८ भक्तों का जो है शुभ चिन्तक । उनकी उन्नति–कर्ता, पालक ॥
हर ऋतु में जो है हितकारी । जिसे इन्द्र कहते संसारी ॥

दोहा– उसकी ही हम स्तुति करें, उसके गाएँ गान ।
उसे भजें शुचि यज्ञ से, वही करे कल्याण ॥

४३९ पाप सर्प को हनने ज्ञानी, । पंडित, योगी, श्रुति–अभिमानी ॥
वेद–विज्ञ गण मन्त्रोच्चारें । स्तुति गा उसको हृद में धारें ॥
४४० लक्ष्य ओर द्रुतगति से धावे । साधकगण वे चट प्रभु पावे ॥
साधन को सुख–साधन माना । ध्येय–प्राप्ति का निश्चय ठाना ॥
इन्द्र ईश को कवच बनाया । इस विधि दर्शन प्रभु का पाया ॥
धीर, वीर ना पीछे हटते । सङ्कट, विपदा से ना डरते ॥
उन्हें विजय श्री निश्चय वरती । जय–माला तत पद में धरती ॥
ईशापीस उन्हें प्रिय मिलता । भक्त–हृदय–पङ्कज भी खिलता ॥

दोहा– ज्ञान, शान्ति, धन वे गहें, जिनका दान सु ध्येय ।
करे कर्म विपरीत जो, तस्य ध्येय भी हेय ॥

४४१ श्रेष्ठ कर्म जो व्यक्ति न करता । इच्छित धन भी वह ना धरता ।।
क्योंकि दान-धन वह ना पाता । लोभ, स्वार्थ में आप बहाता ।।
ध्येय देय तो श्रेय मिले ना । प्रभु भी उसको बहु धन दे ना ।।
४४२ धाय गाय गण नित हैं पावन । वत्स सदृष करती नित पालन ।।
दिव्य शक्तियाँ नित सुख देतीं । बिना भेद सब प्राणी सेती ।।
अत: वन्द्य हैं माता गाएँ । श्रुति से भी वे अघ्न्य कहाएँ ।।
४४३ ज्ञानोदय की ऊषे ! आओ । तव सब तेजों को सँग लाओ ।।
सभी इन्द्रियाँ पोषण बल पर । सत पथ गामी हैं इस अवसर ।।

दोहा- परमानँद से युत ग्रहे, करते हुए निवास ।
दान योग्य ऐश्वर्य धर, हम हों प्रभु ! निश्वास ।।

४४४ सकल मरुत उत्तम तेजस्वी । श्रुति के प्रेमी, विज्ञ मनस्वी ।।
४४५ स्तुत्य इन्द्र की पूजा करते । बली इन्द्र फिर रिपु गण हनते ।।
शान्ति प्रियों, मरुतों का रक्षक । इन्द्र सदा होता अरि-भक्षक ।।
४४६ निपुण व ज्ञानी, विघ्न-विनाशक । इन्द्र देव हैं जनता-पालक ।।
गान करो स्तोत्रों का तव हित । जिनको सुनता वह हो प्रमुदित ।।
४४७ हवि को देवों तक का वाहक । चेतनता अरु अति धी-धारक ।।
जाग चुका है; सब कुछ लखता । तीव्र वेग से रथ सम चलता ।।
४४८ समीपतम तुम अनल ! हमारे । वरण योग्य; हम तुम पर वारे ।।

दोहा- वर रक्षक, कल्याण कर, हम हित हो तुम अनल ! ।
हमें इन्द्र के द्वार तक, पहुँचा अग्ने ! प्रबल ।।

४४९ श्रेष्ठों में है रवि सम द्युतिधर । अनल देव हर जन का शुभ कर ।।
भक्त, याजकों को धन देता । सुत समान सुख दे वह सेता ।।
४५० सभी शत्रुओं को वह दलता । सत पथ पर हम को ले चलता ।।
हर मख में वह निश्चय आता । अग्नि देव आशीष-प्रदाता ।।
४५१ ज्ञानोदय-काल-उषा आई । तम हन निज छवि सँग में लाई ।।
अपने मोहक दर्शन द्वारा । यति को दे तप हेतु सहारा ।।

साधक को सन्मार्ग दिखाती । कर्म हेतु सब विघ्न हटाती ॥
वन्द्य सदा यह उषा प्यारी । इन्द्र–सृष्ट छवि अतिशय धारी ॥

दोहा– उषा समय जो कर्म कर, भजता नित्य महेश ।
सिद्धि गहे वह अरु पुजे, अपने देश, विदेश ॥

४५२ मनुज–इन्द्रियाँ अरु आत्माएँ । प्रभु ! विश्वों से मुदिता पाएँ ॥
४५३ जिस विधि पथ पा जल–धाराएँ । विविध दिशाओं में त्वर धाएँ ॥
दान–सरी त्यो इन्द्र बहाएँ । यज्ञी, साधक सुख मधु पाएँ ॥
४५४ स्तुति कर देवों से हम पाएँ । शक्ति, अन्न, धन अरु हर्षाएँ ॥
वीर श्रेष्ठ सुत गण हम जाएँ । शत वर्षों की सुख वय पाएँ ॥
४५५ विमल अन्न जो बल को जाता । मित्र, वरुण हैं उसके दाता ॥
इन्द्र ! उसे पौष्टिक अधिक करो । बल–औषधि भी तत बीच धरो ॥
४५६ इन्द्र ईश ही जग–अधिष्ठाता । वह शासक है न्याय–प्रदाता ॥
४५७ महा बली आत्मा मख रचती । यज्ञ–सुफल–आनँद रस गहती ॥
सुषुप्ति. स्वप्न व जाग्रत पन में । यह रस रमता तन–कण कण में ॥
तृप्ति, तोष वह आत्मा गहती । सतत ओम उच्चारण करती ॥
जन हित विक्रम कारज करती । इन्द्र–चरण में तत फल धरती ॥
आल्हादकपन वह प्रकटाती । सौजन्य सुरस ही बरसाती ॥
सत्य रूप इन्द्रेश्वर भजती । तस्य निकटता वह अनुभवती ॥
४५८ उसी इन्द्र में यति गण रमते । सन्त संहस्रों उसको भजते ॥
इन्द्र–रूप है अति प्रिय, सुन्दर । उसको पूजें ज्ञानी हृद धर ॥

दोहा– स्व प्रजा पोषक इन्द्र प्रभु, जीवन–प्रेरक, श्रेष्ठ ।
तत ढिग सकल समान हैं, ना कनिष्ट, ना ज्येष्ठ ॥

पावन जीवन यात्रा में नित । हृद में बसता वह इन्द्र ललित ॥
वह अकलंकी, विज्ञ, अजाता । नर–मति को सत मार्ग चलाता ॥
रवि–किरणें ज्यों तीव्र चमकतीं । इन्द्र–तेज–छवि आप प्रकटती ॥
तस्य स्वरूप अलौकिक प्यारा । उसे लखा जो आप उबारा ॥

४५९ इन्द्र ! तुम्हें हम भजते, स्मरते । बहुत दूर, पर, तुम हो बसते ।।
दिव्य शक्तियाँ तुम हो धारे । वे सब हों प्रत्यक्ष हमारे ।।
यथा पिता को पुत्र बुलाता । अरु धन की इच्छा प्रकटाता ।।
तथा परम आनँद को गहने । साधन-सञ्चय तत हित करने ।।
सतत यत्न हम ईश्वर ! करते । प्रति पल तुमको उर धर स्मरते ।।

दोहा- श्रेष्ठ ज्ञान-धन-लाभ हित, करते भक्ताह्वान ।
करो सफल हे पूज्य प्रभु !, इन्द्रेश्वर भगवान ! ।।

४६० मैं उस प्रभु को प्रति पल स्मरता । जो प्रकाश को कभी न तजता ।।
जो अजेय नित, सज्जन-रक्षक । ऐश्वर्य परम का जो धारक ।।
अनेक प्रसिद्धियों से जो युत । अरु जो व्यापक, अच्युत, अद्भुत ।।
उसे वाणियाँ पुनि पुनि गातीं । उसे पूज व सविनय बुलातीं ।।
स्तुति सुन वह यज्ञों में आता । जिसे देख स्तोता हर्षाता ।।
दान शील ऐश्वर्य-प्रदाता । उसे जान, है भक्त बुलाता ।।
मार्गों को वह सरल बनाए । वह रक्षक हो धन, धान्य दिलाए ।।
यज्ञों में वह इन्द्र पधारे । कार्य सफल वह करे हमारे ।।

दोहा- यही विनय है भक्त की, बरसो नित कल्याण ।
सुखी रहें प्राणी सकल, तत सँग हम भगवान ! ।।

४६१ ज्ञान सहित हो जगत-भलाई । मैंनें यह मख अनल जलाई ।।
उसी दिव्य, बलधर पावक की । करें विनय हम जग-नायक की ।।
इन्द्र, वायु को हम नम भजते । श्रद्धा से श्रुति गा स्तुति करते ।।
यजमान नया जो धन-पति हो । यज्ञ रचाता जो शुभ मति हो ।।
मख-मुख्य स्थान ये सुर आते । सकल मनोरथ पूर्ण कराते ।।
करना पालन मख-विधियों का । श्रवन कराओ श्रुति-स्तुतियों का ।।

देवों के ढिग जाने के हित । करते सुकर्म ये सम्पादित ।।
पास तुम्हारे भी पहुँचेंगी । तवाशीष प्रभु इन्द्र ! गहेंगी ।।

दोहा– श्रुति का करता पाठ जो, सङ्ग रचाता यज्ञ ।
इन्द्र कृपा वह प्राप्त कर, कभी न रहता अज्ञ ।।

४६२ स्तुति अरु पूजा विमल हमारी । प्राणों को जो बल दे भारी ।।
मनन-शक्तियाँ अवसर पाके । ईश्वर-व्याप्ति व चेतनता के ।।
दिव्य गुणों का भण्डार बने । मत्सरता सँग अभिमान हने ।।
बुद्धि, हृदय की वे हों शोधक । कारज में गति, सुख की दायक ।।
विघ्न-विनाशक बल उपजाएँ । जन-सेवा में तोष मनाएँ ।।
यज्ञ, दान में श्रद्धा लाएँ । दिव्य गुणों को सतत बढ़ाएँ ।।
४६३ शूर वीर ज्यों रण में जाता । सहायता मित्रों से पाता ।।
सङ्गी, साथी-दल सँग लेता । अरि-हन, रण-जय, बनता जेता ।।
इसी तरह अज्ञान-विनाशक । दीप्ति धार जो निर्मल धारक ।।

दोहा– द्वेष भाव निज मार कर, सिद्धि गहे यतिराज ।
हृद में पूजे इन्द्र वह, पूजे उसे समाज ।।

दीप्तिमान, सुन्दर, आकर्षक । दिव्यानँद का रस का धारक ।।
उस प्रिय रस को विपुल बहाता । जीवन-पथ स्तर गण चमकाता ।।
उठा स्वयं को, देश उठाता । जन समाज तत गुण गण गाता ।।
परम वन्द्य हैं वे आत्माएँ । देह त्याग पर सदा पुजाएँ ।।
४६४ परम दिव्य द्यौ से भू तक । जो है प्रेरक, धारक सब का ।।
कर्म व दर्शन-बल से पूरा । रहे न जिसका कार्य अधूरा ।।
साधक का जो सत्य सहायक । खान रत्न की जो सुख दायक ।।
ज्ञान रूप उस इन्द्रेश्वर को । मैं नित पूजूं सब गुण-धर को ।।

दोहा– उसकी अचिन्त्य शक्ति जो, उन्नति–पथ ले जाय ।
ज्ञान–कान्ति सर्वत्र हम, भू पर पसरी पायँ ।।

स्वतेज मय की किरणों द्वारा । वह छाता है जग पर सारा ।।
स्व कुशलता से सुख–सर रचता । ऐश्वर्य परम, सब सुख गहता ।।
तस्य ओम प्रिय नाम उचारो । आर्यों ! तत गुण निज में धारो ।।
क्लेश मिटेंगे; दुःख कटेंगे । हम सुख, वैभव, स्वर्ण गहेंगे ।।
४६५ होता पावक को धन–दाता । बल सुत (बल शाली) मैं पाता ।।
कर्म सु काण्डी, पण्डित, ज्ञानी । धर्म–शास्त्र, श्रुति का अभिमानी ।।
प्रति प्रदार्थ में व्यापक जानूं । मान योग्य मैं उसको मानूं ।।
वही दिव्य व दिव्यता दायक । वह है उत्तम पथ का दर्शक ।।

दोहा– ऐसे नर निज शक्ति से, करते जग–उद्धार ।
स्वयं गहें वे स्वर्ग को, गुण गाता संसार ।।

अग्नि–भक्त जो यज्ञ रचाते । मंत्र–पाठ से श्रुति को गाते ।।
अनल–कृपा के इच्छा धारी । यज्ञी जो हों सत आचारी ।।
श्रद्धा से आहुतियाँ देते । अग्नि देव जो हँस हंस लेते ।।
दया, कृपा उस पर बरसाते । होता वैभव, सुख, धन पाते ।।
४६६ स्वेच्छा से हे इन्द्र ! चलाते । सब नर को सन्मार्ग बताते ।।
मानव का हित करने वाले । तस्य कष्ट को हरने वाले ।।
उपकारी में प्रमुख रहे हो । द्यौ में प्रशंसनीय हुए हो ।।
तव शुभ कर्मों को हम स्मरते । ओम नाम तव प्रति पल भजते ।।

दोहा– असुरों को तुमने किया, अपने बल से नष्ट ।
सुख सरिता का जल बहा, हरे हमारे कष्ट ।।

शत शत कारज करने वाले । जिसके गुण हैं श्रेष्ठ, निराले ॥
हव्य हमारा वह प्रभु पाए । हम को दर्शन देने आए ॥
ऐसा इन्द्र गहे बहु बल को । काटे कपटी राक्षस–दल को ॥
अन्न, सौख्य, धन वह बरसाए । कला, शान्ति, विद्या पनपाएँ ॥
इन्द्र प्रभो ! तुम भूपति, नभपति । सदगति, वरमति, नरपति, शुभमति ॥
अदृष्य, पर, ब्रह्माण्ड हिलाते । बिना नेत्र भी तुम लख पाते ॥
जन हित तुमने हैं वेद दिए । लभ्य सभी को बिन भेद किए ॥
रवि–प्रकाश ज्यों सब जन लेते । तथा ज्ञान धर जीवन खेते ॥

दोहा– कृपा करो हम भक्त पर, इन्द्र देव भगवान ! ।
माँगें भिक्षा जोड़ कर, सब का हो कल्याण ॥

इति अष्टमी दशतिः । द्वादशः खण्डः । इत्यैन्द्रं पर्व काण्डं वा समाप्तम् ।
इति चतुर्थो ऽध्यायः ।

कुंभ मेला उज्जैन में

लोक सेवाश्रम का शिविर

पिछले उज्जैन, हरिद्वार तथा प्रयाग कुंभ मेलों की भांति इस बार पुनः पुण्य सलिला क्षिप्रा के तट पर पावन तीर्थ उज्जयिनी में लोक सेवाश्रम, धन्तोली, नागपुर का शिविर लग रहा है। इस बार यह पर्व चन्द्र ग्रहण चै. शु. १५, दिनांक १६ अप्रैल से प्रारम्भ हो रहा है।

लोक सेवाश्रम शिविर में पूर्व की भांति धर्मार्थ औषधालय, स्वच्छ पानी के नल, बिजली की रोशनी, शौचालय आदि की व्यवस्था की गई है। मध्यप्रदेश और विदर्भ के यात्रियों के निवास के लिये भी शिविर में व्यवस्था है।

लोक सेवाश्रम के संचालक पं. विश्वम्भरप्रसाद शर्मा आश्रम के शिविर की आवश्यक तैयारियों के लिए उज्जैन पहुंच गये हैं। मध्यप्रदेश शासन की ओर से मेले में आने वाले लाखों यात्रियों के लिए सब सुख सुविधाओं की व्यवस्था की गई है।

समालोचना—

दयानंद दिग्विजय

लेखक-श्री धर्म मित्र "आर्य सेवक" पोस्ट मनीमाजरा, जि. अंबाला (पंजाब)

आकार-२०×३०,×८ पृष्ठ संख्या २२४, मूल्य ३.५०

महर्षि के अनेक जीवन चरित्र को पढ़ा, किन्तु इस पुस्तक का अपना विशेष महत्व है, जिसमें वैदिक सिद्धांतों पर महत्वपूर्ण जानकारी के साथ ही महर्षि के जीवन की घटनाओं पर प्रकाश डालकर सागर को गागर में बंद करने का लेखक महोदय का प्रयास सराहनीय है। गहरे अध्ययन के बाद लगन से पुस्तक लिखी है जो आकर्षक, अलंकृत, मधुर और मनोरंजन के साथ ही भाषा ओजस्वी एवं प्रभावोत्पादक है। पुस्तक सभी प्रकार से उपयुक्त और संग्रहनीय है जो भारतीय संस्कृति और महर्षि दयानन्द के विचारों की विश्व-विजय से परिपूर्ण है।

—सम्पादक

पं० हरिशंकर जी शर्मा का निधन

सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक तथा पत्रकार पंडित हरिशंकर शर्मा का ८ मार्च को आगरा में देहावसान हो गया। आपकी आयु ७७ वर्ष की थी। आपको कुछ समय से दिल का दौरा पड़ रहा था और अंतिम समय में दिल के दौरे से ही उनके प्राणान्त हुए।

पं० हरिशंकर शर्मा ने अपने दीर्घकालीन साहित्यिक जीवन में अनेक पत्रों का कुशल सम्पादन किया था। साथ ही में हास्य और व्यंग्य भी लिखा था। उनकी वह चर्चित "चहचहाता चिड़िया घर" आज हिन्दी के हास्य रस प्रधान साहित्य में बहुत ऊंचा स्थान रखती है। आपने अनेक वर्षों तक उत्तर प्रदेशीय आ. प्र. सभा का मुखपत्र 'आर्य मित्र' का कुशल सम्पादन किया और उसे उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

उनके निधन से हिन्दी जगत का एक और स्तम्भ टूट गया-जिसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है। आर्य जगत को उन पर गर्व था। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोकाकुल परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा	श्रीकृष्ण गुप्त	दिव्यानन्द सरस्वती
प्रधान	मंत्री	सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ

(पृष्ठ २ का शेष)

सब देवता जिसमें वास करने वाले हों, ऐसा रसायनभूत शांत तत्व ओंकार ही है। यही संक्षेप में समझना चाहिए कि त्रैलोक्य में स्थित सर्व वस्तु इसमें समाहित हैं उसी ओंकार को ध्यान में रख मानव ब्रह्म सामीप्य को प्राप्त कर सकता है। ओंकार महात्म्य को एकांत वातावरण पाकर प्रत्येक दिन प्रातःकाल विशुद्ध चित्त और शांत होकर जो मानव पाठ करता है, वह गुरू द्वारा बताये गये पथ से ब्रह्म प्राप्ति की ओर चलता हुआ नित्य अर्थ विचार के साथ ओंकार के जप से क्रमशः आध्यात्मिक उन्नति करता हुआ निश्चय ही अंत में प्रभु का सामीप्य प्राप्त कर लेता है। प्रतिदिन १०८ बार ओम का जप करना भी उत्तम बतलाया गया है। तथ्य यही है कि ओम उपासना ही मोक्ष का सीधा मार्ग है।

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में नये बालकों का प्रवेश

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग में नये बालकों का प्रवेश वार्षिकोत्सव पर १२ से १५ अप्रैल तक होगा। गुरूकुल की उपाधियां सरकार तथा अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हैं। आश्रम प्रणाली, शुद्ध जलवायु, उत्तम आचार व्यवहार इस संस्थाकी मुख्य विशेषताएं हैं। प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र तथा नियमावली आचार्य, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, जिला सहारनपुर से मंगाये जा सकते हैं।

१६२ व्यक्तियों को ईसाई होने से बचाया गया

रामानुजगंज के भोवरमाल ग्राम में ईसाईयों ने जाल बिछाकर सामूहिक रूप से १६२ व्यक्तियों को एक साथ ईसाई धर्म की दीक्षा देने का कार्यक्रम बनाया था। परन्तु ग्राम के सरपंच श्री चतुरीसाव तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों के साथ श्री स्वामी सत्यदेव जी आर्य प्रचारक ने उनका यह प्रयास …फल कर दिया।

आर्य समाज अकोला का निर्वाचन

श्री पानाचन्द जी	–	प्रधान
श्री जगवीरसिंह जी	–	उप-प्रधान
श्री शांतिकुमार जी	–	मंत्री
श्री डॉ. मानकर जी	–	उप-मंत्री
श्री रमेश बाबू	–	कोषाध्यक्ष
श्री सुरेन्द्र पाराशर	–	पुस्तकाध्यक्ष

महिला समाज गंजीपुरा जबलपुर का निर्वाचन

श्रीमती शकुन्तला वर्मा	–	प्रधाना
,, शान्ति देवी	–	उप-प्रधाना
,, दयावती शर्मा, M.A.	–	,,
,, कुसुम वर्मा, B.A.	–	मंत्राणी
,, शान्तिबाई साहू	–	उप-मंत्राणी
,, दुर्गाबाई राय	–	,,
,, कमला देवी	–	कोषाध्यक्षा

आर्य कुमार सभा, गंजीपुरा, जबलपुर का निर्वाचन

श्री बाबूलाल जी	–	प्रधान
,, केप्टन श्रीधरप्रसाद	–	उप-प्रधान
,, ओमप्रकाश श्रीवास्तव	–	,,
,, हरप्रसाद जी	–	मंत्री
,, ज्ञानेन्द्रकुमार जी	–	उप-मंत्री
,, ओमप्रकाश श्रीवास्तव	–	,,
,, घनश्यामप्रसाद पांडे	–	कोषाध्यक्ष

License No. 33, D/ 28-4-1965
Licensed to—
POST WITHOUT PREPAYMENT

३४. श्री. संस्थापकजी,
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला, जिला रोहतक (पंजाब)

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक–घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम. कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक–वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन–प्रत्येक अंग्रेजी मास की २ री तिथिको।

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, का बृहदधिवेशन

तथा

आर्य समाज, अकोला, का वार्षिक उत्सव

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ का, ६९ वां वार्षिक बृहदधिवेशन, १४ अप्रील १९६८ को, आर्य समाज, अकोला, में होगा जिसमें आगामी वर्ष के लिए सभा के पदाधिकारियों का निर्वाचन तथा प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचार की रूप-रेखा एवं आर्य समाजों की उन्नति के कार्यक्रमों पर विचार होगा।

इस अवसर पर आर्य समाज, अकोला, बड़े समारोहपूर्वक अपना वार्षिकोत्सव मना रहा है, जिसमें देश के अनेक आर्य नेता, विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। पं. नरेन्द्रजी हैदराबाद तथा कुंवर जोरावरसिंह भजनोपदेशक तथा उनकी धर्मपत्नी विदुषी श्रीमती प्रभावतीदेवीजी की स्वीकृति आ चुकी है। अन्य विद्वानों की स्वीकृति भी शीघ्र आने की संभावना है। प्रदेश की समस्त आर्य समाजों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में प्रतिनिधि अकोला भेजकर इस सुअवसर से लाभ उठावें।

शान्तिकुमार जाधव,
मंत्री,
आर्य समाज, अकोला, (विदर्भ)

अकोला
दिनांक ३० मार्च १९६८

वयं जयेम्

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ, का मासिक मुख पत्र

ओ३म्

आर्य सेवक

मई] आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ } नागपुर, बैशाख शुक्ल १ संवत् २०२५ शक संवत् १८८८, दयानन्दाब्द १४३ } वर्ष ६८ अंक ५ [१९६८

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् प्रजापते न त्व देतान्यन्यो, विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नो अस्तु, वयं स्याम पतयो रयीणाम ।।

ईश्वर ! तुमने ही जग जाया । भूगोलादि ब्रह्माण्ड रचाया ।।
और न कोई तुम सम व्यापक । धारक, पालक अरु संहारक ।।
आप न हमको तिरस्कृत करते । सर्वोपरि ! हम पर कर धरते ।।

दोहा

जिन चीजों की कामना, करें भक्त हम लोग ।
तेरे आश्रय को गहें, करने उनका भोग ।।

चौपाई

पूर्ण कामनाएं सब होएं । जन और न हम तत हित जोएं ।।१।।
धन, ऐश्वर्य के स्वामी बन । भोगें उनको जब तक यह तन ।।२।।
सिद्धि-दान दो दयालु ईश्वर । कल्याणी वर्षा हम पर कर ।।३।।

— श्रीकृष्ण गुप्त, सिध्दान्त रत्न

वार्षिक मूल्य सम्मानित – ५) साधारण – २) } सम्पादक – दिव्यानन्द सरस्वती { एक अंक पचीस पैसे

सभा की सूचना संख्या–२७५

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ

का

वार्षिक वृहदधिवेशन

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ का वार्षिक वृहदधिवेशन, रविवार, दिनांक १४ अप्रैल, १९६८ को मध्यान्ह में ४ बजे आर्य समाज, अकोला की व्यवस्था में अग्रसेन भवन, अकोला में सम्पन्न हुआ। सन् १९६८ के लिये सभा के निम्न लिखित पदाधिकारी व अंतरंग सदस्य निर्वाचित हुए—

पदाधिकारी

१.	प्रधान	– श्री विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा, नागपुर
२.	उप-प्रधान	– श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, नागपुर
३.	,,	– श्री शान्तिकुमार जी जाधव, अकोला
४.	,,	– श्री दालचन्द जी यादव, जबलपुर
५.	,,	– श्री बालकृष्ण जी चड्ढा, भिलाई
६.	मंत्री	– श्री श्रीकृष्ण जी गुप्त, नागपुर
७.	उप-मंत्री	– श्री संगतराम जी आर्य, नागपुर
८.	,,	– श्री चन्द्रकान्त जी वर्मा, जबलपुर
९.	,,	– श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव, भिलाई
१०.	,,	– श्री ठा. धर्मदेवसिंह जी, पूसद
११.	कोषाध्यक्ष	– श्री जयसिंह जी गायकवाड़, सिहोरा
१२.	पुस्तकाध्यक्ष	– श्री मल्हारराव जी माथनकर, नागपुर

अंतरंग सदस्य

१. श्री शिवराम जी बक्शी, जबलपुर
२. श्री देवीदयाल जी पुरंग, कोतमा
३. श्री प्राणनाथ जी कुमार, जबलपुर
४. श्री राजाराम जी तिवारी, छिन्दवाड़ा
५. श्री विश्वनाथराव जी गणकर, अमरावती
६. श्री मोहनलाल जी मेहता, नागपुर
७. श्री बिहारीलाल जी सीरिया, इटारसी
८. श्री सुकुमार जी पगारे, गुरुकुल होशंगाबाद
९. श्रीमती यशोदादेवी जी, अकोला
१०. श्रीमती शकुन्तलादेवी जी, जबलपुर
११. कुमारी पद्मावती गायकवाड़, जबलपुर
१२. श्री कांतिलाल जी वर्मा, आकोट
१३. श्री गुलाबचन्द जी बंसल, भिलाई

श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्त रत्न,
मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ।

दयानन्द भवन, नागपुर
दिनांक २०-४-१९६८

ओ३म्
मई **आर्य-सेवक** १९६८

आर्य संवत्सर १,९७,२९,४९,०६८ | नागपुर, बैशाख शुक्ल १, संवत् २०२५ दयानन्दाब्द १४३ | वर्ष–६८ अंक– ५

आर्यसमाज का स्थापना दिवस

हिंदुओं का एक मजबूत मंच बनाया जाय

आर्यसमाज के ९३ वें स्थापना दिवस पर, ३१ मार्च ६८ को, अजमल खां पार्क, नई दिल्ली में विशाल जन-समूह के सामने भाषण देते हुए श्री बलराज मधोक ने कहा, कि आर्यसमाज एक ऐसा मंच है जिस पर हिंदु मात्र अपने राजनीतिक तथा अन्य मतभेद भुलाकर एक हो सकता है।

उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि भूतकाल में ऐसे प्रयास अन्य संस्थाओं के माध्यम से सफल नहीं हो सके। उन्होंने हिंदु सभा की ओर इशारा करते हुए कहा कि कांग्रेस के राजनीति में हावी होने के कारण वह सर्वथा इस कार्य में सफल न हो सकी। उन्होंने यह आशंका भी व्यक्त की कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी हिंदुओं में पूरी एकता स्थापित करने में सफल नहीं हो रहा, उस पर जनसंघ हावी है।

संसद सदस्य श्री हेमराज ने अपने भाषण में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें इस नाजुक समय में जन-जातियों में जाकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने इस बात की बड़ी आवश्यकता बतायी कि राष्ट्रविरोधी तत्व वहां पर बड़े पनप रहे हैं।

संसद सदस्य एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रामगोपाल शालवाले ने उपस्थित जनसमुदाय को याद दिलाया कि १९७५ में आर्यसमाज की स्थापना को सौ वर्ष पूरे हो चुके होंगे। तब तक हमें पांच करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य पूरा करना है, साथ ही उन्होंने राष्ट्र की एकता बनाये रखने के लिए हिंदी को राष्ट्रभाषा पद से हटाने का कुचक्र सफल न होने देने की अपील की।

संसद सदस्य श्री हरदयाल देवगुण ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि हिंदुओं में कोई संगठित 'चर्च' इस्लाम और ईसाइयत की तरह नहीं। उन्होंने कहा कि यदि चारों शंकराचार्य भी आर्यसमाज के साथ देश के प्रति इसी प्रकार संगठित रूप में कार्य करें तो देश का बड़ा हित हो सकेगा।

सभा की अध्यक्षता आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री उदयवीर शास्त्री ने की। श्री के. नरेंद्र, संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री और श्री शरद ने भी इस अवसर पर भाषण किये।

भारत पर ईसाई पादरियों का प्रकोप

[श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा, नागपुर]

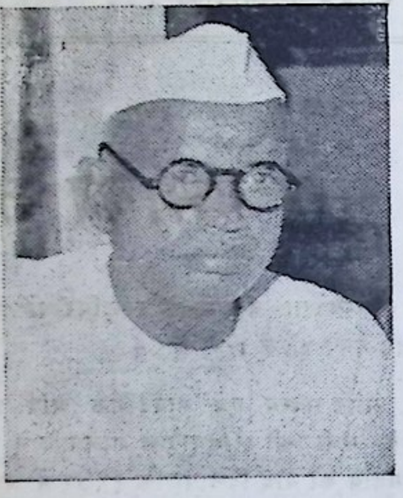

सन् १८५७ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष मि० मेंगरस ने इंग्लेण्ड की पालियामेण्ट में कहा था, "परमात्मा ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंगलिस्तान को सौंपा है ताकि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसामसीह का झंडा फहराने लगे। हममें से प्रत्येक को अपनी शक्ति इस कार्य में लगा देनी चाहिये ताकि समस्त भारत को ईसाई बनाने के महान कार्य में देश भर के अन्दर कहीं पर किसी कारण जरा भी ढिलाई न होने पाये।" लार्ड मैकाले ने भारत में अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य करने के समय यह भावना व्यक्त की थी--"भारत को ईसाई बनाने के निमित्त यह आवश्यक है कि हम उस देश में एक ऐसी श्रेणी उत्पन्न कर दें जो रंगरूप की दृष्टि से भले ही हिन्दुस्तानी हो परन्तु जो अपनी रुचि, भाषा, भाव एवं आचरण से पूर्णतः ईसाई हों।" प्रभु की अनुकम्पा से १८५७ के बाद भारत में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राम मोहन राय जैसी विभूतियां पैदा हुईं। उन्होंने हिन्दुओं में उनके धर्म और संस्कृति के प्रति अखण्ड निष्ठा उत्पन्न की और पादरियों तथा मैकाले के भारत को ईसाई बनाने के सुख स्वप्न अधूरे ही रह गये। परन्तु स्वराज्य होने के बाद जब कांग्रेस के हाथ में देश के शासन की बागडोर आई तो उसने धर्म निर्पेक्षता के नाम पर हिन्दुत्व की उपेक्षा शुरू कर दी। ईसाई धर्म को बढावा दिया और ईसाई पादरियों को सब प्रकार की सुविधाये देकर हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन करने का प्रोत्साहन दिया।

ईसाइयों की जनसंख्या वृद्धि

कांग्रेस सरचार को धर्मनिर्पेक्ष तथा हिन्दू धर्म विरोधी नीति के फलस्वरूप स्वराज्य प्राप्ति के बाद ईसाई पादरी भारतवर्ष में छा गये और जगह-जगह अपने गिरजाघर और प्रचार केन्द्र स्थापित करके गरीब और विशेषतः आदिवासी तथा निचले वर्ण के हिन्दुओं को नाना प्रकार के प्रलोभनों द्वारा ईसाई बनाने लगे। अमरीका ने इस कार्य के लिए खूब धन दिया। सन् १९४७ के पहले भारत में विदेशी पादरियों की संख्या १०६८ थी परन्तु ८ दिसम्बर १९६४ को राज्य सभा में बताया गया कि भारत में राष्ट्रमण्डलीय देशों को छोड़कर भारत में अन्य देशों की ईसाई मिशनरियों की संख्या ६८८७ थी। इसमें अकेले अमरीका के २३७१ पादरी थे। यूरोप के अनेक देश तथा अमरीका भारत में ईसाई धर्म के प्रचार के लिये करोड़ों रुपया सहायता देता है। १३ दिसम्बर ५८ को लोक सभा में सरकार की ओर से बताया गया कि पिछले ढाई वर्षों में बाहर से ईसाई मिशनरियों को २६.२७ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। इस में २०.६८ करोड़ रुपया अकेले अमरीका का था। इसके अलावा करोड़ों रुपये की खाद्य सामग्री तथा वस्त्र एवं अन्य चीजें अमरीका से आती हैं। भारत सरकार ईसाई मिशन के स्कूलों व अस्पतालों को लाखों रुपया वार्षिक अनुदान देती है। इन स्कूल, कालिजों और

मध्यप्रदेश सरकार

बलात् ईसाई बनाने के विरुद्ध नया कानून बनायेगी

जबर्दस्ती धर्मान्तर दंडनीय अपराध होगा

उप-मुख्यमंत्री व गृहमंत्री श्री वीरेन्द्रकुमार सकलेचा ने पत्रकारों को बताया कि मध्यप्रदेश सरकार आदिवासियों व हरिजनों का बलात् व प्रलोभनों द्वारा ईसाई बनाया जाना रोकने हेतु राज्य विधान सभा के आगामी सत्र में एक नये कानून का विधेयक उपस्थित करेगी।

श्री सकलेचा ने कहा कि प्रस्ताविक विधेयक तैयार किया जा रहा है और वह नियोगी आयोग के सुझावों पर आधारित होगा। नियोगी आयोग का प्रतिवेदन अभी भी मध्यप्रदेश के सन्मुख है।

उन्होंने कहा कि उडीसा सरकार ने ईसाई मिशनरियों के कार्यकलाप पर हाल ही में जो विधेयक पारित कराया है उसकी प्रति भी मध्यप्रदेश सरकार ने प्राप्त कर ली है और अधिकांशतया उसी प्रकार अपना विधेयक प्रस्तुत करेगी।

श्री सकलेचा ने कहा कि विधेयक में आदिवासियों व हरिजनों के बलात् ईसाई बनाये जाने के मामलों को दंडनीय अपराध माना जायगा तथा पुलिस को बलात् धर्मान्तरों की सभी शिकायतों की जांच करने एवं अपराधियों के विरूद्ध फोजदारी कार्यवाही करने का अधिकार दिया जायगा।

केंद्र सरकार का विरोधी रुख

मध्यप्रदेश के उप-मुख्यमंत्री ने खेद प्रकट किया कि केन्द्र सरकार इस समस्या के प्रति अत्यंत उदासीन अपितु असहयोगी है और राज्य सरकारों को इस प्रश्न से निपटाने की स्वतंत्रता नहीं देती। ★

अस्पतालों से निस्संदेह बड़ी सेवा होती हैं परन्तु उनके पीछे हिन्दुओं को ईसाई बनाने का भी मुख्य उद्देश्य रहता है। ५० वर्ष पहले भारत में कुल ७० लाख ईसाई बने परन्तु स्वराज्य प्राप्ति के बाद २० वर्षों में ईसाइयों की संख्या लगभग दो करोड़ हो गई। ईसाई मिशनरी सेवा के नाम पर वनवासियों को, हरिजनों को, धड़ाधड़ ईसाई बना रहे हैं। हिन्दू धर्म के परिवर्तन के साथ ईसाई बनने वालों में भारत की राष्ट्रीयता की भी कमी होने लगती है। उनमें पृथकता की भावना जागृत हो जाती है और वे भारत की प्रभुसत्ता के विरुद्ध कार्य करते रहते हैं। आसाम में नागालैण्ड बन गया और अब मिजो लोग विद्रोह कर रहे हैं तथा अपने पृथक राज्य की मांग कर रहे हैं। बिहार और मध्य प्रदेश में ईसाईयों का प्रकोप बुरी तरह बढ़ रहा है। यही हालत महाराष्ट्र की है। गत २० वर्षों में असम में ईसाई जनसंख्या ५६ ८६ प्रतिशत बढ़ी। मध्य प्रदेश में १३७ ४७, राजस्थान में १००.६०, अण्डमान निकोबार में ८९ ३१, मणिपुर में १२०, त्रिपुरा में ९१, सिक्किम में ८२५, द्वीप समूह में २७०० प्रतिशत ईसाइयों की संख्या बढ़ी। ✲

विदेशी पादरियों से सावधान

आर्य समाज खंडवा की साधारण सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर मध्यप्रदेश शासन से प्रार्थना की हैं कि–जिस प्रकार उड़ीसा की सरकार ने हिन्दुओं को ईसाई बनाना अवैध घोषित कर दिया है उसी तरह मध्यप्रदेश शासन भी बलात् धर्म परिवर्तन को अवैध घोषित करे।

आज देश को विदेशी पादरियों से सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि ये, गरीब और भोले भाले ग्रामीणों को न केवल ईसाई बनाते हैं बल्कि उनमें राष्ट्र विरोधी भावनाएं भी भरते हैं। नागालेण्ड की समस्या हमारे सामने है। अतः पादरियों पर कड़ी नजर रख कर उन्हें भारत छोड़ने के लिये बाध्य किया जाय। साथ ही राजस्थान सरकार की तरह पादरियों द्वारा उपहार बांटने पर प्रतिबन्ध लगाया जावे।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, का बृहदाधिवेशन तथा अकोला आर्य समाज का वार्षिक उत्सव

दि. १२, १३, १४ अप्रैल ६८ को अकोला में आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ का बृहद-धिवेशन तथा अकोला समाज का वार्षिक उत्सव समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। समाज मंदिर के प्रागण में विशाल मंडप बनाया गया था। मंदिर की भव्य यज्ञशाला में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, प्रार्थना, भजन उपदेशक का कार्यक्रम हुआ करता था। दिनांक १३ को प्रातःकाल श्री दयानन्द वैदिक वाचनालय का उद्घाटन समारंभ श्री विनयकुमारजी पाराशर, नगरपालिका अध्यक्ष, अकोला, के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ, वाचनालय में उपयोगी प्राचीन ग्रंथों का विशेषकर वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ आदि का उत्तम एवं सराहनीय संग्रह है जिससे वैदिक धर्म प्रेमी के अतिरिक्त इतर जनों को भी जो स्वाध्याय में रुचि रखते हैं, सुविधा हो गई है।

अतिथियों को ठहरने एवं भोजन का प्रबंध नवनिर्मित अग्रसेन भवन, में बड़े ही सुचारु रूप से किया गया था। इसका प्रबंध अकोला आर्य समाज के अधिकारियों ने लगन और उत्साह के साथ किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा की बैठकों का प्रबंध भी अग्रसेन भवन में ही था। दि. १३ को प्रदेशीय अंतरंग सभा की बैठक २ बजे से ५-३० तक चलती रही। दि. १४ को आर्य कुमार सभा तथा आर्य वीर दल नागपुर की ओर से प्रदेशीय आर्य युवक सम्मेलन श्री जयसिंह गायकवाड़ एम. ए. की अध्यक्षता में २-३० से ४ बजे तक चलता रहा जिसमें अनेक विद्वान वक्ताओं के ओजस्वी व्याख्यान हुये। तदुपरान्त व्याख्यान केसरी पं. पन्नालालजी व्यास का स्वागत सभा की ओर से किया गया और उसके बाद शीघ्र ही सभा का बृहदधिवेशन ४-३० बजे शाम से रातके ८ बजे तक चलता रहा जिसमें बाहर से लगभग ५० प्रतिनिधि पधारे थे। प्रतिनिधियों के अतिरिक्त अन्य महानुभावों ने भी भाग लिया था जो प्रतिनिधि न होते हुये भी अपने सुझाव और विचार सभा को देते रहे। सभा में वर्ष १९६८ के लिए पदाधिकारियों एवं अंतरंग सदस्यों का निर्वाचन किया गया। निर्वाचन इसी अंक में दिया गया है।

सार्वजनिक सभा का आयोजन

१४ अप्रैल को, कॉटन मार्केट के मैदान पर एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभा प्रधान पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा ने अपने ओजस्वी भाषण में वर्तमान शासन के सूत्रधारों की स्वार्थपरता का विराट वर्णन किया।

गौ रक्षा

श्री शर्मा जी ने कहा कि लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी गोरक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्हीं के नाम पर चुने गये कांग्रेस शासकों ने, देहली में १० लाख गोरक्षार्थ अहिंसात्मक प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं और आरोप लगाया कि ये हिंसावादी हैं। अल्प बुद्धि यह समझ सकता है कि हिंसा करने वाले होते तो डेढ़ लाख महिलाएं अपनी गोद में बच्चा लेकर वहां नहीं आतीं। आपने कहा कि राम और कृष्ण के इस देश में आज की संसद में एक भी प्रतिनिधि नहीं जो वर्तमान शासकों की भारतीय दृष्टिकोण से कटुतम आलोचना करे। सभी विदेशी रंग में रंगे हुए हैं।

आर्यसमाज एक वैचारिक क्रांति

शर्मा जी ने कहा कि आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा चलाई गई एक वैचारिक क्रांति है, जिसका एकमात्र ध्येय वैदिक संस्कृति की रक्षा करना है। आपने कहा कि बुद्धिपूर्वक यदि कोई धर्मान्तर करता है तो हमें आपत्ति नहीं है लेकिन किसी भी प्रकार के लालच से या बीमारी में चिकित्सा के लिए मजबूर होकर धर्मान्तर करता है तो स्वतंत्र भारत में शासन के लिए लज्जा की बात है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेद मूर्ति पं. सातवलेकर जी का दिल्ली में भव्य नागरिक अभिनन्दन

५१ हजार रुपया भेंट करने की घोषणा

"जीवेम शरदः शतम्" के वैदिक आदर्श को जीवन में प्रत्यक्ष करने वाले तथा राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित ब्रह्मर्षि सातवलेकर जी का फुटबाल स्टेडियम (दिल्ली गेट) में भव्य अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर राजधानी के प्रमुख पत्रकार, साहित्यिक तथा राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्वेत वस्त्रों में आवेष्ठित वेदों के मर्मज्ञ सातवलेकर जी जिस मंच पर आसीन थे उसके पीछे पुष्पों से ओम् बना हुआ था। अभिनंदन समारोह म नवभारत टाइम्स के प्रधान सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन, दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा, राज्यसभा के लिए दिल्ली से निर्वाचित डा. महावीर उपस्थित थे।

पंडित सातवलेकर अभिनंदन समारोह समिति, दिल्ली की सहयोगी संस्थाएं थीं—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महाराष्ट्र सूचना केंद्र (महाराष्ट्र राज्य), दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली प्रादेशिक रामायण सत्संग मंडल, भारत विकास परिषद तथा भारतीय साहित्य परिषद।

काशी के श्री विश्वनाथ देव के वेद संहिता पाठ के उपरांत महापौर श्री हंसराज गुप्त ने स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा पंडित सातवलेकर को पद्मभूषण उपाधि देने के अवसर पर राजधानी आगमन पर उनके स्वागत का अवसर हमें मिल पाया है। सातवलेकर जी वैदिक जीवन के साक्षात् प्रतीक हैं।

डा. झा के स्वरचित श्लोक

समारोह के अध्यक्ष उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा ने इस अवसर पर प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ वेदमूर्ति पं. सातवलेकर जी को अर्पित किया। उप-राज्यपाल ने श्री सातवलेकर जी के अभिनंदन में स्वचरित संस्कृत श्लोकों का वाचन किया।

अनेक संस्थाओं की ओर से श्री सातवलेकर जी को पुष्पमालाएं अर्पित की गयीं। श्री अक्षयकुमार जैन, श्री मौलिचंद्र शर्मा, श्री मंडन मिश्र ने उन्हें मालाएं पहनायीं। भारतीय साहित्य परिषद की दिल्ली शाखा के अध्यक्ष प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार जैन ने पुष्पमाला भेंट की।

श्री मौलिचंद्र शर्मा ने कहा कि सातवलेकरजी को देख कर लगता है कि ऋषि परंपरा जीवित है और वैदिक संस्कृति अक्षुण्ण रहेगी। संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने उन्हें २० वीं शताब्दी का महर्षि बताया।

श्री जैनेन्द्रकुमार ने कहा, उनके रूप में जीवन का आदर्श साकार हो उठा है। एकनिष्ठ-एकाग्र अध्यवसाय उनके जीवन का ध्येयवाक्य है। मरण को उन्होंने अनंत तक चुनौती देने की ठानी है। हमारे स्वर्णिम भविष्य का निर्माण प्राचीन के प्रति निष्ठा रखने से ही हो सकता है।

तरुणों के साथ

सरसंघ चालक श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर प्रमुख वक्ता थे। उन्होंने कहा, श्री सातवलेकर जी का संघ से पुराना एवं घनिष्ठ संपर्क रहा है। एक बार पंडितजी संघ के प्रांतीय शिविर में आये तो युवकों एवं प्रौढ़ों ने पृथक-पृथक स्थलों पर मिलन किया। ढूंढ़ने पर पता चला कि वह युवकों के साथ सूर्य नमस्कार कर रहे थे। पूछने पर कहने लगे—मैं तो तरुण हूं, फिर इनके साथ क्यों न रहूं।

उस समय सातवलेकरजी लगभग ८० वर्ष के 'तरुण' थे।

स्वयं के लिए वह दो संदेशों का पाथेय लेकर चले हैं--प्रथम चिर यौवन, दूसरा कभी निराश न होना, क्रांतिकारी होने से उन पर अनेक संकट आये, पर उनकी कर्मशीलता निरंतर बनी रही, १९४८ में गांधीजी की हत्या के उपरांत फैले सामूहिक पागलपन में उनको भारी नुकसान पहुंचा, उनके द्वारा स्थापित स्वाध्याय मंडल को भी उजड़ना पड़ा। पर जैसे शून्य शून्य से समस्त जगत का बार बार विकास होता है-- उन्होंने ज्ञान की उपासना का क्रम जारी रखा। आत्मविश्वासयुक्त, निराशारहित, कठोर धार्मिक जीवन ही उनकी निधि है।

गुरुजी ने कहा, सातवलेकरजी ने महर्षि दयानंद की परंपरा में वेदों का उद्धार किया है। दीर्घजीवी, कर्मशील, संपन्न, सेवारत राष्ट्र का निर्माण उनका ध्येय है और इसके लिए हमें सहयोग तथा आर्थिक सहायता द्वारा उनके स्वाध्याय मंडल की सहायता करनी चाहिए।

इस अवसर पर उन्हें ५१ हजार रुपये की राशि भेंट करने की घोषणा महापौर श्री हंसराज गुप्त ने की। धन्यवाद-अभिनंदन समिति के संयोजक श्री वसंतराव ओक ने किया।

वेद ही मेरे प्राण और जीवन हैं, वेदों के साथ मेरा तादात्म्य संबंध है--इन शब्दों के साथ १०१ वर्षीय वेदमूर्ति पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ने दिल्ली के नागरिकों द्वारा किये गये नागरिक अभिनंदन के प्रति आभार प्रकट किया। ※

विराट गोरक्षा सम्मेलन

महा कुम्भ मेला उज्जैन के शुभ अवसर पर दिनांक ९-१०-११ मई १९६८ को, सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति की ओर से, रुद्रसागर, हरसिद्धि मैदान, उज्जैन में विराट गोरक्षा सम्मेलन, जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ, गोवर्धन मठ, पुरी की अध्यक्षता में होगा। इस अवसर पर महाभियान की सर्वोच्च समिति तथा कार्यसमिति की बैठकें भी होंगी।

(पृष्ठ ६ का शेष)

अन्य विद्वानों के भाषण

सभा में श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, श्री मुले शास्त्री, श्री रामनारायण जी बक्षी आदि अनेक विद्वानों के भारतीय संस्कृति रक्षार्थ भाषण हुए। सभा में हजारों नर-नारियों ने करतलध्वनि के बीच नेताओं के भाषण सुने। इस अवसर पर जबलपुर की भजन मंडली ने सुमधुर संगीत द्वारा श्रोताओं का मन मोह लिया।

इस समस्त आयोजन को सफल बनाने में आर्यसमाज अकोला के उत्साही मंत्री, श्री शांतिकुमार जाधव तथा समाज के अन्य पदाधिकारियों ने अथक प्रयास किया।

आर्य समाज अकोला का वार्षिक उत्सव एवं आर्य प्रतिनिधि सभा का बृहदअधिवेशन

व्यय का लेखा

९८७=०७	भोजन खर्च
७०=००	मंडप किराया
१४४=००	लाऊड स्पीकर किराया
२०=००	कॉटन मार्केट किराया
२३२=१०	अग्रसेन भवन, बर्त्तन, दरि, गादी आदि का किराया
१२०=००	छपवाई तथा प्रचार
५३=८३	पोस्टेज व स्टेशनरी
८५=००	मजदूरी खर्च
२९=२५	पुष्पहार
१०२=९७	रिक्षा, गाड़ीभाड़ा व हात ठेला किराया
२२०=००	अतिथि दक्षिणा तथा मार्ग व्यय
९०=३६	चिल्लर खर्च
६२=००	फोटो खर्च
२,२१६=५८	

शांतिकुमार — मंत्री
पानाचंद डायाभाई — प्रधान
नथमल वर्मा — स्वागताध्यक्ष

आर्य समाज, अकोला।

सार्वदेशिक सभा से अपील–

हमारा दृश्य–श्राव्य प्रचार

श्री जयसिंह गायकवाड़, विकास अधिकारी, सिहोरा (म. प्र.)

मध्यप्रदेश की आर्य समाजों के प्रधान व मंत्रियों का सम्मेलन गत दिनों हुआ था। अनेक प्रस्तावों में से एक निम्नलिखित प्रस्ताव भी पारित किया गया–

"आर्य समाज दृश्य–श्राव्य (आडो विजुयल) प्रचार क्षेत्र में अग्रसर हो, इसलिए आवश्यक है कि कुछ अच्छे रिकार्ड और छोटी छोटी फिल्में तैयार की जावें। इसके लिए सार्वदेशिक सभा से निवेदन किया जावे।"

वर्तमान युग के सन्दर्भ में हमें अपनी प्रचार प्रणाली पर विचार करना होगा। क्यों कि प्रचार के क्षेत्र में हम आगे नहीं पीछे जा रहे हैं। हमारी प्रचार प्रणाली सदियों पुरानी हो गई है। यदि हम समय के साथ नहीं चले ता दौड़ में हम जितने पीछे चल रहे हैं उतना और पीछे होते जावेंगे। यदि हमें समय के साथ चलना है तो दृश्य श्राव्य प्रणाली को अपनाना होगा। इस सम्बंध में हमें अच्छी छोटी छोटी फिल्में बनानी होंगी। अच्छे अच्छे रिकार्ड बनवाने होंगे। इन रिकार्डों में जहां संगीत के उत्कृष्ट उदाहरण होंगे वहां उत्तम भाषण भी होंगे।

आर्य समाज के क्षेत्र में ओजस्वी वक्ताओं का बाहुल्य रहा है। प्रभु की कृपा बनी रहे और आगे भी हमें इसी प्रकार का योग प्राप्त होता रहे परन्तु प्रत्येक विद्वान की, वक्ता की, कथाकार की अपनी शैली होती है, अपना ढंग होता है। आवश्यक नहीं कि वह शैली बाद वाले महानुभाव में प्राप्त हो जावे। हम आज स्वामी वेदानन्द जी महाराज, स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. रामचन्द्र देहलवी की वाणी को कहां प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकों में तो बहुत लिखा हुआ है परन्तु वह उस शैली में नहीं है जो कान के माध्यम से प्रभाव उत्पन्न कर सकता हो। हमारी बड़ी बड़ी सभाएं हैं और साधन सम्पन्न समाजें भी। यदि एक एक संस्था ने किसी एक एक महानुभाव के कुछ व्याख्यानों को टेपरिकार्ड करवा लिया होता तो हम उन व्याख्यानों से सदा लाभ उठा सकते थे। पर सुबह का भूला हुआ शाम तक घर आ जावे तो भूला हुआ नहीं कहा जाता। शायद हम भूला हुआ कहलाना पसन्द नही करेंगे।

पिछले दिनों पढ़ा था कि श्री आनन्द स्वामी महाराज के कुछ भाषण टेपरिकार्ड किए गए हैं। गत दिनों स्वामी जी महाराज जबलपुर पधारे तो स्थानीय एक उत्साही कार्यकर्ता श्री बख्शी जी सी. जी. ओ. के प्रयासों से हमने एक भाषण टेपरिकार्ड किया। वैसे श्री बख्शी जी ने कुछ और भी सामग्री टेपरिकार्ड कर रखी है। सम्भव है कि इस प्रकार की बहुमूल्य सामग्री अन्यत्र भी टेपरिकार्ड की गई हो पर हम उसका परस्पर लाभ नहीं उठा सक रहे हैं।

दृश्य श्राव्य प्रणाली खर्चीली है। उलझनपूर्ण है। इसके लिए विशेष व्यवस्था करनी होती है। परन्तु इसकी प्रभावोत्पादकता, उपयोगिता आदि के बारे में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। प्रश्न यह है कि इस ओर किस प्रकार अग्रसर हुआ जावे। इसके लिए अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन योजनाएं बनाकर हमें आगे बढ़ना होगा।

प्रारम्भ तो इस प्रकार हो सकता है कि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में एक दृश्य श्राव्य सैल (इकाई) की स्थापना की जावे। वर्तमान में उपलब्ध सामग्री की जानकारी संग्रह की जावे। जहां कहीं पर भी टेपें, रिकार्ड, फिलमस्लाइड्स आदि बनाई गई हैं या उपलब्ध हैं उसकी जानकारी इस सैल से प्राप्त

होवे। यह सामग्री उधार या विनिमय या बिक्री पर कहां से प्राप्त हो सकती है, यह इच्छुक व्यक्ति सभा कार्यालय से जान सके। इस स्तर पर सभा से केवल पत्र व्यवहार ही हो सकेगा।

दूसरे, सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभाएं, समाजें एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति कुछ इस प्रकार की सामग्री का उत्पादन करें। आरंभ में ५-५ भाषण प्रतिसंस्था टेप रिकार्ड करा लेवें। यह कार्य न बहुत मंहगा है और न बहुत उलझन पूर्ण। इसकी लाइब्रेरी सार्वदेशिक स्तर पर तैयार हो सकती है जिससे समाजें लाभ उठा सकेंगी। इसी प्रकार प्रसिद्ध भजनोपदेशकों, सगीतज्ञों आदि के द्वारा सुरीले भजन, गीत आदि को भी टेप या रिकार्ड किया जा सकता है। इनका न केवल समाज के क्षेत्र मे अपितु सामान्य जनता के क्षेत्र में भी उपयोग हो सकेगा।

फिल्म स्लाइडों के द्वारा प्रचार कार्य न्यूनाधिक रूप में चल रहा है। आवश्यकता है इनकी संख्या में वृद्धि हो तथा मांग पर ये उपलब्ध होवें।

रहा प्रश्न फिल्मों का। एक दीर्घकालीन योजना बनाकर बढ़ना होगा। कुछ अच्छे एकांकी तैयार कराने होंगे। मध्यप्रदेश प्रतिनिधि सभा के द्वारा एक अखिल भारतीय एकांकी लेखन प्रतियोगिता आयोजित करने का विचार किया जा रहा है। एकांकियों में आवश्यक नहीं है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रभृति व्यक्तियों को पात्र बनाया जावे। इसमें पात्र कल्पित होवें तो स्वांग भरने की बात भी नहीं आवेगी। सिद्धान्त की रक्षा हो सकेगी। इस प्रकार यदि कुछ अच्छी कहानियां प्राप्त हो जावें तो उनकी छोटा छोटा फिल्में या रेडियो प्लेट बनाए जा सकते हैं और कालान्तर में पूरी लम्बाई की फिल्में बनाने की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

मेरे विनम्र मत में जब तक हम १९७५ में आर्य समाज शताब्दी मनाने के लिए प्रस्तुत होवें तब तक हमारे पास एक खासी लाइब्रेरी इन सब दृश्य श्राव्य साधनों की हो जानी चाहिए।

हमारे सामने एक उदाहरण है—ईसाई संस्थाओं के तत्वावधान में चल रहे क्रिश्चियन एसोसियेशन आफ रेडियो एण्ड आडो विजुयल सर्विस (CARAVS) का। इस संस्था ने न केवल एक बड़ी लाइब्रेरी बना ली है अपितु वह 'संगम' के नाम से रेडियो अडिस अबाबा से अपने कार्यक्रम भी प्रस्तुत करती है। वैसे हम उनसे सम्भवतः कभी प्रतियोगिता नहीं कर पावेंगे पर यदि उपरोक्त अनुसार यदि हम आगे बढ़े तो अपनी प्रचार प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर संसार की दृष्टि में अग्रगामी होंगे और विश्व समाज में अपना कुछ स्थान बना सकेंगे।

आपस की फूट से कौरव पांडव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा।

—सत्यार्थ प्रकाश

जीवन सुखी बना लो !

श्री विनयकुमार पाठक, पत्रकार, बिलासपुर (म. प्र.)

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय-तृतीय समुल्लास के अंतर्गत-संतानों की शिक्षाओं के बारे में माता पिता का कर्त्तव्य, पठन-पाठन व्यवस्था, ब्रह्मचर्य, सत्य-सत्य ग्रथों का नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति बतलाई गई है। माता का प्रसूति गृह स्वच्छ, मनोरम, हवादार और प्रकाशयुक्त होना चाहिये। माता का स्वास्थ भी भली भांति उत्तम दिनचर्या से युक्त, पौष्टिक पदार्थों का सेवनादि से परिपूर्ण हो जिससे कम से कम बालक एक वर्ष तक तो मां से दूध का पान कर सके। बच्चों को सुस्वादिष्ट और हल्का भोजन, ढीला-ढाला वस्त्र ही उत्तम है। नित्य समय पर उसकी व्यवहारिक चीजों का बन्दोबस्त होना श्रेयष्कर है। बालक के कुछ बड़े हो जाने से उस पर उचित संस्कार डालने चाहिए जिससे ज्ञान की परिपक्वता में सहायता मिलती है एवं उसके जीवन पर भी काफी सुखद प्रभाव पड़ता है। बालक के सत्संगति पर आवश्यक दृष्टिपात कर ज्ञान-विज्ञान की बातें; शिक्षाप्रद कहानियां आदि बताकर उन्हें मनोवैज्ञानिक व्यापकता देनी चाहिये। जो माता-पिता बालकों को जरा भी स्वतंत्रता दे देते हैं, वे बालक के दुश्मन ही हैं। क्यों कि—

माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित:।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा ।।

पुत्र को भी माता-पिता के प्रति काफी श्रद्धा की भावना रखनी चाहिये। तुलसीदास जी ने कहा हैं—

सुनु जननी सोई सुत बड़ भागी।
जो पितु-मातु बचन अनुरागी ।।

जब से संसार की यह सृष्टि हुई है, तब से यह परम्परा है कि मानव अपने समस्त अनुभवों के द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है एवं अपनी भावी पीढ़ियों को उससे अवगत कराते रहता है। हंस ही मोती को चुग पाता है, कौआ नहीं-कहावत के अनुसार कोई उस मार्ग पर चल कर इच्छित फलों को प्राप्त कर सुखमय जीवन व्यतीत करता है और दूसरा कुमार्ग पर जाकर दुखों को भोगता है, इसीलिये सन्मार्ग का पाठ पढ़ाना चाहिये, फैशनादि से उन्हें बचाना चाहिये। एक शेर है—

न फैशन मस्त बनने से किसी का काम चलता है ?
कभी नकली दरख्तों पर कहीं क्या फूल खिलता है ?
कभी उद्धार भारत का न हो फैशन परस्तों से--
कभी क्या नकलबाजों से जमाना भी बदलता है ?

फैशन ही मानव में दुर्बलता, संशय व आलस्य रोग को जन्म देता है और धीरे २ सारे शरीर पर छा जाता है। फैशन के इस भूत से सतानों को बचाना चाहिये। बालक को जन्म से ही कुछ अधिकार एवं सम्मान देकर उसका उत्साह बढ़ाना चाहिये। उसके सुकोमल भावनाओं पर घात-प्रत्याघात जरा भी न करें, नहीं तो उसका प्रभाव उस पर इतना पड़ सकता है कि फिर बालक का खिलवाड़ पिता का बिगाड़ होता है।

बिना पठन-पाठन के मानव-उन्नति संभव नहीं है। ठीक ही कहा गया है—

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं भोग संसिद्ध काले नात्मानिविदति ।।

आठ वर्ष के बालक और बालिकाओं को यथा-योग्य यज्ञोपवीत के द्वारा शुद्ध कर पाठशाला में भेजना चाहिए। "बिन गुरू मिलहिं न ज्ञान" के अनुसार सच्चे निस्वार्थी गुरू के पास बालक को उसके आधीन कर देना चाहिये। पाठशाला का एकान्त वातावरण में कोलाहल रहित होना ही उत्तम होगा। उन्हें उचित शिक्षा का पाठ पढ़ाकर, सन्मार्ग पर अग्रसित कर,

सत्यासत्य पर उचित निर्णय करना सीखना चाहिये। शीतल स्वभाव संयुक्त गुरूओं के मार्गो का अनुकरण करने वाले सच्चे विद्यार्थी होने चाहिये। फिर क्रमशः सन्ध्योपासन का स्नान, आचमन, प्राणायाम की क्रिया, सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र का कार्य होता है। अतः उसके महत्व को प्रतिपादित करते हुए क्रियान्वित रूप में प्रयोगात्मक सन्मुख प्रस्तुत करें। विद्यार्थी के पठन-पाठन, काल साधना का जीवन होता है देखिए--

काक चेष्टा वक ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्॥

'सादा जीवन उच्च विचार' उनका नारा होना चाहिये। दुष्ट लोग तो विद्या से कोसों दूर भागते हैं। चाणक्य नीति का उपदेश प्रस्तुत है--

मूर्ख शिष्योपदेशेन दुष्टा स्त्री भरणेनच।
दुःखितै संप्रयोगेण पंड़िताऽव्यवसीदति॥

अर्थ--मूर्ख शिष्य को उपदेश देने, दुष्ट स्त्री के पोषण करने एवं दुखियों के साथ सद्व्यवहार करने से पंडित भी दुख उठाते हैं। बिना शास्त्रादि के अध्ययन से भी पठन-पाठन अधूरा माना जाता है व मानव पशु तुल्य। शंकराचार्य के अनुसार--

पशोः पशुः को न करोति धर्मः,
प्राधीत शास्त्रोऽपिचात्मबोधः।
कि तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री,
केशत्रवो मित्र वदा हम जाद्या॥

ब्रह्मचर्य दो शब्दों से मिलकर बना है-ब्रह्म और चर्य। ब्रह्म अर्थात् ब्रह्म ज्ञान या सद्ज्ञान एवं चर्य अर्थात् आचरण जो कि आहार, व्यवहार व व्यायाम पर आश्रित है। ब्रह्मचर्य एक तप है। इसके लिये सांसारिक सुखों का परित्याग करना, तेज पदार्थों जैसे-शराब, अंडा, मांस-मछली से विलग रहना, रात्रि को अधिक जागरण न करना, इंद्रियों को अपने वश में करना, सात्विक भोजन करना, चिंता में न जलना, क्रोध, लोभ, मोहादि पर विजय पाना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

जभी देह बलवान आरोग्य होगा।
तभी बुद्धि का भी भला योग होगा॥
तभी योग्य सतान भी मानकारी।
बनो ब्रह्मचारी, बनो ब्रम्हचारी॥

मनुष्य की आयु इसी समुल्लास में चार सौ वर्ष का होना लिखा गया है। भारतवर्ष में बूढ़ा होना भी पाप है। रामायण साक्षी है कि कुंभकर्ण दो सौ वर्ष की अवस्था में लड़ने के लिये समरांगण में उतरा था। अभी भी सौ वर्ष से अधिक उम्र वाले कई व्यक्ति भारत में मिलते हैं। ब्रह्मचर्य से बुढ़ापा कोसों दूर भागता है। फलतः इस लोक और परलोक में भी उसे शांति मिलती है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से ही तो देवता राक्षसों पर विजेता बने। ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नता।

बालकों को क्रमशः सूत्ररूपानुसार व्याकरण ज्ञान, शब्द ज्ञान, समास, अलंकार, द्वंदशास्त्र, वैदिक साहित्य, श्लोक बनाने की रीति, रामायण, महाभारत, गीता, विदुर नीति, चाणक्य नीति, शास्त्र, उपनिषद फिर चारों वेदों को पढ़ावें। कला, वाणिज्य, खगोल, भूगोल, इतिहास, गणित, विज्ञान आदि सभी विषयों का समुचित अध्ययन इन सबके साथ जरूरी ही है। पाश्चात्य सद्ग्रंथों का अवलोकन कर उनमें सत्यासत्य के ग्रहण करने का सही सुपथ दर्शावें। उसी तरह गलत आडम्बर युक्त व ललित साहित्य जिससे ब्रह्मचर्य का विखंडन हो तथा कुपथ के जाल में फस जावें, ऐसा नहीं पढ़ाना चाहिये।

भारत को ईसाई देश बनाने का स्वप्न
हिन्दू समाज को चेतावनी

(श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ)

भारत में ईसाई पादरियों द्वारा सैकड़ों वर्षों से हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कार्य जारी है। ईसाई मत में ऐसी कोई विशेषता या आध्यात्मिक महत्ता नहीं है जिसके कारण लोग स्वेच्छा से ईसाई बनना चाहें। वस्तुत: वैदिक धर्म संसार के सब धर्मों से श्रेष्ठ धर्म है। हिन्दू धर्म एक सार्वभौम धर्म है जिस की तुलना में कोई धर्म नहीं ठहर सकता। न्याय, उदारता, अहिंसा, सहिष्णुता, समानता और सब प्राणियों के प्रति आत्मीयता हिन्दू धर्म की विशेषता है। हिन्दू धर्म, सब के सुख में अपना सुख मानता है और समस्त प्राणियों के सह-अस्तित्व में विश्वास रखता है। लेकिन फिर भी ईसाई पादरी अपना ख्रिस्ती मत का प्रसार करने में सफल होते जा रहे हैं। इस के क्या रहस्य हैं ?

मध्यप्रदेश सरकार ने १९५४ में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों की जांच के लिये डा. म. भवानीशंकर नियोगी, अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश, नागपुर हाईकोर्ट की अध्यक्षता में एक जांच कमेटी गठित की थी। इस कमेटी ने काफी छानबीन करके अपनी रिपोर्ट दी और ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जाने वाले धर्म परिवर्तन को रोकने तथा उनकी राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों को बंद करने के लिये अनेक उपयोगी सुझाव दिये; परन्तु केन्द्रीय सरकार को ईसाई पादरियों को खुश करने तथा उनकी धर्म एवं राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों की उपेक्षा करने के कारण मध्यप्रदेश सरकार नियोगी कमेटी की सिफारिशों पर कोई ध्यान न दे सकी और उसकी रिपोर्ट ठंडे बस्ते में रख दी गई।

नियोगी कमेटी ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—"भारत में ईसाई प्रचार ईसाइयों की इस विश्वनीति का एक अंग है जिसका उद्देश्य संसार में फिर से पश्चिम के प्रभुत्व की स्थापना करना है। यह प्रचार आध्यात्मिक उद्देश्य से प्रेरित नहीं होता। इसका स्पष्ट उद्देश्य स्थान स्थान पर ईसाई अल्प संख्यकों का संगठन करना और उसके द्वारा गैर ईसाई सभाओं की एकता को नष्ट करना तथा आदिवासियों के एक विशाल जन समूह को ईसाई मत में धर्मान्तरित कर राष्ट्र के लिये खतरा उपस्थित करना है।

कमेटी ने अपने मंतव्य की पुष्टी में बहुत से प्रमाण दिये हैं और बताया है कि यूरोप के ईसाई राजनीतिज्ञों और ईसाई मिशनरियों का हमेशा यह स्वप्न रहा है कि भारत को ईसाई देश बनाया जाय। बंगाल के लेफ्टीनेंट सर ऐण्ड्रू फ्रेजर ने १९२२ में एक पुस्तक "एमंग राजाज एण्ड रैयत्स" लिखी जिस में लिखा कि "यदि भारत के लिये कोई आशा है तो इस बात में है कि यहां ईसाई सभ्यता को प्रश्रय दिया जाये।"

ब्रिटिश पार्लमेण्ट में ईस्ट इंडिया कम्पनी के अध्यक्ष श्री. मेगल्सने सन् १८५७ में कहा था कि "परमात्मा ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंगलिस्तान को सौंपा है ताकि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसामसीह का झंडा फहराने लगे। हममें से प्रत्येक को अपनी शक्ति इस कार्य में लगा देनी चाहिये ताकि समस्त भारत को ईसाई बनाने के महान कार्य में देश के अंदर कहीं किसी कारण ढिलाई न होने पाये।" लार्ड मैकाले ने भारत में अंग्रेजी को अनिवार्य किये जाने के समय यह मानता व्यक्त की थी कि "भारत को ईसाई बनाने के निमित्त यह आवश्यक है कि इस देश में एक ऐसी श्रेणी उत्पन्न कर दी जाय जो

रंग रूप की दृष्टि से भले ही हिन्दुस्तानी हो परन्तु रुचि, भाषा, मान एवं आचरण में पूर्णत: ईसाई हो,"। ईसाई मिशनों द्वारा देश में हर जगह स्कूल खोले गये हैं जहां अंग्रेजी ही अनिवार्य नहीं है बल्कि बाइबिल का पढ़ाया जाना अनिवार्य है और वहां पढ़ने वाले बालक बालिकाओं के कोमल हृदयों पर ईसाइयत के संस्कार डाले जाते हैं। खेद है कि अधिकांश प्रतिष्ठित हिन्दू परिवारों के बच्चे ईसाई स्कूलों में पढ़ते हैं ताकि उन्हें अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान हो और वे शिष्टाचार सीख सकें। परन्तु वे वहां धर्म और संस्कृति के विरोधी भाव एवं संस्कार ग्रहण करते हैं।

प्रभु की बड़ी अनुकम्पा है कि जिस जमाने में भारत को ईसाई बनाने का अभियान ईसाई पादरियों द्वारा बड़ी शक्ति और सरकार के सहयोग से चलाया जा रहा था उस समय में महर्षि स्वामी दयानंद जी सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहनराय आदि विभूतियां अवतरित हुईं और उन्होंने हिन्दुओं को ईसाई पादरियों के जाल से बचाया और भारत को ईसाई बनाने के उनके स्वप्न अधूरे रह गये। परन्तु स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारत की धर्म निरपेक्ष नीति और ईसाइयों के प्रति सहानुभूति के कारण ईसाइयों को हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन करने के लिये काफी प्रोत्साहन मिला है।

ईसाइयों की संख्या वृद्धि

भारत सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति और धर्म प्रचार की अबाध स्वतंत्रता के फलस्वरूप ईसाई पादरी भारत में छा गये और जगह जगह अपने प्रचार केन्द्र तथा गिरजाघर बनाकर शिक्षा संस्थाएं और अस्पताल खोलकर तथा अन्य प्रकार की आर्थिक सहायता देकर आदिवासी तथा अस्पृश्य हिन्दुओं को ईसाई बनाने लगे। १९४७ से पहले भारत में १०६८ ईसाई मिशनरी थे, १९६४ में उनकी संख्या ६८८७ तक पहुंच गई। इनमें अकेले अमरीका के २३७१ पादरी थे।

ये ईसाई मिशनरी विविध प्रकार के सेवा कार्य करते हैं परन्तु उनका उद्देश्य मानव सेवा नहीं, अनेक प्रकार के प्रलोभनों द्वारा भारतीयों को ईसाई बनाना है। २५० वर्ष की अवधि में भारत में कुल ७० लाख ईसाई बने परन्तु स्वराज्य प्राप्ति के २० वर्ष के अन्दर ईसाइयों की संख्या २ करोड़ से अधिक हो गई। हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन के साथ उनकी राष्ट्रीयता भी परिवर्तित हो जाती है और वे भारत के प्रति निष्ठावान न रहकर अमरीका आदि ईसाई देशों के प्रति निष्ठावान बन जाते हैं उनकी राष्ट्रीयता बदल जाती है और इससे भारत की प्रभुसत्ता संकट में पड़ती है। आसाम में आज स्वतंत्र नागालेण्ड की मांग ईसाई नागा लोग ही कर रहे हैं जिन के भीतर ईसाई पादरियों ने राष्ट्रद्रोह की भावना पैदा की और उन्हें आधुनिक हथियार दिये।

बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, मद्रास, राजस्थान आदि प्रदेशों में ईसाइयों की संख्या बढ़ी। नीचे के आंकड़े बताते हैं कि कहां कितने प्रतिशत ईसाई गत २० वर्षों में बढ़े—

आसाम	—	५६.८९ प्रतिशत
मध्यप्रदेश	—	१३७.४७ प्रतिशत
राजस्थान	—	१००.६० प्रतिशत
अंदमान निकोबार	—	८९.३९ प्रतिशत
मणिपुर	—	१२० प्रतिशत
त्रिपुरा	—	९१ प्रतिशत
सिक्किम	—	८२५ प्रतिशत
द्वीपसमूह	—	२७०० प्रतिशत

इस से स्पष्ट है कि ईसाई लोग भारत को ईसाई देश बनाने के लिये पूर्णतया प्रयत्नशील रहे हैं। इस के लिये उन्होंने भारत में पानी की तरह रुपया बहा रखा है। एक ओर हजारों की संख्या में विदेशी ईसाई मिश्नरी भारत में विविध स्थानों पर अनेक प्रकार की संस्थाएं बनाये बैठे हैं और दूसरी ओर हर तरह के प्रलोभन देकर गरीब, दुखी और अभावग्रस्त लोगों को ईसाई बनाते हैं। इन में आदिवासी, बनवासी तथा हरिजन विशेष रूप से इनके कुचक्र में फंस जाते हैं। जनवरी १९५० से जून १९५४ तक २९.२७ करोड़ रुपया बाहर से ईसाई मिशनरियों के पास भारत में

आया। इस में अकेले संयुक्त राज्य अमरीका से २० करोड ६८ लाख ६३ हजार रुपया आया। कॅनेडा से १,६७,५६,००० रु., बेलजियम, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, नार्वे, स्वीडन, स्विटजरलेण्ड और अन्य देशों ने भी इस में योग दिया। आज तो इन देशों के राजदूतावास भारत में बैठकर ही गुप्त रूप से बहुत बड़ी धनराशि ईसाई धर्म के प्रचार और हिन्दुओं का ईसाई मत में धर्मान्तर करने के लिये खर्च करते हैं।

जिन साधनों के द्वारा ईसाई मत का प्रचार होता है वे प्रायः स्कूल, अस्पताल और अनाथालय ही हैं। "हिस्ट्री आफ क्रिश्चियन मिशन्स" नामक पुस्तक में लिखा है कि "मिशन वालों का कर्तव्य है कि वे अपनी शिक्षा संस्थाओं में गैर ईसाई लोगों में बाइबिल के प्रचार पर सबसे अधिक शक्ति लगायें। इस से अन्त में समूचे भारत को ईसाई बना सकेंगे। "भारतीय संविधान में धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा के बाद भारत में ईसाइयत का प्रचार प्रबल हो गया और मिशनरियों के लिये मानों द्वार ही खुल गया। प्रेस, फिल्म, रेडियो आदि अनेक साधनों के साथ मिशनरियों के दल के दल भारत पहुंचने लगे। १९५१ में अमेरीकन प्रचारकों तथा अन्य विदेशी मिशनों की संख्या में ५०० की वृद्धि हुई। विशेष कर मध्यप्रदेश, मद्रास, बंगाल और उड़ीसा में ईसाई मिशनरियों ने अपने केन्द्र स्थापित किये। १९४८ में "फैलोशिप आफ इन्टरनैशनल मिशनरी सुसायटी कांफ्रेन्स" हुई। इसमें ऐलेकजेण्डर मकलेश ने अपने भाषण में बताया कि "अभी हाल ही में हमारे भारतीय ईसाई नेताओं ने एक योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत ६ लाख भारतीय ग्रामों को अगले १० वर्षों में ईसाई बनाने का संकल्प किया गया है। हमारे पास भौतिक साधनों की कमी नहीं है, इनके द्वारा हम धर्म परिवर्तन कार्य को भली प्रकार सम्पन्न करने में समर्थ होंगे।" अमेरिका में टेलीविजन पर अकसर ईसाई धर्म का प्रचार होता है और उसमें अमरीकन लोगों से कहा जाता है कि वे दल के दल मिशनरियों को विश्व के समस्त देशों में भेजें जिससे कि वहां के लाखों पीड़ित व्यक्तियों को ईसा के राज्य में प्रविष्ट किया जा सके।"

भारतीय धर्मों और संस्कृति की यह विशेषता रही है कि वे सभी मतों का सम्मान करते हैं। सहिष्णुता और विचार स्वातंत्र्य भारतीय संस्कृति के दो महान गुण हैं। धर्म भेद के लिये भारतीयों ने कभी किसी प्रकार अत्याचार नहीं किये। हिन्दुओं ने कभी दूसरे मत वालों को अपने धर्म में मिलाने की कोशिश नहीं की। उन्होंने सदा अपने तथा अन्यों के स्वधर्म की रक्षा करना कर्तव्य समझा परन्तु ईसाई धर्म दूसरे धर्मों के प्रति सदा असहिष्णु रहा। प्रोफेसर गीडो डि रूडिरो के लेख के अनुसार "मानव जाति की धार्मिक स्वतंत्रता के महासंघर्ष में ईसाई धर्म ही विरोधी रहा है। इसी ने असहिष्णुता के बीज बोये जो इसे यहूदियों की परम्परा से मिले थे। इसने ही सार्वभौम मिशन तथा ईश्वर और मानव के बीच एक मात्र माध्यम के रूप में चर्च की कल्पना उपस्थित की।"

ईसाई मिशनरी हिन्दू धर्म और हिन्दू देवी देवताओं की निंदा करते रहते हैं। अब तो उन्होंने भजन कीर्तन की प्रथा भी चालू कर दी है और इन भजनों को ईसा भजन कहते हैं तथा बाइबिल को "ईसा भागवत" कहते हैं। ईशावास्योपनिषद में "ईशा वास्यमिदं सर्व" जो वाक्य आता है, इसकी व्याख्या करते हुए एक धूर्त ईसाई प्रचारक ने कहा कि इस वाक्य का अर्थ यह है कि समस्त जगत ईसाई हो रहा है। ईसाई प्रचारक भगवान राम और कृष्ण पर गंदे आक्षेप करते हैं। एक प्रचारक ने कहा कि मुक्ति केबल ईसा के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। राम जिसकी पत्नी हरण कर ली गई क्या मुक्ति दे सकता है। तुलसीकृत रामायण में गिरिजा पूजन का प्रसंग आया है। ईसाई प्रचारक इस प्रसंग में गिरजा घर का अर्थ करते हैं। एक प्रचारक ने ग्रामीण जनता के समक्ष बोलते हुए कहा कि राम, कृष्ण, शंकर, आदि हिन्दुओं के देवता ईसा के जन्म पर उनके दर्शनों के लिये गये थे। इस तरह हिन्दू देवी देवताओं की निंदा करना ईसाई प्रचारकों का धंधा बन गया है। अब तो ईसाई पादरी सफेद वस्त्रों की जगह हिन्दू साधुओं के जैसे गेरुआ वस्त्र पहनने लगे हैं ताकि भारत की भोली देहाती जनता उन्हें हिन्दू साधू सन्यासी

समझकर पूजा करे और उनके उपदेश को ग्रहण करे।

कमेटी की सिफारिशें

नियोगी कमेटी ने ईसाई पादरियों के संबंध में निम्नलिखित सिफारिशें की थीं—

१. जिन मिश्नरियों का मुख्य उद्देश्य केवल धर्म परिवर्तन ही है उन्हें भारत छोड़ने के लिये कहा जाय। भारत में विदेशी मिश्नरियों के आगमन पर रोक लगाई जाय।

२ जो चिकित्सा सेवाएं अथवा अन्य सेवाएं धर्म परिवर्तन का कार्य करती हैं उन्हें कानून द्वारा वर्जित कर दिया जाय।

३. छल, कपट अनुचित भय, आर्थिक या दूसरी सहायता का वचन देकर या उसकी अज्ञानता व मानसिक दुर्बलता का लाभ उठाकर उसकी धार्मिक मान्यतायें बदल कर उसका धर्मान्तर किया जाय, ऐसी चेष्टाओं को सर्वथा रोक देना चाहिये।

४. किसी भी विदेशी को स्वतंत्र रूप से अथवा किसी धार्मिक संस्था के सदस्य होने के नाते परिगणित अथवा बहिष्कृत क्षेत्र में कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाय जब तक वह निश्चित रूप से यह लिखित आश्वासन न दे कि वह राजनीति में भाग नहीं लेगा।

५. गैर सरकारी अथवा धार्मिक संस्थाओं के पास यदि कोई सामाजिक आर्थिक उत्थान का कार्यक्रम हो तो उसको सब से पहले सरकारी अनुमोदन मिलना चाहिये।

६. ईसाई मिश्नरियों की एक उत्तरदायी संस्था स्थापित हो जो स्पष्ट शब्दों में धर्म परिवर्तन संबंधी नीति का कार्यक्रम घोषित करे।

७. भारतीय संविधान में ऐसा संशोधन हो ताकि यह बात स्पष्ट हो जाये कि धर्म परिवर्तन का जो अधिकार दिया गया है वह केवल भारतीय नागरिकों के लिये ही है। परन्तु इसके अन्तर्गत धर्म परिवर्तन के ऐसे मामले नहीं आते जहां धर्म परिवर्तन दबाव, धोखा, छल कपट अथवा दूसरे अनुचित उपायों से किया जाय।

ईसाइयों के प्रचार का मुकाबला आर्य प्रतिनिधि सभा का अभियान

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, पिछले २० वर्षों से ईसाई पादरियों के भारत तथा हिन्दू धर्म विरोधी प्रचार को विफल बनाने एवं ईसाई बनाये गये लोगों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू समाज में प्रतिष्ठित करने के लिये प्रयत्नशील है। वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता तथा आ. प्र. सभा के उपप्रधान स्वामी दिव्यानंद जी के निर्देशन में अनेक उपदेशक छत्तीसगढ़ तथा विंध्यप्रदेश मे प्रचार करके लोगों को ईसाई पादरियों के षडयंत्र से सचेत करने और ईसाई पादरियों के जाल में न फंसने का प्रचार कर रहे हैं। स्वामी जी को कई बार ईसाई पादरियों से शास्त्रार्थ करना पड़ा। ईसाई पादरी जब शास्त्रार्थ में हार गये तो वे हमारे प्रचारकों को मारने पीटने की धमकी देने लगे।

स्वामी दिव्यानंद जी के निर्देशन में हमारे प्रचारकों ने पिछले १५ वर्षों में २५ हजार से अधिक ईसाई बने लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में वापस लौटाया है। बहुत से जन्मजात ईसाई परिवारों की शुद्धि कर के उन्हें हिन्दू समाज में दीक्षित किया गया। आर्य समाज बलात या किसी प्रकार के प्रलोभन द्वारा धर्म परिवर्तन किये जाने का विरोधी है। ऐसा धर्म परिवर्तन दंडनीय होना चाहिये।

ईसाइयों का मध्यप्रदेश में चारों ओर जाल फैला हुआ है। उनके पास धन है, जन बल है और सरकार की सहानुभूति है। अतः वे निर्भय होकर प्रचार कर रहे हैं। विदेशों से करोड़ों रुपया ईसाइयों के पास आता है ताकि वे भारतीयों और विशेषतः अछूतों और हरिजनों तथा आदिवासियों को ईसाई बनायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से रायपुर में ईसाइयों के भारत विरोधी प्रचार को विफल करने और हिन्दुओं को उनके कुचक्र से बचाये रखने के लिये कुछ प्रचारक तैयार करने के लिये एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया था। इस केन्द्र में छत्तीसगढ़

के आदिवासियों की भाषा को जानने वाले विशेषत: उन्हीं में के कुछ युवकों को भर्ती किया गया और आर्य समाज का उपदेशक बनाया गया—वैदिक धर्म की शिक्षा दी गई तथा ईसाई धर्म के दोषों और ईसाई पादरियों के भारत व हिन्दू धर्म विरोधी कृत्यों से परिचित कराकर उन्हें आदिवासी तथा वनवासी क्षेत्रों में प्रचार करने योग्य बनाया गया। इस प्रकार के २० उपदेशक तैयार किये गये और प्रशिक्षण के बाद उन्हें उन क्षेत्रों में प्रचारक नियुक्त किया गया। प्रचारक बहुत दिनों तक कार्य करते रहे और उनके कारण मध्यप्रदेश में ईसाई पादरियों के दुष्कृत्यों के विरुद्ध काफी जन जागृति उत्पन्न हुई। खेद है कि धनाभाव के कारण यह योजना अधिक समय तक नहीं चल सकी। रायपुर के सुप्रसिद्ध देशभक्त और समाज सेवी महन्त श्री वैष्णवदास जी, दूधाधारी मठ ने उक्त प्रशिक्षण केन्द्र का पूरा खर्च उठाकर ईसाई विरोधी प्रचार को विफल बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, पुन: इस प्रकार के प्रचारक तैयार करना चाहती है और शीघ्र ही एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने का प्रयत्न कर रही है।

अकेला आर्य समाज, देश भर में ईसाई मिशनरियों के मुकाबले में हिन्दु धर्म का प्रचार और ईसाई बनाये गये लोगों को पुन: हिन्दू धर्म में लौटाने का प्रयत्न कर रहा है। दूसरे धर्मावलंबी हिन्दू आज भी इस संबंध में निष्क्रिय हैं। वे इस अभिशाप से अपरिचित भी हैं परन्तु वे विशाल हिन्दू समाज की दृष्टि से नहीं सोचते। जिस तेजी से ईसाई जन संख्या भारत में बढ रही है उसे देखते यह आशंका है कि भारत में ईसाई इतने शक्तिशाली हो जायेंगे कि पाकिस्तान की तरह स्वतंत्र ईसाइस्तान की मांग करेंगे। आज भी आसाम में स्वतंत्र नागालेण्ड की मांग के पीछे ईसाई पादरियों का ही प्रमुख हाथ है। ईसाई पादरियों की हलचलें निश्चित रूप से राष्ट्र विरोधी हैं।

सनातन धर्मी बंधु जागें

कुंभ के अवसर पर पधारने वाले लाखों श्रद्धालु बंधुओं से हमारा निवेदन है कि वे भारत में ईसाई पादरियों की देश और धर्म विरोधी हलचलों से सावधान रहें। किसी भी हिन्दू को, अपने बच्चों को शिक्षा पाने के लिये ईसाई स्कूलों में नहीं भेजना चाहिये। वहां उन पर ईसाई धर्म के पूरे संस्कार डालने का प्रयत्न किया जाता है। उन्हें भारतीय संस्कृति, वेश भूषा और सात्विक खान पान से बिलग करने का प्रयत्न किया जाता है। आवश्यकता है कि ईसाइयों के मुकाबले में हिन्दू समाज का देहातों और पिछड़े वर्गों तथा अछूतों एवं आदिवासियों में प्रचार हो। इन क्षेत्रों में हिन्दू स्कूल हों और वहां उन्हें हिन्दू धर्म की शिक्षा दी जाय। दुर्भाग्य यह है कि आज हिन्दू भाई इतने उदासीन बन गये हैं कि उन्हें हिन्दू समाज की जनसंख्या घटने और ईसाइयों की जनसंख्या बढ़ने का कोई दुख नहीं है।

आर्य समाज, हिन्दु जाति का सजग प्रहरी है। वह ईसाई मिशनरियों की सब चालों को विफल कर सकता है और ईसाई पादरियों द्वारा हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को रोक सकता है, परन्तु इसके लिये आवश्यक साधन चाहिये। हिन्दुओं को इस समस्या पर गंभीरता से चिंतन करना चाहिये और ईसाई पादरियों के भारत को ईसाई बनाने के स्वप्न को विफल कर देना चाहिये।

उड़ीसा राज्य की तत्परता

यह हर्ष की बात है कि उड़ीसा सरकार ने सबसे पहले ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जाने वाले धर्मान्तर के विरोध में कानून बनाया है और प्रलोभन तथा अन्य अनुचित उपायों द्वारा धर्म परिवर्तन किये जाने को अवैध घोषित कर दिया है।

मध्यप्रदेश सरकार ने भी अब इस संबंध में कार्य करने का निश्चय किया है। उप-मुख्यमंत्री श्री सखलेचा जी के वक्तव्य से विदित होता है कि मध्यप्रदेश सरकार शीघ्र ही ईसाइयों की इस प्रकार की राष्ट्र विरोधी हरकतों के विरुद्ध कानून बनायेगी।

श्री शंकराचार्य का आव्हान

जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ, गोवर्धन मठ, पुरी, ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से

(शेष पृष्ठ २२ पर)

दिल्ली में आर्य समाज कार्य

(प्राचार्य भगवानदास, डी. ए. वी. कॉलेज, अम्बालानगर)

दिल्ली भारत की राजधानी में, केन्द्रीय आर्य समाज की ओर से ऋषि बोध के उपलक्ष में विशाल आयोजन का दिग्दर्शन करने का अहोभाग्य इस वर्ष मुझे प्राप्त हुआ। दस पन्द्रह हजार व्यक्तियों के उत्साह तथा भावनाओं से ओत-प्रोत आर्य समाजी जन-समूह को अस्वस्थ होने के पश्चात् प्रथम बार देखा। लगभग १५० आर्य समाजों के पुराने तथा नये आर्य समाजी कार्य-कर्त्ताओं तथा नेताओं को उत्साहवर्द्धक जीवन दाता कार्य में लगे देखकर बहुत ही चित्त प्रसन्न हुआ। १९३० से लेकर आज तक, तथा पेशावर से लेकर दिल्ली तक अनेकों पुराने आर्यवीरों तथा नेताओं के वर्षों के पश्चात् एक ही स्थान पर दर्शन करके मुझे गौरवपूर्ण अभिमान हुआ। इस महान् आयोजन के लिए प्रबंध, उत्साह, प्रेम, उच्च कोटि को था। सब प्रबंधक बधाई के पात्र हैं।

कुछ बातें जो देखी उसको समस्त जनता को पहुंचा देना उचित समझता हूं :--

दिल्ली जैसे नगर में सब दिशाओं से आर्य समाजियों का एक ही स्थान पर इकट्ठे होना बहुत सुन्दर है। इससे प्रेम बढ़ता है तथा मेल-मिलाप होता है। आर्य समाज कार्य में सुझाव दिये दिलाये जा सकते हैं, जिनसे एकता बढ़ती है। मेरा सुझाव है कि प्रत्येक नगर में ऋषि बोध उत्सव पर सब आर्य समाजी उसी नगर के एक ही स्थान पर इकट्ठे हों, जैसे सिख आदि दूसरे मतों वाले करते हैं। वहाँ ही धनवानों की ओर से ऋषि लंगर लगे इससे और भी अच्छा होगा।

परलोकवासी आर्य समाजी लोह नेता महाराज कृष्ण के दोनों सुपुत्र श्री वीरेन्द्र जी तथा श्री नरेन्द्र जो आर्य समाज तथा राष्ट्र की उन्नति के लिए जो कार्य कर रहे हैं वह बहुत सराहनीय है। ऋषि बोध उत्सव पर श्री नरेन्द्र जी ने एक सुझाव यह रखा कि आर्य समाज की वेदी पर से आर्य समाज के विरोधियों को भी बोलने का अवसर देना चाहिए। यह बहुत उचित बात है। पहिले आर्य समाज में यह प्रथा थी। दूसरों को बोलने का अवसर देकर हम उनके विरोध को समाप्त कर सकेंगे और अपना घर संवारने में हम एक हो जावेंगे। मैं स्वयं जाहिर में आर्य समाज के विरोधियों को अपने यहां बुलाकर उनके तर्कों को पछाड़ता रहा हूं। इस ढंग से मैं अनेकों नवयुवकों को आर्य समाज में लाने में सफल रहा हूं।

ऐसे अवसरों पर आर्य समाजी पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्य की प्रदर्शनी हो तथा ऋषि दयानन्द के मिशनरी और आर्य समाज के सिद्धान्तों पर पुस्तकों तथा लेखों पर बड़े बड़े पुरस्कार हों। इससे आर्य समाजी लेखकों का उत्साह बढ़ेगा। आर्य समाज की गीत विद्या जा रही है। ऐसे अवसरों पर गीत विद्या प्रतियोगिताएं तथा कवि सम्मेलन हों तथा पुरस्कार प्राप्त गीत तथा कविताएं छाप कर बेची जावें।

आर्य समाज के अग्रगामी नेता तथा लोक सभा सदस्य श्री रामगोपाल शाल वाले ने बहुत परिश्रम करके अनेक लोक सभा सदस्यों को ऋषि बोधोत्सव में आमंत्रित किया था, जिन्होंने आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के कार्यों की बहुत प्रशंसा की। पूज्य रामगोपाल जी शाल वाले ने जन-समूह से बचन लिए कि वह गोमाता तथा हिन्दी के सेवा कार्य में जुट जावें तथा अंग्रेजी में आमंत्रण-पत्र भेजने वालों के द्वार न जावें।

सारी सभा को शपथ दिलाई गई कि सब आर्य नर नारी स्वार्थ छोड़कर आर्य समाज की सेवा करें। यह स्वार्थ भाव हमें खाये जा रहा है। आर्य जनता के अंदर उत्साह, त्याग तथा प्रेम बहुत है। स्वदेश का बहुत बड़ा भाग घूमकर मैंने देखा है कि आर्य जनता देश हित में सबसे आगे है। आज नेताओं में स्वार्थ-भाव की मात्रा बढ़ गई है इसे दूर करना होगा तभी हम समाज की उन्नति कर सकेंगे। *

समाचार संसार

संकलनकर्ता–श्रीकृष्ण गुप्त, सिद्धान्तरत्न, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

आर्य युवक परिषद, दिल्ली

आर्य युवक परिषद, १६५४ कूचा दखिनीराय, दरियागंज, दिल्ली ने युवकोपयोगी भावी योजनाओं को सफल बनाने के लिए सहायता की अपील की है। जिसमें परिषद को दान देने, एक रु. वार्षिक के सदस्य बनने, छात्रवृत्ति देने, सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं के केन्द्र खोलने और विद्यार्थियों को बैठाने, पुस्तकालय के लिए अच्छी पुस्तकें भेजने का अनुरोध किया गया है।

निर्वाचन–

आर्य समाज, हंसापुरी, नागपुर

श्री विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा	–	प्रधान
श्री गयादीन जी पेन्टर	–	उप प्रधान
श्री नरदेव जी आर्य	–	,,
श्री गजानन्द जी आर्य	–	मंत्री
श्री चिन्तामन पंदराम जी	–	उप मंत्री
श्री गणेश प्रसाद खन्ना	–	,,
श्री मल्हारराव माथनकर	–	कोषाध्यक्ष
श्री शेषराव चेट्टी	–	पुस्तकाध्यक्ष

आर्य समाज, बलौदा बाजार

श्री कन्हैयालाल जी यदु	–	प्रधान
श्री डॉ. रामकृष्ण शास्त्री	–	उप प्रधान
श्री शंकरदयाल जी त्रिवेदी	–	मंत्री
श्री अशोक शर्मा	–	उप मंत्री
श्री सुन्दरलाल गुप्त	–	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, गंजीपुरा, जबलपुर

श्री डालचन्द जी योगाचार्य	–	प्रधान
डॉ. मनोहरदयाल वर्मा	–	उप प्रधान
श्रीमती शकुन्तला देवी वर्मा	–	,,
श्री रामलाल जी साहू	=	मंत्री
डॉ. महेन्द्र जी	–	उप मंत्री
श्री चन्द्रकान्त जी वर्मा	–	,,
श्री रामशरण श्रीवास्तव	–	कोषाध्यक्ष
श्री मुकुटबिहारी श्रीवास्तव	–	पुस्तकाध्यक्ष

आर्य समाज, जरीपटका में शुद्धि

चन्दन नगर नागपुर निवासी श्री जयवन्तकुमार श्रीवास्तव जो कि गत ३ नवम्बर ६७ को अज्ञानवश ईसाई बन चुके थे– पुनः २८ मार्च ६८ को प्रातः आर्य समाज मन्दिर जरीपटका नागपुर में आर्य धर्म स्वीकार किया। समाज के मंत्री श्री संगतराम जी आर्य ने शुद्धि संस्कार कराया। आर्य वीर दल के प्रधान श्री प्रेमचन्द जी अग्रवाल का मूल्यवान सहयोग मिला।

––पं. दीनानाथ जी शास्त्री ने लश्करीबाग, नागपुर निवासी श्री रामलाल जी वर्मा के पोते का नामकरण संस्कार कराया। बच्चे का नाम विनयकुमार रखा गया। आर्य समाज हंसापुरी और जरीपटका को ११)–११) दान दिया गया।

आर्य समाज खंडवा

आर्य समाज खंडवा के स्थाई प्रचारक श्री सुखराम जी आर्य ने मार्च के तृतीय सप्ताह में ग्राम रूधो,

भामगढ़, अमलपुरा, भावसिंगपुरा खेड़ी, राई में वैदिक धर्म का प्रचार किया। सभाओं में ईसाई मिशनरियों के कुप्रचार से सावधान रहने को कहा गया।

श्री ज्ञानेन्द्रदेव जी सूफी का प्रचार कार्य

आर्योपदेशक पं. ज्ञानेन्द्रदेव जी सूफी ने मार्च के अन्तिम सप्ताह में– वर्धा, चान्दूर और अमरावती का प्रचारार्थ भ्रमण किया। तीनों स्थानों में मन्दिर हैं परन्तु लगनशील कार्यकर्ताओं के अभाव में इन स्थानों का उपयोग नहीं हो पाता। अमरावती में आपका २० से २५ मार्च तक दीपार्चन हाल में प्रचार कार्य हुआ। इस प्रचार कार्य में श्री यमुनादास जी का प्रशंसनीय योगदान रहा।

आर्य समाज अकोला का वार्षिकोत्सव

दि. १२-१३ और १४ अप्रैल १९६८ को आर्य समाज अकोला ने अपना वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक मनाया। उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा, अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग एवं उप प्रधान सभा श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, श्री मुले शास्त्री आदि विद्वानों के महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए।

इस अवसर पर आ. प्र. सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का वार्षिक बृहदधिवेशन का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रान्त की अनेकों आर्य समाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे।

हरिद्वार में गोरक्षा–सम्मेलन

सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति दिल्ली ने, दिनांक ११-१२ अप्रैल को हरिद्वार में, जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ, पुरी की अध्यक्षता में, गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसमें देश के अनेक गो प्रेमी सज्जन तथा बड़ी संख्या में साधू समाज उपस्थित था।

सम्मेलन में आंदोलन की वर्तमान स्थिति, भावी कार्यक्रम तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित गोसंरक्षा समिति के कार्य व लाभ पर विचार किया गया।

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती द्वारा वैदिक प्रचार

श्री स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती उपप्रधान सभा तथा अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग ने मास मार्च और अप्रैल १९६८ में मध्यप्रदेश और विदर्भ के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, बिहार उड़ीसा तथा नेपाल में भी वैदिक धर्म का प्रभावशाली प्रचार कर जन जागृति उत्पन्न की।

आप रायखेड़ा, भिलाई, परसतराई, बरेली, बिलासपुर, अकोला, सतना आदि स्थानों में वेद प्रचार करते हुए सिंहस्थ कुंभ मेला में ईसाई विरोधी प्रचार हेतु उज्जैन पधारे हैं।

कवियों से

प्रयास प्रकाशन के पंचम भेंट के रूप में खौलता खून (अ. भा. स्तर पर वीरोचित काव्य संग्रह) शीघ्र ही सहयोगाधार पर प्रकाशित होगा। अतः कवि बंधुओं से निवेदन है कि अपनी रचनाएं एवं समस्त प्रकार का पत्र-व्यवहार श्री विनयकुमार पाठक, पत्रकार, पचरीघाट, जूना बिलासपुर (म. प्र.) के पते पर करें।

श्री विनयकुमार पाठक

आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित सत्यार्थ शास्त्री की शोध लिखित परीक्षा में श्री विनयकुमार पाठक को "शास्त्री" से अलंकृत किया गया है। आर्य सेवक के पाठक उनकी रचनाओं से सुपरिचित हैं। हम उनके उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करते हैं।

आर्य युवक परिषद मध्यप्रदेश व विदर्भ

दिनांक १४–४–६८ को, श्री स्वामी दिव्यानंद जी सरस्वती की अध्यक्षता में, अकोला आर्य युवक परिषद, मध्यप्रदेश व विदर्भ की कार्यकारिणी समिति का निम्नप्रकार गठन हुआ ।

अध्यक्ष–स्वामी दिव्यानंद जी सरस्वती नागपुर
कार्यकारी अध्यक्ष-प्रेमचंद अग्रवाल सिद्धांतभूषण,नागपुर
उपाध्यक्ष–आरतीराम साहू एम. ए. रायगढ़
उपाध्यक्ष -रामलाल साहू, जबलपुर
महासचिव–मधुकर सदार सिद्धांतालंकार,नागपुर
उपसचिव–जमनादास आर्य, अमरावती
कोषाध्यक्ष–संगतराम आर्य, नागपुर
संगठक–रमेशचंद्र श्रीवास्तव, भिलाई
सदस्य–जयसिंह गायकवाड़, एम.ए. जबलपुर
,, –नरेन्द्रमोहन अग्रवाल, सिद्धांतालंकार नागपुर
,, –विनयकुमार पाठक, पत्रकार, बिलासपुर
,, –राजाराम तिवारी, छिंदवाड़ा

कन्या गुरुकुल हाथरस

कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, हाथरस की मुख्याधिष्ठात्री अक्षयकुमारी शास्त्री ने सूचित किया है कि– उत्तरप्रदेश के हरिजन तथा समाज कल्याण विभाग के उप-निर्देशक श्री ब्रजनन्दन जी नें गुरूकुल में पधारकर उपयोगिता की दृष्टि से एक योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत उत्तरप्रदेश शासन की ओर से गुरूकुल में प्रविष्ट १० कन्याओं का भोजन, वस्त्रादि का व्यय दिया जायेगा।

इस वर्ष उत्तरप्रदेश शिक्षा विभाग ने गुरूकुल को १०,०००रु. का अनुदान दिया है । इसके अतिरिक्त केन्द्रीय तथा प्रदेशीय शिक्षा मंत्रालयों से १५,००० रु. की सहायता मिली है । जिला परिषद् अलीगढ़ ने १,२८० रु. का अनुदान दिया ।

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का दसवां अधिवेशन हैदराबाद में

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण के प्रधान पं. नरेन्द्रजी ने अपनी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि हैदराबाद की ऐतिहासिक नगरी में, सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के दशम अधिवेशन का आयोजन अक्तूबर मास में किया जाना निश्चित किया गया है। सम्मेलन आयोजन की दिशा में कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है । स्वागत समिति के सदस्य बनाए जा रहे हैं ।

आर्य समाज का देश की स्वाधीनता और स्वाधीन भारत की उन्नति में महत्वपूर्ण योग रहा है । भारत की स्वाधीनता के इस २० वर्षों में प्रयत्न के उपरान्त आज भी कई महत्वपूर्ण समस्याएं हमारे राष्ट्रीय जीवन को चारों ओर से घेरी हुई हैं। राजनैतिक वातावरण का दूषित प्रभाव जहां अन्य क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है, वहीं इसका प्रभाव आर्य समाज के प्रचार की गतिविधि पर भी पडे बिना नहीं रहा है । ऐसी विकट और विषम परिस्थिति में आर्य समाज का कर्त्तव्य हो जाता है कि जागरूक होकर देश में उत्पन्न समस्याओं का समाधान ढूंढ़ा जावे । साथ ही भारतीय संस्कृति के अनुरूप भारत के पुनः निर्माण में सक्रिय भाग लेकर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का अन्त करने के लिए आर्य समाज को कार्य क्षेत्र में उतरकर दृढ़ता से वातावरण को बदलने के उत्तरदायित्व की पूर्ति का समय इसके लिए अब आ गया है ।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर सभा द्वारा निश्चय किया गया है कि अक्तूबर मास में सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का दशमाधिवेशन हैदराबाद में किया जावे ।

यह कार्य जितना महान है उसे इतनी ही विशाल शक्ति से संपन्न किया जाना है । एतदर्थ संपूर्ण आर्य जगत् का सहयोग अपेक्षित है । समूचे आर्य जगत् का कर्तव्य है कि वह इस महान् यज्ञ की सफलता में अपना तन–मन–धन से योग दे ।

दयानंद बाल विद्या मदिर, नागपुर, पारितोषक वितरण समारोह

सभा के प्रधान श्री विश्वम्भर प्रसाद जी शर्मा ने दयानंद भवन, नागपुर के बाल विद्या मंदिर के प्रथम कक्षा, सीनियर व जूनियर K. G. के परीक्षा परिणाम की घोषणा की व उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पारितोषक वितरण किया । सफलता के प्रमाण पत्र भी उन्होंने दिये । प्रथम–प्रधान अध्यापिका ने वार्षिक वृत्तान्त सुनाया फिर चंद्रकांता जी विद्यालंकृता, मंत्री, महिला समाज ने प्रधान जी का स्वागत किया ।

इस विद्यालय में इस वर्ष विद्यार्थियों की संख्या ९९ थी। इसे प्रायमरी का रूप देने का विषय विचाराधीन है। विद्यालय प्रतिदिन उन्नति करता चला जा रहा है।

उपदेशक महाविद्यालय खुल रहा है
प्रवेशार्थी प्रार्थना पत्र भेजें

देश विदेश में वैदिक धर्म एवं भगवान दयानंद के दिव्य सन्देश को पहुंचाने के लिए योग्यतम उपदेशकों को तैयार करने के उद्देश्य से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने आगामी शिक्षा सत्र से एक उपदेशक महाविद्यालय खोलने का निश्चय कर लिया है। यह विद्यालय सभा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष, उद्भट आर्य विद्वान् श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के आचार्यत्व में चलेगा। इस विद्यालय में शिक्षण काल में विद्यार्थी का सब व्यय सभा वहन करेगी और प्रशिक्षित हो जाने पर उपदेशकों को वर्तमान शिक्षा क्षेत्रों के स्तर पर वेतन देकर कार्य पर नियुक्त करेगी। शास्त्री, आचार्य, बी.ए., एम.ए. तथा तत्सम योग्यता के छात्र इसमें प्रवेश पा सकेंगे। विदेश से उपदेशक बनने के लिए आये छात्रों को अन्य सब शर्तें पूरी होने की अवस्था में उपर्युक्त शैक्षणिक स्तरों के नियम कुछ शिथिल किये जा सकेंगे।

इस विद्यालय में प्रवेश पाने एवं विशेष विवरण जानने के इच्छुक अपना प्रार्थना पत्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानंद भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के पते पर करें।

(पृष्ठ १७ का शेष)

हिन्दू जनता का आव्हान किया है कि वह ईसाई मिशनरियों की धर्म विरोधी प्रवृत्तियों से सावधान रहे और जिन हिन्दुओं को ईसाई बना लिया गया है उन्हें बिना संकोच के शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में प्रतिष्ठित कर लेना चाहिए। उन्होंने हिन्दु धर्म शास्त्रियों से इस प्रकार की शुद्धि का समर्थन किया है। यह हर्ष की बात है कि दूसरे सनातन धर्मी नेता भी इस प्रकार के उद्गार प्रकट कर रहे हैं। श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी तो बहुत पहले से इस प्रकार धर्मान्तरित हुए हिन्दुओं की शुद्धिकरण का समर्थन कर चुके हैं। आशा है हिन्दू समाज अब सचेत हो जायेगा और अपने धर्म तथा राष्ट्र की रक्षा में कोई प्रयत्न नहीं उठा रखेगा।

सभा की सूचना

संख्या २७६-प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यों एवं सम्बन्धित महानुभावों को सूचित किया जाता है कि समयाभाव वश जबलपुर में किये समाजों के प्रधानों व मंत्रियों के सम्मेलन की कार्यवाही इस अंक में प्रकाशित न की जा सकी। सम्भव हुआ तो अगले अंक में या एक विशेषांक प्रकाशित करने का यत्न किया जायेगा।

संख्या २७७-मंत्री सभा का दौरा

तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय-दुर्ग व तुलाराम भू सम्पत्ति विभाग के आवश्यक कार्यों को करने के लिए मैं दिनांक २६ अप्रैल १९६८ को नागपुर से दुर्ग, रायपुर, धमतरी, कूरा, लवन, आदि स्थानों का दौरा करके मई के प्रथम सप्ताह में नागपुर, सभा कार्यालय में वापस आ सकूंगा।

संख्या २७८-सिंहस्थ कुंभ उज्जैन में प्रचार

सभा प्रधान पं. विश्वम्भरप्रसाद जी शर्मा कुंभ मेला, उज्जैन में, वैदिक प्रचार हेतु २६ अप्रैल को पहुंच गये और वहां पर सभा की ओर से एक शिविर स्थापित कर दिया है।

२. श्री स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती उपप्रधान तथा अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग भी मास के अंत तक उज्जैन पहुंचने वाले हैं।

महर्षि दयानंद भवन, नागपुर, दि. २४-४-१९६८

श्रीकृष्ण गुप्त, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

License No. 33, D/28-4-1965

Licensed to—

POST WITHOUT PREPAYMENT

... संस्थापकजी,
आत्मशुद्धि आश्रम,
पोस्ट सांपला, जिला रोहतक (पंजाब)

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, दयानंद भवन, महर्षि दयानंद मार्ग, मंगलवारी, सदर, नागपुर.
मुद्रक-घनश्यामदास अग्रवाल, बी. कॉम, कीर्ति मुद्रण, सदर, नागपुर। टेलीफोन नं. २३४४२
प्रकाशक-वि. ब. कौशिल, आर्य प्रतिनिधि सभा, नागपुर। प्रकाशन-प्रत्येक अंग्रेजी मास की २८ तारीख को।